आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन

सेवाभावी

आचार्य तुलसी

संपादिका : महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

अर्थ-सौजन्य : श्री कृष्णकुमार जैन सुपुत्र श्री लखमीचन्दजी जैन (हांसी वाले) ४७ कपिल विहार, पीतमपुरा, दिल्ली, ने अपनी सुपौत्री के जन्म के उपलक्ष्य में।

प्रकाशक : कमलेश चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, चूरू (राजस्थान)/ मूल्य : चालीस रुपये / प्रथम संस्करण : १९९३ / मुद्रक : एस० एन० प्रिंटर्स, दिल्ली-११००३२

SEVABHAVI by Acharya Tulasi Rs. 40.00

स्वकथ्य

सेवाभावी मुनि चम्पालालजी का जन्म नागौर जिले के लाडनूं कस्बे में वि० सं० १९६४ में हुआ। दादा के लाड़ले पौत्र अपनी सब इच्छाएं पूरी करने में सफल होते रहे। दादा का वियोग हुआ। कुछ अन्य घटनाएं घटीं। मन में विराग का अंकुर प्रस्फुटित हुआ। आचार्यश्री कालूगणी ने वि०सं० १९८१ में चूरू में उनको दीक्षित किया। उस समय उनकी अवस्था सतरह वर्ष की थी। दीक्षा के बाद उन्होंने अध्ययन शुरू किया। पर इस क्षेत्र में उनकी गति सामान्य रही। उन्होंने सेवा के क्षेत्र में कदम रखे। यह क्षेत्र उनके व्यक्तित्व को शिखर को छूने वाली ऊंचाई दे गया। धर्म-संघ में छोटा-बड़ा कोई भी साधु या साध्वी हो, सेवा के प्रसंग में मुनि चम्पालालजी आगे रहे। कहा जा सकता है कि वे सेवाभावना के जीवंत रूप थे। किसी व्यक्ति के मन और शरीर की पीड़ा का संवेदन कर वे स्वयं पीडा से भर जाते थे। उनकी संवेदनशीलता एक्टिव थी। वे पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा का शमन करने के लिए हर संभव उपाय काम में लेते। जब तक ऐसा नहीं होता, वे शान्ति से बैठ नहीं सकते। यही कारण है, अनेक लोग उनके भीतर बहने वाले करुणा के स्रोत से भीगे हुए- से रहते। उनकी विशिष्ट सेवाभावना का मूल्यांकन कर मैंने वि० सं० २०१७ में उनको 'सेवाभावी' इस सार्थक सम्बोधन से संबोधित किया।

किसी भी व्यक्ति के जीवन का अवगाहन करना हो, उसे खण्ड-खण्ड में ही देखा जा सकता है। अखण्ड जीवन या अखण्ड व्यक्तित्व का एक साथ दर्शन कर पाना बहुत कठिन काम है। खण्ड-खण्ड में बिखरे व्यक्तित्व को जोड़कर अखण्ड का आभास पाया जा सकता है। मुनि चम्पालालजी का जीवन कोमलता और कठोरता का अद्‌भुत संगम था। वे जितने मृदु थे, उतने ही कठोर भी थे। उनके सहज, सरल जीवन पर उक्त दोनों भावों के प्रतिबिम्ब तैरते रहते थे। मैंने उनके अनेक रूप देखे। कभी वे कुशल अनुशासक की हैसियत से काम करते। कभी उनका व्यवस्था-कौशल मुखर हो जाता। साहस उनके जीवन का अभिन्न अंग था। उन्होंने किसी भी स्थिति में अपना मनोबल

टूटने नहीं दिया। गोचरी उनके लिए रुचिकर कार्यों में एक काम था। आलस्य कभी उनके निकट भी नहीं आ सका। जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होंने सक्रियता का जीवन जीया। सुदूर प्रदेशों की लम्बी यात्राएं उनकी रुचि का विषय था। जन-साधारण को संभालने में उन्हें आनन्द का अनुभव होता था। चारों ओर से हताश एवं टूटे हुए व्यक्तियों के लिए वे आश्वासन थे। नए-नए विशिष्ट व्यक्तियों से मिलकर उनको धर्मसंघ की गतिविधियों से अवगत कराने में उन्हें विशेष आत्मतोष का अनुभव होता था।

मंत्री मुनि मगनलालजी तेरापंथ धर्मसंघ के सुदृढ स्तंभ थे। वि॰ सं॰ २०१६ में वे दिवंगत हो गए। उनके जाने से संघ में जो खालीपन उभरा, उसे भरना किसी के वश की बात नहीं थी। इस संदर्भ में मैं एक रहस्य का उद्घाटन करना चाहता हूं– सुजानगढ के श्रावक जेसराजजी कठौतिया कभी-कभी जो बात कहते, वह पूरी तरह से घटित हो जाती थी। उन्होने पूज्य कालूगणी के दिवंगत होने के बाद एक दिन मंत्री मुनि से कहा-- 'कालूगणी के पाट पर हमें श्रेष्ठतर आचार्य मिले है और मिलते रहेंगे। पर आपकी पीढ़ी ऊत जाएगी-- आप अपने पीछे आप जैसे व्यक्ति तैयार नहीं कर सकेंगे।'

कठौतियाजी की वह बात सही प्रमाणित हुई। मंत्री मुनि में जितनी क्षमताएं या विशेषताएं हमने देखीं, उन सबको अपने व्यक्तित्व में समेटने वाला कोई एक व्यक्ति उनके बाद नहीं मिला। मंत्री मुनि का दायरा बहुत विशाल था और उनका दायित्व बहुत बड़ा था। पूज्य कालूगणी के पास पहुंचने वाले लोग ही पहुंचते थे, शेष सब लोगों को संभालने वाले मंत्री मुनि थे। देश भर से आए पत्रों को देखना, उनका काम था। चातुर्मास्य, मर्यादा-महोत्सव आदि के लिए क्षेत्र के चयन में उनका चिन्तन प्रमुख रहता था। रास्ता कौन-सा हो, व्याख्यान का स्थान कहां हो ? हाजरी कहां हो ? दीक्षा कहां हो ? आदि कार्यों में उन्हीं को निर्णायक माना जाता था। दीक्षार्थी भाई-बहनो को योग्यता का प्रमाण-पत्र भी उन्हीं से प्राप्त करना होता था। वैसी स्थिति में उनका स्थान कोई पा सके, ऐसे दूसरे व्यक्ति की कल्पना ही नहीं की जा सकती। फिर भी मुनि चम्पालालजी ने एक सीमा तक उनका स्थान ले लिया। कौन व्यक्ति कितना लोकप्रिय होता है, यह बोध उसके जाने के बाद होता है। वि॰ सं॰ २०३२ मिगसर कृष्णा त्रयोदशी के दिन लाडनूं सुजानगढ के पास 'धा' नामक ग्राम मे उन्होने अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर ली। ६८ वर्षो की

अवस्था में उनमें जो जोश और उत्साह था, वह अनूठा था। वे चले गए। उनका स्थान भी अभी तक कोई नहीं ले पाया।

मुनि चम्पालालजी के मन में तीन बातें थीं--

o मैं कभी स्थिरवासी नहीं बनूं।

o मैं कभी परवश नहीं बनूं।

o मेरी अंतिम समाधि विश्वभारती में हो।

सरल व्यक्ति मन से जो कामना करता है, उसकी पूर्ति असंदिग्ध रूप से हो जाती है। मुनि चम्पालालजी की तीनों इच्छाएं फलीभूत हुई, ऐसा अवसर किसी सौभाग्यशाली को ही उपलब्ध हो पाता है।

गुणीजनो का गुणोत्कीर्तन, इतिहास की सुरक्षा और संघीय संस्कारों की विरासत को भावीपीढ़ी तक पहुंचाना-- इस उद्देश्य से तेरापंथ धर्मसंघ में कुछ विशिष्ट परम्पराएं स्थापित हुई हैं। इस कारण से संघ के आचार्यो, तपस्वी साधु-साध्वियों स्थविरों और विशिष्ट व्यक्तियों के जीवनवृत लिखे गए। श्रीमज्जयाचार्य ने आचार्य भिक्षु का जीवनचरित्र-- 'भिक्खू जस रसायण' लिखा। इसी क्रम मे अनेक साधुओं और साध्वियों की प्रशस्ति में भी बहुत लिखा। पूर्वाचार्यो द्वारा स्थापित परम्पराओं का अनुसरण कर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव करता हूं। मैंने पूज्य गुरुदेव कालूगणी के जीवन को उजागर करने के लिए कालूयशोविलास लिखा। डालिमचरित्र और माणकमहिमा नामक ग्रन्थ लिखे। इसी क्रम में मगनचरित्र , मां वदनां, मातुश्री छोगांजी का 'छवढालियो' आदि की रचना की। मुनि चम्पालालजी का जीवन भी उसी कोटि का रहा। मेरी इच्छा थी कि उनके जीवन-काल में ही उनके बारे में कुछ लिखूं। पर उनके आकस्मिक स्वर्गवास के कारण यह इच्छा पूरी नहीं हो पाई। उनका स्वर्गवास होने के कुछ समय बाद ही मैंने कलम हाथ में उठाई। कुछ पृष्ठ लिखे। अवरोध आ गया। कभी यात्रा, कभी अन्य कार्यो की व्यस्तता और कभी सृजन के अनुकूल मानसिकता का अभाव। सोलह वर्षो का लम्बा अन्तराल पारकर मेरा संकल्प पूरा हुआ। उसकी निष्पत्ति है मुनि चम्पालालजी का जीवन-वृत्त—सेवाभावी।

'सेवाभावी' मुनि चम्पालालजी का पर्याय शब्द बन गया था। इस बात को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत कृति का नाम 'सेवाभावी ' रखा गया है। इसकी संरचना में श्रमण सागर, जो सेवाभावीजी का अभिन्न अंग बनकर रहा, द्वारा

लिखित एवं संकलित सामग्री का यथेष्ठ उपयोग किया गया है। कुछ साधुओं के अनुभव एवं संस्मरण भी सहायक बने हैं। बहुत-सी बातें ऐसी थीं, जिनका मैं साक्षात् द्रष्टा रहा हूं। इन सबका योग और इनके साथ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की तत्परता से यह काम पूरा हो सका। अन्यथा संभावित विलम्ब को टालना मुश्किल था। एक बार कृति का निर्माण होने के बाद चुने हुए साधु-साध्वियों की उपस्थिति में एक बार इसका वाचन किया। वाचनकाल में आए सुझावों को ध्यान में रखकर पूरी कृति में दूसरी बार परिष्कार किया गया। परिष्कृत कृति की पाण्डुलिपि तैयार करवाने से लेकर इसके सम्पादन का पूरा दायित्व साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने वहन किया है। उसकी रुचि कहूं या दायित्व की प्रेरणा, मेरे हर साहित्य के साथ उसका सहज योग जुड़ा रहता है। यह सबके लिए प्रसत्ति का विषय है।

छापर (राजस्थान) आचार्य तुलसी
२५ दिसंबर १९९२

सम्पादकीय

इतिहास स्वयं को दोहराता है। तेरापंथ धर्मसंघ की प्रथम शताब्दी में चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य और उनके दो सहोदर भाई मुनि स्वरूपचन्दजी और मुनि भीमराजजी दीक्षित हुए। दूसरी शताब्दी में आचार्य तुलसी और आपके अग्रज मुनि चम्पालालजी दीक्षित हुए। जयाचार्य ने दूसरी शताब्दी में मुनि स्वरूपचंदजी के जीवन पर लेखनी चलाई। आचार्यश्री ने तीसरी शताब्दी में मुनि चम्पालालजी का जीवन-वृत्त लिखा। जयाचार्य का युग तेरापंथ में नए क्षितिज खोलने वाला रहा। आचार्य तुलसी का युग भी नए-नए आयामों का उद्‌घाटन कर रहा है। जयाचार्य ने अपने समय में साढे तीन लाख पद्य परिमाण साहित्य लिखा। आचार्य तुलसी के साहित्य की स्रोतस्विनी अब तव प्रवहमान है। इसलिए उसे निश्चित आंकडों में प्रस्तुति देना संभव नहीं लगता। जयाचार्य का युग राजस्थानी भाषा का युग था। उनका पूरा साहित्य उसी भाषा में लिखा हुआ है। आचार्य तुलसी ने संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी—तीनों भाषाओं में अनेक विधाओं में साहित्य का सृजन किया है। आपकी सृजन-शृंखला की एक सद्यस्क कड़ी है—सेवाभावी।

सेवा मानवीय गुण है। सेवा व्यक्तित्व को ऊंचाई देने वाला तत्त्व है। सेवा के माध्यम से व्यक्ति सबके मन के सिंहासन पर आसीन हो सकता है। किंतु आज परत-दर-परत दबती संवेदना से सेवा की भावना का लोप होता जा रहा है। सम्बन्धों के रेशमी धागे कच्चे सूत की तरह टूट रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में उदारता, कर्त्तव्यपरायणता और सेवाभावना के संस्कारों को उजागर करने वाली कृति 'सेवाभावी' बहुत प्रासंगिक बन रही है।

साहित्य के क्षेत्र में जीवनी-साहित्य का अपना विशिष्ट स्थान है। प्राकृत और संस्कृत भाषा में साहित्य की इस विधा में बहुत कुछ लिखा गया है। हिन्दी में भी खंडकाव्य और प्रबंधकाव्य के रूप में इस साहित्य की अनेक धाराएं प्रवाहित हुई हैं। तेरापंथ के साहित्यकारों—आचार्यों और साधु

साध्वियों ने भी संघ-विशिष्ट व्यक्तित्वों को विषय वस्तु दनाकर निर्बाध रूप से अपनी लेखनी चलाई है। जयाचार्य ने एक ओर आचार्य भिक्षु जैसे महनीय महापुरुष का जीवन-चरित्र—'भिक्खू जस रसायण' लिखा। दूसरी ओर उन्होंने अनेक साधु-साध्वियों के बारे में मुक्त मन से लिखा है। उनके इस कोटि के साहित्य मे 'हेमनवरसो', 'सरूपनवरसो', 'सरदारसुजस' आदि उल्लेखनीय हैं। जयाचार्य ने आचार्य भिक्षु को साक्षात् देखा नहीं था। उनको उनके सान्निध्य में रहने का सुअवसर नहीं मिला था, फिर भी उन्होंने उनके जीवन पर जो शब्दचित्र बनाया है, वह किसी प्रत्यक्षदर्शी से कम प्रामाणिक और प्रभावी नहीं है।

आचार्य तुलसी ने सबसे पहला जीवन-चरित्र लिखा—'कालूयशोविलास'। आचार्य तुलसी को आचार्य कालू के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला। सान्निध्य तो बहुत छोटी बात है, आपके जीवन का कण-कण कालूगणी के आभामडल से प्रभासित बना हुआ है। ग्यारह वर्षो की छोटी-सी अवधि में आपने उनका जितना निकटतम सामीप्य और अनंत वात्सल्य पाया, वह अनिर्वचनीय है। आपने जिस रूप मे उसे अभिव्यक्ति दी है, राजस्थानी साहित्य जगत् का वह एक देदीप्यमान नक्षत्र है। कालूयशोविलास की रचना जिन क्षणो में हुई, वे क्षण विलक्षण थे। इसी कारण ऐसा विशिष्ट काव्य निर्मित हो सका। काव्यशास्त्र के नियम उसे काव्य की कोटि मे लेंगे या महाकाव्य की कोटि में, शास्त्रीय कषोपल के विशेषज्ञ सोचें। मैं तो उसे किसी भी मूल्य पर महाकाव्य से कम मानने को तैयार नहीं हूं। मेरे अभिमत में जिनको भी संदेह हो, वे एक बार उस महाकाव्य का आस्वाद लें। संभवतः उस सृजन की ऊंचाई के सामने मेरा अभिमत भी बौना प्रमाणित हो।

कालूयशोविलास के उत्तरकाल मे डालिम चरित्र, माणक महिमा, मगन चरित्र, मां वदनां जैसी अनेक कृतिया आचार्यश्री ने लिखीं। प्रत्येक कृति अपने आपमे महत्त्वपूर्ण है, पर कालूयशोविलास तो अपने ढंग का एक ही है। आचार्यश्री की सृजनयात्रा जिस तीव्र गति से होती रही है, 'सेवाभावी' कृति का निर्माण बहुत वर्षो पहले हो जाना चाहिए था। पर पता नहीं क्या हुआ, यह यात्रा लम्बी होती चली गई। जैसे-जैसे समय बढ़ता गया, आचार्यश्री अपने सृजन के प्रति तटस्थ होते गए। बीच में अनेक बार सृजन को गति देने का मानसिक संकल्प जगा, पर कुछ ऐसे अपरिहार्य काम सामने आते गए

कि संकल्प की दिशा में बदलाव आवश्यक हो गया। साहित्य की कोई भी यात्रा हो, उसके प्रारम्भ और सम्पन्नता के बीच अंतराल अधिक होता है तो समरसता में अंतर आना अस्वाभाविक नहीं है। आचार्यश्री ने तीव्रता के साथ इस सचाई का अनुभव किया। जब तक मन के अनुकूल रचना नहीं होती है, आपको संतुष्टि नहीं होती। परिणामस्वरूप उसके परिमार्जन का सिलसिला चलता रहता है। जिस समय आप सृजन करते हैं उसमें इतने लीन हो जाते हैं कि भोजन, विश्राम या और कोई भी काम करते हों, भीतर-ही-भीतर सृजन होता रहता है। उसकी अभिव्यक्ति तब होती है, जब आप बीच में ही कलम हाथ में लेकर अन्तर्भूत रचना को कागज पर उतार देते हैं।

'सेवाभावी' आख्यान के निर्माण में कई वर्षों का समय लगा तो इसके परिष्कार में कई महीनों का समय लग गया। इसकी प्रथम पाण्डुलिपि और अंतिम पाण्डुलिपि को मिलाया जाए तो रात-दिन का अंतर दिखाई देता है। परिष्कार और परिवर्तन की यह प्रक्रिया आचार्यश्री के लिए बहुत आनंदप्रद होती है। अनेक साहित्यकार अपनी रचना के एक शब्द को भी बदलना नहीं चाहते। उनकी रचना में निखार की संभावनाओं के द्वार बंद हो जाते हैं। आचार्यश्री परिवर्तन करते-करते थकते ही नहीं हैं। यही कारण है, आपकी रचनाओं में उत्तरोत्तर प्रौढ़ता आती जाती है।

सेवाभावी एक आख्यान है। इसके चरित नायक हैं—मुनि चम्पालालजी। आचार्यश्री के ज्येष्ठभ्राता होने के कारण उनकी प्रसिद्धि 'भाईजी महाराज' इस नाम से अधिक हुई। सेवा उनके जीवन का विशिष्ट गुण था। इस गुण के कारण वे 'सेवाभावीजी' कहलाए। आचार्यश्री के ज्येष्ठ भ्राता होने का गौरव उन्हें सहज प्राप्त था। पर वे अपनी उदारता, श्रमशीलता, मिलनसारिता और सेवाभावना आदि गुणों के कारण प्रतिष्ठित हुए। उनकी लोकप्रियता का एक ही साक्ष्य काफी है कि उनके स्वर्गवास के सतरह वर्ष पूरे होने के बाद भी लोग उन्हें भूल नहीं पाए हैं। उनका जीवन आचार्यश्री के जीवन से गुंथा हुआ रहा। इसलिए उनके आख्यान में प्रासंगिक रूप से आचार्यश्री के जीवन की अनेक बातें सहज ही आ गई हैं।

तेरह वर्गों में सिमटा हुआ आख्यान 'सेवाभावी' तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास के अनेक पृष्ठों को अपने में संजोए हुए है। आख्यान की भाषा राजस्थानी है। फिर भी इसमे संस्कृतनिष्ठ, हिंदी, गुजराती, अंग्रेजी आदि कई

भाषाओं के शब्द प्रयुक्त हैं। कवि और साहित्यकारों की ऐसी उदार मनोवृत्ति ही किसी भाषा को अधिक समृद्ध बना सकती है। आख्यान के उपसंहार में हिंदी और प्राकृत के पद्य हैं, जो भाषायी आग्रह की दीवार को ही ढहा देते हैं। भाषा से भी अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है—भाव। जो साहित्य और काव्य समाज के विचार-प्रवाह को नयी दिशा न दे सके, उनकी उपयोगिता के आगे प्रश्नचिह्न लग जाता है। पाठक की आंखों के सामने से अक्षर वह जाएं और वे उसके जीवन को प्रभावित न कर पाएं, ऐसी रचना दूसरी बार पढ़ने की इच्छा कैसे होगी ? संस्कृति और उदात्त जीवनमूल्यों को पिरोकर व्यक्ति या समाज पर प्रभाव छोड़ने वाली रचनाएं ही कालजयी वन सकती है।

आचार्यश्री की रचनाएं सौन्दर्य के साथ सत्य और शिव का दर्शन देती हैं। यही कारण है, उन्हें जितनी बार पढ़ा जाता है, रस बढ़ता है। आपकी रचनाओं को लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग अधिक सशक्त बना देते हैं। प्रस्तुत कृति में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियाँ —

- पलणे पूत पिछाणां
- ढलसी नीर निवाणां
- बिना बत्ती चानणो
- कुटिल कर्म री थ्योरी
- आंख मूंद अंधारो
- कोटवाली तो गाम सिखावै
- छोटी रात बड़ी रामत

सेवाभावी में एक गृहत्यागी विरक्त संत का जीवन-चरित्र गुम्फित है। संसार में पग-पग पर ऐसे निमित्त बिखरे पड़े हैं, जो व्यक्ति को विरक्ति की दिशा में ले जाएं। उन निमित्तो के बीच रहकर भी जो लोग अपने वैराग्य को उद्दीपन नहीं दे पाते, उनको सामने रखकर कहा गया है—

लग्यो भोग री लार रोगमय, है संयोग वियोगी।
विभव पराभव की परछाया, आ काया के जोगी !
छिन में देखावै छेह जी
निर्मोही निपट निनेह जी
तो भी नहीं विराग-जाग, गति करमां री पितवाणां हो।।

कोई भी व्यक्ति साधु बनता है, वह पलायन नहीं करता। उसके सामने

एक निश्चित लक्ष्य होता है। उसके परिजन भी उसे लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते हैं। मुनि चम्पालालजी की दीक्षा के प्रसंग में मां और ज्येष्ठभ्राता उनको सीख देते हुए कहते हैं—

मोहन भाई वदनां माई बोलै. वचन अमामा,
अटल निभाईज्यो गुरु-आणा, आणा जीवन जामा,
सीखीज्यो विनय विवेक जी
नहि मिलै ओलमो एक जी
कुल उजवाळो गण उजवाळो मंगल मोद मनावां हो।।

मुनि चम्पालालजी विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे। साधु बनने के बाद भी उनका यह स्वभाव समय-समय पर अभिव्यक्त होता रहा। उनको अपनी जन्मभूमि से बहुत अधिक लगाव था। वे उसके बारे में ऐसी-वैसी बात नहीं सुन सकते। उनके साथी संत इस बात को लेकर कई बार उनसे विनोद कर लेते थे। कभी-कभी उनका वह विनोद पद्यों में होता था। आचार्यश्री ने विनोद के कुछ प्रसंगों को यथावत् प्रस्तुत कृति में उद्धृत किया है। एक बार मुनि चांदमलजी ने उनसे कहा—

लाडनूं में कांटा-भाटा, सुजानगढ में सी।
बीदासर में दूध मिश्री, घोल घोल पी।।

मुनि चम्पालालजी ने इस कथन के प्रति नाराजगी प्रकट की। फिर भी वही बात बार बार सुनने को मिली तब वे बोले—

संतां ! गरज दूध री पालै, लाडनूं रो पाणी।
शिमलै री छूट्योड़ी आवै, सीधी हवा सुहाणी।।
ईर्या समिति देखकर चालो, चेतावै ए कांटा।
आसपास रा शहर बसावै, लाडनूं रा भाटा।।

सामान्यतः यह अवधारणा है कि अग्रगण्य साधु-साध्वियों के लिए 'राम-चरित्र' सीखना आवश्यक है। मुनि चम्पालालजी एक बार रामचरित्र सीख रहे थे। मुनि सोहनलालजी ने विनोद के लहजे में कहा—

रामायण मूंडै करस्यूं, अब आगेवाण विचरस्यूं,
खांधै पर ओघो धरस्यूं, कर अभिमान मान मान।
संतां ! चम्पक मुनि रामायण सीखै, जान, जान, जान।।

मुनि चम्पालाल जी को यह मजाक अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सोहनमुनि को सम्बोधित कर कहा—

अब रामचरित मंडासी, गणिवर ढालां फरमासी,
चम्पो भी कण्ठ मिलासी, मधुरी तान, तान, तान।
सोहन मुनि ! मत करो मसखरी, संत सुजान, जान, जान।।

वि० सं० १६६३ में कालूगणी का चातुर्मास्य गंगापुर था। वहां उनके हाथ की तर्जनी अंगुली में एक व्रण हो गया। व्रण क्या था, काल का संकेत था। अनुभव वृद्ध ...श्री मुनि ने उस समय संघ की भावी व्यवस्था के लिए निवेदन किया, वह प्रसंग बहुत ही मार्मिक है। दो पद्य यहां प्रस्तुत हैं—

मघवा माणक स्यूं, डालिम स्यूं मांग करी मनचाही,
वा ही मांग आप स्यूं करणी पड़ै आज अणचाही,
वाणी बणी अबोल, चवाणो मजबूरी रो मावो।
युवाचार्य बगसावो।।
बोल्यां विरह सतावै अणबोल्यां अमूझणी आवै,
ओढ्यो जो दायित्व मनै बरबस वाचाल बणावै,
आ म्हारी दुविधा अन्दरूणी गुरुवर ! आप मिटावो।
युवाचार्य बगसावो।।

मुनि चम्पालालजी समय को पहचानते थे। किस समय किस व्यक्ति को कैसे बोध देना चाहिए, इस कला में वे माहिर थे। आचार्यश्री चाड़वास से विहार कर बोथियासर पधारे। वहां पानी की कमी थी। यात्रियों के सामने कठिनाई खड़ी हो गई। मुनि चम्पालालजी ने गांव के चौधरी बंधुओं को कैसे समझाया ? उस समय का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

चाड़वास इकीस दिन अरु मास छापर वास है,
बोथियासर में न जल, चम्पक करी समझास है।
चौधर्यां ! दिल बडो राखो गुरां रो कद आवणो,
खुली कुण्डा मिल्यो पाणी कारगर समझावणो।
रात ही धनघोर बरसा, कुण्ड पाणी स्यूं भर्या,
चौधर्यां री रही बाजी सभी का कारज सर्या।
ग्रामवासी भाइजी महाराज रा लै बारणा,
सहज संतां रै प्रतै बण गई ऊंची धारणा।

मुनि चम्पालालजी राठौड़ी वृत्ति के व्यक्ति थे। वे सुस्त व्यक्तियों के पराक्रम को कैसे जगा देते थे, इसका एक उदाहरण है—

राजाणै स्यूं बसुगढ बिच मे लुटग्यो गेणो सोहागण को,

डुंगजी ठाकर की चौकी में, बोल्यो चम्पक देतो ठणको।
दिन दाड़े मुनि पदयात्रा में एहड़ी चोर्‌यां होणे लागी,
खड़को-भड़को कोनी जाणे रंग रजपूती रोणै लागी।।
ऊठ्यो डुंगजी कर हणहणाट, चोरी पकड्यां ही घर आस्यूं,
चाल्यो हथियार लियां हाथे, गेणो सारो वापस लास्यूं।
सिंझ्या पेली खर खोज काढ गेणो बाई नै संभलायो,
माफी मंगवा चोरी छुडवा भाईजी रै चरणां ठायो।।

सेवाभावी जी का जीवन विविधताओं का संगमस्थल था। आचार्यश्री ने उनके प्रायः सभी रूपों का कहीं संक्षिप्त और कहीं विस्तृत वर्णन कर पूरी कृति को एक सूत्र में बांधकर रखा है। इसके पाठक एक वर्ग पढने के बाद दूसरे वर्गों को पढ़े बिना रह ही नहीं पाएंगे। इसमें एक ओर संघीय इतिहास उजागर होता है तो दूसरी ओर व्यापक सम्पर्को की जानकारी प्राप्त होती है। देश के ख्यातनामा साहित्यकार, पत्रकार, समाजनेता, धर्मनेता, राजनेता आदि सभी वर्गो के व्यक्तियो से उनका सम्पर्क हुआ। एक व्यक्ति के इतिहास ने अनायास ही अनेक व्यक्तियों को इतिहास के परिप्रेक्ष्य तक पहुंचने का अवसर दे दिया। कुछ घटनाओं की प्रस्तुति इतनी सजीव है; जिसे पढ़कर लगता है मानो सभी कुछ अभी घटित हो रहा है। इतिहास के कुछ अनछुए प्रसंग भी इसके साथ जुड़े हुए हैं। कुछ प्रसंग अत्यन्त संक्षिप्त हैं। इस कारण परिशिष्ट में सांकेतिक घटनाओं को थोड़ा-सा स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

सेवाभावी एक चरितकाव्य है। इसमें विविध छन्दों और रागिनियों का प्रयोग हुआ है। इसके तेरह वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग का आरंभ और अन्त एक ही रागिनी से हुआ है। वह रागिनी आगे से आगे संक्रमण करती हुई प्रत्येक वर्ग में अपनी उपस्थिति से पाठकों के मन को मुग्ध कर रही है। वह रागिनी है—मारूजी ! थांरै देश में आ रेलगाडी आई। इस रागिनी का आचार्यश्री ने कई व्याख्यानों में उपयोग किया है। भरत-बाहुबलि के आख्यान में इस रागिनी में रचित ध्रुवपद की प्रथम पंक्ति है—आदीश्वर सुत रै सामनै आ नई समस्या आई। प्रस्तुत कृति में इन्हीं बोलों को उद्धृत किया गया है। इस मुख्य रागिनी के अतिरिक्त इसमें सतरह रागें और प्रयुक्त हुई हैं। शोध की दृष्टि से पढ़ने वालो की सुविधा के लिए यहां उनका संकलन किया गया है—

- शासन कल्पतरु
- धरम रा धोरीजी गोयम जिन जोड़ीजी

- संयममय जीवन हो
- म्हानै सिरियारी रो सन्त प्यारो-प्यारो लागै
- नमूं अनन्त चौबीसी
- स्वामी भीखणजी रो नाम
- भादूड़ी तेरस आई है
- नीलै घोड़े रा असवार
- तेरापथ नायक ! दान दया थिर थापो
- सुभूपति आय मिल्यो
- हठीला कानजी ! छल्लो मैं नहीं छोडूं
- वन्दना लो झेलो
- म्हानै घणो सुहावै जी
- आयो शरण तिहारै हो
- प्रभो ! यह तेरापंथ महान
- आज म्हारै गुरुवर रो, लागै अंग अडोळो
- शासन है नन्दनवन

उक्त रागिनियों के अतिरिक्त इसमें दोहा, सोरठा, लावणी, चौपाई, गीतक, कलश, रामायण और मुक्त छन्द—इन आठ छन्दों का प्रयोग हुआ है। कुल मिलाकर यह कृति छन्दों और रागिनियों का ऐसा समा बांधती है कि गायक और श्रोता—सभी को आत्मविभोर बना देती है। इसमें जिन रागिनियों का चयन किया गया है, वे इतनी सहज और सरल है कि संगीतकला के पारगामियों की तरह सामान्य अभ्यासी भी इससे लाभान्वित हो सकते हैं।

आचार्यश्री की साहित्यचेतना से जुड़कर मैंने अपनी चेतना में नयी स्फुरणा का अनुभव किया है। संपादन तो एक बहाना है। सहज रूप में सम्पादित महापुरुषों की कृतियों का क्या सम्पादन ? पर इस माध्यम से आचार्यश्री के अनुभवों की सम्पदा की एक झलक पाने का सौभाग्य उपलब्ध हो जाता है। मुझे जो कुछ मिला, उसका रसास्वादन केवल मैंने ही नहीं किया, साध्वी जिनप्रभाजी, कल्पलताजी, चित्रलेखाजी आदि साध्वियां मेरी हमयात्रा में बराबर संभागी रही हैं। इन साध्वियों को भी ऐसे अवसर बार-बार मिलते रहें, उनके श्रम का यही पारितोषिक उन्हें रुचिकर होगा, ऐसी आशा है।

श्रमणसंस्कृति में श्रम, समर्पण और भावात्मक विकास का विशेष मूल्य है। आचार्य तुलसी श्रमण परम्परा के सक्षम संवाहक हैं। आपने अपनी कृति 'सेवाभावी' में श्रम के स्वस्तिक रचे हैं, समर्पण की ऋचाएं पढ़ी हैं और बौद्धिकता के वियावान में भावात्मक सम्बन्धों की सुषमा बिखेरी है। सहज, सरल, सरस राजस्थानी भाषा में गुम्फित यह जीवन-चरित्र अपने पाठकों के संस्कारों की डाली पर नए गुलाब खिलाएगा, ऐसा विश्वास है।

छापर
२५ दिसंबर १९९२

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

विषय-वस्तु

'सेवाभावी' एक ऐसे व्यक्तित्व की कहानी है, जिन्होंने सेवा के हिमालय पर आरोहण कर 'सेवाभावी' सम्बोधन प्राप्त किया। ज्ञान, ध्यान, तपस्या, साहित्य-साधना आदि के माध्यम से व्यक्ति महान् बनते हैं। पर वे उनसे भी अधिक महान् होते हैं, जो सेवा को ही परम आदर्श मान उसके प्रति समर्पित हो जाते हैं। जो व्यक्ति सेवाभावी होते हैं, वे अपने एक इसी गुण से सबके आत्मीय बन जाते हैं। सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी का जीवन अनेक घटकों से समायोजित था। आचार्यश्री तुलसी ने उनके जीवन-वृत्त को लिखकर एक बहुआयामी इतिहास को सुरक्षित रख लिया। इस इतिहास के आयाम विस्तार के कारण पाठक की स्मृति से फिसल न जाएं, इस उद्देश्य से प्रत्येक वर्ग की विषय-वस्तु का संक्षिप्त आकलन प्रस्तुत किया जा रहा है—

वर्ग १

मंगलवचन। अभिधेय। पारिवारिक परिचय। चम्पालालजी का जन्म। गजमलजी का प्रभाव। परिवार की आर्थिक स्थिति। गजमलजी का स्वर्गवास। कुछ निमित्तों से वैराग्य का बीजवपन। पिता झूमरमलजी का निधन। पारिवारिक दायित्व की दृष्टि से परदेशगमन। बड़ी बहन की दीक्षा का प्रसंग। वैराग्य की वृद्धि। प्रथम वर्ग के कुल पद्य ४४।

में व्यवस्था। वि॰ सं॰ १९८३ में कालूगणी का लाडनूं-प्रवास। कालूगणी और बालक तुलसी का पारस्परिक आकर्षण। बालक तुलसी को वैराग्य। बहन लाडां के साथ दीक्षा। मुनि चम्पालालजी की सीख। दोनों भ्रातृ-मुनियों की साधना और अध्ययन। इस वर्ग के पद्यों की संख्या ३७।

वर्ग ३

वि॰ सं॰ १९८३ का चातुर्मासिक प्रवास गंगाशहर। स्थविर मुनि पृथ्वीराजजी और डायमलजी के पास आगमों का अध्ययन। सं॰ १९८९ में गणेशदासजी गधैया के निवेदन पर सेवाभावीजी की सरदारशहर यात्रा। सरदारशहर में एक महीने का प्रवास। सेवाभावी जी की विनोदी प्रकृति। कुछ साधुओं के साथ विनोद के मधुर प्रसंग। इन प्रसंगों की पद्यमय अभिव्यक्ति के १५ पद्य तथा इस वर्ग के २८ पद्य।

वर्ग ४

सेवाभावी जी के जीवन मे सेवाभाव, विनय, अनुशासन, श्रम, मिलनसारिता आदि विशेषताओं का उभार। दोनों भाइयों द्वारा यात्रा की प्रार्थना। मरुधर की यात्रा का प्रारम्भ। सं॰ १९९१का चातुर्मास जोधपुर। सं॰ १९९२ का चातुर्मास उदयपुर। वहां से मालवा की यात्रा। मालवा से पुनः मेवाड़ आते समय कालूगणी की अंगुली में व्रण का उद्भव। गंगापुर चातुर्मास्य। व्रण का विस्तार। मंत्री मुनि द्वारा अग्रिम संघ व्यवस्था का निवेदन। कालूगणी की इच्छा। कालूगणी और मन्त्रीमुनि का वार्तालाप। मुनि तुलसी को युवाचार्य का पद। चार दिनों बाद कालूगणी का स्वर्गवास। पद्यों की संख्या ५८।

वर्ग ५

कालूगणी का अन्तिम संस्कार। आचार्य तुलसी का पट्टारोहण समारोह। उस उपलक्ष्य में बक्सीसें। श्रावक गणेशदासजी गधैया द्वारा मुनि चम्पालालजी के लिए नया सम्बोधन—भाईजी महाराज। चातुर्मास्य के बाद भाईजी महाराज का स्वतन्त्र साझ। लाडांजी का आना। ब्यावर मर्यादा-महोत्सव। बीदासर में मातुश्री-छोगांजी की संभाल। मातुश्री वदनांजी की दीक्षा का वातावरण। बीकानेर में महाराजा गंगासिंहजी की स्वर्णजयन्ती का प्रसंग। उनकी प्रार्थना पर बीकानेर

चातुर्मास। केसरबाई रामपुरिया द्वारा चातुर्मास का पूरा दायित्व स्वीकार करना। ताराचन्दजी, केसरचन्दजी बोथरा की व्यवस्था। ईशरचन्दजी चोपड़ा का प्रभाव। दीक्षा महोत्सव में ३१ दीक्षाओं का कीर्तिमान। मातुश्री वदनांजी की दीक्षा। स्थानकवासी सम्प्रदाय के युवाचार्य गणेशीलालजी के प्रसंग में आचार्यश्री का दूरदर्शितापूर्ण निर्णय। राजदरबार और पूरे शहर में उसकी अनुकूल प्रतिक्रिया। पद्यों की संख्या ४६।

वर्ग ६

गंगाशहर में मर्यादा-महोत्सव। फाल्गुन में बीदासर में दो माताओं का मंगल मिलन। चूरू में भाईजी महाराज को कुछ और बक्सीसें। साधुओं के साथ भाईजी महाराज का सरदारशहर होते हुए रतनगढ आगमन। रतनगढ मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर आयोजनों के लिए स्थान आदि की व्यवस्था संभालने का दायित्व। वणी के सन्त कन्हैयालालजी और मुनि कनक का प्रसंग। चिकित्सा के लिए भाईजी महाराज का गंगाशहर प्रवास। बम्बई के गोकुलदास भाई गांधी और पंडित लालन का सम्पर्क। सं० १९९८ के मर्यादा-महोत्सव के लिए दो क्षेत्रों की उम्मीदवारी। मातुश्री छोगांजी का स्वर्गवास। सं० १९९९ का चातुर्मास्य चूरू में। आचार्यश्री की अस्वस्थता। पंडित रघुनन्दनजी की चिकित्सा। सं २००० का चातुर्मास्य गंगाशहर। पहली बार कालूयशोविलास का वाचन। बीकानेर नरेश से मिलन। वहां से नोखा होते हुए सीधे लाडनूं पादार्पण। पद्यों की संख्या ६८।

वर्ग ७

वि० सं० २००१ से २००४ तक क्रमशः सुजानगढ़, श्री डूंगरगढ़, राजगढ़ और रतनगढ़ में चातुर्मासिक प्रवास। शक्तमलजी का प्रसंग। मुनि मगनलालजी को मंत्री की उपाधि। कालूयशोविलास वाचन की सम्पन्नता पर भाईजी महाराज का उल्लास। सरदारशहर में मातुश्री की अस्वस्थता के कारण आचार्यश्री [illegible] से पुनः सरदारशहर आगमन। सं० २००३ में साध्वीप्रमुखा [illegible] का स्वर्गवास। साध्वी लाडांजी की साध्वीप्रमुखा पद पर नियुक्ति। भाईजी महाराज के एपेंडिक्स की पीड़ा। पंडित रघुनन्दनजी द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा। भाईजी महाराज का साहस। कृपलानीजी से स्पष्टवादिता। रतनगढ़ के [illegible]

पौरुष-जागरण। मुनि नवलरामजी और साधक हस्तीमलजी का प्रसंग। भाईजी महाराज के साझ का विसर्जन। पद्यों की संख्या ७४।

वर्ग ८

भाईजी महाराज की जयपुर यात्रा। यात्रा के बाद सुजानगढ़ में आचार्यश्री से मिलन। उसी दिन दिल्ली यात्रा की घोषणा। राजलदेसर मर्यादा-महोत्सव के बाद भाईजी महाराज का दिल्ली के लिए प्रस्थान। हरियाणा होते हुए दिल्ली प्रवेश। चातुर्मासिक प्रवास में नये-नये लोगों से सम्पर्क। राजलदेसर का मर्यादा-महोत्सव धर्मसंघ के विकास में नए उच्छ्‌वास का प्रतीक बना। नयी और प्राचीन अवधारणाओं के आधार पर दो खेमों की व्यूहरचना। नयी योजनाएं। नया पाठ्यक्रम। पारमार्थिक शिक्षण संस्था की स्थापना। अणुव्रत आन्दोलन का उद्‌भव। आदर्श साहित्य संघ। साप्ताहिक जनपथ। आचार्यश्री की जयपुर यात्रा। जयपुर चातुर्मास में तेरापंथ धर्मसंघ की व्यापकता। बालदीक्षा का तीव्र विरोध। समाज द्वारा विरोध का मुकाबला। दीक्षा समारोह। चातुर्मास्य के बाद भाईजी महाराज का जयपुर आगमन। सवाई माधोपुर की यात्रा। वनस्थली में राजस्थान के मुख्यमन्त्री हीरालालजी शास्त्री का भाईजी महाराज के साथ वार्तालाप। पद्यों की संख्या ७८।

वर्ग ९

सवाई माधोपुर चोखले में विहार। जयपुर पादार्पण। रामनिवास बाग में मर्यादा-महोत्सव का आयोजन। जयपुर से दिल्ली की यात्रा। दिल्ली में अणुव्रत का प्रथम अधिवेशन। सं० २००७ का चातुर्मासिक प्रवास हांसी में। चातुर्मास्य के बाद भाईजी महाराज की मंत्रीमुनि से मिलने के लिए सरदारशहर की यात्रा। सरदारशहर में मंत्री मुनि और भाईजी महाराज का ऐतिहासिक मिलन। पुनः हरियाणा आगमन। भिवानी में मर्यादा-महोत्सव। भाईजी महाराज की आचार्यश्री के साथ रहने की प्रार्थना और उसका स्वीकार। पंजाब की यात्रा। तेरापंथ के आचार्यों में आचार्यश्री का प्रथम बार दिल्ली चातुर्मास्य। पद्यों की संख्या ७५।

वर्ग १०

दिल्ली, नया बाजार में वि० सं० २००८ का आचार्यश्री का चातुर्मास्य। अणुव्रत आन्दोलन का प्रसार और प्रभाव। वरिष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क। दिल्ली से सरदारशहर की यात्रा। मंत्री मुनि द्वारा वर्धापन। धर्मसंघ में प्रचलित नयी प्रवृत्तियों को लेकर अन्तरंग विरोध का वातावरण। नयी प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में एक सप्ताह तक खुली चर्चा। सं० २००९ का चातुर्मास्य और मर्यादा-महोत्सव सरदारशहर। सं० २०१० का चातुर्मास्य जोधपुर में और मर्यादा-महोत्सव राणावास में। आचार्यश्री को श्वास का प्रकोप और उसका उपचार। बम्बई की यात्रा। सं० २०११ का चातुर्मास्य और मर्यादा-महोत्सव बम्बई। महाराष्ट्र में जैन आगमों के सम्पादन का संकल्प। जालना में दक्षिण के श्रावक समाज को आश्वासन, खानदेश में विहार और मध्यप्रदेश (उज्जैन) में चातुर्मास। सं० २००६ में ऊपर-ऊपर से शान्त अन्तरंग विरोध में उभार। उज्जैन से सीधा मेवाड़ आगमन। गंगापुर में संघीय दृष्टि से आचार्यश्री का साहसिक निर्णय। सरदारशहर में विनय-वात्सल्य के योग से पूरे प्रकरण पर पटाक्षेप। उस सन्दर्भ में मंत्री मुनि और श्रावकों का योगदान। विरोध के मुख्य मुद्दों की सूचना। पद्यों की संख्या ६८।

वर्ग ११

भाईजी महाराज द्वारा आचार्यश्री को सुदूर प्रदेशों की लम्बी यात्रा के लिए अनुरोध। यू० पी०, बंगाल और बिहार यात्रा का निर्णय। मन्त्री मुनि की मनःस्थिति। आचार्यश्री के साथ मंत्री मुनि का संवाद। जयपुर होते हुए आगरा पादार्पण। वहां उपाध्याय अमरमुनि के साथ सौहार्दपूर्ण मिलन। सं० २०१५ का चातुर्मास्य कानपुर। वहां से सैंथिया मर्यादा-महोत्सव कर कलकत्ता चातुर्मासिक प्रवास। कलकत्ता में सर्वोच्च स्वागत और अधमतम विरोध। सं० २०१७ में आयोजित 'द्विशताब्दी समारोह' की दृष्टि से कलकत्ता से केलवा तक साढे तीन हजार कि० मी० लम्बी यात्रा। मंत्री मुनि और मुनि सुखलालजी का स्वर्गवास। बीदासर में मातुश्री वदनांजी के पास अनुशासनात्मक कार्यवाही। बगड़ी में अभिनिष्क्रमण समारोह। केलवा में द्विशताब्दी समारोह का विशाल आयोजन। सं० २०१७ का चातुर्मासिक प्रवास राजसमंद में। आचार्यश्री के पट्टोत्सव दिवस के उपलक्ष्य में भाईजी महाराज को 'सेवाभावी' सम्बोधन। सं० २०१८ बीदासर

और बीकानेर —दो चरणों में धवल समारोह का कार्यक्रम। आसपास के क्षेत्रों की यात्राएं। मोहनलालजी का स्वर्गवास। दक्षिण भारत की यात्रा का प्रारंभ। सं० २०२४ का चातुर्मास्य अहमदाबाद। बम्बई में मर्यादा-महोत्सव तमिलनाडु प्रवास। अन्नामलै विश्वविद्यालय में प्रवचन। कन्याकुमारी पादार्पण। केरल की यात्रा। बैंगलोर चातुर्मास। हैदराबाद का मर्यादा-महोत्सव। उड़ीसा की यात्रा। रायपुर चातुर्मास। अग्निपरीक्षा प्रकरण। दक्षिणयात्रा की सम्पन्नता पर बीदासर में आचार्यश्री को ' युगप्रधान' का अलंकरण। पद्यों की संख्या ५६।

वर्ग १२

भाईजी महाराज की जागरूकता और शरीर को प्रभावित करने वाली बीमारियां। आचार्यश्री की यात्राओं में भाईजी महाराज के कुछ जीवन-प्रसंग। भगवान महावीर की निर्वाण-शताब्दी। स्वास्थ्य परीक्षण का परामर्श। जयपुर यात्रा। भाईजी महाराज के स्वास्थ्य की जांच। ऑपरेशन का प्रसंग। जयपुर चातुर्मास। लाडनूं की ओर प्रस्थान। फतेहपुर में भाईजी महाराज का ६९वां जन्मदिन। शारीरिक दुर्बलता का मन पर प्रभाव। आचार्यश्री से आगे प्रस्थान। भाईजी महाराज की तीन इच्छाएं। सालासर की घटना। अस्वस्थता। 'धां' गांव में महाप्रयाण। आचार्यश्री को सूचना। धां गांव में भाईजी महाराज के पार्थिव शरीर को सम्बोधित कर आचार्यश्री द्वारा कहे गए पद्य। पार्थिव शरीर लाडनूं में। पद्यों की संख्या ८७।

वर्ग १३

संसार की स्थिति का चित्रण। जैनविश्व भारती के परिसर में भाईजी महाराज का अन्तिम संस्कार। स्मृति सभा का आयोजन। उनसे सम्बन्धित विशेष प्रसंग। उनके भक्त श्रावक-श्राविकाएं। उनकी संघीय भावना और उत्साह। उनके आखिरी स्वप्न। सहयोगी साधु। जीवन के सौन्दर्य पर दिठौना। एक दीर्घकालीन संकल्प की संपूर्ति। वर्तमान की प्रासंगिक गतिविधियां। कृति का उपसंहार। पद्यों की संख्या ५२।

सेवाभावी

वर्ग १

दोहा

१. अर्हत सिध आचार्यवर, उपाध्याय अणगार ।
परमेष्ठी-पंचक प्रवर, प्रणमूं वारम्वार ।।

२. मंगल लोकोत्तम शरण, च्यार-च्यार पुनि च्यार ।
भावपूर्ण अभिवंदना, हो म्हारी स्वीकार ।।

३. जैनधर्म धर्माधिपति, जाग्रत देव जिनेन्द्र ।
सदा जनम जनमान्तरे, है मम आस्था केन्द्र ।।

४. समरूं तेरापंथपति, भी॰ भा॰ रा॰ ज॰ महान ।
मघ माणक डालिम सुगुरु, कालू कलानिधान ।।

५. जय-वड़भ्रात सरूपशशि, चंपक तुलसी-भ्रात ।
जुग जोडी[1] जुगती मिली, शासन सदा सनाथ ।।

६. जय कृत 'सरूप नवरसो', है प्रेरक इतिहास ।
सेवाभावी-चरित मैं, लिखूं स्वयं सोल्लास ।।

७. प्रथम-प्रथम पाई प्रवर, 'सेवाभावी' ख्यात[2] ।
'तुलसी' तेरापंथ में, अभिनन्दन की बात ।।

---

१. तेरापन्थ के नौ आचार्यों मे दो ही आचार्य ऐसे हुए हैं, जिनके सहोदर संघ में दीक्षित हुए— जयाचार्य के ज्येष्ठ भ्राता मुनि स्वरूपचन्दजी एव भीमराजजी तथा आचार्य तुलसी के ज्येष्ठ भ्राता मुनि चम्पालालजी।

२. देखें प॰ १, सं॰ १

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणां ।
जीवन-वृत्त बखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो ।। (ध्रुवपद)

८. शहर लाडणूं ओसवंश में गोत्र खटेड़ सुहाणो,
वसै तलहटी[1] धर्मपटी[2] में, नेड़ो धर्म-ठिकाणो,
सतियां जी रो स्थिरवास जी[3],
निशदिन अध्यात्म उजास जी,
ई मूंघै मोलै अवसर रो लाभ उठा सुख माणां हो ।।

९. राजरूपजी रै घर जाया तीन पुत्र वडभागे,
तनसुख शोभा झूमर लारै लाल चंद मल लागे,[4]
दाढ़ी-मूंछाळो सेठ जी,
पेंसो वपु मोटो पेट जी,
शाही ठाट सिराजगंज में पुण्याई रै पाणां हो ।।

१०. देख घराणै- घर री बेट्यां, बेटां नै परणाया,
सब स्यूं छोटा[5] कोठारी कुल रा दामाद कहाया,
पूनम-पुत्री विख्यात जी,
है गेहूं-वरणो गात जी,
वदनां झूमर री वर जोड़ी, उलसित राजल[6] राणां हो ।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१. लाडनूं कस्बा दो भागों में विभक्त है। उसका विभाजक तत्त्व है मध्यवर्ती दड़ा। दड़े के ऊपर का भाग ऊपरवाला वास कहलाता है और नीचेवाला भाग तलहटी कहलाता है।

२. लाडनूं की बसावट बहुत व्यवस्थित एवं सुन्दर है। प्रारंभ में वह आठ पट्टियों के रूप में बसा। उसकी दूसरी पट्टी 'धर्मपट्टी' के नाम से प्रसिद्ध है।

३. वि. सं. १९१४ से लाडनूं में वृद्ध साध्वियों का सेवा केन्द्र है।

४. देखें प. १, सं. २

५. झूमरमलजी

६. राजरूपजी

११. नौ संतानां[1] री मां बाजी वदनां घर-धणियाणी,
सासू सुसरां रो मन राख्यो, जिसी परिस्थिति जाणी,
तब ही स्यूं बढग्यो तोल जी,
राजल रो वचन अमोल जी,
भागण बहुराणी है स्याणी 'पलणे पूत पिछाणां' हो ।।

१२. मोहन खींवो मन्नू भाई, लाडां मोरां बाई,
छट्ठी संख्या में श्रीचम्पक कुल री शोभ बढ़ाई,
उण्णीसै चौसठ साल जी,
मिगसर सुद दसमी भाल जी,
रविवासर निशि सवा नौ बजे जनमै पुण्य प्रमाणां हो ।।

१३. दादोजी रो मरजीदान सुजान लाडलो पोतो,
दादोजी री गोद मोद में खातो पीतो सोतो,
रहती घर में धमचक्क जी,
मनमोजां छक्कमछक्क जी,
इणनै कोई कहण न पावै 'ढळसी नीर निवाणां' हो ।।

१४. भोजन बेळां एक दिवस चम्पक नै मां चिमठायो,
रूठ बेठग्यो बन्दो, अब किण स्यूं नहिं गयो मनायो,
आखिर दादो पुचकार जी,
देखायो प्यार-दुलार जी,
डांट दिखा वदनां नै ज्यूं-त्यूं नीठ बिठायो भाणां हो ।।

गीतक छन्द

१५. राज[2] रो बो राजशाही ठाटबाट रह्यो सदा,
सेठ बुधसिंह सहरवालां[3] की मुनीमी ली जदा ।
लोग कहता घरे राजल राख हाथी बानणो,
पर रहतो सदा घर में 'बिना बत्ती चानणो' ।।

---

१. देखें प० १, सं० ३

२. राजरूपजी

३. अजीमगंज निवासी

१६. जीं दुकाने सेठ[1] बैठै तिण गळी सारा लखै,
मांस-मच्छी लेर वंगाली नहीं नीकळ सकै ।
न्ड़ो रोब सिराजगंज अगंज रूपे राजतो,
बीं समूची एरिया में सुजश-वाजो वाजतो ।।

१७. छोड वंग-प्रदेश उण्णीसै छंयाली देश में,
आ रह्या पुर लाडनूं, उळझ्या न लौकिक क्लेश में[2] ।
घरे वैठ्या पावता पेन्सन, कमाई छोड़ दी,
बदळतै युग में स्वयं सारी दिशा ही मोड़ दी ।।

१८. दुलेच्यां में रोज साथ्यां साथ हुक्को चालतो,
बड़ा-छोटां में अचक्कां हुकम हरदम हालतो ।
सवा सेर सवेर पय बादाम मक्खन पाव भर,
सिरावण होतो हगामां रोजमर्रा री सफर ।।

१६. हाथ पोलो खरच दोलो कमाई पाई नहीं,
आय बिन सूकै सरोवर कर्ज भरपाई नहीं ।
उदासी देखी ससुरजी की, बहू हिम्मत करी,
स्वर्ण-भूषण भरी पेटी बापसा आगै धरी ।।

२०. हाथ पहरी चूड़ियां रा वच्या है दो पात ही,
नहीं किणनै ही बताई, के कहण री बात ही ।
दियो दादा मुदित मन स्यूं मूक आशीर्वाद है,
'फूलसी-फलसी बहू, कबहूं न शोक विषाद है' ।।

२१. सुणो सारा आपणै परिवार रा छोटा-बड़ा,
कभी कोई व्यथा-चिन्ता क्यूं करो बैठा-खड़ा ।
एक भागी जीव आकर जनम ई कुल धारसी,
काज सबका सारसी, परिवार नै उध्दारसी ।।

---

१. राजरूपजी
२. देखें प० १, सं० ४

लावणी

२२. बेहद दादा रो प्यार-दुलार निहारै,
मनमानी करतो चम्पक किणरै सारै।
दिनभर साथीड़ां साथै खूब रमै है,
मनमौज भमै, थाम्यो ही नहीं थमै है ।।

२३. बेवगत-वगत मनचाह्यो खाणो खावै,
वगती-वाई[1] रै आगै धूम मचावै।
म्हाराजी नन्दलालजी री पोशाले,
भणवा घाल्या, पिण नहीं पढ़ाई चाले ।।

२४. लघु-बंधव तुलसी स्यूं हिय हेज घणो है,
गोदी कर ल्यावै राखै वड़ापणो है ।
गीलै आंगणियै छी:छी: पग हो ज्यावै,
भाईजी अधर उठा मां पे पहुंचावै[2] ।।

२५. आ साल तिहोत्तर विद चवदस फागण की,
दादोजी स्वर्ग सिधाया, अब शिर ठणकी-
चम्पक चिल्लावै, टूट्यो धीरज-धागो,
मैं तो म्हारै दादा रो करस्यूं सागो ।।

२६. शमशान घाट में दाग देवतां रोक्या,
दादा नै क्यूं दाझो? सारां नै टोक्या ।
घर आयो तो सारो ही रंग बदळग्यो,
मन उछळकूद स्यूं मायूसी में ढळग्यो ।।

---
१. रसोईदारिन
२. देखें प० ५, स० ५

२७. दिन - गत उदासी में ही वगत वितावै,
संगळिया सागै कूवै[1] न्हावण जावै ।
कूवै रै कोठै भर्यो डबाडब पाणी,
छाजै चढ़ न्हातां फिसळ्या पग आफाणी ।।

२८. ऊंडै पाणी में अवै गुचळक्यां खावै,
मरणो पड़सी बेमौत जियो घबरावै ।
आयुर्वल स्यूं दो-तीन छलांग भरी है,
साथी करसाही काढ्यो, आंख ठरी है ।।

२९. आख्यां आगै अव मौत नाचणै लागी,
चम्पक रै चित वैराग भावना जागी ।
मर ज्यातो गर जीवन बेकार बणातो,
चौरासी रै चक्कर में गोता खातो ।।

३०. ज्यूं-त्यूं गुरुचरण-शरण में बेगो जाऊं,
तो भवसमुद्र मैं विना तरी तर ज्याऊं ।
अस्वस्थ पिता श्री झूमरमलजी होग्या,
तन-मन स्यूं नरवस दुर्वलता में खोग्या ।।

३१. दिन-रात देणदारी रो वोझ सतावै,
वहुपरिवारी सारां रो पोषण चावै ।
आखिर मोहनभाई दस वरसां वय में,
भेज्या देशावर लग्या कमाई लय में ।।

३२. लाडां रो कियो विवाह रु कर्ज चुकायो,
जाणक घर रो 'ऊपरलो पानो आयो' ।
जव छिहंतरै वापूजी स्वर्ग सिधाया,
मोहन खींवो चम्पक विदेश नै धाया ।।

---

१ उस समय वह 'राषावत जी का कुआ' नाम से प्रसिद्ध था, वर्तमान में 'जैनविश्व-भारती' के परिसर में है।

३३. इक साल सिराजगंज भाईजी सागै,
डालिम-बोरड़ चम्पक नै लेग्या आगै ।
व्यवसाय कमलपुर[1] में निज पे करवावै,
सुत-वालू[2] चम्पक दोनूं एकण दावै ।।

३४. हंसता-खिलता दोनूं मिल खेल रचावै,
कूवै नै डाक दड़बड़्यां दौड़ मचावै ।
पग फिसळ्यो बालू रो चम्पक कर-म्हावै
कूवै में गिरतां-गिरतां पकड़ बचावै ।।

३५. कर यात्रा डेढ़ बरस स्यूं चम्पक आवै,
के आवै, आतां ही दिलड़ो दहलावै ।
वा बहिन लाडली लाडां बणी अकेली,
पति हुया दिवंगत, उळझी वड़ी पहेली ।।

३६. देखो दुनिया री आ है चाल दुरंगी,
खिण भर में नंगी खिण में रंगी-चंगी ।
पहलै क्षण जो हंस-हंस कर पेट दुखावै,
दूजै क्षण आंख्यां आंसूड़ा ढळकावै ।।

३७. ब्याही इकोत्तरै लाड-कोड में बाई,
वा सतंतरै विधवा-श्रेणी में आई ।
सतरै वरसां वय अरे ! किशोरी छोरी,
आफत में आई 'कुटिल कर्म री ध्योरी' ।।

३८. चुहिया स्यूं डरती, काल-कलंदर डसग्यो[3],
तकदीर बहन रो किण फन्दै में फसग्यो ।
आखिर श्रीकालू-चरण-शरण पहुंचाई,
किण ही कारण स्यूं दीक्षा होण न पाई ।।

---

१. इस समय बंगला देश में
२. डालमचन्द जी बोरड़ के पुत्र बालचन्द जी
३. देखें प० १, सं० ६

३९. वैराग्य-वृत्ति चम्पक री वृद्धिंगत है,
जब पकै भवस्थिति मिलै शुद्ध संगत है।
मामा-युग सुख[1] नेमी[2] पलासवाड़ी में,
चम्पक नै लेग्या रात्रै उपराड़ी में ।।

४०. अब हमीरमलजी[3] कलकत्ते से आया,
यूं घूम-घूम कर नव-नव अनुभव पाया ।
तिलचट्टै स्यूं चम्पक भारी भय खाता,
आंख्यां देखन हक्का-बक्का रह जाता ।।

४१. जद गया तकादै चैनरूप-कोठारी[4],
वापिस आता आक्रमण हुयो अति भारी ।
गुंडा थैलो नै झपट चलायो छूरो,
पर चैनरूप देखायो पौरुष पूरो ।।

४२. पितु हमीरमलजी सुत-हिम्मत स्यूं हरख्या,
सुत बाल-बाल बचग्यो पुण्याई परख्या ।
इण घटना स्यूं चम्पक रो दिल डोल्यो है,
नश्वर जग अन्तर-घट रो पट खोल्यो है ।।

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणां ।
जीवन-वृत्त बखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो ।। (ध्रुवपद)

---

१. सुखलालजी कोठारी
२. नेमीचन्दजी कोठारी
३ मातुश्री वदनांजी के चाचा
४. हमीरमलजी के ज्येष्ठ पुत्र
* लय: आदीश्वरसुत रै सामनै

४३. दुनियादारी री दुर्घटना हर मानव निरखै है,
खतरै ऊपर खतरा प्रतिदिन सब परतख परखै है,
अति मूर्च्छा रो आवेग जी,
बेहोशी रो कोइ वेग जी,
अथवा आंख मूंद अंधारो, स्याणां बणै अयाणां हो ।।

४४. लग्यो भोग री लार रोगभय, है संयोग वियोगी,
विभव पराभव री परछाया, आ काया के जोगी ![1]
छिन में देखावै छेह जी,
निर्मोही निपट निनेह जी,
तो भी नहीं विराग-जाग, गति करमां री पितवाणां हो ।।



---

१. भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद् भयं,
माने दैन्यभयं बले रिपुभयं रूपे जराया भयं ।
शास्त्रे वादभयं गुणे खलभयं काये कृतान्ताद् भयं,
सर्वं वस्तु भयावह भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम् ।।

वर्ग २

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां ।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

१. दादाजी री डेथ, डूबतां कोठा स्यूं जीवारी,
ताडां दुखिणी देख, चैन री घटना घटी अटारी,
अब पुष्ट हुयो बेराग जी,
दुनिया री दुविधा त्याग जी,
प्राणार्पण गुरु-चरण-शरण में प्रबल भावना भावां हो ।।

२. कलकत्तै स्यूं शहर लाडणूं आयो बेचैनी में,
संयम में मन रम्यो रु संयम जम्यो दृष्टि पैनी में,
संवत अस्सी री बात जी,
मत्तू-सेवा[1] विख्यात जी,
माजी साथ डीडवाणै कालू गुरु दरसण पावां हो ।।

३. पूज्य पधारै अबै लाडणूं चम्पक चेहरो खिलग्यो,
चरण पकड़ बैठ्यो 'मूणू' भाई रो हियड़ो हिलग्यो,
कर लिया थोकडा याद जी,
जो शासण री मरजाद जी,
इक्यासी चूरू चौमासे सचमुच कोड पुरावां हो ।।

लावणी

४. पच्चीस बोल 'पानां री चरचा'[2] सीखी,
तेरादुवार अरु कर्मप्रकृति है तीखी ।
बासठियो बावनबोल गतागत धारी,
पडिकमणो याद कियो कर हिम्मत भारी[3] ।।

---

* लय : आदीश्वरसुत रै सामनै

१. लाडनूं सेवा केन्द्र में उस वर्ष साध्वी मत्तुजी, बीदासर (क्र० सं० ६८४) नियुक्त थीं। वे एक साहसी और निर्भीक साध्वी थीं ।

२. देखें प० १, सं० ७

३. देखें प० १, सं० ८,

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

५. भाद्रव तेरस प्रथम-पजूपण[1] दीक्षा रो दिन धाप्यो,
ज्ञाती न्याती साथ सैकड़ां हर्ष हुयो अणमाप्यो,
हाथी होदे असवार जी,
वरनोळा री धुंकार जी,
हाथी-होदे कदे न चढणो, सुगुरु सीख अजमावां[2] हो ।।

६. लाडां री तैयारी सारी करी-कराई रहगी,
नयन नजर-कमजोरी कारण अंतराय विच वहगी,
चम्पक गुरु-चरणां लीन जी,
संयम पचख्यो संगीन जी,
प्रथम ग्रास लै श्रीकालू-कर चढते अन्तर-भावां हो ।।

७. मोहन भाई वदनां माई बोलै वचन अमामा,
अटल निभाईज्यो गुरु-आणा, आणा जीवन-जामा,
सीखीज्यो विनय विवेक जी,
नहिं मिलै ओळमो एक जी,
कुल उजवाळो, गण उजवाळो, मंगल मोद मनावां हो ।।

+चम्पक सन्त सुखी, जीवन ऊर्ध्वमुखी,
कालू-चरणां लीन रहै ।
पायो शुद्धाचार विचार, गुरु रो बार-बार आभार,
कोई रह्यो न हड़को-धड़को, निश्चै होसी खेवो पार ।। (ध्रुवपद)

---

* लयः आदीश्वर ...
१. पर्युषण पर्व का प्रथम दिन भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी
२. देखें प० १, सं० ६
+ लयः शासन कल्पतरु

८. कुन्दन मुनि री देख-रेख में करै पलेवण पडिकमणो,
शासण रा संस्कार सलूणां सीखै नित नमणो-खमणो,
लागै सब सन्तां नै प्यारो, ज्यांरो सहज-सरल व्यवहार ।।

९. पो महीनां में पांती[1] होई अभयराज-मुनि[2] साझ[3] में,
स्थविरां री सेवा रो दुर्लभ अवसर रहतां राज में,
भारी नाम कमायो, काम जमायो शम श्रम रै आधार ।।

१०. विक्रम उगणीसै बंय्यासी बीदाणै गुरु चौमासो,
वड़माजी छोगांजी रो हो जठै जम्योड़ो स्थिरवासो,
दशवैकालिक याद कियो भाईजी रट-रट बारम्बार ।।

११. अबै पधार्‌या शहर लाडणूं कालू अगहन[4] मास में,
म्हारी हुई भाग-जागरणां या गुरु स्वयं तलाश में[5],
मझ मारग में फणधर फिर्‌यो दाहिणो शकुन सुमंगलकार[6] ।।

चौपाई

१२. समवसर्‌या पुर में सौभागी,
समवसरण-सी रचना लागी ।
गळी-गळी घर-घर इक वाणी,
भेंटां चरण भाग्य-सहनाणी ।।

---

१. आहार-पानी का विभाग
२. मुनि अभयराजजी, बोरावड़
३. गुरुकुलवास में साधु-साध्वियों का वर्ग साझ कहलाता है और बहिर्विहार में सिंघाड़ा कहलाता है।
४. मृगशर
५. देखें प॰ १, सं॰ १०
६. देखें प॰ १, सं॰ ११

१३. सेवार्थी आगूंच हि आवै,
आसपास डेरा लग ज्यावै ।
लंगाटेर लगी जनता री,
दिनभर चहल-पहल-सी भारी ।।

१४. सूरत देख आंख नहिं धापै,
सुण वच श्रवण क्षुधा अति व्यापै ।
चित चावै गुरुवर बतलावै,
रसना सहज प्रशंसा गावै ।।

१५. औरां री के वात करूं मैं,
अपणो अनुभव आज स्मरूं मैं ।
मो-मन सम्मोहन-सो जाग्यो,
वलि-वलि आतो भाग्यो-भाग्यो ।।

१६. खड़ो-खड़ो बाहर स्यूं झांकूं,
गुरु-आकृति आंख्यां स्यूं आंकूं ।
अपलक अनिमिष-सो वण ज्याऊं,
अकथ अलख आनन्द उपाऊं ।।

१७. मां वदनां स्यूं वा वचकाणी,
बात ख्यात में खरी खताणी[1] ।
याद कियां हांसी-सी आवै ?
शिशुता में सब माफी पावै।।

१८. नान्हा सन्त सुगुरु-पद सेवै,
सीख ईख-सी सद्गुरु देवै ।
इत-उत आवत नैन निहारूं,
तो आन्तर-मन रूं-रूं ठारूं ।।

---

१. देखें प० १, सं० १२

१९. बड़-बन्धव अहलाणां जाणी,
म्हारै मन री पीड पिछाणी।
रहै अनमनो तुलसी क्यूं है ?
जाणूं पूछ बात ज्यूं-त्यूं है ।।

* चम्पक संत सुखी, जीवन ऊर्ध्वमुखी,
कालू-चरणां लीन रहै ।। (ध्रुवपद)

२०. पूछ्यो चम्पक, तुरत बताई मैं म्हारी मन-भावना,
कालू-चरण-शरण में आऊं, चोक्कस चित री चावना,
मोहन भाईजी स्यूं आज्ञा लेणी भारी दुक्करकार ।।

२१. मंत्री मुनि स्यूं मनै मिलायो मां वदनां रै साथ में,
मंत्री माध्यम स्यूं पहुंचायो श्री गुरुवर उपपात में,
म्हारै हृदय हरस उमगायो, आयो अभिनव एक उभार ।।

२२. ई प्रवास में ही आ दीक्षा होणी, सारां रै जची,
'छोटी रात बड़ी रामत' यूं उथल-पुथल-सी है मची,
तेडूया तावड़तोड़ सिराजगंज स्यूं मोहन नै दे तार ।।

२३. बड़ो भाग भाईजी आया, पण म्हारो जी घबरावै,
मां रो पिण कांपै काळेजो, कुण मोहन नै समझावै ?
रहतो एकछत्र सारै घर पर बड़-बन्धव रो अधिकार ।।

२४. चम्पक मंत्रीश्वर सर्वोच्च सुगुरु जब करुणा बरसावै,
रोक सकै कुण कहो इंदिरा स्वयं चलाकर घर आवै,
सहज्यां वण्यो काम, बड़भगिनी री भी किश्ती लगी किनार ।।

---

* लय : शासन कल्पतरू

२५. वंय्यासी री पो० विद पांचम प्रातः पुष नक्षत्र है,
पुर रै बार वगीची[1] में पोढाया शासनछत्र है,
म्हारै भाग्योदय सूर्योदय में है स्पर्धा अप्रतिकार ।।

२६. वण्या-वणाया मिल्या मनै अभिभावक सेवाभावीजी,
है आचार-कुशल सद्गुरु-आज्ञारत सरल स्वभावीजी,
श्री गुरुदेव री करुणार्द्र दृष्टि स्यूं पायो प्यार-दुलार ।।

सोरठा

२७. श्रीगुरुवर आदेश, चम्पक रखवाली चतुर ।
राखै रोज-हमेश, अन्तर-मन अनुशासना[2] ।।

२८. वालकपण री वात, मगन कहै पूंजे किंयां ?
हिलतो ओघो हाथ, जाणक चिड़्यां उडावणी ।।

२९. मैं तब कियो जबाव, नासमझी में मगन स्यूं ।
रोक्यो तुरत रवाव, चम्पक ले एकांत मुझ ।।

३०. तहत कही मंजूर, करणी अपणी भूल नै ।
श्री जी सा'ब हजूर, देख विराज्या सामनै ।।

३१. औ है मगन मुणी, दूजो तन ज्यूं सुगुरु रो ।
आंरी सीख सुणी, विन ननुनच स्वीकारणी ।।

---

१. मालमचन्दजी बोरड़ की वगीची
२. देखें प० १, सं० १३

३२. कड़वी कहुं कंवळी, आ चम्पक री सीखड़ी ।
सीधी-सी संवळी, म्हारै रग-रग में रमी ।।

*चम्पक सन्त सुखी, जीवन ऊर्ध्वमुखी,
कालू-चरणां लीन रहै ।। (ध्रुवपद)

३३. बंय्यासी रो मोच्छब राजाणै न्हारां[1] रै आलय में,
हो सरदारशहर मोमासर आया सद्गुरु शुभ लय मे,
म्हारो प्रथम लोच करवायो चम्पक चोथ सन्त सहकार ।।
जालमचनजी नोहरे जोरे-तोरे पटावरी परिवार[2] ।।

३४. कुन्नण चोथ उभय बन्धव-मुनि कालू करुणा-दृष्टि में,
कलापूर्ण दोनां रो जीवन, शासन री शुभ सृष्टि में,
पल-पल महर नजर आराधी, साधी संयम-सरणी सार।।

३५. कुण-सी वा गण-कला सुघड़ता, जो नां दोनां भायां में,[3]
आजीवन आनन्द मनायो शासन-सुरतरु छाया में,
खिण-खिण स्मृति में आवै चोथमल्ल मुनि रो मंजुल व्यवहार ।।

३६. मोमासर स्यूं गिरिगढ गुरुवर एक मास रो वास करै,
चम्पक तुलसी गुरु-सेवा में सविनय नित्य निवास करै,
पल-पल सफल बितावै, भणै-गुणै निज जीवन रो निस्तार ।।

+लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

---

* लय : शासन कल्पतरू
१. मघराजजी नाहर, राजलदेसर
२. देखें प० १, सं० १४
३. देखें प० १, सं० १५
+ लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

३७. श्रीडूंगरगढ रा शय्यातर ताराचंद पुगळिया,
सरल भद्र श्रद्धालू कालू-करुणा जाण जुगळिया[1],
भक्तामर रा शुभ श्लोक जी
म्हे रोज लगावां घोक जी,
वाल साधवां पर कालू-वात्सल्य कितो विरुदावां हो ।।



१. देखें प० १, सं० ९६

वर्ग ३

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां ।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

१. तंय्यासी रो पावस गुरुवर गंगाशहर करायो,
स्थविर तपस्वी पृथ्वी मुनि रै मन रो कोड पुरायो,
है डायमल्ल मुनि साथ जी,
चर्चावादी विख्यात जी,
स्थविरां री सन्निधि में आगम स्वाध्यायी बण ज्यावां[1] हो ।।

२. क्षेत्र उदीयमान हो, भैरूं-ईसर[2] सा रखवाळा,
और देवजी लूणावत[3] सेठिया उदासरवाळा,[4]
रखता नित पूरो ध्यान जी,
कालू गुरु दृष्टि महान जी,
सिंघाड़ा उपरोपर भेज्या, गण-गौरव गुण गावां हो ।।

३. निज नानाणै[5] श्रीडूंगरगढ चौरासी चौमासो,
बींजराजजी पवर पुगळिया हेली में सुखवासो,
वा चरण-कमल री सेव जी,
नित महरवान गुरुदेवजी,
भणता-गुणता, सुणता श्रीमुख वाणी सरस सुभावां हो ।।

---

* लय: आदीश्वरसुत रै सामनै
१. देखें प. १, सं. १७
२. देखें प. १, सं. १८
३. देवचन्दजी लूणावत, गंगाशहर
४. किशनलालजी सेठिया, उदासर
५. पूज्य कालूगणी का ननिहाल

४. पिच्यासिये पधार्‌या जग-गुरु जन्म-भूमि छापर में
कालू[1] गोविंद[2] हरख[3] प्रमुख दानां-बूढा घर-घर में,
सारां मन अजब उमंग जी,
रग-रग पावस रो रंग जी,
पंच-संधि[4] चम्पक रटता, तुलसी चन्द्रिका[5] चढावां हो ।।

लावणी

५. पिच्यासी संवत पो विद पांचम आई,
दीक्षा दिन री सारी स्मृतियां सरसाई ।
बीदासर रै पावन पंचायत नो'रै,
म्हारी पांती अब मगन-स्हाज जीसोरे ।।
पांती तो कहण मात्र समचै ज्यूं सारी-
गतिविधि रहती, गुरु-करुणा री रिझवारी ।
महिनां वरसां लग वो ही क्रम है चाल्यो,
गुरु-वत्सलता रो आर न पार निभाल्यो ।।
चम्पक भी अभय-स्हाज स्यूं परम उमंगे,
गुरु कृपया आया मगन-स्हाज रसरंगे ।
भाई-भाई म्है साथ-साथ ही रहता,
कालू-करुणा आमोद मोद मन वहता ।
भायां रै भागां री के करूं वड़ाई,
सेवाभावी री वात सुणो सुखदाई ।।

---

१. कालूरामजी दुधोड़िया
२. गोविन्दरामजी नाहटा
३. हरखचन्दजी भंसाली
४. सारस्वत की पंचसंधि
५. सिद्धांत चन्द्रिका

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां ।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

६. नैन निहारां ऊठसवारां रचना नयी-नयी है,
प्रखर प्रतापी पूज्य प्रभावे संघ सदा विजयी है,
चंदेरी गंगाशहर जी,
बीदासर पावस महर जी,
छिंयासी, सित्यासी, अठ्यासी में आब उपावां हो ।।

लावणी

७. नय्यासी उण्णीसै बैसाख महीनो,
पुर चाड़वास गधिया-गणेश[1] हठ भीनो ।
सन्तां नै गुरु ! सरदारशहर भेजावो,
तो फलै मनोरथ ल्यूं सेवा रो लावो ।
मुनि मगन—करावो कृपा, भेजणो कीनै ?
तुलसी बड़-भ्राता भेजो चम्पकजी नै।
चम्पा ! के सीखै ? उत्तराध्येन, सुणा तो,
दो चार पद्य सुण गुरुवर बान्ध्यो भातो ।
उच्चारण तो है शुद्ध सजग सुघड़ाई,
सेवाभावी री बात सुणो सुखदाई ।।

श्रीकालू– ८. चम्पकजी ! ल्यो सरदारशहर जाणो है,
थोड़ा ही दिन रहकर वापस आणो है ।
मुनि चम्पक- बा बड़ी परखदा, कुण व्याख्यान सुणावै ?
मन्नै पूरो नोकार न कहणो आवै ।
गुरुवर ! मैं जा के करस्यूं बठै बताओ,
भणिया- गुणियां सन्तां नै आप पठावो ।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै
१. गणेशदास जी गधैया

श्रीकालू– सुण स्वयं कोटवाळी तो गाम सिखावै,
हुंसियारी बाहर गयां बिना नहि आवै।
हो ज्यावो रंगार, नहीं करणी निबळाई,
सेवाभावी री बात सुणो सुखदाई ।।

९. जशकरण दुली तारो डूंगरगढवारो[1],
बनणा करवा सुनिजर रो दियो सहारो।
सरदारशहर में लियो सुजस सौभागी,
इक मास-कल्प जनता जागरणा जागी।
सारो पुर च्यार दिनां में फर्शी लेता,
गोचर-चर्या स्यूं सब नै खुश कर देता।
व्याख्यान उत्तराध्येन-जोड़ है बांची,
सह राग गवैया श्रावक मिलजुल खांची।
उण बेळा री बै बातां ख्यात खताई,
सेवाभावी री बात सुणो सुखदाई ।।

१०. सेठिया-माल[2], मंगल-जम्मड़,[3] गोठीजी,[4]
मालू-डागो,[5] रग-रग श्रद्धा स्यूं भीजी।
दुल-श्यामसुखो[6], जैचंद[7] भगत कहलातो,
सागर-बरड़ियो[8] समय पर रात जगातो।

---

१. मुनि जसकरणजी (सुजानगढ), मुनि दुलीचन्दजी (दिनकर) और मुनि ताराचन्दजी (श्रीडूंगरगढ)
२. महालचन्दजी सेठिया
३. मंगलचन्दजी जम्मड़
४. रावतमलजी, मिलापचंदजी, मदनचन्दजी गोठी
५. मालचन्दजी [redacted]
६. दुलीचन्दजी श्यामसुखा
७. जयचन्दलालजी नाहटा
८. देखें प० १, सं० १६

संचेती दूगड़ पींचा अरु आंचळिया,
गधियाजी रै नोहरै निशदिन रंगरळिया।
किण-किण रा नाम गिणाऊं गिण नहिं पाऊं,
भाईजी री यात्रा रो गौरव गाऊं।
गाऊं व्यक्तित्व विशद रेखा उभराई,
सेवाभावी री बात सुणो सुखदाई।।

११. श्रम भांत-भांत रो च्यारूं संत उठायो,
निज गात सांतरो च्यारूं संत बणायो।
छापर में निरख नाहटा[1] निजर लगाई,
जशकरण बणै जिनशरण इसी स्थिति आई।
जद खबर मिली तत्काल फळ्यो थुथकारो,
ओ मिनख-जीभ रो इमरत जहर निजारो।
आ, परम मुदितमन शिर गुरु हाथ धरावै,
चम्पक चोगुणो सुजस संतां में पावै।
दाठीक ठीक निर्भीक निगर नरमाई,
सेवाभावी री सुणो बात सुखदाई।।

१२. अब मगन साथ गोचरी निरंतर जावै,
दूजी तीजी वर ओछो-वत्तो ल्यावै।
ओलम्भो स्यावाशी आवण रो आवै,
श्री मगन सघन बण कड़ी डांट दिखलावै।
चम्पक रो कब ही स्वाभिमान जग ज्यावै,
तब कालू करुणा-दृष्टि-वृष्टि बरसावै।
झमकूजी भी सहयोगी बणै स्वभावै,[2]
उद्योगी है, उपयोगी है, सहु गावै।
नहिं प्यारी चाम, काम महिमा महकाई,
सेवाभावी री सुणो बात सुखदाई।।

---

१. गोविन्दरामजी नाहटा
२. देखें प०१, सं० २०

१३. * वड़ो विनोदी चम्पक मुनि रो चित्त,
सन्तां नै घणो सुहावतो जी, म्हारा राज !
विविध भारती चलती प्रेम पवित्त,
सारां रो मन वहलावतो जी, म्हारा राज !!

१४. जन्म-भूमि रै ऊपर प्रेम अगाध,
कोई जन्मान्तर संस्कार ज्यूं जी, म्हारा राज !
वर्णवतां जाणक आतो आस्वाद,
पर आन्तर-मन अविकार ज्यूं जी, म्हारा राज !!

१५. कहता संत लाडणूं हित कटु वात,
चुग-चुग चम्पक रै सामनै जी, म्हारा राज !
चम्प सुणाता उत्तर हाथोहाथ,
क्यूं भांडो म्हारै गाम नै जी, म्हारा राज !!

१६. मुश्किल मिलसी चंदेरी-सा क्षेत्र,
सारी रुत में रळियामणां जी, म्हारा राज !
हो निष्पक्ष निहारो निर्मल नेत्र,
क्यूं दिल में दूमण-आमणां जी, म्हारा राज !!

१७. क्यूं नहिं गुण रा ग्राहक वणो सुजाण,
क्यूं अवगुणग्राही आतमा जी, म्हारा राज !
आ के पड़गी सन्तां! वाण कुवाण,
सद्‌बुद्धि मिलै परमातमा! जी, म्हारा राज !!

१८. आचार्जा रो पूरो मरजीदान,
है क्षेत्र लाडणूं लाडलो जी, म्हारा राज !!
सो वर्षां स्यूं शासन रो स्थिर स्थान,
कोइ और तुला में चाढलो जी, म्हारा राज !!

---

* लयः वधज्यो रे चेजारा थारी वेल

१६. म्हारै मन में ओ सात्विक अभिमान,
मैं जन्म लाडणूं में लियो जी, म्हारा राज ।
शहर लाडणूं जाणक देव-विमान,
है न्याय-तराजू तोलियो जी, म्हारा राज ।।

२०. जननी जन्मभूमि रो जग सम्मान,
म्हारै मन दुगणो चोगणो जी, म्हारा राज ।
कहूं, सहूं मैं इण रो नहिं अपमान,
जो करसी पड़सी भोगणो जी, म्हारा राज ।।

२१. श्री कालू-गणिवर चरणां में आय,
चम्पक बोलै कर चातरी जी, म्हारा राज ।
शहर लाडणूं-सा खेतर गणिराय !
है सदा रही मन खातरी जी, म्हारा राज ।।

२२. संत खूंचणां काढै क्यूं करतार !
है आदत आ असुहावणी जी, म्हारा राज ।
म्हारै मन ऊपर हो ज्यावै भार,
गुरु ! आप करो फरमावणी जी, म्हारा राज ।।

श्री कालू– २३. थारो के लै, कहै कहण दै कोय,
के केण सुणण स्यूं होवणो जी ? म्हारा राज ।
चिड़ै जिकै नै खूब चिड़ावै लोय,
है मुश्किल मोती पोवणो जी, म्हारा राज ।।

मुनि चम्पक–२४. आप वड़ा हो, बड़ी वड़ां री बात,
अै सोचै समझै क्यूं नहीं जी, म्हारा राज ।
सारां नै समझाद्यो स्वामीनाथ !
करड़ी लागै म्हारी कही जी, म्हारा राज ।।

श्री कालू– २५. अरे साधवां! शहर लाडणूं हेत,
चम्पक नै मत छेड़्या करो जी, म्हारा राज।
सहज सुहाणी चन्देरी री रेत,
क्यूं इण नै फंफेड़्या करो जी, म्हारा राज॥

२६. फिर भी कोई कह देता हँस-खेल,
चम्पक जबाब नहिं चूकता जी, म्हारा राज।
श्री गुरुवर रो म्हारो मिल्यो सहेल,
छेहड़ै तक केड़ न मूकता जी, म्हारा राज॥

२७. तुक-बन्धां चलती आमोद-प्रमोद,
जनुभूमी ओगुण गुण भरी जी, म्हारा राज।
एक दूसरे नै देता प्रतिबोध,
संकलना तिण री मैं करी जी, म्हारा राज॥

दोहा

चान्द मुनि– लाडणूं में कांटा-भाटा, सुजानगढ में सी।
बीदासर में दूध-मिश्री, घोळ-घोळ पी॥

चम्पक मुनि– सन्तां! गरज दूध री पाळै, लाडणूं रो पाणी।
शिमलै री छुट्योड़ी आवै, सीधी हवा सुहाणी॥

ईर्या समिति देखकर चालो, चेतावै अै कांटा।
आस-पास रा शहर बसावै, लाडणूं रा भाटा॥

चान्द मुनि– कांटा भाटा कांकरा, और लोह रा पात।
चम्पा! थारी चन्देरी में, च्यारूं वातां ख्यात॥

चम्पक मुनि– सीधी पट्ट्यां सांतरी, और दूध-सो पाणी।
सन्तां! म्हारो लाडणूं, लन्दन री सहनाणी॥

चान्द मुनि– दूध-दही तो रह्यो कठै ही, मिलै न पूरी रोटी ।
चम्पा ! थारी चन्देरी में, हेल्यां मोटी-मोटी ।।

चम्पक मुनि– दरब घणां दाता घणां, पर करमां री क्हाणी ।
ढंढण ऋषि नै द्वारका में, मिलै न रोटी-पाणी ।।

चान्द मुनि– तूटा-भांगा तीन डबलिया, इंजण बूढो बैल ।
देख सिसकती चालै चम्पा ! लाडणूं री रेल ।।

चम्पक मुनि– तार नहीं टेम नहीं, नहीं दियै में तेल ।
तो भी चाल मलपती चालै, लाडणूं री रेल ।।

चान्द मुनि– नहिं कोइ धोरा, नहिं कोइ ओला, नहिं कोइ बोझा-झाड़्यां ।
लाडणूं में काम चलावण, आगै-पीछै बाड़्यां ।।

चम्पक मुनि– धोरा तपै ठरै, कट ज्यावै ओला बोझा-झाड़्यां ।
बारह ही पून्यूं सुखदाई, लाडणूं री बाड़्यां ।।

चान्द मुनि– सुन्दर हेल्यां रंग-रंगेल्यां, और गोचरी कट्ठी[1] ।
(पर) बेगाण्यां रो के रास्तो है, सागी कादापट्टी ।।

चम्पक मुनि– बैंगाणी परिवार अनोखो, देखो मन में कोड ।
दगग-दगग रास्तो बेह्वै है, जाणै हरिसन रोड ।।

सोहन मुनि– रामायण मूंढै करस्यूं, अब आगेवाण विचरस्यूं,
खांधै पर ओघो धरस्यूं, कर अभिमान, मान, मान ।
सन्तां ! चम्पक मुनि रामायण सीखै जान, जान, जान ।।

---

१. ठीक, अच्छी

चम्पक मुनि– जब रामचरित मंडासी, गणिवर ढाळां फरमासी,
चम्पो भी कण्ठ मिलासी, मधुरी तान, तान, तान ।
सोहन मुनि ! मत करो मसखरी, संत सुजान, जान, जान ।।

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां ।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

२८. चलतो ही रहतो यूं बलि-बलि वातावरण विनोदी,
ईषद् हास्य घटित होतो परमारथ-पथ-अविरोधी,
स्वाध्याय समय स्वाध्याय जी,
अध्यात्म धर्म री आय जी,
श्री-कालू-करुणा स्यूं चम्पक सेवाभाव वढावां हो ।।



---

* लय: आर्द्रकसुत रै सामनै

वर्ग ४

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणां ।
जीवन-वृत्त बखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो ।। (ध्रुवपद)

१. सेवाभाव विनय अनुशासन श्रम स्यूं नहिं कतरावै,
गुरुभायां स्यूं हिलमिल भाईजी नित प्रेम बढावै,
गुरु-इंगित रो आधार जी,
संयम तप रो व्यापार जी,
पापभीरु परमारथ साधो, आराधो गुरु-आणां हो ।।

२. करी प्रार्थना म्है[1] मिल अन्तर्यामी ! देश दिखाओ,
थळी देश स्यूं अबै प्रदेशां रो पद-भ्रमण कराओ,
सन्तां रै मन उछरंग जी,
मरुधर रो सहज प्रसंग जी,
मुळकाणो लख गुरुवर-मुख म्हारा रूं-रूं पुलकाणां हो ।।

३. जाग्या जोधाणै रा श्रावक हक री मांग उठाई,
म्हारै मन उत्साह बढ्यो, बजसी यात्रा-शहनाई,
बो सिंघी हणूतराज जी,
अर्जाऊ कर ओगाज जी,
केवल-सिंघी गीत सुणायो सुण श्रोता चकराणां[2] हो ।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१. दोनों भाई—मुनि चम्पालालजी और मुनि तुलसी

२. देखें प. १, सं. ३१

४. हो निब्बै रो पावस जोधाणै कल्पना बणाई,
सबल सदलबल सिंघीजी पुर-पुर घुड़दौड़ मचाई,
भीतर प्रेरक वड़भ्रात जी,
पर वणी न कोई वात जी,
हुया निराश सभी श्रावक, संभाल करी गणराणां हो ।।

* भिक्षु गण-वारी है, खिली फुलवारी है,
हो जी, ओ तो चम्पक-चरित दुरित दोहग क्षयकारी है।
श्रवण सुखकारी है ।। (ध्रुवपद)

५. सुगुरु सुजान-शिरोमणी कियो सुजानगढ चौमास,
माघमहोत्सव लाडणूं कर, मरुधर कर्यो प्रवास,
पावस रिझवारी है, जोधपुर भारी है,
हो जी, ओ तो चम्पक-चरित ....।

६. गुरु-चरणांबुज में रह्या, बण मधुकर म्है जुग-भ्रात,
गुरु भ्राता, धाता गुरु, गुरु अन्नदाता पितु मात,
परम उपकारी है, आतमा तारी है,
हो जी, ओ तो चम्पक-चरित............।

७. उदय उदयपुर रो कर्यो है, तर्यो मालवो तंत,
मुश्किल मंजिल काटणी, गोडा हो ज्याता जंत,
मनोबलधारी है, न हिम्मत हारी है,
हो जी, ओ तो चम्पक-चरित............।

८. महरवान कालूगणी चम्पक रो मन विश्वास,
अन्तरंग निज काम में अविलम्ब बुलावै पास,
अनघ अविकारी है, सुगुरु बलिहारी है,
हो जी, ओ तो चम्पक-चरित...............।

* लयः धरम रा धोरी जी, गोयम जिन जोड़ी जी

९. व्यावच करवावै सही, है इण रो हळको हाथ,
उष्मा नहिं पग चांपतां, यूं सद्‌गुरु करै सनाथ,
मात दुनिया री है, संपदा सारी है,
हो जी, ओ तो चम्पक-चरित ....।

१०. मालव स्यूं मेवाड़ दिश, जावद में फुणसी एक,
सुगुरु करांगुलि में हुई, व्रण री वेदन अतिरेक,
सतत पथचारी है, विमल व्यवहारी है,
हो जी, ओ तो चम्पक-चरित............।

दोहा

११. फुणसी देखी मगन मुनि, विस्मित करै बयान ।
साधारण फुणसी नहीं, गुरुवर ! दयानिधान !

१२. इण री आकृति स्यूं लगै, देसी अति तकलीफ ।
जहरी व्रण जोखिम भर्‌यो, झरसी भरसी पीप ।।

१३. शुरू-शुरू चालू कर्‌यो, शीतल जल रो सेक ।
क्रमशः पुलटिस लूपरी, यूं उपचार अनेक ।।

१४. पर दिन-दिन वढतो गयो, फुणसी रो विस्तार ।
मोटो-सो फोड़ो हुयो, विषधर-सो खूंखार ।।

१५. सेवा सारै संत-गण, ऊठसवार विहार ।
गंगापुर पावस करण, आया गण-सिणगार ।।

१६. व्रण-वेदन वढती गई, लग्यो न को उपचार ।
आयुष कर्म उदीरणा रो प्रसंग अवधार ।।

१७ पांचूं इन्द्र्यां परवरी, सबविध स्वस्थ शरीर ।
घिर्‌यो अचानक काल स्यूं, धीरं वीर गंभीर ।।

१८. मनोवली मंत्री मुनि, परिस्थिती पहचाण ।
अग्रिम संघ-प्रवन्ध की, चर्चा करै सुजाण ।।

रामायण

१६. इग्यारह वरसां लग श्री कालू री करुणा रही अथाघ,
क्षण-क्षण इण अणघड़ नै घड़कर खूब वढायो जग में आघ ।
श्री चम्पक री चूंप चौकसी में सारो म्हारो निर्माण,
तिण कारण आकस्मिक देखो आज वढू गण री खरसाण ।।

*युवाचार्य वगसावो,
गीली आंख्यां करै निवेदन गुरुवर ! कृपा कराओ ।
युवाचार्य वगसावो ।।(ध्रुवपद)

२०. कभी न सोची म्हारै जीवन में आ नौंवत आसी,
म्हारी आंख्यां स्हामै यूं गुरुवर रो तन कुम्हलासी,
पर इण होणहार रै आगै, चलै न किण रो दावो ।।

२१. श्री मघवा माणक डालिम रो अणसण नैण निहार्‌यो,
कालू-करां करूं संलेखण, ओ हो दिल में धार्‌यो,
धार्‌यो धर्‌यो रह्यो मन रो मन, उलटो पड्‌यो उम्हावो ।।

२२. मघवा माणक स्यूं, डालिम स्यूं मांग करी मनचाही,
वा ही मांग आप स्यूं करणी पड़ै आज अणचाही,
वाणी वणी अवोल, चवाणो मजबूरी रो मावो ।।

---

* लयः संयममय जीवन हो

२३. बोल्यां विरह सतावै, अणबोल्यां अमूझणी आवै,
ओढ्यो जो दायित्व मनै बरबस वाचाल बणावै,
आ म्हारी दुविधा अन्द्रूणी गुरुवर! आप मिटावो ।।

श्री कालू– काया बणी विराणी,
इण तन रो नहिं तनिक भरोसो, परतख ही पितवाणी,
काया बणी विराणी।। (ध्रुवपद)

२४. अब तक तो मैं बात आपकी वहम रूप ही मानी,
सुणो मगन जी स्वामी! बोलै कालू कृपा-निशानी,
अब तो जचगी म्हारै भी शत प्रतिशत सला सयाणी ।।

२५. पद-यात्रा कर पूरी, बीदासर छोगांजी पासे,
करणो हो ओ काम संघ-हित आन्तर-मन हुल्लासे,
पण किण-किण रा फळ्या मनोरथ, दुनिया अलख कहाणी।।

मगन मुनि–२६. बोलै मगन—आप हो कर्ता-धर्ता, पुरुष-पनोता,
जठै जिंयां ही करणै चावो, खुल्ला खाता-पोता,
बीदासर में जो करता, गंगापुर कर दिखलावो !
युवाचार्य बगसावो ।।

श्री कालू–२७. हां-हां, अब तो शीघ्र-शीघ्र करणो है जो करणै को,
भिक्षु-संघ रो अलख खजानो भरणो है भरणै को,
केवल मन री बाफ आप रै सन्मुख आज बखाणी ।।
काया बणी विराणी ।।

२८. आपां री आंख्यां आगै है माणकगणि-वरतारो,
भोग्योडो है सत्य, मुसीबत रो बो विवरो सारो,
पुनरावर्तन नहीं होणद्यां, आ दिल में दृढ ठाणी[1] ।।
काया बणी विराणी ।।

१ देखें प० १, स० २२

मगन मुनि-२९. किण ख्हावै अन्दाज राज रो, किसी विधा अपणाणी ?
हो चौड़े चौगान, गुप्त खत लिख रखणी सहनाणी ?
म्है तो हुकमाधीन रावळा-चाकर, दृष्टि दिरावो ।।
युवाचार्य वगसावो ।।

श्री कालू-३०. छानै रो के काम ? सामनै सारां रै ही करस्यां,
विस्मृत-सो इतिहास, नवीनीकरण राह संचरस्यां,
चम्माली वरसां री अभिनव बात ख्यात खतवाणी ।।
काया बणी विराणी ।।

मगन मुनि-३१. किण पर है शुभ नजर ? करूं हाजर, इंगित जो पाऊं,
श्री कालू- किस्यो नाम है छिप्यो आप स्यूं, कहकर के वतलाऊं ?
पल-पल पाळ्यो सहज रुखाळ्यो, के किण स्यूं अणजाणी ?
काया वणी विराणी ।।

श्री कालू-३२. एक विचार अवस्था छोटी और न वची कसौटी,
मगन मुनि- छाती ठोक मगन बोलै-आ जोखिम मैं ल्यूं ओटी,
आप रहो निश्चिंत बिना हिचकिच करणीय करावो ।
युवाचार्य वगसावो ।।

श्रीकालू-३३. देखो दिन, 'देख्यो है तीज भादवै री ही आवै',[1]
श्रीकालू- दस दिन री दूरी, पल रो प्रत्यय नहिं दिलड़ो पावै,
मगन मुनि- पुण्य-पोरसा आप, आपरो विरुद आप ही पावो ।
युवाचार्य वगसावो ।।

३४. शुभ दिन शुभ मुहुरत में ही शुभ काम होवणो चावे,
तीज आवती ही दीखेला गुरुवर-पुण्य-प्रभावे,
मनोमनां निर्णीत नीति भावी पर पलक विछावो ।।
युवाचार्य वगसावो ।।

---

१. यह बात मुनि मगनलालजी ने कही

गीतक छन्द

३५. मगनजी स्यूं मंत्रणा कर सुगुरु चम्पक-भ्रात[1] नै,
बुलायो एकान्त, प्रहरी बणा चम्पक भ्रात नै।
आध घंटा बात शासणनाथ की करुणा बणी,
बण्यो वातावरण सहसा, धणी ऊपर कुण धणी ?

३६. फिर बुलायो फिर बिठायो, चंप फिर प्रहरी बण्यो,
कुछ लिखायो कुछ सिखायो, छत्र-सो सिर पर तण्यो।
दूज भाद्रव सुदी आई, लो बधाई पूज्यवर!
सांझ श्रीमुख स्यूं उचारै भ्रात चम्पक तेड़कर ।।

३७. अरे चम्पालाल! प्रातःकाल सूरज ऊगते,
लेखणांधर झाल स्याही गाळ पाणी पूगते।
एक पटड़ी और पानो शीघ्रतर हाजर करै,
तहति तहति हितेति वाणी चंप सविनय स्वीकरै ।।

३८. बणी शतयामा त्रियामा नीठ नीठी झांकतां,
आखती आंख्यां हुई, आलोक अपलक आंकतां।
पो फटी बाधा हटी, प्रकटी प्रभाती लालिमा,
शुभ्र आभावरण, जाणक कटी कल्मष-कालिमा ।।

* अद्‌भुत दृश्य दिखायो,
चम्पाली वर्षां स्यूं गण में स्वर्णिम अवसर आयो ।। (ध्रुवपद)

३९. प्रतिक्रमण पडिलेहण कर बाजोटां री जोड़ी पर,
सुगुरु विराजै धवल वेश धर साक्षात दिनकर शशधर,
बांई ओर मगन मुनि, सम्मुख श्रमणी वृन्द सुहायो ।।

---

१. मुनि चम्पक के अनुज मुनि तुलसी
* लयः संयममय जीवन हो

४०. चम्पा ! चम्पालाल ! हाल नहिं आई स्याही लेखण,
'खमा घणी' गुरुदेव ! अडीकूं कद को कर प्रतिलेखण,
सतियां आवै पाणी ल्यावै, बाकी है सब ठायो ।।

४१. हाजर गुरुवर ! पट्टी पानो स्याही लेखण सारा,
चम्पक चतुर चौकसी दिल में बही हरस रसधारा,
कर-कमलां स्यूं करै अलंकृत सद्गुरु जोश जगायो ।।

४२. बांयो विपख,[1] दाहिणै स्यूं ही सब कुछ करणो पड़सी ,
ई नाजुक हालत मे ओ इतिहास अनोखो घड़सी,
एक पैर धरती, इक पट पर वातावरण बणायो ।।

४३. मगन कहै—लिखणो न जरूरी थोड़े में ही सरसी,
चौड़ै चादर ओढाणी जब, सहज्यां ही श्रम टळसी,
श्रम स्यूं के डरणो ? करणो सो करणो, बणूं न कायो ।।

४४. केते विश्रामे कर थामे पूरो पत्र[2] भर्‌यो है,
पौरुष रो पुतलो श्रीकालू खूब कमाल कर्‌यो है,
सामंत्रण अब मनै महामति तिण ठामे तेड़ायो ।।

४५. अपणी तन स्यूं तुरत उतारी, अभिनव चादर ओढी,
मनै उढाई, वरी बधाई चेहरै सोळी चोढी,
मगन मगन-मन रंग-भवन में गुरुवर नै विरुदायो[3] ।।

४६. लोक हजारां खड़ा बजारां दर्शण हेत अडीकै,
नवा युवाचारज रो एकर ज्यूं-त्यूं चेहरो दीखै,
जादू को-सो खेल वण्यो, मन विस्मय नहीं समायो ।।

---

१. बायां हाथ विपक्षी—वैरी हो गया, काम करने में अक्षम हो गया।

२. देखें प० १, सं० २३

३. देखें प० १, सं० २४

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां।
जीवन-वृत्त सुणावा, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

४७. कण रो मण, रजकण रो मेरू क्षण में मनै बणायो,
साधारण सन्तां री पंगत स्यूं ऊंचो बैठायो,
अब कहलाऊं युवराज जी,
गुरु महर लहर रो राज जी,
खड्यो चतुर्विध संघ सामनै, निरखै नया पुराणां हो ।।

४८. प्रथम प्रहर व्याख्यान और मध्याह्न रहो जनता में,
रहतो जो एकान्त शान्त सन्तां रै आम्है साम्है,
अब बदळ्यो सो वृत्तांत जी,
गुरु-करुणा दृष्टि नितांत जी,
किंयां अचानक इंयां हुयो, सपनो या सब पितवाणां हो ।।

दोहा

४९. बरसां चम्पक भ्रात रै, साथ रह्यो दिन रात।
नथ[1] बुध[2] विद्यार्थी मुनि, पढता मम उपपात ।।

५०. अब मैं आयो केन्द्र में, सारां - स्यूं सम्बद्ध।
साझ सिंघाड़ा वर्ग स्यूं, होग्यो अप्रतिबद्ध ।।

५१. कइ दिन आमण-दूमणा, रह्या साझ रा संत।
बिल्कुल बदली है स्थिति, बण्यो नयो विरतंत ।।

५२. मैं दी सब नै सांत्वना, मैं हूं थांरै पास।
बढो सतत आगै बढो, रहो न रंच उदास ।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१. मुनि नथमलजी (युवाचार्य महाप्रज्ञ)
२. मुनि बुद्धमलजी (निकाय-प्रमुख)

५३. चम्पक आया मांयनै, मैं बैठो एकान्त ।
अर्धासन खाली कर्यो बैठावण चित शांत ।।

५४. युवाचार्य अब आप हो, मैं साधारण साध ।
एकासन पर बैठणो, नहीं उचित निर्बाध ।।

५५. आसन पर बैठा अलग, वर बारीक विवेक ।
सहज बड़प्पन रो हुवै, अनुल्लिखित आलेख ।।

५६. तीन सियालां लग सजग, सब कामां री छूट[1] ।
बड़भागी पायो सहज, गुरु-विश्वास अटूट ।।

५७. निकट नजर दौलत वसै, पुरुषोत्तम पहचान ।
कालू-करुणा स्यूं लह्यो, चम्पक समुचित स्थान ।।

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त वखाणां ।
जीवन-वृत्त बखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो ।। (ध्रुवपद)

५८. चार दिनां री दिखा चानणी स्वर्ग समाधी साधी,
छठ सायं सुरलोक सिधाया वर अनशन आराधी,
म्है सारा रह्या अवाक जी,
है अटल काल री धाक जी
खिण रो नहीं भरोसो किण रो, आगमवचन प्रमाणां हो ।।



१. उस समय मुनि कुन्दनमलजी, सोहनलालजी, सुखलालजी आदि कई सन्तों को शीतकाल तक सब कामों की छूट हुई थी। उनमें मुनि चम्पालालजी भी एक थे ।
* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

वर्ग ५

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां ।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

१. निकट बैठता वाणी सुणता चरणां शीष झुकाता,
उपासना कर-कर सुख पाता, जीवन सफल बणाता,
परमेश्वर रा प्रतिरूप जी,
गुरु कालू अमल अनूप जी,
दृष्टि अगोचर हुया देखतां, सहज्यां समझ न पावां हो ।।

दोहा

२. स्वर्गवास गुरु रो हुयो, सीझ्यो शुभ संथार ।
मगन चौथ चम्पक कियो, नव परिधान प्रकार ।।

३. फिर मैं मध्यस्थितमना, कियो काय-व्युत्सर्ग ।
सारा सन्त प्रशान्तचित, कीन्हो कायोत्सर्ग ।।

+वदनां मां रो लाल दुलारो,
सागी बड़ो सहोदर म्हारो,
चार तीरथ रो स्हारो, सारां नै ही याद आवै,
सेवाभावीजी रो जीवन सुणतां स्वाद आवै ।। (ध्रुवपद)

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

\+ लयः म्हानै सिरियारी रो सन्त प्यारो-प्यारो लागै

४. संवत तेराणूं भादो सुद नवमी शुभ मुहुरत आयो,
मिलजुल सारो संघ मनायो पाट-महोत्सव मनभायो,
गंगापुर रो चौक सुरंगो, मंत्री मुनि अभिषेक कियो,
अभिनव पछेवड़ी प्रधरावी, सेवाभावी साथ दियो,
संघ-शृंखला रै अनुसारे,
वगसीसां हुइ विविध प्रकारे[१],
ज्येष्ठ सहोदर तिण अवसर समुचित सम्मान पावै[२] ।।

५. मगन-स्हाज में स्वयं मगनजी स्वामी और संत साथी,
आदर इज्जत स्यूं वतलाता गुरु-भ्राता की दी ख्याती,
'भाईजी म्हाराज' प्रथम सम्बोधन कियो गधैयाजी[३],
माजी वदनांजी स्यूं माजी-सो सम्बन्ध कियो स्हाजी[४]
गुरु-माता सारां री माता
गुरु-भ्राता सारां रा भ्राता,
बाकी लौकिक रिश्ता-नाता आता-जाता जावै ।।

६. पावस पाछै लाखोला में चम्पक-स्हाज स्वतंत्र बण्यो,
नथ वुध दुली चंप आदी नव सन्तां[५] स्यूं सुवितान तण्यो,
मालव स्यूं दाखांजी साथे लाडांजी पुर में आया,
बड़वन्धव वड़भगिनी दोनूं मिलजुल कर मंगल गाया,
जगां स्हाज री सारां पेली,
धारो भाईजी अति वेली,
गण री शैली गावै रीछेड़ी मुनि फक्कड़दावै[६] ।।

---

१. देखें प० १, सं० २५
२. देखें प० १, सं० २६
३. गणेशदासजी गधैया
४. शाहजी, सेठ गणेशदासजी
५. देखें प० १, सं० २७
६. देखें प० १, सं० २८

७. प्रथम-प्रथम व्यावर मोच्छव, शासन अभिनव पावर पायो,
सीमातीत विरोध श्रावकां रो साहस अनहद छायो,[1]
छोगां माजी नै संभाळ्या, वीकाणै पावस ठायो,
वदनां वणी विरागण भागण, नयो प्रश्न है उभरायो,
आ है चम्पक री चतुराई,
अणहोणी होणी बणवाई,
सुणो सुणाऊं, सुणतां सारां रा रूं-रूम खिल ज्यावै ।।

लावणी

चम्पक मुनि–८. चम्पक चला'र पूछै बोलो वदनांजी !
दीक्षा की मन में आवै है के माजी ?
मां वदनां – मन में आणै में आणी-जाणी के है ?
कुण मनै बुढापै में अब दीक्षा दे है ?

चम्पक मुनि–९. दीक्षा आणी तो क्षयोपशम रै सारै,
पर भाव वढाणां सारै थारै म्हारै ।
मां वदनां– है भाव घणां ही म्हारा तो दीक्षा रा,
लाडां तुलसी दीक्षा-दिन स्यूं इकधारा ।।

चम्पक मुनि–१०. तो अपणै मन नै एक बार फिर तोलो,
परिषह खमणै री खमता खूब टटोलो ।
शिर लोच कराणो, पगां चालणो पड़सी,
सरदी गरमी बिरखा री लागै झड़-सी ।

१. देखें प० १, सं० २६

मां वदनां—११. मोटापुरुषां ! के सोचूं ? है सोच्योड़ी,
जीवन में जोखिम झेली लम्बी-चौड़ी ।
संजम आ ज्यावै तो निहाल हो जाऊं,
जग की मो-माया स्यूं छुटकारो पाऊं ।।

१२. चम्पक चित में आ चतुरपणै स्यूं चांकी,
अब होकर रहसी दीक्षा मां वदनां की ।
मंत्री स्यूं चरचा, उत्तर मिल्यो सटीको,
मगन मुनि— साठी में दीक्षा ! आगै घर नानी को ?

१३. नहि टिक्या पैर नूतन तरकीब निकाळी,
दानां-बूढां स्यूं करी बात निरवाळी ।
बोल्या चौधरी[1] पहेली आ अणबूझी,
अति ऊंची बात कहो किण नै क्यूं सूझी ?

१४. चम्पक कठोतियाजी नै रैंस बताई,
क्यूं माजी-दीक्षा री म्हारै मन आई[2] ।
मंत्रीजी स्यूं दो टूक जवाब मिल्यो है,
जनता स्यूं भी प्रतिकूल दबाब मिल्यो है[3] ।।

१५. छोड़ो जनता री बात चौधरी बोलै,
अनुकूल बणैला मंत्री होळै-होळै ।
मोजीज मिनख पुर-पुर रा जोर लगासी,
ज्यूं चाहो वातावरण स्वयं बण ज्यासी ।।

---

१. जेसराजजी कठोतिया, सुजानगढ
२. देखें इसी वर्ग का पद्य ४० और उसका टिप्पण
३. देखें प० १, सं० ३०

१६. केवल माजी साहव - रो मानस मापो,
कोमल काया है ढळती वय बूढापो ।
भाईजी ! जदि माजी रो मतो सही है,
तो इण स्यूं ऊंची कोई वात नहीं है ।।

१७. वड़वन्धव रै दुगुणो उत्साह वद्‌यो है,
वदनां वैराग्य स्वयं ही वद्‌यो-चढ्यो है ।
कंठस्थ ज्ञान अनिवार्य रूप जो करणो,
अति कठिन काम, गुरुदेव धर्म रो शरणो ।।

१८. चरचा पच्चीस-वोल अरु मुनि-पडिकमणो,
प्राकृत वाङ्मय मुश्किल माथै में जमणो ।
वैरागण रतनी[1] नै ओ काम भळायो,
दिन-रात मात नै इक-इक बोल रटायो ।।

१६. खूमांजी रै माध्यम स्यूं छोगां माजी,
वणग्या दलाल वदनां रा राजी-राजी ।
अब चम्पक चुण-चुण बडा-बडेरा श्रावक,
तैयार किया पुर-पुर रा परम प्रभावक ।।

२०. माहौल देख मंत्री रो हृदय पिघळग्यो,
माजी-दीक्षा-अनुकूलपणैं में ढळग्यो ।
अव तो सेवाभावी रो सपन फळ्यो है,
माजी-दीक्षा रो सारो विघन टळ्यो है ।।

सोरठा

२१. पावस बीकानेर, करी न कोई कल्पना ।
पर कुदरत री खैर, कोई टाळ सकै किंयां ।।

---

१. साध्वी रतनांजी लाडनूं, उस समय वैरागिन थी ।

लावणी

२२. रजधानी रै पावस री अरजी आई,
तेराणूं चेत कृष्ण बीदासर मांही ।
रेवेन्यु कमिश्नर कुंवर प्रेमसिंह धाया,
नाजिम रघुवर-दयालसिंह जी सह आया ।।

२३. इण वर्षे स्वर्ण-जयंती राजाजी[1] री,
पावस री प्रबल प्रार्थना राजाजी री ।
दरबार तरफ स्यूं म्है बण आया प्रार्थी,
स्वीकार करो हे सन्तप्रवर! परमार्थी!

२४. ईशरचनजी चोपड़ा न अवसर चूकै,
मौकै रो मन्तर साधै, शेर दड़ूकै ।
मंत्रीमुनि चम्पक दोनूं साथ दियो है,
स्वीकृति-सूचक म्हारो संकेत लियो है[2] ।।

२५. समझाई छोगां माई कोमल वयणां-
जुगती स्यूं, आ है जिण शासण री जयणां ।
रहि मासकल्प सबविध माजी संतोख्या,
हियड़ै भर हेज सहेज पोख स्यूं पोख्या ।।

२६. दो. भाई अद्‌भुत यात्रा करता आया,
बीदासर में कर दर्शन मन पुलकाया ।
इग्यारह सौ छ्यासठ माइल पग पाला,
चलतां-चलतां पड़ग्या पैरां में छाला ।।

---

१. महाराज गंगासिंहजी
२. देखें प. १, सं. ३१

२७. 'रंगीली' स्यूं 'सर' रो छतरू भंसाली,
नेपाली ब्राह्मण तोळाराम निभाली ।
बोलै चम्पक—संन्यासी हो गृहवासी,
दृढधर्मी उदाहरण प्रस्तुत कर पासी ।।

२८. चेती पूनम बगसीसां रो इक पानो[1],
चम्पक मुनिवर नै सूंप्यो, रह्यो न छानो ।
हस्ताक्षर 'तुलसी' गणपति रा है उण में
इतिहास बणै शासण रो यूं खिण-खिण में ।।

२९. डूंगरगढ दिन इकबीस खेत्र हळुकर्मी,
अब वीकाणै री बाट भयंकर गर्मी ।
बाजै नागोरण-वात रात-दिन सरखी,
लू चलै लपट्टां जांच आंच भोभर की ।।

३०. प्रमुखा झमकूजी व्यार करै दोफारां,
द्यो साधुवाद सतियां नै सौ-सौ वारां ।
मोलक[2] री जोड़ायत सति सिरेकुमारी,
डीलां में मोटी बणगट दृढ हाडां री ।।

३१. लू लगी अचानक बेहोशी में गिरगी,
जंजेऊ सेरूणा विच आंख्यां तिरगी ।
सुण चम्पक वोल्या—मैं सन्तां सह जाऊं,
जंझाझोली स्यूं उठा गाम पहुंचाऊं ।।

३२. नहिं पड़ी जरूरत सतियां री पहुंचाई,
पर सूझ समय री चम्पक री चतुराई ।
आ बात पुगळियाजी[3] पुनि-पुनी समरता,
भाई-मुनि[4] रो उपकार न कभी विसरता ।।

---

१. देखें प० १, सं० ३२
२ मुनि अमोलकचन्दजी, राजलदेसर
३. बींजराजजी पुगलिया, श्रीडूंगरगढ़
४. मुनि चम्पालालजी

३३. तिण ही निशि सिरेकुमारी स्वर्ग सिधाई,
संघीय शहीदां में निज ख्यात खताई।
बीकाणै पहुंच्या चोथ जेठ सुद आई,
केसर-बाई[1] री कळी-कळी विकसाई ।।

३४. संवेगी रामपुरिया संपन्न घराणो,
तेरापथ स्यूं केसर रूं-रूं रंगाणो ।
सोच्यो पावस रो पूरो भार उठाऊं,
सन्तुष्ट हृदय, अपणो दायित्व निभाऊं ।।

३५. दत्तक सुत 'भंवर' सेठ ईशर रै आगे,
माजी रो भाव बतायो जागृत भागे ।
केसर बाई विश्वास जगायो सागे,
सेठां[2] स्वीकारी, सोनो मिल्यो सुहागे ।।

३६. जुग-भ्रात बोथरा तार-केसरी[3] तूठ्या,
चउमास व्यवस्था भार उठावण ऊठ्या ।
करतो हो काम प्रभाव सेठ ईशर रो,
पावस प्रभावशाली बीकाण नगर रो ।।

३७. कार्तिक दीक्षा रो अवसर सहज सुहायो,
मां वदनां रो धुर नाम सामनै आयो ।
सुणतां जनता मन में आश्चर्य न मायो,
आ वय ! ओ संयम ! विस्मय- बादळ छायो ।।

---

१. बीकानेर निवासी सिद्धकरणजी रामपुरिया की धर्मपत्नी
२. सेठ ईशरचन्दजी चोपड़ा, गंगाशहर
३. ताराचन्दजी, केशरीचन्दजी बोथरा, बीकानेर

४३. मिगसर एकम मध्याह्न विहार सजोरां,
जनता रो सीन खिल्यो है जोरां-तोरां ।
साम्हो दल विपख विनायकजी[1] रो आवै,
सब हटो हटो, यूं कहतो रोब दिखावै ।

४४. ओ चोक रांघड़ी, रांघड आज मचैला,
कुण जाणै कुण-कुण आखी अण्यां बचैला ।
मन आई आपां अड़तां स्यूं टळ ज्यावां,
तो इण कलमथ स्यूं सहज्यां बचां, बचावां ।।

४५. चिन्तन निर्णय तत्काल क्रियान्वित कीन्हो,
क्षण चिन्ता, फिर सारां रो फूल्यो सीनो ।
फैली सुवास सारै पुर राजघराणै,
सक्षम क्षमता रो परिचय जो इण टाणै ।।

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां ।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो ।। (ध्रुवपद)

४६. टळ्या देख आकस्मिक म्हांनै ईशर हृदय उवळग्यो,
लख अन्तिम परिणति सारो आक्रोश हर्ष में ढळग्यो,
है शासण रो सौभाग जी,
गुरु-चिन्तन अगम अथाग जी,
म्हारो क्षणिक विचार सुगुरु-चरणां में शीष चढावां हो[2] ।।



१. स्थानकवासी सम्प्रदाय के युवाचार्य गणेशीलाल जी महाराज
२. देखें प० १, सं० ३६
* लय: आदीश्वरसुत रै सामनै

वर्ग ६

दोहा

१ अनुभव-कलना मगन री, चम्पक मुनि री चैल।
गंगाशहर सुरंग है, मोच्छब री रंगेल।।

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई,
वदनां-अंगज चम्पक मुनिवर रो चरित सुणो सुखदाई,
लाडां-बंधव चम्पक मुनिवर रो चरित सुणो सुखदाई,
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।। (ध्रुवपद)

२. नवदीक्षित मुनि धन्नू[1] बालक वय बीमार बण्यो है,
जहरी फुणसी-फोड़ा स्यूं सारो ही अंग सण्यो है,
तन कोमल मन मजबूत जी,
रण-प्रांगण ज्यूं रजपूत जी,
सहनशील बण सहै परीषह, शासण री पुण्याई हो।।

३. सेवा समझ जरूरी सेवाभावी स्वयं संभाळ्यो,
मरहम-पट्टी कर-कर पींच-पींच कर पीप निकाळ्यो,
वेसाणत वसन विहीन जी,
व्यावच अग्लान अहीन जी,
कर्‌यो स्वस्थ अलमस्त बाल मुनि परम प्रेरणा पाई हो।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै
१ मुनि धनराजजी लाडनूं

४. वालक वूढा गरढा ग्लानी मानी सदा समाधी,
क्यूं सीदावै, मोद मनावै, बढै न आधि-व्याधी,
तेरापथ री आ ख्यात जी,
विश्वस्त वणी विख्यात जी,
तब ही कोर-कळेजां री माईतां काढ चढाई हो।।

५. इण सेवा में बहुश्रुती मुनि हेम स्वास्थ्य निज खोयो,
धूप न देखी छांह, रात दिन चम्पक साथ सँजोयो,
विगड्यो जुखाम रो रूप जी,
बण राज-रोग विद्रूप जी,
नहीं निराशा मासा भर, कर्मा री कोड़ खपाई हो।।

६. बीदासर फागण सुद तेरस दो माजी रो मेळो,
नयो-नयो इतिहास निहारण जन समूह है भेळो,
वदनां छोगां बेजोड़ जी,
ली एक नई-सी मोड़ जी,
खूमां[1] ज्यूं सन्तोकां[2] नै वदनां व्यावच भोळाई हो।।

७. चातुरगढ स्यूं चन्देरी चम्पक कारणवश आया,
कुरब बढा म्है स्वयं ज्येष्ठ नै सन्तां सह पहुंचाया,
सह हेम सन्त सुविनीत जी,
राखी सुन्दरतम रीत जी,
पाछा मिल्या हुडेरै में आ, बा ही विधि अपणाई हो।।

८. पिच्याणूं पावस सरदारशहर सोदर संघाते,
मिगसर चूरू माधोमुनि गण-बाहर बाते-बाते,
बासी राखण रो बोल जी,
संयम खोयो अनमोल जी,[3]
गहन कर्म-गति दुर्गति सद्‌गति कृत करणी री साई हो।।

---

१. देखें प० १, सं० ३७
२. देखें प० १, सं० ३८
३. देखें प० १, सं० ३९

लावणी

९. सेवाभावीजी रो बलि तोल वढायो,
चूरू मे तीन वात रो म्हातम पायो।
निज भार समुच्चय, लिखित तिथी नहि करणी[1],
सारां पहली भिक्षा री पांती वरणी।।

दोहा

१०. रतननगर अरु रामगढ, और फतेपुर फर्श।
माघोच्छव हित रतनगढ पहुंचां, वण्यो विमर्श।।

११. मार्ग शहर-सरदार रै, भेज्या चम्पक प्रात।
अट्ठावन ठाणां सहित, वणी विलक्षण बात।।

* लो भाई! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।। (ध्रुवप

१२. रतननगर सरदारशहर दिश साथ विहार कियो है,
एक दूसरै नै पहुंचा निज-निज पन्थान लियो है,
चम्पक चाल्या चित चंगजी,
सरदारशहर उछरंग जी,
अट्ठावन सुविनीत सन्त सह सिर धर आण-दुहाई हो।।

१३. रतनदुरग शुभसंगम में मुनि सारा आय मिल्या है,
सूरज-दर्शन स्यूं ज्यूं सूर्यविकासी कमल खिल्या है,
गुरु, गुरु-भ्राता रो मेळ जी,
गंगा-जमना रो मेळ जी,
देख दृश्य आकर्षक दर्शक हर्ष-घटा उमड़ाई हो।।

---

१. जयाचार्य के युग से एक परम्परा प्रचलित हुई—प्रतिदिन लिखित बोलना और लिखित रूप में अपने हस्ताक्षर करना। सेवाभावीजी को इसकी बक्सीस हो गई।

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१४. बोलै चम्पक—सन्त आपरा सारा सुघड़ सयाणां,
छोटा-मोटा सहज भाव स्यूं अटल अराधी आणां,
राख्यो म्हारो सम्मान जी,
गण-गौरव वद्‌यो महान जी,
कहै मगन मुनि—आ है अपणै शासन री अधिकाई हो।।

१५. दूजै दिन प्रवचन में एक सुरंगी ढाल सुणाई,
भैक्षव-गण में 'मुनि अज्जा'[1] री राग पीपली गाई,
हुइ सन्त सभा सामोद जी,
प्रश्नोत्तर परम प्रमोद जी,
नई पुराणी रीत-भांत री चर्चा संत चलाई हो[2]।।

कलश

१६. वैद मोहनलाल जी कै बड़ै- नोरै[3] में जम्यो,
माघमोच्छव रतनगढ को कहो किण नै नहि गम्यो।
व्यवस्था मंत्री भुळाई अबै चम्पक भ्रात नै[4],
सुघड़ता स्यूं सोचता रहता सदा इण बात नै।।

१७. स्वर्गवासी हेममुनि होग्या सुणी राजाण में,
घणी दोहरी ज्येष्ठ सोदर नै लगी अहलाण में।
साझ में रहता, सदा वहता विनय की बाट में,
हुई क्षति तत्त्वज्ञ-मुनि की सही संघ विराट में।।

---

१. देखें प० १, सं. ४०
२. देखें प० १, सं. ४१
३. मोहनलालजी बैद के आवासीय कमरे के पिछवाड़े में हुडेरे के रास्ते मे उनका एक बड़ा नोहरा था।
४. इससे पहले विशेष आयोजनो में स्थान आदि की व्यवस्था मुनि मगनलालजी करते थे। रतनगढ़ मर्यादा महोत्सव के अवसर पर उन्होंने मुनि चम्पालालजी को यह जिम्मेदारी दे दी।

१८. बणी स्यूं आ पिता-पुत्र सुसूत्र दीक्षा स्वीकरी,
साधुचर्या की कठिनता देख दिल दुविधा भरी।
कन्हैया री कर्म-कहाणी, कहूं किण-किण बात नै,
वेष बदली घरे पहुंच्यो, डुबोयो जगनाथ नै[1]।।

१९. कनक तो चढग्यो कसौटी, बाप रै बहकाव में-
नहीं आयो, गजब ढायो बालवय सद्भाव में।
मनक ज्यूं छह मास में की सफल संयम-साधना,
दृढ़प्रणी निसुणी गणी-मुख आखिरी आराधना[2]।।

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।। (ध्रुवपद)

२०. चाड़वास वैसाख बजाई संलेखण री सायण,
छंग्यालीस दिनां में सूत्र भगवती रो पारायण,
मुनि खेम साहसी संत जी,
आतम बल रो नहि अंत जी,
चौवनमें दिन पचख्यो अनशन, सोदर बण्यो सहाई हो।।

दोहा

२१. प्रारंभी वैसाख सुद, चोथ तपस्या सार।
पचखायो आषाढ़ सुद, एकम निशि संथार।।

२२. दूजै दिन मध्यान में, सीझ्यो अति शुभ जोग।
सेवाभावी रो रह्यो, सहज सुखद सहयोग।।

---

१. देखें प. १, सं. ४२
२. देखे प. १, सं. ४३
* लय: आदीश्वरसुत रै सामनै

२३. हेम[1] कनक[2] अरु खेम-गुण,[3] गाया म्है रच गीत।
गुणिजन गुण गावै सुगुरु, परम्परा री रीत।।

२४. तेरस सुद आषाढ़ की, पावस हेत प्रवेश।
बीदासर माजी युगल, आनन्दित अनिमेष।।

२५. * लच्छी-सेवगणी[4] बीदासर में न्हाल।
भारी तप चौथी-परिपाटी[5] सुविशाल।।

२६. बिच में संथारो पचख्यो है चौव्यार।
अट्ठारै दिन स्यूं सीझ्यो जय-जयकार।।

२७. सेवाभावीजी जा-जा बारम्बार।
परिणाम चढ़ाता ओ भारी उपकार।।

२८. भाद्रव विद दशमी सेवगणी उत्तीर्ण।
नहिं जात-पांत में धर्म हुवै संकीर्ण।।

२६. अणचांजी[6] चौथी परिपाटी तिण वर्ष।
कर पूरी चिन्ता चूरी स्वयं सहर्ष।।

३०. मुनि गुमानमलजी[7] सार्‌यो आतमकाज।
सारां नै दीधो सेवाभावी साझ।।

---

१. देखें प० १, सं. ४४
२. देखें प० १, सं. ४५
३. देखें प०१, सं. ४६
* लयः नमूं अनन्त चौबीसी
४. देखें प० १, सं. ४७
५. देखें प० १, सं. ४८
६. देखें प० १, सं. ४६
७. देखें प० १, सं. ५०

१८. वणी स्यूं आ पिता-पुत्र सुसूत्र दीक्षा स्वीकरी,
साधुचर्या की कठिनता देख दिल दुविधा भरी।
कन्हैया री कर्म-क्हाणी, कहूं किण-किण वात नै,
वेष वदली घरे पहुंच्यो, डुवोयो जगनाथ नै[1]।।

१९. कनक तो चढग्यो कसौटी, वाप रै वहकाव में-
नहीं आयो, गजव ढायो वालवय सद्भाव में।
मनक ज्यूं छह मास में की सफल संयम-साधना,
दृढप्रणी निसुणी गणी-मुख आखिरी आराधना[2]।।

*लो भाई! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।। (ध्रुवपद)

२०. चाडवास वैसाख बजाई संलेखण री सायण,
छंय्यालीस दिनां में सूत्र भगवती रो पारायण,
मुनि खेम साहसी संत जी,
आतम बल रो नहि अंत जी,
चौवनमें दिन पचख्यो अनशन, सोदर बण्यो सहाई हो।।

दोहा

२१. प्रारंभी वैसाख सुद, चोथ तपस्या सार।
पचखायो आषाढ़ सुद, एकम निशि संथार।।

२२. दूजै दिन मध्यान में, सीझ्यो अति शुभ जोग।
सेवाभावी रो रह्यो, सहज सुखद सहयोग।।

---

१. देखें प० १, सं. ४२
२. देखे प० १, सं. ४३
* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

२३. हेम[1] कनक[2] अरु खेम-गुण,[3] गाया म्हे रच गीत।
गुणिजन गुण गावै सुगुरु, परम्परा री रीत।।

२४. तेरस सुद आषाढ़ की, पावस हेत प्रवेश।
बीदासर माजी युगल, आनन्दित अनिमेष।।

२५. * लच्छी-सेवगणी[4] बीदासर में न्हाल।
भारी तप चौथी-परिपाटी[5] सुविशाल।।

२६. विच में संथारो पचख्यो है चौव्यार।
अट्ठारै दिन स्यूं सीझ्यो जय-जयकार।।

२७. सेवाभावीजी जा-जा बारम्वार।
परिणाम चढ़ाता ओ भारी उपकार।।

२८. भाद्रव विद दशमी सेवगणी उत्तीर्ण।
नहिं जात-पांत में धर्म हुवै संकीर्ण।।

२९. अणचांजी[6] चौथी परिपाटी तिण वर्ष।
कर पूरी चिन्ता चूरी स्वयं सहर्ष।।

३०. मुनि गुमानमलजी[7] सार्‌यो आतमकाज।
सारां नै दीधो सेवाभावी साझ।।

१. देखें प० १, सं. ४४
२. देखें प० १, सं. ४५
३. देखें प०१, सं. ४६
* लयः नमूं अनन्त चौबीसी
४. देखें प० १, सं. ४७
५. देखें प० १, सं. ४८
६. देखें प० १, सं. ४९
७. देखें प० १, सं. ५०

५६ सेवाभावी

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो ।।(ध्रुवपद)

३१. सेवाभावीजी साचवता मध्याह्ने व्याख्यान,
पट्ट बैठणो प्रवचन में दी आज्ञा सह सम्मान,
पथ में मिलणो ह्वै जाम जी,
तो खड़ा-खडा गुणग्राम जी,
अभिवादन कर आज्ञा लेणी, आ बक्शीष सुहाई हो ।।

३२. माघोत्सव सरदारशहर मे अग्रिम पावस अरजी,
सूरज-बैंगाणी[1] श्रद्धानत चही अपूरब मरजी,
सेवाभावी रो जोर जी,
मंत्री मुनि चतुर चकोर जी,
मोच्छव में चौमासो घोषित, सुण जनता चकराई हो[2] ।।

सोरठा

३३. हुयो दिवंगत सेठ,[3] पावस देख सक्यो नहीं।
पर प्रसन्नता नेठ, कानां स्यूं पावस सुण्यो ।।

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो ।।(ध्रुवपद)

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१. सूरजमलजी बैंगानी, लाडनूं
२. देखें प० १, सं. ५१
३. सूरजमलजी बैंगानी, लाडनूं

३४. स्वास्थ्य चिकित्सा हित अश्विनि-बाबू[1] की अरजी मानी
चम्पक आया गंगाशहर चौखळै री पुनवानी,
न्यारां में ढाई मास जी,
पुनि आया गुरुकुलवास जी,
डूंगरगढ़ साम्हेळो साझ्यो, मिलग्या भाई-भाई हो ।।

लावणी

३५. बोम्बे रो गोकुलदास-नानजी-गांधी[2],
ओ दृश्य निहारी बोलै गुरुपद बांदी ।
वाह ! वाह ! रे तेरापंथ वाह ! इण काले,
त्यांरेज वीर प्रभुवर नो शासन चाले ।।

३६. ओ विनय परस्पर प्रेम संघ-अनुशासन,
प्रत्येक परिस्थिति में पक्को आश्वासन ।
पंचम आरो चोथा आरा रो साथी,
यूं नाच उठ्यो गोकुल भाई गुजराती ।।

३७. आवी रचना क्यांही जोवा में नांवै,
हूं घणो फर्‌यो दुनिया में दर्शक दावै,
कोई मानो मत मानो, निपट नवेलो,
धार्मिक जग में ओ पंथ बण्यो अलबेलो ।।

३८. वरसां पहली पंडित-लालन[3] भी आयो,
बम्बइवासी जिनमत-मर्मज्ञ कहायो ।
समझी तेरापथ धार्‌यो, हृदय खिल्यो है,
मोती[4] रमणिक[5] भाई नै श्रेय मिल्यो है ।।

---

१. बंगाली डॉक्टर विभूतिभूषण के भाई।
२. देखें प० १, सं० ५२
३. देखें प० १, सं० ५३
४. बम्बई के फूलचन्दनिवास वाले मोती भाई।
५. श्री मगन भाई के जामाता एवं 'नारी रत्न' कान्ता बेन के पति रमणीक भाई शाह।

३६. गुजराती 'वम्बइ समाचार' में आई-
जो प्रतिक्रिया, आश्चर्यजनक असुहाई।
कोइ भाग्ये तेरापन्थ-पथिक वण ज्यावै,
कुण जाणै क्यूं प्रतिपख-मन पीड़ा पावै ।।

४०. सत्ताणव पावस शहर लाडणूं छायो,
सेवाभावी पुर में तप-घन बरसायो ।
दो नवरंगी[1] भायां, वायां में चंगी-
तेरहरंगी,[2] नवरंगी, दो पचरंगी[3]।।

४१ घर-घर में फुटकर तप रो अलख जगायो,
वालक वूढा युवकां भी जोश दिखायो ।
ओ श्रेय सहज सेवाभावी नै मिलसी,
श्रम रो मूल्यांकन करतां दिल खिलखिलसी ।।

४२. गढ में चरमोत्सव, अब आसोज महीनै,
सुखलाल-मुनी[4] चोपन दिन तप दृढ सीनै।
कोइ विकृति पारणा में उन्माद वण्यो है,
गहरै पागलपण में मस्तिष्क तण्यो है।।

४३. सन्तां सह सेवाभावी साथ दियो है,
सुमरण स्यूं आज हुवै उत्फुल्ल हियो है।
मिगसर एकम दिन 'सूरज भवन' विहारी,
श्रावक सूरज री याद न जाय विसारी।।

---

१ देखो प. १, सं. ५४
२ देखो प. १, सं. ५५
३ देखो प. १, सं. ५६
४. देखो प. १, सं. ५३

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।। (ध्रुवपद)

४४. आगामी मोच्छव हित दो उम्मीदवार समतोला,
चन्देरी राजलदेसर दोनूं ही ओलां-दोलां,
अब माच्यो जमघट जोर जी,
पो॰ विद एकम दिन भोर जी,
गढ-सुजान व्याख्यान मंच पर कठिन समस्या आई हो।।

४५. राजाणै रा लोक पांच सौ सजधज स्वयं खड्या है,
अठी लाडणूं-ठाकर[1] चाकर बणठण अधिक अड्या है,
दर्शक विस्फारित नेण जी,
है खड्या फैसलो लेण जी,
घोषित हुयो लाडणूं मोच्छव, बजी विजय-शहनांई हो।।

४६. राजाणै रा लोक हतप्रभ और निराश हुया है,
चांदमल्लजी बैद[2] जिसा गंभीर उदास हुया है,
लाग्यो गहरो आघात जी,
आघात जिसी ही बात जी,
पर अन्तिम परिणति जद आई, सारां रै मन भाई हो[3]।।

गीतक-छन्द

४७. लाडणूं मोच्छव मना बड़भ्रात साथ विहार है,
सुणी बेनाथे, हुया गुरु-मात[4] सख्त बिमार है।
शीघ्र म्है मध्यान्ह में अतिधूप में चाल्या वही,
मिल्या है माजी सलामत किन्तु बेहोशी मही।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१. ठाकुर बालसिंहजी, लाडनूं

२. देखें प॰ १, सं. ५८

३. देखें प॰ १, सं. ५६

४. मातुश्री छोगांजी

लावणी

५७. यूरोप-द्वन्द्व[1] भारत पर छाई छाया,
तव दूर-दूर सिंघाडा निकट बुलाया।
वा दूरदर्शिता शासण री कहलाई,
मंत्री भाई रो परामर्श सुखदाई।।

५८. छक जम्यो अजव सरदारशहर सीयाळे,
'मतिमंत मुणी' री ढाळ[2] सरस समकाळे।
चम्पक इक रात दसाणी[3] रै घर आया,
शुभ[4] आज्ञा ले पाटै ऊपर पोढाया।।

५९. सोदर-पग में आईठण रो ऑप्रेशन।
मुनि-दुलह[5] कियो, डाक्टर अविनाश[6] निदेशन।
इंची भर ऊंडो घाव देखणी नावै,
सेवाभावीजी सहन कियो समभावै।।

६०. बीदासर राजा प्रतापसिंह[7] अर्जाऊ,
मुनि मोलक[8] नै बीदासर में रख पाऊं।
घोपित डूंगरगढ पर अनुरोध हमारो,
सेवाभावीजी रो है लियो सहारो।।

---

१. द्वितीय विश्वयुद्ध, सन् १९४२
२. देखें प० १, सं० ६७
३,४. शुभकरणजी दसानी, सरदारशहर
५. मुनि दुलीचन्दजी, पचपदरा
६. तेरापन्थ धर्मसंघ के भक्त, गंगाशहर के डाक्टर
७. देखें प० १, सं० ६८
८. देखें प० १, सं० ६९

६१. ली जैन धर्म री दीक्षा पावस पायो,
शार्दुलपुर रो मुनि-बुध[1] डूंगरगढ ठायो।
भीषण गर्मी शार्दुलपुर किणनै भेजां,
मुनि चम्प-मीठिया[2] प्रस्तुत हुया सहेजां।।

६२. ओ बूढापो आ गरमी अरु आ दूरी,
फिर भी आ हिम्मत! सीखण जिसी सबूरी।
सादर सांकन शार्दुलपुर ओर पठाया,
भैक्षव-शासन की आ है अनुपम छाया।।

दोहा

६३. पावस गंगाशहर में, कालूयशोविलास।
प्रथम-प्रथम वाचन हुयो, ओ अपूर्व उल्लास।।

६४. ज्येष्ठ प्रेरणा स्यूं जबर, प्रारम्भ्यो तप-यज्ञ।
प्रबल सफलता है मिली, मर्म लहै मर्मज्ञ ।।

६५. तंय्याली तप पारणो, सझ्यो संत शिवराज[3]।
भाईजी म्हाराज रो, है सारां में साझ ।।

*लो भाई! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई ।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।।(ध्रुवपद)

६६. दो वर में अट्ठाई दीक्षा गंगाशहर हुई है,
सन्त बाल[4] मधुकरजी[5] आदिक मिल सुरधेनु दुही है,
कीन्हो अपणो कल्याण जी,
जिन-शासण रो मंडाण जी,
सेवाभावीजी रै रूं-रूं में खुशियां उमड़ाई हो।।

---

१. निकायप्रमुख मुनि बुद्धमलजी
२. देखें प. १, सं. ७०
३. देखें प्र. [illegible] सं. ७१
* लयः आछी [illegible] वरसुत रै [illegible] सीमन
४. शासनसेवी मुनि बालचन्दजी, गंगाशहर
५. संघपरामर्शक मुनि मधुकरजी, गंगाशहर

६७. भीनासर फागुण में नृप-वीकाण दरस हित आया[1],
और-और अधिकारी गण भी वन्दन कर उलसाया,
नोखामंडी री देन जी,
दीक्षित चेनो बेचैन जी,
चम्पक समझायो सहलायो, मिटी न मन-निबलाई हो[2]।।

६८. नोखा स्यूं अजनबी मार्ग ले शहर लाडणूं आया,
तप्यो तावड़ो कामळ बिछा-बिछा भिक्षा कर पाया,
फासू पाणी री ताण जी,
सब चढ्या परीषह-शाण जी,
बिना रोड धोरां री धरती, मुश्किल मंजिल पाई हो[3]।।
हंस[4] भतीज ग्रही दीक्षा, सहयोगी मोहन-भाई[5] हो ।।



१. देखें प० १, सं. ७२
२. देखें प० १, सं. ७३
३. देखें प० १, सं. ७४
४. मुनि हंसराजजी लाडनूं
५. आचार्यश्री के ज्येष्ठ भ्राता मोहनलालजी खटेड़

वर्ग ७

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।।(ध्रुवपद)

१. सुजानगढ डूंगरगढ राज रतनगढ़ चउ चौमासा
संवत दो हजार पर इक दो तीन रु च्यार खुलासा,
धार्मिक धन री बोछार जी,
घर-घर खुशियां अणपार जी,
चम्पक सेवा सहज भाव स्यूं शासण-रीत सुहाई हो।।

\+ भिक्षू-शासण री पुण्याई रो के आर-पार है,
सेवाभावी जेहड़ा सन्त, वारी वार-वार है।
पुरुषारथ रो निमल नमूनो,
सेवा श्रम संयम ही ज्यांरो सारो कारोबार है।। (ध्रुवपद)

२. क्षयोपशम विद्या रो कम है,
तो भी नित उद्यम उत्क्रम है,
हिम्मत हारणो नहि सीख्यो, छाती धार-फार है।।

३. शक्तमल्ल अपराधीपण में[1],
रैणो चावै भैक्षव- गण मे,
क्षण में संघ स्यूं निष्कासन अब तो दुर्निवार है।।

सोरठा

४. सगत भगत बण साफ, मोटापुरुषांजी[2] कनै।
अबै बचाओ आप जिंयां-तिंयां बोलै विनत।।

---

* लय. आदीश्वरसुत रै सामनै

\+ लयः स्वामी भीखणजी रो नाम

१ देखें प. १, सं. ७५

२. मुनि चम्पालालजी

५. ज्येष्ठ[1] करारो जाव, दियो न जोड़ी रुख जरा।
आं लखणां स्यूं आव, मुश्किल रेणी गण मझे।।

६. मुक्तभाव मंजूर, करणै स्यूं सरसी गरज।
नहीं, बिगड़सी नूर, कृत करणी भरणी पड़ै।।

७. छापर आधी रात, पछे निकाळ्यो संघ स्यूं।
विसरण री नहिं वात, एके[2] मिगसर मास में।।

*भिक्षू-शासन री पुण्याई रो के आर-पार है,
सेवाभावी जेहड़ा सन्त, दीपतो दिदार है।
पुरुषारथ रो...... ।। (ध्रुवपद)

८. शुरु हुयो निशि नव-अभिवन्दन[3],
'ओम् जय-जय त्रिभुवन'[4] अभिनन्दन,
बीदासर[5] में सेवाभावीजी प्रारंभकार है।।

सोरठा

९. तिलोक-सागर पास, मुनि 'हीरो'[6] दीक्षा ग्रही।
पिता मानजी[7] खास, भक्त सहोदर ज्येष्ठ रा।।

---

१. मुनि चम्पालालजी
२. वि॰ सं॰ २००१
* लयः स्वामी भीखणजी रो नाम
३. नई प्रार्थना
४. देखें प॰ १, सं॰ ७६
५. वि॰ सं॰ २००५
६. मुनि हीरालालजी, बीदासर
७. देखें प॰ १, स॰ ७७

१०. * मा॰ बिद तेरस चातुरगढ़ में, श्री कालूयशोविलास बँचै,
युवपद प्रत्यर्पण रो प्रकरण, मानो सजीव-सो चित्र खचै।
वीं परम खुशी में ज्येष्ठ बन्धु भरपूर परखदा में बोलै,
ई अवसर पर मंत्री मुनि रो वर्धापन हो जनता जोलै।।

११. सारा ही सन्तां सतियां नै बक्शीसां होणी चाहीजै,
एहड़ी अपूर्व घटनावां री स्मृतियां नहि खोणी चाहीजै,
भाईजी री वीं अरजी पर नौ-नौ सौ गाथा सर्वालै-
वक्शीस हुई, मंत्री मुनि रो वर्धापन चिन्तन में चालै।।

रामायण

१२. माघ शुक्ला सप्तमी दिन महोत्सव मध्यान में,
मगन नै 'मंत्री' उपाधी मिली अतिसम्मान में।
खास-रुक्कै[1] की इनायत हुई परम उमंग में,
मुदित चम्पक भ्रात, सारो संघ है रस रंग में।।

१३. ज्येष्ठ सोदर नै हुई बगसीस आज विभाग री,
करो समचै आग सब, मैं स्वयं वाणी वागरी।
भ्रातृवर-उपकार रो आभार क्यूंकर वीसरूं,
सदा संरक्षक सहायक रूप में मैं संभरूं।।

दोहा

१४. फा॰[2] बिद दशमी लाडणूं, कालूयशोविलास।
प्रथम-प्रथम पूरो हुयो, प्रवचन में सोल्लास।।

१५. तिण वेला आनंद रो, अद्भुत बह्यो प्रवाह।
जन-जन रै मावै नहीं, रूं-रूं में उत्साह।।

---

* लय: भादूड़ी तेरस आई है

१. देखें प॰ १, सं॰ ७८

२. फाल्गुन मास

*भिक्षू-शासण री पुण्याई रो के आर-पार है।
सेवाभावी जेहड़ा सन्त, वारी बार-बार है।।
पुरुषारथ रो.....।। (ध्रुवपद)

१६. खड्या-खड्या मुनि चंपक बोलै,
घट-घट रा अन्तर-पट खोलै,
करता कालूयशोविलास रो ज्यूं उपसंहार है।।

१७. मधुरी मृदु मुस्कानां भरता,
सारां श्रोतां रो मन हरता,
प्योर मारवाडी बोली रो दुलार-प्यार है।।

१८. भारी काव्य बणार सुणायो,
संघ अपूरव आनंद पायो,
आयो बो बरतारो सामनै सारो साकार है।।

१६. विद्वानां रै पानै पड़सी,
म्हां सरिखां रै मुश्किल पड़सी,
फिर भी संघ री कृतियां में ओ श्रम पहली बार है।।

२०. मां वदनां लाडां री म्हारी,
है आंतर इच्छा तीनां री,
बांटां खुशियां री वधाई, होवै यादगार है।।

चौपाई

२१. पांच-पांच सौ गाथावां रो-
पुरस्कार चम्पक भ्राता रो।
इक सौ नौ-नौ परिठवणा री,
मां बाईजी री रिझवारी।।

* लयः स्वामी भीखणजी रो नाम

* भिक्षू-शासण री पुण्याई रो के आर-पार है।
सेवाभावी जेहड़ा संत, वारी वार-वार है।।
पुरुषारथ रो.......।। (ध्रुवपद)

२२. संयम-पथ राकेश[1] लियो है,
सोदर आज्ञा-स्हाज दियो है,
किंयां भूल्यो जासी भाईजी रो बो उपकार है।।

२३. डूंगरगढ़ पावस इतिहासी,
युवक वण्या है तत्त्वाभ्यासी,
डाक्टर जेठ-भंसाली[2] में जागृति पहली वार है।।

२४. मुनि नथमल री पे'ली पोथी,
'जीव अजीव' बणी इकलौती,
अब तो महाप्रज्ञ री प्रज्ञा रो प्रवह्यो प्रस्तार है।।

२५. दो हजार दो पो॰ मोमासर,
कुन्दन-मुनिवर[3] स्वर्ग सिधाकर,
पन्द्रह घंटां रै संथारै पायो जय-जयकार है।।

२६. है सरदारशहर माघोत्सव,
संस्कृत सप्ता रो क्रम अभिनव,
बै दिन आज भी स्मृतियां में आवै चित्राकार है।।

२७. मास्टर मुनि-कुंदन[4] मेवाड़ी,
अल्पायू में तोड़ी नाड़ी,
मा॰ सुद पांचम चंपक-साझ में स्वर्गा री ब्हार है।।

---

* लयः स्वामी भीखणजी रो नाम

१. मुनि राकेशकुमारजी, सुजानगढ़

२. देखें प॰ १, सं॰ ७६

३. मुनि कुन्दनमलजी, जावद

४. देखें प॰ १ सं॰ ८०

२८. मोच्छव वाद विहार कियो है,
चूरू-पथ सुविचार लियो है,
स्वास्थ्य लाभ हेत वदनां जी नै राख्या लार है।।

२९. फूलासर[1] स्यूं वापस आणो-
पड्यो, मिल्यो आकस्मिक टाणो,
जाणी माताजी नै दरसण देवण री दरकार है।।

३०. भगिनी भाई नै संभलाई,
माजी मन उछरंग उपाई,
चूरू चेत में शिवराज ऋषी[2] रो खेवो पार है।।

लावणी

३१. दो मास – कल्प चूरू मलसी[3] टमकोरां,
शार्दुलपुर में अभिनव इतिहास सजोरां।
साध्वीप्रमुखा झमकूजी[4] रै ज्वर आई,
उपचार न लागै, वढ़ी अंग अवळाई।
मध्याह्न ठिकाणै ज्येष्ठ भणी मैं भेज्या,
मैं स्वयं दर्श दे आंतर हृदय सहेज्या।
सुद छठ आषाढ सवा बारह बजतांई,
सति झमकूजी ली सुरपुर-बाट विदाई,
इण दुनिया में कुण रह्यो, रहै बण स्थाई,
स्थिर भावे चम्पक- चरित सुणो सुखदाई।।

३२. सातम प्राते झमकू-स्मृति-सभा बुलाई,
'सैंतीस वर्ष लग' अभिनव ढाल[5] सुणाई।

---

१. देखें प० १, सं० ८१
२. देखें प० १, सं० ७१
३. मलसीसर
४. देखें प० १, सं० ८२
५ देखें प० १ सं० ८३

लाडांजी[1] साध्वीप्रमुखा रो पद पावै,
भाईजी-मुनि भगिनी नै खूब बधावै।
पो० बिद पांचम अद्भुत नक्षत्र मिल्यो हो,
भाई भगिनी दीक्षा रो रंग खिल्यो हो।
भाई आचारज, साध्वीप्रमुखा भगिनी,
चम्पक बोलै—निश्चित नियती शुभलगिनी।
शासण री आब बढाओ भाई बाई,
चोखै चित चम्पक-चरित सुणो सुखदाई।।

सोरठा

३३. एपेन्डिक्स आटोप, सेवाभावी रै उदर।
प्रकट्यो प्रकृति प्रकोप, जी भर बैचेनी बढ़ी।।

३४ एलोपेथि इलाज, शल्यचिकित्सा ही हुवै।
आयुर्वेदिक आज, रघुनन्दनजी[2] झेलियो।।

३५. अन्न बंद इक मास, 'रक्खो' करड़ो राखणो।
कियो व्याधि-व्यपनाश, पण्डित यश पायो प्रखर।।

लावणी

३६. ओ श्रेय खाद्य-संयम नै मिलणो चावै,
सेवाभावीजी जो राख्यो दृढभावै।
संतां री सेवा रात-दिवस इकसरखी,
अन्यत्र 'न भूतो न भविष्यति' मैं परखी।
बा लगन मगन री, म्हारी सहज सुदृष्टि,
सब रै संगम स्यूं हुई स्वास्थ्य री सृष्टि।
औषध तो मात्र निमित्त थथोपो मन नै,
सुन्दर सेवा रो अवसर रघुनंदन नै।
दुःसाध्य व्याधि ऑप्रेशन विना मिटाई,
चोखै चित चम्पक-चरित सुणो सुखदाई।।

---

१. देखें प० १, सं० ८४
२. देखें प० १, सं० ८५

दोहा

३७. शिशु निबन्ध प्रतियोगिता, पायो पेलो स्थान।
सागर[1] मन में फूलग्यो, ली चम्पक पहचान।।

३८. आ है बाधा प्रगति में, व्यर्थ करै अभिमान।
विद्यार्थी बणणै बगत, बण बेठ्यो विद्वान।।

३९. फिरै उग्रवादी बण्यो, ज्ञानी बण्यो अजाण।
आन्तर री अनुशासना, स्वयं स्वयं की छाण।।

सोरठा

४०. मौकै री वा सीख, सविनय सागर स्वीकरी।
बणगी लोह री लीक, श्रद्धासिक्त विनम्रता।।

*भिक्षू-शासण री पुण्याई रो के आर-पार है।
सेवाभावी जेहड़ा संत, दीपतो दिदार है।।
पुरुषारथ रो ......।। (ध्रुवपद)

४१. आज नियुक्त हुयो है सागर,
सेवाभावी स्हाज उजागर,
आजीवन सेवा रो सायो पायो शानदार है।।

४२. दीक्षा[2] धर्मस्तूप रै साम्हैं,
बिरची गौ आई जनता में,
आखिर सतियांजी री ओर धाई बण चोफाल है।।

---

१. मुनि सागरमलजी, लाडनूं
* लय: स्वामी भीखणजी रो नाम
२. मुनि संगीतकुमारजी, श्रीचन्दजी आदि चार सन्त दीक्षित हुए।

४३. हो चोकन्नो चम्पक चाल्यो,
मेघ सुराणो[1] भी हठ झाल्यो,
साही सींग रोकी, ज्यान झोंकी जोरदार है।।

४४. मत घबराओ सतियां! मैं हूं,
फूलछड़ी नहीं आणे देहूं,
साहस भाईजी रो हो सधीरो पहरेदार है।।

४५. रतनगढ बैसाख महीने,
सहि कही कृपलानीजी[2] नै,
आंख झांकता ही रहग्या लोग एक बार है[3]।।

४६. मुंह पर खरी-खरी कह देणी।
कठिन काम जोखिम ले लेणी,
ए कुण बाबा ? पूछै कृपलानी भी व्योरेवार है।।

४७. * राजाणै स्यूं वसुगढ विच में, लुटग्यो गे'णो सोहागण को,
डुंगजी[4] ठाकर की चौकी में, बोल्यो चम्पक देतो ठणको।
दिन दाड़े मुनि-पदयात्रा में, एहड़ी चोर्‌यां होणै लागी,
खड़को-भडको कोनी जाणै, रँग रजपूती रोणै लागी।।

४८. ऊठ्यो डुंगजी कर हणहणाट, चोरी पकड्यां ही घर जास्यूं,
चाल्यो हथियार लियां हाथे, गे'णो सारो वापस लास्यूं।
सिंझ्या पेली खर-खोज काढ, गे'णो बाई नै संभलायो,
माफी मंगवा चोरी छुडवा, भाईजी रै चरणां ठायो।।

---

१. देखें प० १, सं० ८६
२. जे० बी० कृपलानी
३. देखें प० १, सं० ८७
* लयः भादूड़ी तेरस आई है
४. रतनगढ निवासी मोहनलालजी बैद की हवेली में रहने वाले ठकुर डूंगजी

४६. मुनि नवलरामजी मेवाड़ी ,नव दिन तप में अनशन धार्यो,
साधक हस्ती वाधक बण, वातावरण बणायो अविचार्यो।
है उपालम्भ तपसी पायो, सकुचायो मानस मुरझायो,
जीणो मरणो है भारभूत, गुरु महर नजर जदि खो पायो।।

५०. भाईजी तव समझाइस कर, ढाढस बंधाई है भारी,
दोनां री आपस री गतिविधि, मुझ पासे वर्णित की सारी।
दे दरसण शान्त करी दुविधा, चढती श्रेणी परिणामां की,
सानन्द सीझग्यो संथारो[1], अभिनव जीवन-झांकी झांकी।।

दोहा

५१. आत्मधवलिमा नवल की, सोदर रै सहयोग।
अनशन तपविधि इतरथा, बण ज्याती सब मोघ।।

५२. हल्की-फुल्की हरकतां, हस्ती री हर बार।
निरख निरंकुशवृत्तिता, नवल कियो निस्तार।।

५३. साधक आखिर समय भी, कियो न मन-पछताव।
खमतखामणा नहि किया, भर विद्रोही भाव।।

५४. दियो नवल नै धवल-दिल, सेवाभावी स्हाज।
तिण रो भी इण रै हुयो, जाणक दुगणो दाझ।।

५५. भीतर ही भीतर लग्यो, सन्तां नै उकसाण।
शासण में विद्रोह रो, वातावरण बणाण।।

५६. जो हि करै सो ही भरै, आखिर गण नै छोड।
कियो अपव्यय शक्ति रो, की निन्दा जी तोड़।।

५७. अटल निभाई संघ स्यूं बहिर्भूत री रीत।
मोहमत्तता मनुज नै, फोकट करै फजीत।।

---

१ देखें प० १, सं० ८८

लावणी

५८. श्रावण सुद तेरस रतनदुरग चौमासे,
बड़वन्धव नै मैं बोलाया निज पासे।
वलि सन्त स्हाज रा सारा ही तेड़ाया,
क्यूं ? क्यूं ? प्रश्नायित विस्मित द्रुतगति आया।।

५६. मैं कह्यो-अबै सेवाभावी समचै है,
वक्शीषां सारी, बाकी किसी बचै है।
क्यूं रहै ज्येष्ठ संकीर्ण दायरै में अब ?
क्यूं बाजै चंपक-स्हाज, स्वयं समझै सब।।

६०. मुनि नथमलजी अरु दिनकरजी दोनां रो,
नव स्हाज आज स्यूं वन्दनयुत स्वीकारो।
देखी आकस्मिक परिवर्तन री धारा,
आश्चर्य-चकित स्तम्भित-सा रहग्या सारा।।

६१. क्षण इक रुक फिर मैं कह्यो—सुणो स्मृति ल्यावो,
मंत्रीमुनि रो इण स्यूं इतिहास मिलावो।
मंत्रिमुनि नै जब साझ-मुक्त म्है कीना,
आ ही स्थिति सन्तां रा सकुचाया सीना।।

६२. सैंताळी वरसां रो क्यूं साझ उठायो ?
दिलगीर कई आंख्यां स्यूं जल वरसायो।
तिण रो परिणाम सुखद सुन्दर जब आयो,
तब एक स्वर स्यूं सब ही खूब सराह्यो।।

६३. वा ही स्थिति आ है, साझ-मुक्त चम्पक है,
कइ कुन्द बण्या है, चम्पक-अनुकम्पक है।
जावो अब अपणो-अपणो साझ जमावो,
वणकर निश्चिंत परिस्थिति नै अजमावो।।

६४. सेवाभावी उण दिन तो सब सन्तां नै,
भेळो ही आ'र करायो थिरता ठानै।
दी शिक्षा वरसां भेळा रह्या उम्हावो,
विछुड़न-वेळा में सारा खमो-खमावो।।

६५ पारस्पर प्रेम प्रगाढ राख रहणो है,
हर रोज गुरां रै इंगित में वहणो है।
सन्तां कृतज्ञता ज्ञापित कर सुख माणै,
कर वनणा अपणै-अपणै चल्या ठिकाणै।।

*भिक्षू-शासण री पुण्याई रो के आर-पार है।
सेवाभावी जेहड़ा सन्त, दीपतो दिदार है।।
पुरुषारथ रो....।। (ध्रुवपद)

६६. अब तक रह्या साझ-अगवाणी,
आज नई पर्याय पिछाणी,
सारो वातावरण सूनो-सूनो एक बार है।
नव-नव कल्पनां री बरसण-सी लागी बोछार है।।

६७. सागर आदि सन्त सेवा में,
मडणो हर गतिविधि रै साम्है,
स्वावलम्बन रो आधार साधना रो द्वार है।।

---

* लय- स्वामी भीखणजी रो नाम

दोहा

६८. मालचंदजी सेठिया[1], भाईजी रा भक्त।
संघ संघपति चरण में, अन्तर-मन अनुरक्त।।

६९. भाईजी म्हाराज नै, आ पूछ्यो एकान्त।
परिवर्तन में आपरो, मन तो नहीं अशान्त?

सोरठा

७०. असमाधि की वात, क्यूं कब किण रै मन उठै?
मैं हूं सदा सनाथ, संघ संघपति-चरण में।।

७१. परिवर्तन रो दौर, मान्य यथोचित संघ में।
आचार्यां कर डोर, सुरखित संघ-पतंग री।।

रामायण

७२. सदा रह्यो मै चहल-पहल में, नहि एकान्त सुहातो हो,
अब मैं आदत विसी वणास्यूं, क्यूं दुख पास्यूं आतो हो।।
हाथ-पैर जब तक औ चालै, तव तक चिन्ता की के वात?
पछै सुगुरु स्वयमेव निभासी, आ है तेरापथ री ख्यात।।

७३. भाईजी रो सुन्दर उत्तर सुण सारा संतुष्ट हुया,
श्रमनिष्ठा अरु संघभक्ति संस्कार स्वयं संपुष्ट हुया।
वृत्ति रांघड़ी रो परिचय, कायरता नहीं दिखाता हा,
कठिन परिस्थितियां में कब ही घुटना नहीं टिकाता हा।।

---

१. देखें प० १, सं० ८९

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरित सुणो सुखदाई।
चरित सुणो सुखदाई, आंको गरिमा गहराई हो।। (ध्रुवपद)

७४. अब लों गुरुकुलवास वस्या सेवाभावी इकधारा,
बहिर्विहारी वण विचरण री क्यूं कोइ वातं विचारां,
अब आयो समय सुप्यार जी,
अभिनव इतिहास उदार जी,
पर उपकार-परायणता परिचायण वेळा आई हो।।



* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

वर्ग ८

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो।।(ध्रुवपद)

१. रतनदुरग पावस पूरो कर आया राजलदेसर,
तेड़्या एक दिवंस म्हैं वदनां लाडां रा लाडेसर,
मिगसर सुद पख री बात जी,
आ बैठ्या चम्पक भ्रात जी,
सहज शान्त सामन्त्रण कोमल स्वर में अब बतलावां हो।।

\+ चम्पक ! जयपुर जाणो है,
गौरव गण री बढाणो है।
करणो है अब बहिर्विहार, गामां नगरां में उपकार।
शुभ सन्देश सुणाणो है,
अभिनव अनुभव पाणो है। (ध्रुवपद)

२. गुरुकुलवास छोडणो दो'रो बड़ी अटपटी आसी,
आ भी है शासण री सेवा, यूं मन नै आश्वासी,
लेवो सन्त पुस्तकां लार।
विचरो दिल में दृढ़ता धार।।

३. पास-पड़ोस खेतरां में पे'ली तो खूब विचरज्यो,
फिर आणैवाळो बरसाळो जयपुर पुर में करज्यो,
भावी पीढ़ी में संस्कार।
संघ-भावना रो विस्तार।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै
\+ लयः नीलै घोड़ै रा असवार

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो चरि·
चरित सुणो सुखदाई, आंको

७४. अब लों गुरुकुलवास वस्या
बहिर्विहारी बण विचरण री द
अब आयो समय सु
अभिनव इतिहास र
पर उपकार-परायणता परि

* लय: आदीश्वरसुत रै सामनै

कलश

१०. पायली स्यूं विदा वापस करत सन्तां स्यूं कहै—
'सामंत ! मंत्री ! घरे जावो राम-रस स्मृति में लहै[१]।'
म्है अवै वनवास ज्यूं बाहिरविहारी हां बण्या,
सदा सेवा सुगुरु री करज्यो सतंत तण्यां-धण्यां।।

११. सात-ठाणे[२] रतनगढ हो फतहपुर पथ संचर्‌या,
नवलगढ सीकर शुभंकर सभी क्षेत्र हर्‌या-भर्‌या।
पोष सुद पख लागतां ही सहज जयपुर जन तर्‌या,
एम० आई० रोड[३] दूगड़-भवन[४] में पगल्या धर्‌या।।

१२. शहर में चन्दन-हवेली[५] में कर्‌यो हद चानणो,
जयपुरी तत्त्वज्ञ श्रावक[६] सही पड़सी मानणो।
कियो अति उपकार आगै कर विहार सिधावणो,
सवाईमाधोपुरी पथ भगतगढ मनभावणो।।

१३. करै सब मे'नत-मजूरी जी-हजूरी क्यूं करै ?
ईं इलाके का मिनख पुरुषार्थ परम समाचरै।
स्वावलम्बन स्यूं सझै सेवा सजोरी पंथ में,
पीढियां स्यूं जमी आस्था प्रबल तेरापन्थ में।।

दोहा

१४. बड़ी-बड़ी भगवतगढी, वै बाट्यां बा दाल।
दो द्रव्यां भोजन हुवै, सीधी-सादी चाल।।

---

१. देखें प० १, सं० ८१
२. देखें प० १, सं० ८२
३. मिर्जा इस्माइल रोड
४. चन्दनमलजी दूगड़ का भवन
५. चन्दन महल
६. देखें प०१, सं० ८३

४. सन्तां सतियां भायां बायां में अति विस्मय छायो,
वड़वन्धव ने इंयां किंयां आकस्मिक ब्यार करायो,
इण में है कोइ ऊंडी रेस।
अथवा कारण बण्यो विशेष।।

५. सुखे कियो प्रस्थान, स्थान बाहर तक म्है पहुंचाया,
छोटा-मोटा सारा संत दूर तक जा-जा आया,
मातुश्री लाडांजी आद।
आपै सविनय आशीर्वाद।।

६. उमडी भीड़ सजग जनता री सुन्दर सीन खिल्यो है,
विरहाकुल भाई नै मंत्री रो वात्सल्य मिल्यो है,
बोल्या धर खान्धां पर हाथ।
सुखसाता स्यूं रहिज्यो भ्रात!

७. मोटो ध्यान हुवै मोटां रो आपां गुरु रै शरणे,
जो ही करै भलां नै होसी, प्राण चढावां चरणे,
म्हां बूढां नै करज्यो याद।
मंगल गुरुवां रै परसाद।।

८. गांव पायली में हीरांजी[1] मिलगी सती सयाणी,
उलट भाव स्यूं भेट पटड़ियां प्यालो पीणै पाणी,
ल्यो छोटी नै मोटी मान।
घर सारू होवै मेहमान।।

सोरठा

६. निशि नान्है-सै गाम, सन्तां रो मेळो सखर।
रवि ऊगत अभिराम, विहार री वेळा हुई।।

---

१ देखें प॰ १, सं॰ ६०

कलश

१०. पायली स्यूं विदा वापस करत सन्तां स्यूं कहै—
'सामंत ! मंत्री ! घरे जावो राम-रस स्मृति में लहै[1]।'
म्है अबै वनवास ज्यूं बाहिरविहारी हां बण्या,
सदा सेवा सुगुरु री करज्यो सतंत तण्यां-धण्यां।।

११. सात-ठाणे[2] रतनगढ हो फतहपुर पथ संचर्‌या,
नवलगढ सीकर शुभंकर सभी क्षेत्र हर्‌या-भर्‌या।
पोष सुद पख लागतां ही सहज जयपुर जन तर्‌या,
एम० आई० रोड[3] दूगड़-भवन[4] में पगल्या धर्‌या।।

१२. शहर में चन्दन-हवेली[5] में कर्‌यो हद चानणो,
जयपुरी तत्त्वज्ञ श्रावक[6] सही पड़सी मानणो।
कियो अति उपकार आगै कर विहार सिधावणो,
सवाईमाधोपुरी पथ भगतगढ मनभावणो।।

१३. करै सब मे'नत-मजूरी जी-हजूरी क्यूं करै ?
ईं इलाकै का मिनख पुरुषार्थ परम समाचरै।
स्वावलम्बन स्यूं सझै सेवा सजोरी पंथ में,
पीढियां स्यूं जमी आस्था प्रबल तेरापन्थ में।।

दोहा

१४. बड़ी-बड़ी भगवतगढी, बै बाट्यां वा दाल।
दो द्रव्यां भोजन हुवै, सीधी-सादी चाल।।

---

१. देखें प० १, सं० ८१
२. देखें प० १, सं० ८२
३. मिर्जा इस्माइल रोड
४. चन्दनमलजी दूगड़ का भवन
५. चन्दन महल
६. देखें प०१, सं० ८३

१५. खांधे धर विष्टर अवर खान पान सामान।
पगपाळा सेवा करै, स्वावलम्बिता मान।।

* चम्पक ! जयपुर जाणो है,
गौरव गण रो वढाणो है। (ध्रुवपद)

१६. खुशी-खुशी फरस्या है सारा छोटा-मोटा क्षेत्र,
खेत्र -खेत्र में खोल्या है, जन-जन रा आन्तर नेत्र,
गूंजी है मुख-मुख आवाज।
वाह ! वाह ! भाईजी महाराज।।

१७. भगवतगढ में मिलन सत्यां रो ले म्हारो सन्देश,[1]
जीवण मुनि रै साथै भी मेल्यो सन्देश-विशेष,[2]
शीष चढायो है गुरुभ्रात।
खुशियां री के वरणूं बात।।

१८. जयपुर में चौमासो ठायो लालाजी[3] रै गेह,
ठायो लाभ उठायो जयपुर -जनता निस्सन्देह,
दूरी छापुर में जयपुर में।
पर सिमटी बन्धवद्वय उर में।।

+ विजयी यात्रा चम्पक भ्रात री रै,
जयपुर री विख्यात ।। (ध्रुवपद)

१९. पुरुषार्थी परमार्थी सोदरू रे, जनहित करुणास्रोत।
परदुख-कातर अपणै आप में रे, आन्तर ओतप्रोत।।

---

* लयः नीलै घोड़ै रा असवार

१ देखें प० १, सं० ६४

२. देखें प० १, सं० ६५

३. लाला चम्पालालजी सिंघड, जो शताब्दी तक साधु-साध्वियों के शय्यातर रहे हैं।

+ लयः साधुजी नगरी आया सदा भला रे

२०. छापर पावस आश्विन मास में रे, सुण अग्रिम उद्घोष।
म्हारी यात्रा जयपुर री हुसी रे, जाग्यो चम्पक जोश।।

२१. मिली बधायां जन-जन स्यूं वड़ी रे, सहज वढ्यो सम्पर्क।
राष्ट्रीय नेता पट्टाभी[1] मिल्या रे, अभिवादन अवितर्क।।

२२. जयपुरियां री सेवा सांतरी रे, अब आगै प्रस्थान।
सीकर पथ सुजानगढ पो॰ बदी रे, राघव भरत मिलान।।

२३. अभिनव क्रम स्यूं जा म्है सामनै रे, ल्याया मूल ठिकाण।
करी वन्दना पुनि संघोन्मुखी रे, कुरव वढ़ायो जाण[2]।।

२४. गुणग्राम अभिवादन वचथुई रे, करै जुगति स्यूं ज्येष्ठ।
तीर्थ चतुष्टय समुदय उल्लसी रे, सुणै सुखद पद[3] श्रेष्ठ।।

२५. परम प्रसन्नमनां म्है तिह समै रे, साही भाई हाथ।
दिल्ली पावस थ्यावस स्यूं दियो रे, विस्मित सारो साथ।।

२६. एक दिवस हित भेज्या लाडणूं रे, पुरवास्यां री अर्ज।
दूजै दिन मझ प्रवचन में मिल्या रे, समुचित साझ्यो फर्ज।।

२७. पो॰ सुद ग्यारस छापर में छज्यो रे, मंत्री भ्रात मिलान।
कर साही अतिशय अपनत्व स्यूं रे, मगन वदै अम्लान।।

२८. जयपुर जात्रा री म्हारी खुशियां ग्रहो रे, सफल सुफल चौमास।
दिल्ली हित सौ-सौ शुभकामना रे, गुरु-वचनां विश्वास।।

---

१. कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पट्टाभिसीतारमैय्या
२. देखें पं॰ १, सं॰ ९६
३. देखें प॰ १, सं॰ ९७

२९. राजाणे मोच्छव दो श्रमणियां[1] रे, अणसण मरण-समाधि।
चम्पक क्यूं चूकै मौकै अणी रे, मेटी आधि-व्याधि।।

३०. पेरिस जालंधर युनिवर्सिटी रे, प्रोफेसरद्वय[2] देख-
श्रमणीद्वय रो संथारो, गिण्यो रे, जीवन सफल विशेख।।

कलश

३१. माघमोच्छव तक सहोदर रह्या गुरुकुलवास में,
अतुल आनन्दितमना नित नयै श्वासोच्छ्वास में।
जातरा री है तयारी अवै दिल्ली जावणो,
सात-ठाणां[3] रो मिलायो जोग जन-मनभावणो।।

३२. आज है मंत्रीश रो प्रस्थान छापर की तरफ,
ज्येष्ठ नै दी सीख मीठी ईख-सी हरफोहरफ।
हाथ दोनूं धर्‌या खांधे प्रेम सांधे सांतरो,
मिल्यो हियड़ै स्यूं हियो, क्यूं कठै तव मम आंतरो।।

३३. रहै करुणा कहै मंत्री मगन गीली आंख स्यूं,
कृपा दृष्टी आपरी मंत्रीश! मैं नित झांकस्यूं।
सामनै है राजधानी सावधानी राखज्यो,
गुरां री करुणा-नजर संजीवनी-रस चाखज्यो।।

३४. लै विदाई स्वयं भाईजी अबै राजाण स्यूं,
विनय अरु वात्सल्य शिक्षा ग्रही जीवन प्राण ज्यूं।
विचरता मजलोमजल हर क्षेत्र नै संभालता,
हर्ष हरियाणे रह्या आनन्द स्यूं मन म्हालता।।

---

१. साध्वी मोहनांजी और साध्वी चांदा|जी, सरदारशहर
२. फ्रांस विश्वविद्यालय के प्रो० रेन्यू और जालन्धर विश्वविद्यालय के प्रो० सूर्यकांत
३. देखें प० १, सं० ६८

३५. बह्यो निज दायित्व हरियाणा-निवासी भक्तजन,
सहोदर समुपासना में गाम-गामे मुदितमन।
बड़ो विस्मय एक कुक्कर भी रह्यो उपपात में,
नाम मोती सहज संस्कारी सजग दिन रात में।।

*सेवाभावी रो आर्जव भाव सुहायो।
निशि-वासर रहतो जन-मन आकर्षायो।। (ध्रुवपद)

३६. हरियाणा में घूम-घूमकर अति उपकार कियो है,
जी, अब दिल्ली पावस प्रवास, रोहतक रो पंथ लियो है,
श्रावकगण सेवा रो दायित्व निभायो।।

३७. उपनगरां नै फरस-फरस लोगां रा दिल टंटोल्या,
जी, बालक वृद्ध युवक सारां नै एक तराजू तोल्या,
बाजार नयै छव को पावस थिर ठायो।।

३८. लाला विरधीचन्द-भवन में धार्मिक ज्योत जगाई,
जी, जन-सम्पर्क बढ्यो तेरापथ सार्वजनिकता पाई,
जस मूल सुरक्षित फूलै फळै सवायो।।

३९. व्यापारी अरु राजनयिक बौद्धिक बहु आय मिल्या है,
जी, विधि-विधान तेरापथ रो सुण मानस-सुमन खिल्या है,
शर्मा[1] वर्मा[2] केइ हार्दिक भाव बढ़ायो।।

४०. मिहिरबाबू[3] बंगाली एम. पी. संवत्सरी मनाई,
जी, मैं हूं तेरापंथी अद्‌भुत दृढ आस्था अपणाई,
भाईजी रो उपकार न जाय बतायो।।

---

* लयः तेरापथनायक! दान दया थिर थापो

१. पत्रकार भालचन्द शर्मा
२. पत्रकार मुकुटविहारी वर्मा
३. देखें प० १, सं० ६६

लावणी

४१. राजाणै माघोत्सव रो हुयो समापन,
संघीय विकास भावना रो संज्ञापन।
है द्रव्य अमिट, पर्याय नाम परिवर्तन,
युग-बोध प्रश्न आवर्तन प्रत्यावर्तन।।

४२ नव-पुराणता रो प्रकरण जोश झिल्यो है,
लख दो खेमां कइयां रो हियो हिल्यो है।
अभ्युदय-समय यूं होतो ही आयो है,
भैक्षव-शासन रो फौलादी पायो है[१]।।

४३. इतिहासिक आ युग सहस पांच की संवत[२],
नव-नवी योजना हुई संघ में सम्मत।
शिक्षा हित पाठ्यक्रम[३] अभिरूप वण्यो है,
वर योग्य योग्यतर-तम तारुण्य तण्यो है।।

४४. पारमार्थिक-शिक्षण-संस्था रो सस्थापन[४],
दीक्षार्थ्यां रै वैराग्य भाव रो मापन।
है दियो चोपड़ाजी[५] साहस रो परिचय,
जब्बर-भंडारी[६] कीन्हो सुयश-समुच्चय।।

४५. कल्याण-बरड़िया[७] संस्था रो संरक्षण-
है कियो, दियो जीवन वात्सल्य विलक्षण।
अणुव्रत रो आन्दोलन[८] उद्भव मे आयो,
नैतिक जागरणा रो अभियान सुहायो।।

---

१ देखें प॰ १, सं॰ १००
२. वि॰ सं॰ २००५
३. देखे प॰ १, सं॰ १०१
४ देखे प॰ १, स॰ १०२
५. देखें प॰ १, स॰ १०३
६. देखें प॰ १, सं॰ १०४
७. देखें प॰ १, स॰ १०५
देखें प॰ १, स॰ १०६

४६. सरदारशहर रो वो स्मरणीय समय हो,
आचार-संहिता रो आन्तरिक उदय हो।
आंचलियो-सुगन[1] सजोड़े नाम लिखायो,
पचहत्तर री पंक्ती में प्रथम कहायो।।

४७. साहित्य-संघ-आदर्श रूप निखर्‌यो है,
यात्रा सह संगी नहीं कहीं अखर्‌यो है।
देवेन्द्र, दफ्तरी, सुगन हनूत-सुराणा,
शुभ, मोहन, मूल मिल्या सब स्याणां-स्याणां[2]।।

४८. साप्ताहिक-जनपथ रो सुन्दर सम्पादन[3],
निर्भीक विचारां रो निरुपम निष्पादन।
सारी की सारी शुभ भविष्य री बातां,
भैक्षव-शासण री ख्यात खतीजी ख्यातां।।

कलश

४६. अब हुई प्रारंभ जो अविलम्ब लम्बी जातरा,
प्रथम पावस ठव्यो जयपुर सजग सायं प्रात रा।
मिल्यो मौकै सहल 'चन्दन महल' चोड़े रासते,
सामनै चौगान चौरस खिल्यो प्रवचन वासते।।

५०. धर्मशासन रो अठै स्यूं दायरो बढणै लग्यो,
भिक्षु-दर्शन आज जन-जन री निजर चढणै लग्यो।
प्रभो! तेरापंथ तेरा पंथ मानव रे मनुज!
तू पथिक मैं भी पथिक हां परस्पर अग्रज अनुज।।

---

१. देखें प॰ १, सं॰ १०७
२. देखें प॰ १, सं॰ १०८
३. देखें प॰ १, सं॰ १०६

५१. संगठन अनुशासना एकत्व अनुपम संघ रो,
प्रबुध जनता वासतै आकलन अतुल प्रसंग रो।
सहज सुखद प्रवास पावस रो सफलता-संग्रही,
पृष्ठभूमी-सी क अग्रिम जातरा री जम रही।।

५२. एक ओर सजोर है प्रतिशोध की-सी भावना,
द्वन्द्वजीवी जगत पक्ष विपक्ष की संभावना।
हुयो घोषित सुण्यो 'दीक्षा समारोह' सुहावणो,
विघनसन्तोषी विपख नै लग्यो ज्यूं अलखावणो।।

५३. बाल-दीक्षा-विरोधी अभियान छेड्यो जोश में,
होश भी जाणै विसरग्या मानसिक आक्रोश में।
नहीं कोई बाल-दीक्षा रो समक्ष प्रसंग है,
क्यूं जगायो जंग-सो बेकार ओ विदरंग है।।

५४. दीखता-सा प्रबुध-सा संगीन-सा सारा जुड्या,
झोंक दी ज्यूं जिन्दगानी आखता हो आहुड्या।
वणी पूरी योजना आयोजना आवेग में,
विविध-आयामी बवंडर कल्पना अतिरेग में।।

लावणी

५५. जयपुर री सेरी-सेरी बात बढी है,
दीक्षा-विरोध री गहरी गूंज गढी है।
पोस्टर पेंफलेट जुलूस रु घोष मिटिंगां,
है खुली बगावत लम्बी-चौड़ी डींगां।।

५६. दैनिक साप्ताहिक पेपर में परवारी,
दीक्षा-विरोध री न्यूज छपै अनिवारी।
संघर्ष आज तक का सब पीछै रहग्या,
इण रै आगै सारा प्रवाह में बहग्या।।

५७. अन्तिम हथियाररूप मानी उपलब्धि,
गोशालक री ज्यूं तीखी तेजोलब्धि।
साहस स्यूं तेरापंथ समाज अड़्यो है,
मोटै मुकाविले क्षमता पाण खड़्यो है।।

५८. आखिर समाज री महिलावां जद जागी,
दीक्षा-विरोध री रीढ खिसकणै लागी।
पर्दानसीन बहनां घूंघट नै छोड़्यो,
जेवर-नेवर रो नेह तड़ाकै तोड़्यो।।

५६. जव ले जुलूस चाली है भरे बजारां,
जोशीला नारां हाजर हुई हजारां।
देखण-सुणणैवाळां रो फूल्यो सीनो,
राजस्थानी वहनां कमाल-सो कीनो।।

६०. जाहिर मिटिंग पब्लिक प्रस्ताव धर्‌यो है,
सर्वानुमते एक स्वर पास कर्‌यो है।
कन्या रु युवतियां प्रौढ रंग रचवायो,
जीवन में प्रथम बार अवसर अजमायो।।

६१. औ प्रान्त-प्रान्त रा जात्रीगण जोशीला,
अणगिण एकत्रित हुया रंग-रंगीला।
समुचित श्रद्धानत करता 'खमा-खमा' है,
चौडै रास्तै में भारी भीड़ जमा है।।

६२. पैरां तल सत्य धरातल न्याय-नीति-बल,
फिर डरणै री के बात, साथ है संबल।
'सच्चं भयवं' सच्चाई ठोस कमाई,
भैक्षवगण री पूरब संचित पुण्याई।।

६३ दिल्ली केन्द्रीय प्रशासन करवट तीन्ही,
दीक्षा निर्विघ्न हुवै अनुमति-सी दीन्ही[1]।
सेवाभावीजी रो दिल्ली हो पावस,
है योगभूत सारां रै मन में थ्यावस।।

६४. अनुचित विरोध अवरोध शान्त-सो होग्यो,
करणैवाळा कृत करणी रो फळ भोग्यो।
तेरापथ रो भावी पथ साफ बण्यो है,
प्रतिपखियां मन सहज्यां अनुताप तण्यो है।।

६५. जे. पी.[2] राजेन्द्र[3] गोलवलकर[4] जयपुर में,
है मिल्या प्रथम उत्साह बढ्यो उर-उर में।
अखबार जगत में भी प्रसार जो पायो,
प्रतिपख-प्रचार यूं सहज काम में आयो।।

सोरठा

६६. सुखपूर्वक सोल्लास, दिल्ली पावस ज्येष्ठ रो।
सेवा सहज सुवास, की जैनेतर जैन मिल।।

६७. साध्यो शुभ सम्पर्क, विदुषी दिनेशनन्दिनी।
भक्तिभाव में गर्क, पति प्रसिद्ध उद्योगपति[5]।।

६८. विदु विद्यालंकार सत्यदेव परिचित हुया।
चम्पक रो उपकार, जीवन भर क्यूं भूलसी।।

---

१. देखें प० १, सं० ११०
२. देखें प० १, सं० १११
३. देखें प० १, सं० ११२
४. देखें प० १, सं० ११३
५. रामकिशनजी डालमिया

६९. चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, आदि ऑडिटर विविध विध।
चम्पक-चित आदेय, दिल्ली पावस प्रेरणा।।

७०. श्री राजेन्द्रप्रसाद, भावी राष्ट्रपति प्रथम।
चम्पक सह संवाद रो सम्बन्ध बण्यो मधुर।।

लावणी

७१. सम्पन्न हुयो सकुशल दिल्ली चौमासो,
चम्पक सह गोरांजी रो भी सुखवासो।
जयपुर दिशि धर कूंचां धर मजलां आवै,
भारी भरकम सोत्साह भेंटणो ल्यावै।।

सोरठा

७२. मंडी खेड़ा गाम, चोर डाकु भय में अभय।
बरामदे विश्राम, प्रतापजी[1] प्रहरी बण्या।।

लावणी

७३ छव संत किलो उणयासी वजन उठायो,
अपणी निश्राय वजन इण में नहिं आयो।
जयपुर स्यूं सतियां संत सामनै आया,
संघीय विनय लख जन-मानस चकराया।।

७४. तपसण अणचांजी आठ सत्यां स्यूं आई,
चम्पक-मन में खुशियां छाई अणमाई।
सन्तां रो भार उतार उमंग वधायो,
द्रुतगति स्यूं बहतां जयपुर निजरां आयो।।

---

१. कठोतिया भवन, दिल्ली मे रहने वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी, जो साधु-साध्वियों के भक्त थे और पूरे विश्वस्त थे।

दोहा

७५. सझ्यो 'ठोलिया भवन' स्यूं, सामेळो स्वयमेव।
देख विदेशी-युगल[1] भल, चकित रह्या ततखेव।।

लावणी

७६. दोनूं सोदर रो सहज मिलन अक्षय हो,
गायो नवनिर्मित गीत 'धर्म की जय हो'[2]
सह-यात्रा हुई सवाईमाधोपुर री,
फिर मर्यादोत्सव हेत दिशा जयपुर री।।

७७. विच वनस्थली में मुख्यमंत्रि शास्त्रीजी,
मिल भाईजी स्यूं भेंट भावना भीजी।
संक्षिप्त हुई पिण हुई सुणण पढणै-सी,
ल्यो शब्दो-शब्द तिखूं, क्यूं हवै कम-बेसी[3]।।

• लो भाई ! सेवाभावी जी रो जीवन-वृत्त सुणावां।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो।। (पुनर-

७८. शहर सवाईमाधोपुरी एरिया वीत पुरानी,
तेरापंथ संत-सतियां री विचरण [illegible]
स्वामीजी रो पगफेर जी,
होयो है बेर-सबेर जी,
वर्ष सैकड़ां बीत्या पनरा [illegible]



१ [illegible]
२. देखें [illegible]
३ देखें [illegible]
• [illegible]

वर्ग ६

*लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो।। (ध्रुवपद)

१. माधोपुर भगवतगढ़ बरवाड़ा आटूण सुनारी,
नया पुराणा श्रावक श्रावकण्यां री श्रद्धा भारी,
सारां री ली संभाल जी,
अै युवा वृद्ध अरु बाल जी,
सिंचन मिलणै स्यूं वनराजी हरी-भरी विकसावां हो।।

+ चित्त थिर राख सुणो,
सेवाभावी-वृत्त, चित्त थिर राख सुणो।
वृत्त है परम पवित्त, चित्त थिर राख सुणो।। (ध्रुवपद)

२. गाम-गाम में घूम, चोखळो फरस्यो सारो,
रही धर्म री धूम, रूँ-रूम खिल्यो जनता रो,
वापस जयपुर आविया रे, चम्पक साथ सुवास,
म्हामोच्छव मंजुल खिल्यो रे, उपवन रामनिवास।।

३. सन्त-सत्यां री लेण, हाजरी[1] बड़ी सुहाणी,
दीपां-सुत री देण, बँची मर्यादा-वाणी,
दुष्यम पंचम आर में रे, चौथै अर रो दृश्य,
अनुशासन अद्वैत में रे, कोइक शक्ति अदृश्य।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

+ लयः सुभूपति आय मिल्यो

१. देखें प. १, सं. ११६

४. सिंघाड़ाग्रणि सन्त, सत्यां रा वर चौमासा,
उद्घोषित अत्यन्त, शान्त सबकी जिज्ञासा,
हार्दिक भावे वन्दना रे, शीष चढ़ा आदेश,
स्वीकारै विनयव्रती रे, मोच्छव क्रम अविशेष।।

५. अब पद-यात्रा हेत, चुण्यो दिल्ली हरियाणो,
चम्पक-भ्रात सचेत, जातरा जोश जगाणो,
धुर पड़ाव अचरोल में रे, प्रकुपित शीत प्रकोप,
लक्कड़दाहो-सो पड़्यो रे, भीषणतम आटोप।।

६. भगिनी लाडकुमार, हुई अस्वस्थ अचानक,
रुक्या वठै दिन च्यार, उणोदरी संकड़ो स्थानक[1],
अलवर प्रेमलता तणो रे, प्रण पूर्‌यो वड़भ्रात,
चौविहार तेलो हुयो रे, श्रद्धा-बल विख्यात[2]।।

७. चल्या भरतपुर पंथ, आगरै मथुरा आया,
नव-नव पुर फरसन्त, प्रथम दिल्ली पद ठाया,
रह्या नया बाजार में रे, अणुव्रत रो आलोक,
अधिवेशन अद्भुत हुयो रे, चमक चांदणी चौक[3]।।

८. हुई कल्पनातीत, विश्वभर में विख्याति,
नैतिक प्रथा पुनीत, बणी सचमुच शिवताति,
चिन्तन रात प्रभात में रे, अन्तर रात प्रभात,
श्रावक-गण उत्फुल्लता रे, वरणी जाय न बात।।

९. सुसफल प्रथम प्रवास, प्रशासन[4] बण्यो यशस्वी,
जैनेन्द्र को इतिहास[5], अणुव्रत वर वर्चस्वी,
रोब राजधानी जम्यो रे, वास कियो युग मास,
श्री चम्पक री चौकसी रे, साहस नै स्याबाश।।

---

१. देखें प. १, सं. ११७
२. देखें प. १, सं. ११८
३. देखें प. १, सं. ११९
४ तेरापन्थ धर्मसंघ
५. देखें प. १, सं. १२०

१०. सहज सात की साल, पावस हांसी हरियाणे,
भाई भाल विशाल, भिवाणी मौजां माणे,
सीयाळे मिगसर मिल्या रे, वंधव परम प्रसन्न,
निजारो निरखण जिस्यो रे, ओपै निकट निसन्न ।।

* मंत्री सोदर रो मिलन बण्यो इतिहासी।
संवत सहस्र-दो-सात[1] ख्यात मृगमासी ।।

११. पुर सिसाय में चम्पक बैठ्या, मैं तव बात चलाई,
जी, हरियाणै स्यूं निकट थळी है, मौसम शीत सुहाई,
मंत्री मुनि है सरदारशहर स्थिरवासी ।।

१२. सन्तां नै सन्देश साथ भेजां, जा पाछा आवै,
जी, चम्पक बोल्या—क्यूं नहि म्हारै ऊपर महर करावै,
सहज्यां ही सुन्दर मेळो-सो मंड ज्यासी ।।
गुरु-कृपया जन-जन रा रूं-रूं खिल ज्यासी ।।

१३. जची बात मृग[2] विद दसमी भाईजी करी विदाई,
जी, सात-संत[3] सन्देश साथ हिंसार पाथ शुभ साई,
बा आवभगत री वगत न भूली जासी ।।

१४. माजी, वाईजी रा वन्दन सुखपृच्छा ले चाल्या,
जी, धर-कूंचां धर-मजलां सुबै-स्याम भाईजी हाल्या,
पथ में पुर-पुर में छटा-घटा उमड़ासी ।।

१५. तीन सन्त[4] पच्चास मील मन्त्रीजी स्वयं पठाया,
जी, मुदित मुदितमन भाईजी रा चरण भेंट सुख पाया,
पग-पग मारग में रंगरळी सोल्लासी ।।

---

* लयः तेरापथनायक ! दान दया थिर थापो

१. वि० सं० २००७

२. मिगसर मास

३ देखें प. १, सं. १२१

४. मुनि नगराज जी चूरू, समेरमलजी (सुराना) सुजानगढ और मोहन लालजी (सुराना) उम्मेद

लावणी

१६. संत सोहन[1] साथ भेज्या, 'चोलपट्ट पछेवड़ी,
ऊडसर उपहार कीन्हा मगन री महिमा बड़ी।
वंदना आनन्द पुलकित विनयमय विरुदावली,
कवि हृदय की कल्पना स्यूं खिली रूं-रूमावली।।

१७. आज शहर-प्रवेश अभिनव वेश जनता ऊमड़ी,
मंत्रि-सोदर मिलन निरखण हृदय उत्सुकता बढ़ी।
जबर मेळो जुड़्यो आखिर है जंवाई-चोक में,
प्रेम की सरिता बही अध्यात्म कै आलोक में।।

* अनुपम भैक्षव-शासन श्री,
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्री।
भैक्षव-शासन मंत्रप्रधान,मंत्राक्षर भैक्षव अभिधान।।(ध्रुवपद)

१८. अब भाईजी रो कर साह्यां मंत्री मुड़्या ठिकाणै,
गजब गधैयां रै नोहरै है हर्ष कितो कुण माणै,
बोलै मंत्री ल्यो उपहार,
मान्यां सरसी आ मनुहार।।

१६. आज्ञा अरु आलोवणा द्यो अगवाणी-कर्तव्य,
तखत-पाट पर बैठो सोवो, ओपै आभा भव्य,
मंत्री खड़्या गेडियो हाथ,
भाईजी रै घाल्यां बाथ।।

२०. भैक्षव-गण में अजब अनोपम विनय और वात्सल्य,
आंतर अनुमोदन स्यूं मन स्यूं हियड़ो हुवै निसल्य,
चम्पक चतुराई रै पाण,
तोलै बोलै मधुरी बाण।।

---

१. मंत्री मुनि की सेवा में विशेष रूप से नियुक्त मुनि सोहनलालजी, चूरू
* लयः नीलै घोड़े रा असवार

२१. माईतां रै आगै अब तक रह्यो जियां ही रे'स्यूं
अर सादर साभार भेंटणो चरणां में धर देस्यूं,
मोट्यां री है मोटी बात,
आ है जिन शासन री ख्यात ।।

२२. चौकी ऊपर बिछां बरोबर दो बाजोटी-जोड्यां,
चम्पक तो मंत्री चरणा में बैठ्या मान मरोड्यां,
इं जोड़ी री है कोइ जोड़ी,
किम्मत मिलै न लाख-करोड़ी ।।

२३. दे प्रदक्षिणा विधिवत वंधव मगन-पदाम्बुज धोके,
भर परिषद में कियो समर्पित गुरु-सन्देशो[1] मौके,
पत्र छत्र ज्यूं शीश चढायो,
अक्षर-अक्षर पढ्यो पढायो ।।

२४. वदनां लाडां मां भगिनी रा अब अर्पित सन्देशा,
वारंवार वंदना सुखपृच्छा ज्यूं हुवै हमेशा,
गायो गरिमामय संगीत,
मधुर मिलन रो परम पुनीत ।।

२५. विच-विच गद्य गिरा में पद्य-विवेचन इमरत सेचन,
सुण-सुण श्रोतां रो बो'तां रो संचित वंध-विरेचन,
भाव-भंगिमा री गहराई,
चित्रित परिषद है चकराई ।।

२६. मंत्रीश्वर ! थांरो म्हारै पर अथक-अथक उपकार,
वूढी मां वदनां-दीक्षा हित जो साझ्यो सहकार,
राखी करुणा निजर सदाई,
क्यूं कर जावै बा विसराई ।।

---

१. देखें प० १, सं० १२२

२७. पांच-पांच पाटां री भारी अद्‌भुत सेवा साझी,
मुश्किल मिलै उदारण, जीती आ बाजी बाबाजी !
आचार्जा री कृपा करारी,
पाई रुत-रुत री रिझवारी।।

२८. सर्दी री मौसम गुरु प्रेषित एलवान ओढाऊं,
मां भगिनी री भेट कलात्मक प्यालो चरण चढाऊं,
वणग्यो वातावरण विराट,
सम्मुख च्यार तीर्थ रा थाट।।

२९. सोहन संत खड़ाक खड्यो क्यूं आयो अवसर चूकै ?
कविता पाठ करै खुल्लै दिल जाणक शेर दडूकै,
इंदवछंद[1] मनोहर-छन्द,[2]
बोलै जोशीलो जयचंद[3]।।

३०. अब भक्ती महमानां री भोजन मोटी मनुहारां,
दर्शनीय-सो दृश्य अदृश्य खुशी छलकै दीदारां,
मुनि सुखलाल तपस्वी थेर,
धरती ऊपर टिकै न पैर।।

सोरठा

३१. बोलै मंत्रि महान, आज नींद निशिभर सुखद।
सुणिया ज्येष्ठ-जवान, समाचार गुरुदेव रा।।

दोहा

३२. जाणक चम्पक-भक्ति में, झांकी सारी शक्ति।
'तुलसी' तेरापंथ की, है अनन्य अनुरक्ति।।

---

१. देखें प० १, सं० १२३
२. देखें प० १, सं० १२४
३. देखें प० १, सं० १२५

३३. निज विरचित दोहक[1] विमल, गुरु-भ्राता की भेंट।
रघुनंदन वन्दन करै, हिन्दी पद्य समेट[2]।।

३४. तीजै दिन पश्चिम निशा, बोलै मगन विनीत।
अै साधू अै पुस्तकां, अपणै गण री रीत।।

३५. संभाळो पूछा करो, सारण-वारण हेत।
गुरु-भ्रात गुरु की जगह, पथदर्शण समवेत।।

३६. प्रतिनिधि गणपति का प्रखर, आया हो बण आप।
शिक्षा फरमावो सुघड़, मुश्किल इसो मिलाप।।

३७. चम्पक चाकर चरण रो, सीख सुमत रो पात्र।
अटल बड़प्पन आप रो, गौरव गर्वित गात्र।।

३८. रजकण नै मेरू जितो, महज दियो सम्मान।
मोटां री मोटी मती, आसमान उपमान।।

* अनुपम भैक्षव-शासनश्री,
ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्री। (ध्रुवपद)

३९. गुरुवां रा वड़बन्धव हो, हो गुरुवां री तन-छाया,
आज वड़ा हाकम हो, गुरवां भेज्या कुरब वधाया,
सारा सुणता रह्या अवाक,
आ है धर्मसंघ री धाक।।

४०. पूछी जयाचार्य सन्तां नै विनीत री परिभाषा[3]
आखिर प्रश्न-पडुत्तर रूपे कीन्हो स्वयं खुलासा,
मंत्री-वर्तन है तद्रूप,
शासन अनुशासन रो रूप।।

---

१. देखें प० १, सं० १२६
२. देखें प० १, सं० १२७
* लय: नीलै घोड़ै रा असवार
३. देखें प० १, सं० १२८

४१. अतिशायी महत्त्व सोदर रो चंहू ओर चमकायो,
मंत्री-मुनि संघीय भावना रो विरवो विकसायो,
पुर-पुर घर-घर एक हि चरचा,
भाई पाई अद्भुत अरचा।।

* मंत्री सोदर रो मिलन वण्यो इतिहासी।
संवत सहस्र दो सात ख्यात मृगमासी।।

४२. पो॰ बिद पांचम मुझ दीक्षा दिन वणी विदाई वेला,
जी, हरियाणां री हर नहि छूटै गुरुकुल री रंगरेला,
मंत्री-मुनि रो सन्देशो[1] हर्ष बढासी।।

४३. गीली आंख झांक गद्गद स्वर भारी मानस मंत्री,
जी, भाईजी री देख विदाई झणणाई हृत्-तंत्री,
रुक सकै न रोक्या नन्दन-कुंजनिवासी।।

४४. सौ-सौ बार करूं सुखपृच्छा चरणां शीष नवाकर,
जी, कभी न भूलूं, की करुणा बड़बन्धव नै भेजाकर,
रूं-रूं नस-नस में रसमय ज्योत जगासी।।

४५. साक्षात दर्शण री अभिलाषी प्यासी अंखियां म्हारी,
जी, वो दिन भलो ऊगसी देखेस्यूं देवार्य-दिदारी,
नित देह निरामय रहो विमल-विन्यासी।।

४६. अखी रहो शासन री संपत निशदिन चढते नूरां,[2]
जी, लक्खां तरगे, तरै तरेला बजते तप रणतूरां,
भगिनी माजी री स्मृतियां सदा सतासी।।

---

* लय : तेरापथनायक ! दान दया थिर थापी

१. संवाद

२. देखें प॰ १, सं॰ १२६

४७. लोक हजारां भरे बजारां है पहुंचावण हाल्या,
जी, जय-जय ध्वनि ध्वनितांबर धरणी लोयण ठरे निहाल्यां,
लम्बी-लम्बी मंजिल, लंघी धर खासी ।।

४८. हरियाणे हिसार धार पो॰ शुक्ल दूज दिन आयो,
जी, मध्याह्ने हिलमिल च्यारूं तीरथ बड़बन्धु वधायो,
अति मधुर मिलन में लागै सुधा मुधा-सी ।।

४९. सिसाय स्यूं सरदारशहर वापिस हिसार तक विवरो,
जी, सारो ही संक्षिप्त सुणायो श्रोता खिण-खिण सिंवरो,
मंत्री-मुनि जीवन-वृत्त वितत जितकाशी ।।

५०. बड़ो अनुग्रह मैं सन्देशवाहरूपे निर्वाचित,
जी, मंत्री रो नैसर्गिक निरुपम शिक्षण मिल्यो अयाचित,
संघीय भावना रो अतुल्य अभ्यासी ।।

५१. संघ संघपति जीवन है, संजीवन है सब कुछ है,
जी, क्षण-क्षण ईक्षण वीक्षण शिक्षण मंत्री रो सचमुच है,
पर भीतर में गुरुवर-दर्शण अभिलाषी ।।

५२. भीवाणी मोछव आरोपी कोपी एक मिली है[1]
जी, अंतरंग विद्रोह व्यवस्था री ज्यूं कळी . खिली है ।
जाणी अणजाणी की, होणी हो ज्यासी ।।

५३. थोड़ो चिंतन थोड़ी चर्चा कर यूं ही धर दीन्ही,
जी, चम्पक आदि कुछेक साथ गंभीर मंत्रणा कीन्ही,
समयोचित सतपथ है , फिर क्यूं चिन्ता-सी ।।

---

१. देखें प॰ १, सं॰ १२०

५४. निर्णय अब हरियाणै स्यूं पंजाब पंथ लेणो है,
जी, बोलै वड़बन्धव गुरु-चरणां साथ-साथ रेणो है,
मंत्रीजी रो संकेत सफलता पासी।।

*अवै आनन्द स्यूं गुरुकुलवास में रेस्यूं।
मुक्त सब द्वन्द्व स्यूं गुरुकुलवास में रेस्यूं।। (ध्रुवपद)

५५. बरसां बहिर्विहारी विचर्‌यो थांरो जियां इशारो,
अब आं चरणां री शरणां में रच्यो-पच्यो मन म्हारो,
गुरु-लघुभ्रात जी ! आ ही बात मैं केस्यूं।।

५६. यत्र तत्र सर्वत्र अंगरक्षक दायित्व निभास्यूं,
पाछै सोस्यूं और अपोढी स्यूं पे'ली उठ ज्यास्यूं,
जरूरत वक्त मैं पहरो खड्‌यो-खड्‌यो देस्यूं।।

५७. नहीं उचित है लापरवाही भाई ! बात विचारो,
राघव आगै शरत भरत री, बो ही पथ है म्हारो,
इण रै वासतै जो सहणो पड़ै सैस्यूं।।

५८. जयपुर मेल्यो दिल्ली ठेल्यो झेल्यो वचन विनय मैं,
कर द्यो यूं उद्‌घोष अचानक तुम तो अपणी लय मैं,
पेलां ही वर्णू प्रार्थी आज बीं भै स्यूं।।

५६. 'अहासुहं' मैं कह्‌यो, लह्यो तन मन आनन्द विमात्रा,
लियो टुहाणो घणो सुहाणो आ पंजाबी यात्रा,
तोर सजोर में बन्धव ! चालो इजै-विजै स्यूं।।

६०. जाखल-मंडी खुली रेलवे-पुळ अतिजंगी लंघी,
भाईजी दाठीक और निर्भीक रह्या सहसंगी,
बण्यो विश्वास इणविध पार पा लेस्यूं।।

* लय: छटीला कानजी ! छल्लो मैं नहीं छोडूं

६१. भीखी चिकणी भू पर चाल अजब जोखिम अजमाई[1]
संगरूर दीक्षा में दुविधा की दिवार ढह पाई[2]
क्यूं विचलित कभी अपणै नीति निमल निरणै स्यूं ।।

६२. सफर समाणा की इकमजली याद घणां दिन आसी[3]
लुधियाणे अणुव्रत अधिवेशन छाई अजब छटा-सी,
जगरावां जच्यो जाचो पौरुप पुन-संचै स्यूं ।।

लावणी

६३. भावुक पंजावी जन अत्यन्त उम्हाया,
पावस प्रवास हित प्रस्तुत होकर आया।
सरदारशहर भी मंत्रीमुनि रै स्हारै,
उम्मीदवार वण खड्यो न हिम्मत हारै ।।

६४. जगरावां जोशीलो-सो जंग जुड्यो है,
दर्शक सज्जन जन अभिनव मोड़ मुड्यो है।
संभव है आज एक निर्णय होणो है,
सौभाग्य जागरण किण रो है जोणो है ।।

६५. चम्पक चतुराई स्यूं सव वात समेटी,
सारां री उत्सुकता मिनटां में मेटी।
पंजाव विचरणै रो उद्घोप करायो,
पावस हित परिस्थिती आश्वासन पायो ।।

---

१. देखें प. १, सं. १३१
२. देखें प. १, सं. १३२
३. देखें प. १, सं. १३३

रामायण

६६. आंचलियो रु दसाणी अब सरदारशहर जा आया है,[1]
मंत्रीश्वर स्यूं करी मंत्रणा अन्तश्चिंतन ल्याया है।
गहराई स्यूं सोच समझ म्है एक नयो-सो मोड़ लियो,
दिल्ली करणो अग्रिम पावस, यूं निश्चित जी जोड़ लियो।।

६७. झाड़-साव चमकोर-साव सिक्खां रा स्थल इतिहासी है,
नहर किनारे रोड-रोड यात्रा रो पथ विश्वासी है।
बोलै सुगन—नहर रै कांठे एक पड़ाव अवश्य करां,
नीचै नहर नदी ऊपर तिण ऊपर रोड हुवै निजरां।।

६८. बोलै बड़वन्धव शासनधव ! सहसज्झाय आज करणी,
सीन सांतरो ओ सखरो स्वर्गीय सुखां री निर्झरणी।
सामन्त्रण सब श्रमण और श्रमणीजी तुरत-फुरत आया,
पा. शि. संस्था री सारी कन्या कंचनवरणी काया।।

६९. यात्री दिल-खात्री स्यूं बैठ्या सभी श्राविका रमझमती,
सुगुरु दृष्टि जीवन री सृष्टी नमती खमती मनगमती।
आ स्वाध्याय ध्यान री संगत रंगत बड़ी सुरोचक है,
दर्शक खड़्या देखता रहग्या, कहग्या अरे ! अजब छक है।।

७०. चम्पक रो दिल लग्यो नाचणै और साचणै सुघड़ाई,
रंगीलो है दिल गीलो है चमकीलो म्हारो भाई।
नीर नहर री अजब बहारां बहतो पाणी दगग-दगग,
चंपक अनुकम्पक रो चिन्तन फूली सारां री रग-रग।।

७१. रोपड़ सतलज-बांध कराली खरड़ छावणी अंबाला,
सुमरत ही दिल्ली रा श्रावक[2] दोड़्या आया दगचाला।
सोदर कर्‌यो इशारो रूं-रूं खिलग्या हुलसित हुया हिया,
करी प्रार्थना पायो पावस थ्यावस ज्यूं पीयूष पिया।।

---

१. देखें प० १, सं० १३४
२. देखें प० १, सं० १३५

७२. पानीपत पथ में वन्नोर काफिलै रो डेरो लाग्यो,
भिक्षाचरी गाम री आधाकर्मी ही, बेरो लाग्यो।[1]
भाईजी स्यूं परामर्श कर परठ्यो सारो अन-पाणी,
कड़ी कसौटी रोटी भी कर लै सन्तां री जिनवाणी।।

७३. इग्यारस आषाढ सुदी शुभवेला शुभ दिन टाणो है,
नया बजार बहार धर्म विरधी-विल्डिंग[2] थिर थाणो है।
तेरापथ-आचार्य आर्य रो दिल्ली पहलो पावस है,
थोडी सामग्री में भक्ति भावना रो थिर ध्यावस है।।

*लो भाई! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त सुणावां।
जीवन-वृत्त सुणावां, अपणो दायित्व निभावां हो।। (ध्रुवपद)

७४. हरियाणै पंजाब जातरा जगमग चम्पक चलतो,
नागफणो बो हाथ गेडियो लियो कि तुरत निकलतो,
क्यूं सागर! करै विलम्ब रे,
है सम्मुख पंथ प्रलम्ब रे,
सुस्ती ना चुस्ती में चल तू आळस ऊंघ उड़ावां हो।।

७५. भाईजी री आ भावुकता छण-छण मनै सुहावै,
शैशव-सो सारल्य जवानी को सो जोश जगावै,
नहि जरा-जीर्णता अंग जी,
आकृति उत्साह उमंग जी,
कलापूर्ण जीवन जीणै रो उदाहरण उद्भावां हो।।



१. देखें प० १, सं० १३८
२. लाला विरधीचन्द जैन स्मृति भवन
* लय: आदीश्वरसुत रै सामनै

वर्ग १०

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणो।
जीवन-वृत्त बखाणो, जागृति रो जोश जगाणो हो।। (ध्रुवपद)

१. नयो बजार, नई ही सड़कां नयो-नयो सब कुछ है,
इमारतां भी नई-नई, नीरव अतीत ना कुछ है।
नव-नव अनुभव रो स्रोत जी,
अन्तर-मन ओतप्रोत जी,
नई कल्पना नई जल्पना नव निर्माण निभाणो हो।।

२. प्रासुक एषणीय पाणी शहरां में बड़ी समस्या,
दूर-दूर बसत्यां में जा ल्याणो भी कडी तपस्या।
डिस्टिल वाटर री खोज जी,
अलमस्त फकीरी मोज जी,
कूवो स्वयं पिलावै हिरणां नै, ओ ल्यो ओखाणो हो[1]।।

३. भीड़-भाड़ ईर्या भाषा स्थंडिल रो कठै ठिकाणो,
सतियां री संभाल 'केशरी भवन'[2] मिल्यो थिर थाणो।
भाईजी रो पुरुषार्थ जी,
पग-पग पर पड्या पदार्थ जी,
बहु आयामी नामी निवड्यो संवत आठ[3] सयाणो हो।।

\+ आठ की संवत को, दिल्ली प्रवर प्रवास,
प्रसर्पण सत्पथ को, इतिहासिक चउमास।
नवमी पीढी में फळै ओ भिक्षू को आभास,
आठ की संवत को, दिल्ली ।(ध्रुवपद)

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै
१. देखें प॰ १, सं॰ १३७
२. केशरीचन्दजी, मोहनलालजी
३. वि॰ सं॰ २००८
\+ लयः वन्दना लो झेलो

४. अणुव्रतां रो आकलन हो सहज रूप संसिद्ध,
कुण सोची कुण अनुभवी बण जासी सबल समृद्ध।
अतुल अर्जित करसी, जन-जन रो विश्वास।।

५. असांप्रदायिक ऊभर्‌यो ले सब धर्मा रो सत्व।
ओ अभेद है भेद में, मानव-मानव एकत्व।
जरूरी कहूं कितो, ज्यूं जीवन में श्वास।।

६. धर्मक्रांति उत्क्रांति रो है एक नयो अभियान,
मूल्यांकन आचरण रो अन्तर रो अनुसन्धान।
धर्म धार्मिकता रो, अविच्छिन्न आश्वास।।

७. समाधान है सांतरो युग-प्रश्नां रो अम्लान,
स्व पर स्वास्थ्य शोधन करै, है शान्ति सौध-सोपान।
नहीं राई पाई, उलझन रो अवकाश।।

८. हुया प्रभावित प्रबुधजन पंडित नेहरू[1] राजेन्द्र,
अणुव्रत आन्दोलन बढ्यो बण पायो दिल्ली केन्द्र।
धरम री धारा रो, ओ अपूर्व आयास।।

६. 'टाइम' 'लाइफ' में छप्या वलि-वलि विस्तृत संवाद,
'हरिजन सेवक' टिप्पणी, मश्रूवाला री याद।
विदेशां देशां में, एक नयो उच्छ्‌वास[2]।।

१०. विकृत रूप है धरम रो जो नैतिकता स्यूं शून्य,
कोरो सिर धड़-धड़ विना है निरखण-रो नैपुण्य।
अणुव्रत आ उतर्‌यो, विरल वरण-विन्यास।।

---

१. देखें प० १, सं० १३८

२. देखें प० १, सं० १३६

११. श्रीमन्नारायण[१] कहै—आछो इण रो अणु रूप,
महिला-गौरव संग्रह्यो, श्री मदालसा[२] धर चूंप।
विनोवा[३] विमलमती, की चर्चा सोल्लास।।

१२. श्री काका-कालेलकर[४] भल भावे वौद्ध-भदन्त[५],
मिल्या मैथिलीशरण[६]-सा पुरुषोत्तम[७] दिनकर[८] पन्त[९]।
अनन्तायंगरजी[१०] अरु यशपाल[११] सुवास।।

१३ दैनिक साप्ताहिक सघन संवादपत्र सह मान,
सम्पादित करता रह्या अणुव्रत आदान-प्रदान।
वात के-के वरणूं, वण्यो वृत्त सव्यास।।

१४. अव चाल्या आह्लाद स्यूं सरदारशहर दिशि देख,
मर्यादोत्सव रो जठै आयोजन रो अभिलेख।
अचानक सफल हुई, मंत्री री अभिलाष।।

* ऊभो कीमत आंकै रे,
मंत्री वृद्ध वजीर, ऊभो कीमत आंकै रे।
साह्यां हाथ सधीर, इकटक साम्हो झांकै रे।। (ध्रुवपद)

१५. छेह न पायो ई छाती रो, धीरो गजब गंभीर।
रजधानी में रंग जमायो, म्है तो रहग्या तीर।।

१६. कोई नहीं कल्पना कीन्ही, नेहरू नै राजेन्द्र।
राज्यभवन में स्वागत करस्ये, बणस्ये दिल्ली केन्द्र।।

१७. वडा-वडेरा संत घणेरा सुपने सक्या न सोच।
वा मैं अपणी आंख विलोकूं, क्यूं कहणै संकोच।।

१-३. देखें प० १, सं० १४०
४-११. देखें प० १, सं० १४१
* लय· म्हानै घणो सुहावै जी

१८. अणुव्रत बणस्ये अन्तर्राष्ट्रीय यूं नैतिक अभियान।
अखिल विश्व में विश्रुत होस्ये, आ शासन री शान।।

१६. म्है तो मरज्यावांला सन्तां! थे देखोला थाग।
यूं कहतो सो नयन निहारूं, ओ म्हारो सौभाग।।

२० ओ इत्तो लम्बो आऊखो, आ ओछी तकलीफ।
पल-पल सफल हुई है म्हारी, न रही चित में चीख।।

२१. भाईजी! बाईजी! माजी! आपां रा वड़भाग।
अलख छटा आंख्यां स्यूं देखां ऊभरतो ओ आघ।।

२२. ओ मोच्छव अगलो चोमासो और महोत्सव माघ।
जीतां मरतां फिर स्यूं देखूं, लगी एक मन लाग।।

लावणी

२३. आरोपी-कॉपी रा अब पृष्ठ खुल्या है[1],
अणचरचे मन ही मन जो प्रश्न घुल्या है।
भीतर ही भीतर वातावरण बण्यो है,
छोटां-मोटां तक पहुंचै छण्यो-छण्यो है।।

२४. फोटो विजली बत्ती माइक सन्देशो,
धारणा-प्रणाली नई लियां अन्देशो।
इत्यादिक-इत्यादिक उलझण री बातां,
सारै समाज में फैल रही दिन-रातां।।

२५. मैं सोच्यो इणरो निराकरण है करणो,
शंकाशंकी रो ओ प्रवाह संतरणो।
कइयां रै मन रो झूठो जोम मिटाणो,
छिड ज्यावै खुल्ली बे'स असल है टाणो।।

१. देखें प० १, सं० १४२

२६. मैं कह्यो—पाछली रात सन्त सब आवो,
जो चर्चणीय है, खुल्ला प्रश्न चलावो।
मन्थन-मन्थन स्यूं मक्खन स्वयं नितरसी,
जो विगड़ रह्यो है, वातावरण सुधरसी।।

२७. वोलै मन्त्री—यूं आचार्जां रै आगै,
सबको मुंह खुलणो, किंयां-किंयां ही लागै।
मैं कह्यो—आपरो दूरदर्शि चिन्तन है,
पर वर्तमान में म्हारो ओ ही मन है।।

२८. सप्ता भर खुलकर प्रश्न सामनै आया,
आगम तर्का प्रतितर्का स्यूं सलटाया।
सारां रै ही आ बात समझ में आई,
साम्प्रत सन्तां रै चिन्तन री गहराई।।

२६. हो भले निरुत्तर अन्तर्दिल बिन बदले,
कुण जाणै कुण-सो रूप परिस्थिति कद ले।
आखिर तो आप्रेशन ही करणो पड़सी,
पर वर्तमान में तो बैठाई घड-सी।।

३०. मोच्छव पर पावस, पावस पर मोच्छब है,
मंत्री हित हुयो असंभव भी संभव है।
अब बण्या अयाचक, म्है तब करी विदाई,
है मारवाड़ री यात्रा बणी-बणाई।।

३१. दस[1] पावस जोधाणे, राणाव[2] वर्‌यो है;
मर्यादामोच्छव अभिनव-सो उभर्‌यो है।
सैं दिन माइक खातिर इक द्वन्द मच्यो है[3],
खूंखार केशरी अद्‌भुत रास रच्यो है।।

---

१. वि॰ सं॰ २०१०
२. राणावास
३. देखें प॰ १, सं॰ १४३

३२. जैनेन्द्र केन्द्र को रूप देखता रहग्या,
खामोशी स्यूं सारा ही सब कुछ सहग्या।
जाण्यो, सहज्यां मतभेद विलै हो ज्यासी,
अन्तर-मानस री आग स्वयं बुझ ज्यासी।।

रामायण

३३. चढ्यो चांचियो[1] कड़ी आंच पर,
अड्यो खड्यो अपणी मैं में।
अलग-थलग बो पड्यो अकेलो,
जो टालोकर की लै में।।

दोहा

३४. मम अंगे मेवाड़ में, प्रसर्‌यो श्वास-प्रकोप।
कम-वेसी वो आज तक, अटक्यो है आटोप।।

लावणी

३५. बण बड़ी समस्या आज सामनै आई,
चिन्तन-मुद्रा में दोनूं भाई-भाई।
हो ज्यासी गत्यवरोध निराशा छाई,
देशाटन की मन की मन में रह ज्याही।।

३६. चम्पक दाठीक बण्या, नहि हिम्मत हारी,
इक अड़क वैद्य की दवा शुरू कर डारी।
बीमारी स्यूं मैं भी मिसलत में बैठो,
बण निर्विकल्प संकल्प शक्ति में सेंठो।।

* बाकी क्यूं ही न मांगूं रे,
क्यूं ही न मांगूं, क्यूं ही न मांगूं, क्यू ही न मांगूं रे।
केवल मैत्री रो इकरार,
बाकी क्यूं ही न मांगूं रे।। (ध्रुवपद)

---

१. देखें प० १, सं० १४४

* लय: आयो शरण तिहारै हो

३७. अन्तरंग अनुरोध कर्यो मैं, आमय स्यूं तिण वार।
मैत्री-अभिसंधी आपां री, हो अटूट इतवार।।

३८. मूक रूप मंजूर हुयो है, पारस्परिक करार।
एक दूसरै री स्वतंत्रता में न दखल दरकार।।

सुमरो सेवाभावी रे
सेवाभावी, सेवाभावी, सेवाभावी रे।
सयाणां ! धर्मसंघ रो रंग,
राच्या परम प्रभावी रे।। (ध्रुवपद)

३९. अड़क वैद्य री दवा अनोखी जाणक करगी कार।
वाव अहमदाबाद पार कर, मुम्बई तरफ विहार।।

४०. पावस रंग सुरंगो सिक्कानगर सदर उपकार।
मुम्बादेवी मोच्छव बड़बन्धव रो बड़ो विचार[1]।।

लावणी

४१. फादर विलियम वोम्बे में अणुव्रतधारी[2]
एम० कृष्णमूर्ति इंग्लिश अभिवक्ता भारी।[3]
भारदे रु पागे प्रभृति वरिष्ठ विधायक,[4]
अणुव्रत आचार-संहिता रा संधायक।।

४२. महाराष्ट्र-मुख्यमंत्री मुरारजी भाई,[5]
अपरिग्रह चर्चा जे० पी० स्वयं चलाई।[6]
जन-जागरणा रो चिन्तन स्वस्थ बण्यो है,
अग्रिम यात्रा रो पन्थ प्रशस्त बण्यो है।।

---

१ देखें प० १, सं० १४५
२. देखें प० १, स० १४६
३. देखें प० १, सं० १४७
४. देखें प० १, सं० १४८
५. देखें प० १, सं० १४९
६. देखें प० १, सं० १५०

* सुमरो सेवाभावी रे,
सेवाभावी, सेवाभावी, सेवाभावी रे। (ध्रुवपद)

४३. पूना नारायण-गां मंचर आगम रो उद्धार।
सम्पादन रो अभिनव निर्णय[1], अतिशायी उपकार।।

४४. अजंता रु एलोरा लेण्यां निरखी निशि सिर-लोच।
इतिहासिक स्थल में कियो सोदर सादर तज संकोच[2]।।

४५. वीर जयन्ती दिन शुभ मुहुरत ओ ओरंगाबाद।
भर परिषद में हुई घोषणा, श्रुत संकल्प अबाध।।

४६. शहर जालना[3] में साउथ रो आयो संघ अमोघ।
प्रारंभ्यो अनुनय अभ्यर्थन, मिल्यो मनोगत योग।।

४७. बोलै जवती वात, जालनो है दक्षिण रो द्वार।
सीधो पथ आग्रह अवितथ है, मानीजै मनुहार।।

४८. चम्पक भी बोलै—वूढापो ओ करणाट-किनार।
फिर कद आस्यां, जास्यां आस्यां, अवसर मिल्यो अबार।।

४९. दक्षिण दल अन्वेषी, खानदेशी है अधिक हताश।
घर आई गंगा दिस वदलै, ओ कोई उपहास!

५०. दक्षिण फरसण रो दे वादो, भाईजी निर्भार।
खानदेश री ठेस मिटाई अणुव्रत कै आधार।।

५१. उचिताग्रह शुभकरण सुगन रो, लंघ्यो विन्ध्य पहाड़।
कर पावस उज्जैन शीघ्रगति समवसर्‍या मेवाड़[4]।।

५२. नौ कै मौकै रह्या उपेक्षित पाया घाव उभार।
भीतर-भीतर गण में जाणक अन्तर-व्रण विस्तार।।

५३. निश्चित निरणो अब करणो वैचारिक विग्रह पार।
संघ अहितकर शीत-युद्ध रो करां कड़ो प्रतिकार।।

---

* लय: आयो शरण तिहारै हो

१. देखें प. १, सं. ५५१
२. देखें प. १, सं. ५५२
३. देखें प. १, सं. ५५३

५४. बड़ै भाग रो बो उजागरो निश भर नींद निवार।
सहज सुचिंतित वणी योजना उतर्‌यो शिर रो भार[1]।।

५५. गंगापुरी गजब को निर्णय स्मृति रहसी हर बार।
फालू कोठै बीच विराज्या 'तुलसी' तारणहार।।

५६. फग्णो पड़्‌यो अजब ऑप्रेशन संघ-अंग हितकार।
हलचल मची समूचै गण में, हिल्यो न दिल रो तार।।

५७. कार बैठकर तार-केसरी आया अवसर साध।
खड़ा बधाई दोनूं भाई दै ऊंचै स्वर दाद[2]।।

५८. अद्‌भुत इकतारी रो परिचय मेवाड़ी नर-नार।
भिलवाड़े मर्यादोत्सव रो छज्यो छक्क हकदार।।

५९. अणगिण उण अवसर पर देख्या बड़ा चढाव उतार।
आखिर श्रेय समन्वय रो मंत्री नै मिल्यो सुप्यार।।

६०. शान्त हुयो दुर्दान्त सदा हित जो वैचारिक वार।
रंगरळी है गळी-गळी में घर-घर मंगलाचार।।

६१. शत प्रतिशत श्रद्धानत गण-सम्मत साध्वी परिवार।
लह्यो समादर रख्यो उल्लिखित ओ इतिवृत्त उदार।।

६२. विनय और वात्सल्य शल्यजित क्षीर-नीर-सो प्यार।
संघ-हितेच्छू सभी समय पर सझ्यो सबल सहकार।।

६३. भंवर सुमेरू पिता-पुत्र री संघ-भक्ति साकार[3]।
अतिश्रम अतिविश्वस्त भाव स्यूं है अंकित हर बार।।

६४. पावस मोच्छब संवत तेरह[4] श्री मंत्री रै द्वार।
चातुरदुरग चढ्यो चित चवदै, बलि जात्रा जयकार।।

१. देखें प० १, सं० १५५
२. देखें प० १, सं० १५६
३. देखें प० १, सं० १५७
४. वि. स० २०१३

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणो।
जीवन-वृत्त बखाणो, जागृति रो जोश जगाणो हो ।। (ध्रुवपद)

६५. ई विग्रह रो कारण आग्रह और मानसिक द्वन्द,
शायद तत्व वहानो, मानो भीतर रो निष्यन्द,
जव हुवै अहं पर चोट जी,
बा प्रकट विकट लै ओट जी,
छद्मस्थां री छोळ आगमिक आज्ञा स्यूं पहचाणो हो ।।

६६. उपादान तो रखड़-झखड कर आखिरकार उवरग्या,
अकड़-पकड़वाला भोळां रा जीवन-खेत उजड़ग्या,
दयनीय दशा बा देख जी,
हा ! कुटिल कर्म री रेख जी,
'तुलसी' किंयां तुला में तुलसी, पड़सी ऋणो चुकाणो हो ।।

सोरठा

६७. जो भी हा वै बोल, ज्यांस्यूं ओ विग्रह जुड़्यो।
खामोशी स्यूं खोल, निरखो निर्णय-विंशिका[1]।।

६८. पढ्ज्यो शोध-प्रवन्ध, महाप्रज्ञ मुनि-नथ मथित।
समझास्ये सम्बन्ध, नव धारणा-प्रणालि[2] रो।।



* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै
१. आलोच्य बीस बोलों के सन्दर्भ में मुनि नथमलजी द्वारा लिखित ग्रन्थ।
२. नई धारणा प्रणाली के सम्बन्ध में मुनि नथमलजी द्वारा लिखित शोध निवन्ध।

वर्ग ११

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणो।
जीवन -वृत्त बखाणो, जागृति रो जोश जगाणो हो।। (ध्रुवपद)

१. भायां-भायां रै यात्रा री अभी न पूरी हाम,
जन-कल्याण संघ री सेवा पैरां रो व्यायाम,
करणो कुण दिशा प्रयाण जी,
जन-जन जीवन निर्माण जी,
पूर्वांचल रो पंथ अछूतो, ओ अभियान उठाणो हो।।

\+ प्रकरण पद-यात्रा रो,
पद-यात्रा रो प्रकरण, त्रिकरण बड़बन्धव नै प्यारो।।(ध्रुवपद)

२. गुरुकुलवास प्रवास प्रदेशां चम्पक चित नै भातो,
बूढापै रो बोझ जवानी में नहि ढ़ोयो जातो,
कभी न गमतो थमतो-चलणो और विचरणो न्यारो।।

३. आचार्यश्री ! छुटपुट यात्रा हुई रु होती रैसी,
छोटा-मोटा सन्त-सत्यां री जनता जोती रैसी,
आप आपरै लायक लम्बै पथ में स्वयं पधारो।

४. अश्रुतपूर्व अदृश्यपूर्व देशाटन रचणो चावै।
कलकत्तो मद्रास और बंगलोर न बचणो चावै,
व्हाला खाला रह्या देखता, ओ प्रवाह सरिता रो।।

---

* लय: आदीश्वरसुत रै सापनै

\+ लय: संयममय जीवन हो

५. टिमटिमता तारा रु चांदणी चाँदै री छिप ज्यावै,
भळभळाट करतो भानूडो आभे जद उग आवै,
बो ही तोर-तरीको आचार्या-सो आचार्या रो।।

६. पूर्वांचल री हुई घोषणा, लक्ष्य बण्यो कलकत्तो,
यू.पी. बंग बिहार चलो, मजबूत बण्यो है मत्तो,
म्हारो मानस तो हो ही, चम्पक रो मिल्यो सहारो।।

७. पावस पूरे गिरिगढ हो सरदारशहर म्है आया,
वड्वंधव सह परामर्श मंत्री स्यूं करणो चाया,
श्रद्धा की मूर्ति स्फूर्ती साकार सचिव है म्हारो।।

८. मैं अरु मंत्री दो ही दो बेठ्या एकान्त निलय में,
शान्त समय अभ्रान्त अभय अब तन्मयता री लय में,
अनुभव-विभव खजानो दानो ज्ञाता विनय-विधा रो।।

९. आप पधारो देशाटन में म्हारी अंतिम वय है,
और असाध्य असात वेदनी रो भी प्रबल उदय है,
सबस्यूं बड़ो कडो संकट गुरुदर्शन-विरह-व्यथा रो।।

१०. मघवा माणक डालिम कालू री करुणा जो पाई,
सारां स्यूं तुलसी-करुणा री धारा बही सवाई,
अब ओ दुस्सह देव ! परीषह, रहणो पड़सी न्यारो।।

११. कालू नै निश्चिन्त कर्‌या, ली सारी जिम्मेवारी,
आज सचिंत बणूं मैं, कुण लै जिम्मेवारी म्हारी[1]।
सुखे-सुखे विचरो, जनता भव-सरिता पार उतारो।।

१२. अन्तरंग वहिरंग संघरस किता-किता है आया,
वां सारां नै झेल ठेल कर करी न कलुषित काया,
ओ अद्‌भुत इतिहास चमकतो राख्यो संघ-सितारो।।

१. देखें प. १, सं.१५८

वर्ग ११

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणो।
जीवन -वृत्त बखाणो, जागृति रो जोश जगाणो हो।। (ध्रुवपद)

१. भायां-भायां रै यात्रा री अभी न पूरी हाम,
जन-कल्याण संघ री सेवा पैरां रो व्यायाम,
करणो कुण दिशा प्रयाण जी,
जन-जन जीवन निर्माण जी,
पूर्वाचल रो पंथ अछूतो, ओ अभियान उठाणो हो।।

\+ प्रकरण पद-यात्रा रो,
पद-यात्रा रो प्रकरण, त्रिकरण बड़बन्धव नै प्यारो।।(ध्रुवपद)

२. गुरुकुलवास प्रवास प्रदेशां चम्पक चित नै भातो,
बूढापै रो बोझ जवानी में नहि ढ़ोयो जातो,
कभी न गमतो थमतो-चलणो और विचरणो न्यारो।।

३. आचार्यश्री ! छुटपुट यात्रा हुई रु होती रैसी,
छोटा-मोटा सन्त-सत्यां री जनता जोती रैसी,
आप आपरै लायक लम्बै पथ में स्वयं पधारो।

४. अश्रुतपूर्व अदृश्यपूर्व देशाटन रचणो चावै।
कलकत्तो मद्रास और बंगलोर न बचणो चावै,
ब्हाला खाळा रस्या देखता, ओ प्रवाह सरिता रो।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

\+ लयः संयममय जीवन हो

१३. नौ-तेरा री भारी घटना अपणै गण-समुदय में,
शासण-भाग ! प्रताप आपकै निपटी नव निर्णय में,
रह्या झांकता सब वात्सल्य विनय रो नयो नजारो[1]।।

श्री तुलसी १४. भय विभीषिका दिखा आपनैं भी है लिया लपेटै,
मुनि मगन हां, मैं समझ्यो जो नय-नीती वरती ही उण लेठै,
बात नहीं कहणै सुणणै री, समझै सूझ इशारो।।

श्री तुलसी १५. छोड़ो अवै अतीत, बीतगी बीती बात पुराणी,
चिंता-फिकर न जिकर जरूरी जाणणहारा जाणी,
द्यो सुझाव कोइ बेशकीमती अनुभवपूर्ण सुप्यारो।।

मुनि मगन १६. अग्रिम संघ- व्यवस्था रो अंतर मानस में निरणो-
रेणो चावै, ओ लाखां रै भवसमुद्र रो तिरणो,
श्री तुलसी नाम सुझावो,'नां-नां, मैं नहिं खोऊं निज पतियारो[2]।।'

मुनि मगन १७. ओ है काम आपरो, आपहि करो आप नै छाजै,
अनधिकार चेष्टा स्यूं सव 'मोरां में मूसळ बाजै',[3]
आ शास्ता री कड़ी कसौटी, गौरव गण-गरिमा रो।

१८. गीली आंखे झांके मंत्री बोली हुई अबोली,
जाणक जागी अंतर-मन में विरही व्यथा अतोली,
कर में कर झाल्यां आश्वस्त किया मैं, और न चारो।।

१९. भाईजी नै दी भोळावण सजग जतन राखीज्यो,
भूले चूके बूढा भगतां नै भी चेतै कीज्यो,
लम्बी भरी छलांग झांकस्यूं कद फिर ओ उणिहारो।

१. देखें प. १, सं. ५५६
२. यह बात मन्त्रीमुनि ने कही।
३. देखें प. १, सं. ५६०

२०. विदा भावभीनी, कीन्हो मर्यादोत्सव चंदेरी,
जयपुर दिशि प्रस्थान आगरा की स्मृति-पथ वा सेरी,
अमर मुनी स्यूं मधुर मिलन[1], चम्पक-मुनि ! क्यूं न चितारो ।।

लावणी

२१. उत्तरप्रदेश री गरमी भीम भयंकर,
दिन में लू, निशिभर हवा हुवै छूमन्तर ।
है हुई दिवंगत साध्वी हर्षकुमारी[2],
मुनि जस-मिलाप[3] री वार्ता विस्मयकारी ।।

२२. अब पुनः कानपुर कलकत्ता रै पथ में
वर्षा-प्रवास पूर्वाचल यात्रा अथ में ।
हॉस्पिटल विराना रोड मिल्यो जे. के. रो ।
संवत पनरै म्हारै पावस रो डेरो[4] ।।

२३. मर्यादोत्सव सेंथिया बंग- जनपद में,
कलकत्ता पावस सोलह भाव विशद में ।
कल्पनातीत नहिं सोची वडा-वडेरा,
सपनो- सो होग्यो देखां ऊठसवेरा ।।

२४. स्वागत सर्वोच्च और आक्षेप अधमतम,
स्तुति निंदा रो संतुलन बण्यो -जीवनक्रम ।
हो अहं हीनता रो संभव मन अनुभव,
सहयोग प्रकृति रो मैं मानूं अपुनर्भव[5] ।।

---

१. देखें प० १, सं. ९६१
२. देखें प०१,सं. ९६२
३. देखें प० १, सं. ९६३
४. देखें प०१, सं. ९६४
५. देखें प० १, सं. ९६५

२५. अन्तिम परिणति की सदा सुखद अनुभूति,
भैक्षव-शासन की ही आ विशद विभूति।
अतिविदित बिहार बंग यात्रा रो विवरण-
अप्रासंगिक, प्रासंगिक प्रस्तुत प्रकरण।।

२६. सम्मुख सतरै[1] द्विशताब्दी रो आयोजन[2],
तेरापथ जन्मभूमि[3] में है संप्रोजन।
इकसरो प्रयाण प्रलम्ब पंथ तय करणो,
नित 'विघनहरण' रो गीत पुनीत सुमरणो[4]।।

२७. निर्विघ्न निरन्तर धर-कूंचां धर-मजलां,
सेवाभावी गावै साहस री गजलां।
मंत्रीश दिवंगत पथ में अवगति पाई[5],
सुख! सुणो 'घोर तपसी' री ढाळ[6] सुणाई।।

२८. बीदासर मां वदनांजी री सन्निधि में,
अनुशासन रो इतिहास वण्यो अभिविधि में[7]।
चैत्री नवमी वगड़ी अभिनिष्क्रमणोत्सव[8],
नव रचित 'प्रयाण गीत'[9] संगान सगौरव।।

२९. मेवाड़-प्रदेश अपूर्व-पर्व[10] महिमागर,
अद्भुत आभामय ऊग्यो दिव्य दिवाकर।
बो खिल्यो केलवो राजमहल रो प्रांगण,
जागृत जनता रा पुलकित रूं-रूं कण-कण।।

---

१. वि. सं. २०१७
२. देखें प० १, सं. ९६
३ केलवा
४. देखें प० १, सं. ९७
५. देखें प० १, सं. ९८
६. देखें प० १, सं. ९९
७. देखें प० १, सं. १००
८. देखें प० १, सं. १०१
९. देखें प० १, सं. १०२
१०. तेरापन्थ द्विशताब्दी का अभूतपूर्व समारोह

३०. सर्वोच्च न्यायपति वी. पी. सिन्हा आया[1],
'भिक्षु स्मृति ग्रन्थ' समर्पण गौरव पाया।
तेरह दीक्षा इतिहासी वृहत सभा है,
तिण दिन री स्मृति महाश्रमणी कनकप्रभा है।।

३१. सामूहिक-व्रत विहार पक्खी-पडिकमणो,
श्रीराजनगर पावस-प्रवास हित जमणो।
आषाढ़ी पूनम री सारी संरचना,
अनुभूत कहाणी कही न जावै वचनां[2]।।

सोरठा

३२. साधिक तीन हजार, किलोमिटर लम्बी सफर।
पहुंता पहली बार, कलकत्तै स्यूं केलवै।।

३३. द्विशताब्दी में देख, मगरां री मेवाड़ रो।
आख्यो पावस एक, श्रमण सती हरख्या सकल।।

लावणी

३४. पट्टोत्सव भाद्रव सित नवमी परिषद में,
बड़बंधव चम्पक मुनिवर भाव विशद में।
'सेवाभावी' सार्थक सम्बोधन पायो[3]
सुन्दर-सुन्दर च्यारूं ही संघ सरायो।।

३५. अब 'धवल-समारो' वीदाणै बीकाणै,
दो चरणां में अट्ठारै साल सुहाणै।
सर राधाकृष्णन भेंट कर्यो 'अभिनन्दन'
'चोपड़ा स्कूल' में खिल्यो संघ नन्दनवन[4]।।

---

१. देखें प०१, सं. १७३
२. देखें प० १, सं.१७४
३. देखें प० १,सं. १७५
४. देखें प० १, सं. १७६

४२. साझ आखिरी समय में, सागर[1] को साह्लाद।
स्मृतियां मोहन भ्रात री, खिण-खिण आवै याद।।

* सामनै साउथ रो प्रस्थान,
अतिप्रलम्ब पथ है दक्षिण रो, खिण रो मूल्य महान।
सामनै साउथ रो प्रस्थान।।

४३. इक वासर मैं बीदासर में, मर्यादोत्सव कै अवसर में,
मां भगिनी बंधव परिसर में,
सन्त-सत्यां री सभा बुलाई -सामन्त्रण साह्वान।।

४४. लम्बी यात्रा आचार्या री, यदा कदा हो गण-हितकारी।
आवश्यक सहमति सारां री,
है सन्दर्भ जैन आगम रो, आस्था रो आस्थान[2]।।

४५. समय चार बरसां रो शायत, न्यूनाधिक हो सकै निहायत,
नहि कोइ वीकायत बीदायत,
आत्मार्थी पुरुषार्थी हो सब, मो मन अति सम्मान।।

४६. सुण गुरु-वच वात्सल्य-विनिर्झर, सह आवाज उठी एक स्वर,
भले पधारो भल अलवेश्वर !
सकल संघ की मंगल वाणी, करो कोड़ कल्याण।।

४७. फागुण तीज मुहूरत आयो, मां वदनां निज मुख बतलायो[3],
विदा, विदित आशीर्वर पायो,
जमी जोर वर्षा जोधाणे, सजल सकल पन्यान[4]।।

---

१. मोहनलालजी के अनुज सागरमलजी खटेड़, लाडनूं
* लय: प्रभो ! यह तेरापन्थ महान
२. देखें प. १, सं.१८०
३. देखें प. १, सं. १८१
४. देखें प. १, सं. १८२

३६. धवलोत्सव माँ वदनां ऋजुमनां कहाई[1],
सेवाभावी मुनि लिखित प्रशस्ती पाई[2]।
अणुव्रत की गूंज हुई है धर्म-गगन में,
भैक्षव-शासन को मूल्यांकन जन-जन में।।

३७. अब मरु मेवाड और दिल्ली हरियाणे,
पुनि-पुनि पदयात्रा पदयात्री सुख माणे।
आखिर अब गंगानगर इलाको झांको,
पंजाब-सीन सुन्दर नहरां नाळां को।।

दोहा

३८. माजी मन राजी हुयो, बड़भगिनी मन मोद।
पावस माघोत्सव मिल्यो, खिल्यो सतत संबोध।।

३९. मोभी सुत मोहन[3] समन, दृढमन अनशन धार।
बीकाणे सुरगति लही, क्षणभगुर संसार।।

४०. दृढ़धर्मी स्वाध्यायरत, जागरूक सुविवेक।
हो'मोहन' मोहन जिस्यो, लाखीणो नर एक।।

४१. प्रतिदिन सामायिक विना, च्यार आर-परिहार।
म्हां पांचां[4] पर है कियो , अमित अथग उपकार।।

---

१. देखें प. १, सं.१७७
२. देखें प. १, स.१७८
३. देखें प. १, सं.१७९
४. आचार्य तुलसी, सेवाभावी मुनि चम्पालालजी, मुनि हंसराजजी, मातु श्री वदनांजी और साध्वीप्रमुखा लाडांजी— पाचों को दीक्षा की आज्ञा मोहनलालजी ने दी।

४२. साझ आखिरी समय में, सागर[1] को साह्लाद।
स्मृतियां मोहन भ्रात री, खिण-खिण आवै याद।।

* सामनै साउथ रो प्रस्थान,
अतिप्रलम्ब पथ है दक्षिण रो, खिण रो मूल्य महान।
सामनै साउथ रो प्रस्थान।।

४३. इक वासर मैं बीदासर में, मर्यादोत्सव कै अवसर में,
मां भगिनी बंधव परिसर में,
सन्त-सत्यां री सभा बुलाई सामन्त्रण साह्नान।।

४४. लम्बी यात्रा आचार्या री, यदा कदा हो गण-हितकारी[२]
आवश्यक सहमति सारां री,
है सन्दर्भ जैन आगम रो, आस्था रो आस्थान[२]।।

४५. समय चार बरसां रो शायत, न्यूनाधिक हो सकै निहायत,
नहि कोइ बीकायत बीदायत,
आत्मार्थी पुरुषार्थी हो सब, मो मन अति सम्मान।।

४६. सुण गुरु-वच वात्सल्य-विनिर्झर, सह आवाज उठी एक स्वर,
भले पधारो भल अलवेश्वर !
सकल संघ की मंगल वाणी, करो कोड़ कल्याण।।

४७. फागुण तीज मुहूरत आयो, मां वदनां निज मुख बतलायो[३],
विदा, विदित आशीर्वर पायो,
जमी जोर वर्षा जोधाणे, सजल सकल पन्थान[४]।।

---

१. मोहनलालजी के अनुज सागरमलजी खटेड़, लाडनूं
* लयः प्रभो ! यह तेरापन्थ महान
२. देखें प. १, सं.१८०
३. देखें प. १, सं. १८१
४. देखें प. १, सं. १८२

४८. वाव कच्छ सौराष्ट्र फरसकर, सह्यो अहमदावाद हरस धर[1],
पार कियो गौरवमय गुर्जर,
मुम्बइ महामोच्छव सरकस में, पूना पुण्य प्रयाण।।

४६. तमिलनाडु मद्रास तर्‌यो है, स्वागत अन्नादुरै कर्‌यो है[2],
जन-जन में जैनत्व भर्‌यो है[3],
हिन्दी नहीं, हृदय की भाषा, युनिवर्सिटि सन्धान[4]।।

५०. तीन सिन्धुतट कन्या-क्वांरी[5], केरल क्रांति यात्रि-वहनां री[6]
उटकमण्ड[7] प्रमुदित नर-नारी,
अब बंगलोर विनोबा आश्रम, शर्मा रो अवदान[8]।।

५१. आन्ध्रा हैद्रावाद माघ में, निकट नागपुर नव निदाघ में,
उडीसा अतिवृष्टि माग में[9]
रच्यो रायपुर-रास रोष में, अग्निपरीक्षाऽऽख्यान[10]।।

५२. चौतरफी जो रखी चौकसी, चम्पक-स्मृति बेरोकटोक-सी,
निशदिन निरखी नोक-झोक-सी,
इतिहासी पावस- विहार[11] बो, श्रवण सुखद संगान।।

५३. तेईसै स्यूं जो प्रारंभी, सब यात्रावां स्यूं अतिलम्बी,
संघ-चतुष्टय स्यूं चौखंभी,
सेवाभावी साथ रात-दिन, चढ़ती-बढ़ती शान।।

---

१. देखें प॰ १, सं. १८३
२. देखें प॰ १, सं॰ १८४
३. देखें प॰ १, स॰ १८५
४. देखें प॰ सं. सं॰१८६
५. देखें पं॰ १, सं॰ १८७
६. देखें प॰ १, स॰ १८८
७. देखें प॰ १, सं॰ १८६
८. देखें प॰ १, सं॰ १६०
६. देखें प॰ १, सं॰ १६१
१०. देखें प॰ १, सं॰ १६२
११. देखें प॰ १, सं॰१६३

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणो।
जीवन -वृत्त बखाणो, जागृति रो जोश जगाणो हो।।(ध्रुवपद)

५४. लगभग लम्बी परिक्रमा कर देश समूचो माप्यो,
समारोह में 'युगप्रधान' रो गौरव मनै समाप्यो'[1],
उत्साहित सारो संघ जी,
रूं-रूं में राच्यो रंग जी,
चम्पक नव चादर ओढाई, विदित बण्यो बीदाणो हो।।

५५. 'सहिष्णुता री प्रतिमूर्ती' साध्वीप्रमुखा लाडांजी,
हुई दिवंगत गत वर्षे ल्यो हुया अडोळा माजी,
अब सतियां री संभाल जी,
कुण करसी भाल विशाल जी,
नाम सामनै 'कनकप्रभा' रो आसी आयां टाणो हो ।।

५६. इत्यादिक विवरण में चम्पक चिन्तन साथ जुड्यो है,
जीवन-यात्रा में भाईड़ो कुण-कुण मोड़ मुड्यो है,
संक्षेप सार लिपिबद्ध जी,
कवि कलना अप्रतिबद्ध जी,
'तुलसी' पढ़ो सुणो शासण रो, ओ इतिहास सुहाणो हो।।



* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै
१ देखें प० १, सं० १६४

वर्ग १२

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणां।
जीवन-वृत्त बखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो।।(ध्रुवपद)

१. जरा न जब लग आवै, बीमारी जब लग न सतावै,
पांचूं इन्द्रयां पड़े न हीणी, जब लग स्वस्थ कहावै,
तब तक धार्मिक आचार जी,
आचरणो उचित प्रकार जी,[1]
ज्येष्ठ उतारी निज जीवन में आ आगम री आणां हो।।

२. अपणै क्षयोपशम अनुसारे शास्त्राभ्यास कियो है,
सहृदयता समता सेवा रो लाहो खूब लियो है,
कारुण्य वृत्ति अतिरेक जी,
जागृत हो विनय विवेक जी,
अतिशय वत्सलता स्यूं जन-जन रा मन आकर्षणां हो।।

\+ सेवाभावी रो, निरुपम चरित निहारो,
पढ़णै सुणणै में, लागै प्यारो-प्यारो,
निज अनुभव आधारे सीधो,लीधो नहीं उधारो।।(ध्रुवपद)

३. व्याधि आधि नव-नव उपाधि रो आलय ओ नर-तन है,
वेदनीय कर्मोदय नाना सुख-दुख संवेदन है,
तब ही प्रवही रे, ओ प्रवाह दुनिया रो।।

---

* लयःआदीश्वरसुत रै सामनै

१. जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।। द ८।३५

\+ लयः आज म्हारै गुरुवर रो

४. कुण-कुण वच पायो बीमारी बूढापै मरणै स्यूं,
मानस समाधान अर्हत सिध साधु धर्म शरणै स्यूं,
संयत भावे रे, सहिष्णुता स्वीकारो ।।

५. चम्पक छुटपुट रोग,कर्म रा भोग समझ स्वीकार्‌या,
वर भैषज्य भिषगवर डाक्टर योगक्रिया स्यूं वार्‌या,
धर्मचिकित्सा रे, है संयम रो स्हारो ।।

६. आंत्रपुच्छ[1] आक्रमण भंयकर विफल विना ऑप्रेशन,
पण्डित रघुनन्दन जी कीन्हो औषध रो संप्रेषण,
नृपगढ पावस[2] रे, अपणी स्मृति संभारो ।।

७. स्वयं स्वयं पर श्रमण-सत्यां पर वैद्यक वृत्ति चलातो,
पथ्यौषध अनुपान ध्यान बतलातो नहीं अघातो,
नहिं भय खातो रे, हो मजबूत मता रो ।।

८. इक दिन एक अजब सो आमय गिरिगढ़[3] गजब ढहायो,
दर्द दुरंत कळेजै और पीठ में उद्‌भव पायो,
के ओ ? क्यूं ओ ? रे, पतो न बेपत्ता रो ।।

९. आयुर्वेदिक एलोपेथिक होम्योपेथ, युनानी,
और नेचरोपेथी आदिक सभी प्रक्रिया छानी,
विषम बिमारी रे, मिल्यो नहीं छुटकारो ।।

१०. रुजाग्रस्त पिण स्वस्थ मस्त ज्यूं देशाटन नहि छोड्‌यो,
नागफणो गेडियो हाथ ले चलतो दोड्‌यो दोड्‌यो,
प्रबल मनोबल रे, हो दाठीक सदा रो ।।

---

१. एपेन्डिक्स
२. वि० सं० २००३
३. वि० सं० २००२

११. बोम्बे निकट विकट घुटनां री पीड़ा हुई रुकावट,
डाक्टर ढोलकियो सहजोगी दुगणी दिली जमावट,
सारो साउथ रे, माप्यो मधुर मथारो[1]।।

१२. कन्या[2] और केरला री भारी दो यात्रा टळगी,
रह्या कुम्भकोणं कुन्दन-परिवार भावना फळगी,[3]
पाछा मिलग्या रे, कोयमतूर करारो।।

१३. नीलगिरी कुन्नूर निहार्यो आठ सँहस फिट ऊंचो,
तमिलनाड कर्णाटक आन्ध्रा हैद्रावाद समूचो,
मर्यादोत्सव रे, चमक्यो संघ-सितारो।
श्री रामपुरिया रे, नवजीवन संचारो[4]।।

१४. अग्निपरीक्षा-घड़ी रायपुर घड़ी न जाय भुलायो,
विषम समय में धर्म-संघ रो धैर्य सामनै आयो,
भाईजी रो रे, निरखण जिस्यो निजारो[5]।।

१५. अमर-मुनी[6] अरु भदन्त-भिक्षू[7] योगदान जो दीनो,
युग-युग रहसी याद सहज सौहार्द भावना-भीनो,
तर्क कुतर्का रे, हो प्रतिवच परबारो।।

१६. चूरू में पुनरपि प्रतिद्वन्दी छेड़्यो द्वन्द्व दुबारां,
खड़ी अहिंसा आखिर हिंसा ही हारै हर बारां,
चम्पक वेधो रे, बेचैनी -बरतारो[8]।।

---

१. देखें प० १, सं.१६५
२. कन्याकुमारी
३. देखें प० १, स० १६६
४. देखें प० १, सं० १६७
५. देखें प० १, सं.१६८
६.७. देखे प० १, सं० १६६
८. देखें प० १ सं.२००

१७. * पच्चीसौवीं निर्वाणाब्दी, दिल्ली में वीर जिनेश्वर की,
समुदित सारो है जैन संघ, आभा उभरी अखिलेश्वर की।
जैनध्वज एक, प्रतीक एक, इक समणसुत्त सारां सम्मत,
रमणीय स्थान संस्थान एक, आंकणहारा आंकी किम्मत[1]।।

१८. बड़भ्रात विनोदी लहजै में, मुनियां नै दे दी सहज सला,
है वढ़्यो बवंडर विकृतरूप, जाणक अणसोची खड़ी बला।
साहूजी स्यूं समझाइस कर वृत्तान्त शान्त समता सागै,
हो बात भली, पर वानर नै बय्या री सीख नहीं लागै[2]।।

१९. मर्यादमहोत्सव इकतीसो[3], श्रीडूंगरगढ में गहरायो,
जोशीलो भैक्षव-शासण रो ध्वज लहर-लहर कर लहरायो।
बीदाण सुजाण लाडणूं में, सहसा इक वातावरण बणै,
होणी चावै जयपुर जात्रा, हो स्वास्थ्य परीक्षण सजगपणै[4]।।

२०. बोलै चम्पक—म्हारो भी तनु, वरसां स्यूं बण्यो रहै दर्दी,
बेचैनी भोजन री बेळां, पावस हो या गर्मी सर्दी।
असली निदान है आमय रो, फिर बात चिकित्सा की सोचां,
सर्वांग जांच हो शेषकाल, पावस की आगै आलोचां।।

२१. अप्रेल वीस सन् पचहत्तर[5], जयपुर में प्रवर प्रवेश हुयो,
आकस्मिक लख आगमन संघ में हार्दिक हर्षोन्मेष हुयो।
दुर्लभजी[6] री दुर्लभ हॉस्पिटल, भावना भावित योग मिल्यो,
प्रारंभिक वर पडताल डाक्टरां रो समुचित सहयोग मिल्यो।।

---

* लयः भादूड़ी तेरस आई है
१. देखें प.१, सं.२०१
२. देखें प.१, सं.२०२
३. वि. स.२०३१
४. देखें प. १, सं.२०३
५. वि. सं. २०३२
६. खेलशंकर दुर्लभजी

२२. आखिर ऑप्रेशन ही होणो, सारां री एक सलाह रही,
हाइड्रस हिरणिया मिट ज्यासी, हो ज्यासी स्वस्थ शरीर सही।
सब देख रह्या, श्री भाईजी म्हाराज मनोबल ऊंचो है,
लाखां रो भाग सिकन्दर, पकड़ीज्यो तस्कर रो पूंचो है।।

दोहा

२३. सन् पिचहत्तर दो मई, विद सातम बैसाख[1]।
ऑप्रेशन है आज दिन, सूर्योदय की साख ।।

२४. पहलां स्यूं पहुंचाविया, वड़बन्धव तिण ठाम।
प्रारंभिक तैयारियां, सारी हुई सुयाम।।

२५. आया म्है आमोद में, मुनि नथमलजी साथ।
कनकप्रभा भी आ उभी, वन्दन हित वड़भ्रात।।

२६. पूरो संघ उमंग स्यूं, भावै मंगल भाव।
बणै अरुज वड़बंधवा, रत्नत्रयी प्रभाव।।

२७. आज चिकित्सालय वण्यो, धर्मालय को रूप।
चकित निहारै सकल जन, अद्‌भुत दृश्य अनूप।।

२८. अब हो ईशाणाभिमुख, सम्मुख वन्धव ज्येष्ठ।
मंगल मंत्रोच्चारणं, मैं कीन्हो सर्वेष्ट।।

२९. सेवाभावी स्वास्थ्य की, दी भोळावण भव्य।
सागर आदिक श्रमण-गण[2],अवसर लह्यो अलभ्य।।

३०. दृढ़ता पूर्वक डॉक्टरां, ओढ्यो निज दायित्व।
और व्यवस्था पक्ष में, स्थिरता स्यूं स्थायित्व।।

---

१. वि॰ सं॰ २०३२
२. देखें प॰ १, सं॰ २०४

३१. मूल ठिकाणै म्है गया, चम्पक चरणां लाग।
शेष चिकित्सा में जुड़्या, अहोभाग सोभाग।।

३२. प्रवर सुराणा फार्म में, शहर और सी-स्कीम।
व्यजनवास ज्यूं म्है कियो, सुस्थिर संयम सीम।।

३३. *अब शल्यचिकित्सा हुई सरू, मुनि सागर भीतर अरू-वरू,
क्यूंकर डाक्टर सहमति पाई, निरखत न हुयो क्यूं डरूफरू,
सारी स्थिति रो हूबहू चित्र, पत्रांकित कीन्हो है विचित्र,
पढतां सुणतां रोमांच गात, सेवाभावी री सुणो ख्यात[1]।।

३४. खोल्या सारा एकेक पटल, पाछा ज्यूं का त्यूं किया सटल,
लम्बै टाइम बेहोशी में, ऑप्रेशन की प्रक्रिया सफल,
ओ शल्यचिकित्सा को कमाल, रोगी नवजीवन -सो पावै,
फिर जागरूकता जीवन भर, जीणो है तो रैणी चावै।।

३५. हॉस्पिटल डाक्टरां रो म्हारो लेणो क नहीं, जिज्ञासा रो-
करणो है समुचित समाधान, मुनिचर्या रो मारग न्यारो,
अपवादमार्ग की घटना आ, चिन्तन पूर्वक संघटना आ,
उत्सर्गमार्ग में वर्जित है, जंह आन्तर ऊर्जा अर्जित है[2]।।

३६. त्यो उदाहरण गुरुवर कालू[3], आदर्श अटल अद्भुत स्फूर्ति,
साध्वी-प्रमुखा श्री लाडांजी[4], थी सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति,
स्थिति सारां री इकसार नहीं, युगधारा री पहचान सही-
करणै रो जब अवसर आयो, गंभीर विवेचन हो पायो,
थोडै हित नहिं हो बहु हानी, हर कोई करै न मनमानी,
इक संविधान चिन्तन-प्रधान, स्वीकृत कीन्हो वण सावधान।।

---

* लयः भादूड़ी तेरस आई है

१. मुनि सागरमलजी (श्रमण) सेवाभावी की शल्यचिकित्सा के प्रत्यक्ष द्रष्टा रहे। उन्होंने उसका पूरा विवरण व्यवस्थित रूप से लिपिबद्ध किया।

२. देखें प. १, सं. २०५

३. देखें प. १, सं. २०६

४. देखें प. १, सं. २०७

चौपाई

३७. 'भिन्न-समाचारी' री भारी, रचना युग-आगम अनुसारी,
संघबद्ध जीवनचर्या री, आकलना संकलना सारी,
आचारज बहुश्रुत मिल टाणे[२], नई बात संचे बैसाणे,
स्वामीजी रो लिखित[३] सुझावे, कुण तिणमें विचिकित्सा ल्यावै,
देश काल में जिस्यो जरूरी, निर्णय लै शासण में सूरी,
कर-चालित साधन रो स्हारो, साउथ निर्णय पथ सुविधा रो[४]।।

३८. स्खलना स्खलना थाप नहीं है, प्रायश्चित अभिशाप नहीं है,
अंगीकार पार पहुंचावै, निज दुर्बलता नहीं छिपावै,
रहै सुरक्षित निज गुणठाणो, आखिर आराधक पद पाणो,
वक्कुस पडिसेवणा नियंठा[५], पढ़ो सुणो कर-कर निज कंठा।।

३९. डेंजर ऑप्रेशन में भाई, दृढता स्यूं निज टेक निभाई,
रात न रक्त न क्रीत लगायो, यथाशक्य अपवाद बचायो,
नरस-फरस नहि होण दियो है, नहीं लिफ्ट उपयोग कियो है,
कियो बचाव श्रमण सहसेवी, आखिर 'पडिसेवी' पडिसेवी।।

४०. मिली हास्पिटल स्यूं जब छुट्टी, चल आया ले अभिनव तुट्टी,
मिलन हुयो भाई-भाई रो, धर्म संघ उत्तरदाई रो,
की आलोयण अन्तरभावे, अपवादिक रज-खेह मिटावे,
डाक्टर दूगड़[६] अरु मनजी[७] री, अवसर सेवा रही सधीरी।।

---

१. देखें प १, सं. २०८
२. अवसर पर
३. देखें प. १, सं. २०९
४. देखें प. १, सं. २१०
५. देखें प. १, सं.२११
६. डॉक्टर सूरजमल दूगड़
७. मन्नालालजी सुराना, जयपुर

४१. * लेकर पावस को लक्ष्य नहीं, अब की आया म्है जयपुर में,
ऑप्रेशन सफल सहोदर को, सारा उलसाया जयपुर में,
चम्पक चित की यूं चाह बणी, चौमास अगर हो जयपुर में,
तो फलै मनोरथ मनचाह्या, विश्राम अनामय जयपुर में,
बड़बन्धव री अन्तरवाणी, भीतर भावां स्यूं म्है जाणी,
जयपुर पावस उद्घोष कर्‌यो, भाई रो भावुक हृदय ठर्‌यो।।

+ जाणै कुण के भावी, कुण-सो पुरुषार्थ प्रभावी ?
जिण स्यूं शासण में चिरजीवी, चम्पक सेवाभावी।।(ध्रुवपद)

४२. बत्तीसै जयपुर चौमास, सेवाभावी रो सहवास,
ओ है 'ग्रीन हाउस' सी-स्कीम, दूर न निकट नगर री सीम,
ओ है प्रवचन रो पण्डाल, धार्मिक क्रिया चलै दगचाल,
राजस्थान प्रदेश राजधानी है विहुं दिशि चावी।।

४३. आयो आमय में आराम, अव करणो पूरो विश्राम,
नियमित जप स्वाध्याय चलै[1], खाद्य-असंयम रो के काम,
औषध पथ्य सवेरै शाम, गुरुकुलवास शान्ति रो धाम,
आधी व्याधि उपाधि शान्त सब, फिर स्यूं हुवै न हावी।।

४४. 'शासन कल्पतरू' संगीत[2], तुलसी निर्मित अभिनव गीत,
ज्येष्ठ स्वयं संगान करै, पुनि-पुनि सुणै और सुमरै,
स्मृति श्रावक-सम्मेलन[3] री, अद्‌भुत आस्था भाव भरै,
भरै सहज संघीय भावना, बड़बन्धव मेधावी।।

४५. टाळोकर टाळो करणो, चन्दन बैद उदाहरणो[4],
संघ संघपति रो सरणो, आपां रै भव-भव तरणो,
जावां बलि-बलि बलिहारी, रे'स्यां पल-पल आभारी,
हार्दिक सीख सुणाता सबनै, चम्पक सरल स्वभावी।।

---

* लयः भादूड़ी तेरस आई है
+ लयः शासन है नन्दनवन
१-४. देखें प० १, सं० २१२-२१५

४६. पावस पूर्ण हुयो प्रस्थान, लियो लाडणूं रो पंथान,
शनै-शनै नित संचरता, बीच फतेपुर है सुस्थान,
तन में आई निबळाई, सहनशील नहि दरसाई,
ज्यूं-त्यूं विश्वभारती पहुंचूं, मन में थिरता ठावी।।

४७. अबै फतेपुर स्यूं आगै, चालां तो पहुंचां सागै,
निरख कहै मुनि नथमलजी, इंयां किंयां ओ तन लागै,
चेहरे पर वा चमक नहीं, देही पर वा दमक नहीं,
हां भाई! साची अजमाई, काया तो कुम्हलावी।।

४८. व्रत निपजावां ल्यो बारै, समेरजी आंचलिया रै,
वड़ा गोचरी रा शौकीन, के कमजोरी नै धारै।
रह्या देखता नाथूजी[1], अरे! पहेली अणबूझी,
इं स्थिति में आ लापरवाही, है भावी मायावी।।

४९. भाईजी नै आज सुवेश, गुणहत्तरवों वर्ष प्रवेश,
बत्तीसै मृग सुद दशमी, मिली बधायां शुभ सन्देश,
म्है बैठा भाई-भाई, शुभ मंगल वेळा आई,
बद्धांजलि बोलै मुनि चम्पक, डब-डब बांई डावी।।

५०. गुरुवर! म्हारी प्रकृति कठोर, आप निभावो हर्षविभोर,
काया री छाया कमजोर, बढतो दुर्बलता रो जोर,
सारा मुनि सम्भाल करै, सेवा साझै सिंझ्या भोर,
स्वामीजी रै शासण री सुषमा अद्भुत अनुभावी।।

/

* चम्पक! क्यूं दिलगीर बण्या? क्यूं निश्वास निराशा-छण्या?
याद करो उजलो इतिहास, कभी न डोल्यो मन विश्वास।
चम्पक! क्यूं दिलगीर बण्या? (ध्रुवपद)

---

१. मुनि नथमलजी
* लय: नीलै घोड़ै रा असवार

५१. सेवा भैक्षवसंघ शृखंला री अनमोल कड़ी है,
सेवा आत्मोदय की आभा, सेवा जीव-जड़ी है,
सेवा स्यूं गण बण्यो चिरायु,
सेवा स्यूं संपोषित स्नायु।।

५२. छोटां-मोटां री परिचर्या भी है गण री ख्यात,
आप जिस्या सेवाभाव्यां री सेवा री के बात,
क्यूं फिर भी काया मुरझाई ?
सुस्ती मानस में क्यूं आई ?

५३. सागरियो[1] सेवागुणभरियो सांस-सांस रो साथी,
मणियो[2] मीट निहारै निशदिन गिणै न ठंडी-ताती,
अब भी जभी जरूरत और,
हाजर संत कलेजां-कोर।।

५४. बोलै मुनि नथमलजी—मोटापुरुषां रो उपकार,
क्षण भर भी नहि भूलां, राख्या सारां नै संभार,
याद करां बचपन की बातां,
सीयाळै री लम्बी रातां[3],

५५. ढीली - ढाली बोली-चाली नहीं सुहाती भाती,
आज अभूतपूर्व घटना आ क्यूं हालत हकलाती ?
सदा दड़ूक्या बणकर शेर,
न रहि मायूसी री मेर।।

मुनि चम्पक ५६. अरे ! अचानक कायरताई, क्यूं आई मन म्हारै ?
आं गुरुवां रो,आं सन्तां रो स्हारो म्हारै लारै,
शत प्रतिशत हार्दिक सन्तोष,
मिलतो रह्यो रु रहसी पोष।।

---

१. मुनि सागरमलजी, लाडनूं
२. मुनि मणिलालजी, सरदारशहर
३. देखें प०१, सं० २१६

श्री तुलसी ५७. आपां री लम्बी यात्रा में आप प्रेरणा-स्रोत,
तीन समुद्रां रो तट देख्यो, जल थल ओतप्रोत,
ऊंचो अणुव्रत रो अभियान,
जिनशासन री नव पहचान।।

५८. सतत चल्यो साहित्य सृजन भी गौरवशाली ग्रन्थ,
बहुआयामी कार्यक्रम तेजस्वी तेरापंथ,
सब में रह्यो आप रो योग,
मिली सफलता अटल अमोघ।।

५९. माणक-महिमा डालम-चरितं कालूयशोविलास,
हुया प्रकाशित, मां भगिनी रो बाकी वच्यो विलास[1],
लिखां आपरो वृत्त जरूरी,
मन में है उत्सुकता पूरी।।

६०. साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी भी आ खड़ी प्रसंगे,
दी नववर्षारंभ बधाई, भाई भणी उमंगे,
सचमुच खिल्यो अनोखो रंग,
दर्शक सारा रहग्या दंग।।

६१. वड़ी मधुरता में बड़बन्धव आगै करै विहार,
धीमै-धीमै सुखे सिधावो, म्है आवां द्रुतचार,
कुण जाण्यो ओ अन्तिम मिलणो,
भायां-भायां रो हंस-खिलणो।।

६२. चम्पक बोलै, शनीवार है, ब्यार करूं या न करूं ?
अरे ! आप भी बहमी बणग्या, मन मानै बो सखरूं,
चालो, म्है चोक्कस पहुंचावां,
मानस रो सन्देह मिटावां।।

---

१. प्रस्तुत कृति की रचना से पहले ही मातुश्री वदनांजी का जीवनवृत्त 'मा वदना' प्रकाशित हो चुका है।

६३. वाहिर चल अलविदा किया म्है, संत चल्या पहुंचावण,
गद्गद स्वर लाग्या भाईजी, सन्तां नै विरुदावण,
सव सन्तां री म्हारै ऊपर,
करुणा बढ़ी-चढी है भू पर।।

६४. तीन वात दिन रात सयाणां! मैं म्हारै मन सोचूं,
पड़ूं न परवश, यायावर वस विश्वभारती पोंचूं[1],
और सर्वदा हृदय समाधी,
मैं पूरी काया नै साधी।।

६५. डाक्टर श्यामसुखो तो वोलै—हार्ट हुयो कमजोर,
पैदल चलणो सख्त मना है करणो चाहै गोर,
विश्वभारती रो मानस है,
चलै न भाई! अपणो वश है[2]।।

६६. भावी है वलवान मानकर धीमै सुस्तै चाल,
सालासर मिगसर सुद वारस पहुंच्या, कियो कमाल,
दिन में दाढ़ी-मुंछ्यां लोच,
कियो करायो सव कुछ सोच[3]।।

६७. दिन भर रह्या रंग में, सायं बाकळ उदक पियो है,
लागी दस्त एक दो, बीती रात, दिवी उदियो है,
चाल्या लड़खड़ता -सा पांव,
कोई निकट न दीसै गांव।।

६८. रुको, आज निशि साथे रेस्यां म्है भेज्यो संदेश,
आज रुक्यां पाछे रह ज्यास्यूं करणो, साथ प्रवेश[4],
विश्वभारती भावी स्थान,
हिलमिलस्यां ऊंचै आस्थान।।

---

१. देखें प०१, सं०२१७
२. देखें प०१,सं०२१८
३. देखें प०१,सं०२१६
४. देखें प०१,सं०२२०

६९. पांच मील में लगी पांच घंटा, आ विषमी बाट,
रुकतां थकतां सोतां उठतां चलतां मन ओचाट,
लीन्हो प्याऊ में विश्राम,
दोफारां री वढ़ती धाम।।

७०. एक कोश सौ कोश हुयो है, सागर मणि रै स्हारे-
ज्यूंत्यूं धेंधां में मुश्किल 'धां' गाम लियो सिंझ्यारे,
आयो देखै डाक्टर व्यास,
सूरज होग्यो अस्त उदास[1]।।

७१. सालासर स्यूं सायं चाल पार्वतीसर म्है आया,
एक कोशभर आगै 'धां' में भाईजी पग ठाया,
रुकता आज मिलण हो ज्यातो,
हियड़ो हर्ष हिलोळा खातो।।

७२. खैर बीतसी रात प्रात पौ फट्यां लालिमा ल्यासी,
उग ज्यासी रवि सहॅसरश्मि, चम्पक कलियां खिल ज्यासी,[2]
मिल ज्यासी बेलो बड़भाई,
चिन्तन करतां वगत विताई।।

७३. पश्चिम निशि स्वाध्याय ध्यान नितकर्म क्रिया सलटाई,
जल्दी जा मिलणो है, सन्तां साथे सला जचाई,
इतले वदल गयो आसार,
आशा-तरु पर पड्यो तुषार।।

---

१. देखें प०१,सं०२२१

२. उक्त पद्य की भावना संस्कृत भाषा के एक प्राचीन श्लोक से ली गई है। आचार्यवर ने उस श्लोक की रचना को भी कुछ रूपान्तरित कर दिया, जो इस प्रकार है—

रात्रि गंमिष्यति भविष्यति सुप्रभात,
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति चम्पकश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति सम्प्रति मानसे मे,
हा हन्त! आगत इतोऽपि स रायजादा।।

७४. आ ऊभो सोहन राजादो[1] 'धां' स्यूं, म्है बतलायो,
सन्तां रै सुखसाता है ? पूछ्या रो जाब न आयो,
गुरुवर ! है दुःखद संवाद,
होठां स्यूं नहि निकळै साद ।।

७५. भाईजी म्हाराज सिधाया स्वर्ग पाछली रात,
कह्यो न जावै रह्यो न जावै, विरहव्यथाकुल गात,
सुणतां सभी स्तब्ध -सा रहग्या,
विरही वण प्रवाह में वहग्या ।।

७६. उलटी हुई रात नै बारह बजतां-बजतां एक,
साढे चार बजे फिर दूजी, दंग रह्या सब देख,
छव बज दस मिनटां पर श्वास-
छोड्यो, सबनै किया हताश ।।

७७. मणि सागर मोहन मुनि अन्तिम खिण तक पासे बैठा,
एक शब्द भी बोल सक्या नहि, के नाराजी के ठा ?
होग्यो जब आयुर्बल क्षीण,
महाप्रयाण री बाजी बीण ।।

७८. प्रतिक्रमण प्रतिलेखन कर· द्रुतगति म्है पैर उठाया,
कर नौकरवाली ले 'धां' में बैठा बन्धव पाया,
अविकृत आकृति, उघड़ी आंख,
म्है बोलाया अपलक झांक ।।

दोहा

७६. चम्पक ! आ कांई करी, रे म्हारा बड़वीर !
एक रात रै बासतै, तू रहग्यो पर तीर ।।

८०. फतै फतैपुर में करी, चन्देरी रै तीर।
आज अचानक उठ चल्यो, ओ म्हारो बड़वीर ।।

---

१. सोहनलालजी रायजादा, फतेहपुर

८१. नहिं जाणी सोची नहीं, कल्पी नहीं कमीर।
इंयां अचानक जावसी, ओ म्हारो बड़वीर।।

८२. साहस राण हमीर-सो, सेवाभाव सधीर।
आज अचानक उठ चल्यो, ओ म्हारो बड़वीर।।

८३. सुद तेरस मृग मास की, 'धां' में सम्वल सांध।
आज अचानक उठ चल्यो, चन्देरी रो चांद।।

८४. लग्यो हृदय में तीर-सो, वज्रपात आघात।
पिण किण नै कांई कवां, बणी निजोरी बात।।

८५. लोग अडीकै लाडणूं, तू पहुंच्यो सुरवास।
'तुलसी' सारां री रही, मन री मन अभिलाष।।

* लो भाई! सेवाभावीजी रो जीवन -वृत्त बखाणां।
जीवन- वृत्त बखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो।।(ध्रुवपद)

८६. इंयां किंयां आकस्मिक सब कुछ ? आ विस्मयमय वाणी,
सागर, शान्ति, विनय, मणि मोहन रजनी-व्यथा बखाणी,
'उलटी' उलटी दो वार जी,
तन दुर्वलता दुर्वार जी,
बात- बात में श्वास प्रवासी, सारा बण्या विराणां हो।।

८७. म्है सब उपवासी सुजानगढ़ पहुंच्या एक मजल में,
चम्पक - शव भी चन्देरी पहुंचायो धर्म-स्थल में।
संवाद सुण्यो जहजोग जी,
है मिल्या हजारां लोग जी,
अजब उदासी 'तुलसी 'मानव-मानव मन विलखाणां हो।।



---

१. पद्य संख्या ७८से ८५ तक ८ दोहे आचार्य श्री ने 'धां' गांव में सेवाभावीजी के पार्थिव शरीर को देख तत्काल बनाकर सुनाए थे। प्रासंगिक होने के कारण उनको यहां जोड़ दिया गया है।

* लय: आदीश्वरसुत रै सामनै

वर्ग १३

* लो भाई ! सेवाभावीजी रो जीवन-वृत्त बखाणां।
जीवन-वृत्त बखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो ।।(ध्रुवपद)

१. इन्द्रजाल जंजाल जाल जग सच है या सपनो है[1],
यत् सत् तत् क्षणिकं सौगत-मत क्षण में मर खपणो है,[2]
दुनिया चित -पुट रो खेल जी,
सुणल्यो चहै सोर्ट डिटेल जी,
चम्पक सीन सामनै, फिर भी संशय करां सयाणां हो ।।

२. बचपन यौवन प्रौढ़ावस्था साथ- साथ बीती है,
किता उतार- चढ़ाव हरस- अमरष भीती प्रीती है,
है आज व्यतीत अतीत जी,
परखो प्रत्यक्ष प्रतीत जी,
गया न आसी, रह्या सिधासी, कर प्रत्यय पितवाणां हो[3] ।।

\+ सेवाभावी री स्मृतियां ऊठसवारां ।
होती ही रहसी, क्यूंकर कभी विसारां ?(ध्रुवपद)

३. विश्व-भारती रै प्रांगण में सुन्दर चिता सझाई,
जी, इकताली खंडी मंडी री सुषमा बणी सवाई,
वड़बंधव-शव री दहनक्रिया जय नारां ।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१. देखें प०१,सं०२२२

२. देखें प०१, सं०२२३

३. सम्मन रोवै काहि को, हसै जु कोण विचार।
गया सो आवण के नहीं, रह्या सो जावणहार।।

\+ लयः तेरापथनायक ! दान दया थिर थापो

४. सहज सरलता लोकप्रियता कोमलता मृदुताई,
जी, शत-सहस्रगुण आज सामनै उभर उभरकर आई,
भर-भर आंसूड़ा अँखियां वही हजारां।।

५. सफल सुफल जयपुर री शल्यचिकित्सा अरु पदयात्रा,
जी, विश्वभारती निकट प्रकट विकटाकृति वणी विधात्रा,
आश्चर्य चकित-सा विस्मित-सा है सारा।।

६. दूजै दिन भारी मन 'तुलसी' भर परिषद् में गावै,
जी, श्री भैक्षवगण-गगनांगण में गहरो गौरव पावै[1],
चान्दै ज्यूं चम्पक चमक्यो अजब बहारां।।

७. चम्पक की प्रतिकृति साकार समाधिस्थल पर थापां,
जी, मैं इन्कार कियो, नहि अपणी परम्परा उत्थापां,
अनुकरण गुणां रो कियो, करां हर वारां[2]।।

८. पर-दुख-कातर कर विहार वापिस दर्शण देवण नै,
जी, ग्यारह माइल लम्बी यात्रा साधुवाद मृदुपण नै,
है होणी मुश्किल ऊऋणता उपकारां[3]।।

९. गिड़गिड़ाट करतो गिडियो बीदासर में अर्जाऊ,
जी, म्हारी मां नै दर्शण द्यो, दो क्षण री वाट बटाऊ,
दे दर्शण, अणसण चाढ्यो काम शिराड़ां[4]।।

१०. ज्वराक्रान्त शिशु सन्त पन्थ में बैठो, दीठो भाई,
जी, के देखो सन्तां ! इण नै क्यूं खान्धे ल्यो न उठाई,
मंजिल पहुंचायो, कभी न हिम्मत हारां[5]।।

---

१. देखें प॰१, सं॰२२४
२. देखें प॰१,सं॰२२५
३. देखें प॰१, सं॰२२६
४. देखें प॰१, सं॰२२७
५. देखें प॰१, सं॰२२८

११. हाथीड़ो सतपुड़ो हाथ में जरहो बैठ छिदायो,
जी, मगन रुक्या जद भाईजी अति ऊंडो अस्त्र चलायो,
सब पीप निकाळ्यो अब हाथी हुशियारां[1]।।

१२. मगन वेदना-मगन रात री बात नळी नहि लागै,
जी, डाक्टर, मुनिवर श्रम कर हार्‌या जरा न सरकै आगै,
चम्पक मन कम्प न सफल शहर सरदारां[2]।।

१३. बीदासर में संत बांठियो 'खूबो' खूब सिटायो,
जी, अन्तरंग पीड़ा स्यूं पीड़ित जाणक चरण गमायो,
चम्पक चतुराई आई नाव किनारां[3]।।

१४. सती गणेशां संग-प्रसंगे खोयो संयम-सायो,
जी, भाईजी म्हाराज साझ कामी स्यूं पिंड छुड़ायो[4],
संस्मरण शरणदायी है, किता चितारां।।

१५. कंचन बणी अकिंचन आखिर भाईजी संभाळी,
जी, कड़ी कसौटी ओटी, फिर नहिं हाली एक रूंयाळी,
मंजूर कियो बहणो खांडै री धारां[5]।।

१६. कुण- सो इसो प्रसंग जंग में भाईड़ो न जुड्यो है,
जी, कठिन परिस्थिति में भी जोखिम झेली, मोड़ मुड्यो है,
गिरतै पड़तै नै ज्यूं-त्यूं अरे ! उबारां।।

१७. भीवाणी स्यूं दिल्ली जातां गिर्‌या संत छोगोसा,
जी, धर खान्धां पर भार, उठाया तड़खड़ता-सा डोसा,
भाईजी रो जोवन-सो जोश उभारां[6]।।

---

१. देखें प॰१, सं॰२२६
२. देखें प॰१,सं॰२३०
३. देखें प॰१,सं॰२३१
४. देखें प॰१, सं॰२३२
५. देखें प॰१,सं॰२३३
६. देखें प॰१, सं॰२३४

१८. शिशु सन्तां रा मधुर संस्मरण सेवाभाव भर्योड़ा,
जी, सुणतां थके न कान, बोलतां वाणी, लम्बा-चौड़ा,
है उदाहरण सारा शासण-सुषमा रा ।।

१६. मां वदनां री नैया तारी, लाडां लाड लडायो,
जी, सेवाभाव साधकर सेवाभावी रो पद पायो,
किण-किण रा काम समार्‌या स्वस्थ सहारां ।।

२०. पापभीरु पुरुषार्थपरायण अपणै प्रण को पक्को,
जी, टक्को सो जबाव सुण परलो रहतो हक्को-बक्को,
नहि भोळैभावे होवै भूल दुबारां ।।

२१. बड़ो विनोदी हो भाईड़ो बतलातो मनमोजां,
जी, हळफळ बालूसाहि हीरजी स्कोलरजी नै खोजां,
गोटियो घोटियो दाढ़ीधर सरदारां[1] ।।

२२. डाल धाड़ेवो, पृथ्वी डागो, कुन्दन माल खटेड़ां,
जी, गोधू मिश्री मुनीमजी, रेता भाई रै केड़ां,
है हरदम हाजर गिणै न सांझ-सवारां[2] ।।

२३. करणीसिंह बीकाण-नृपति डाक्टर अविनाश बुन्देला,
जी, मेघ सुराणो, दिल्ली रा लाला चम्पक रा चेला,
बैंगाणी परिकर कमला बहन हिसारां,
कमलेश-समर्पण किण स्यूं कम अवधारां ।।
जैचन कोठारी जागृत-तत्त्व जुहारां[3] ।।

२४. चम्पो, चम्पालाल, चम्पजी मोटापुरुष भाईजी,
जी, आदि आदि आमन्त्रण अनुगुण हो सेवाभावी जी,
भैक्षव- शासण री अै मोटी मनुहारां ।।

---

१. देखें प०१,सं०२३५
२. देखें प०१, सं०२३६
३. देखें प०१,सं०२३७

२५. गुरुकुलवासी वण्या प्रवासी विश्वासी गणि गण रा,
जी, शासन-स्तंभ अदंभ परम श्रद्धास्थल हा जण-जण रा,
दिल रा दयाल रिछपाल दीन-दुखियां रा।।

२६. अट्ठावन ठाणे इक टाणे सोदर सादर आया,
जी, पांच-सात ठाणां स्यूं भी जव कभी भेज विचराया,
उत्कर्ष और अपकर्ष न लग्यो किंवारां।।

२७. नियमित पश्चिम निशा निरन्तर जाग्रत जप स्वाध्यायी,
जी, पाछे सोता पेलां उठता निजर राखता ठायी,
गुरु भाई रो दायित्व-बोध अधिकारां।।

२८. बढ़ती- चढ़ती देख संघ की कळियां-कळियां खिलती,
जी, टाळोकर छुट्टक-वुट्टक स्यूं आंख्यां कभी न मिलती,
वड़बन्धव री नैसर्गिक नीति निहारां।।

२९. गिरिगढ़ में इक्कीस युवा मुनि गीत सामयिक गायो,
जी, वाह ! वाह! आज मजो आयो, सारां रो जोश वढ़ायो,
ऐ ! युवा सैनिको ! युग ने हमे पुकारा[1]।।

३०. युवा श्रमणियां तणियां-धणियां गीत गगन गुंजायो,
जी, सती संघमित्रादिक मिल अभिनव उल्लास वढ़ायो[2],
भाईजी रै तन छूट्या पुलक-फुहारां।।

३१. मस्ती में मोच्छव-बस्ती में गीत स्वस्तिमय गातो,
जी, लोक गीत-सो बण ज्यातो, जन-जन जुवान पर आतो,
म्हारै सांस-सांस में बोलै स्वर गुंजारां[3]।।

---
१. देखें प॰१, सं॰२३८
२. देखें प॰१, सं॰२३९
३. देखें प॰१, सं॰२४०

३२. स्वस्थ स्थाज अरु वड़ो स्थाज माईजी रै मन भातो,
जी, और व्यवस्था पक्ष व्यवस्थित सुस्थित सदा सुहातो,
एकांगी भीड़-भाड़ अनफिट इकरारां ।।

३३. वडा-वडेरा तपसी संत-सत्यां रो तो पीहर हो,
जी, और घोर आफत में घिर्‌यां फिर्‌यां रो अपणो घर हो,
सारां नै ही आश्रय मिलतो उपचारां ।।

३४. भाई जी रै भद्रपणै रो दुरुपयोग भी होतो,
जी, दुमना दुरभिसंधि स्यूं दिन भर खूब लगाता गोतो,
पांचूं अंगुळियां हुवै नहीं इकसारां ।।

३५. म्हारो सपना साच हुयो इक, दूजो नहीं बताऊं,
जी, मोहनजी आमेट भेंट निशि वचग्यो अमिट व्यथा ऊं,
सागर स्यूं खुलतो अन्तरंग संस्कारां[१] ।।

३६. काया री छाया ज्यूं सागर अन्तिम क्षण तक साथे,
जी, गहरी निष्ठा निभी गेडियो नागफणो ले हाथे,
भाईजी रो विश्वास बह्यो इकधारां ।।

३७. है निहाल मणिलाल वालपण स्यूं चपक चित चढियो,
जी, इकरंगो बण रह्यो नगीनो सेवा-सुवरण मढियो,
गढ़ियो जीवन, नहिं लगै नजर, थुथकारां ।।

३८. शान्ति विनय अरु वर्धमान मुनि मोहनजी आमेटी,
जी, अन्तिम निशि 'धां' मे निज बांह में सारी कथा समेटी,
नियती रै आगै चलै नहीं चित्कारां ।।

३९. इक्यावन वरसां लग संयम सजग भाव स्यूं पाळ्यो,
जी, त्याग तपस्या की आगी में जीवन-स्वर्ण उजाळ्यो,
लगि अम्बर धर में धन्य-धन्य धुंकारां ।।

---

१. देखें प०१, सं०२४१

४० मोम- मुलायम झुकै सामलो बड़बन्धव जी जीतै,
जी,अकड़ -पकड़ में कभी न पिघळै भले जिन्दगी बीतै,
नगदावण स्यूं निपटै, नहिं अठै उधारां ।।

४१. नाना गुणगर्भित जीवन में एक रही कमजोरी,
जी, आ आजीवन अटल निभी, नैसर्गिक बात निजोरी,
मन खंच हुई सो हुई न स्वयं निवारां ।।

४२. पेलो पहल करै नहि जव तक नव तक मौन न खुलसी,
जी, छोटो-वडो कड़ो-कंवलो हो, टावर हो चहे तुलसी,
नहि सुणी-सुणाई, अजमाई कति वारां ।।

४३. सेवा श्रम सारल्य सामनै कमियां याद करां क्यूं ?
जी, किशलय-कोमल विमल निमलता विनयवाद विसरां क्यूं ?
'तुलसी' तटस्थता उदाहरण अवतारां ।।

४४. मां, भगिनी भाई नै सुखे समाधे सुरपुर भेज्या,
जी, सहजोगी वण मैं ध्रुवजोगी पल-पल सफल सहेज्या,
ऊऋणता मानी आह्लादित उद्गारां ।।

४५ विक्रम दो हजार गुणपच्चा कृष्ण पक्ष आषाढ़ां,
जी, गुणपच्चा डिगरी तक पहुंची गर्मी पड़े प्रगाढां,
जै. विश्वभारती 'तुलसी' तेज तरारां ।।

४६. सोलह वरसां स्यूं करतां-करतां पुरुषार्थ फळ्यो है,
जी, कुण जाणै कुण लग्यो दधक्षर बो भी अबै टळ्यो है,
चम्पक-चरित्र -रचना सपनो सचकारां ।।
सेवाभावी - रचना सपनो सचकारां ।।

४७. पांच वरस में सूत्र भगवती री जय जोड करी है,
जी, कर समुद्र-मंथन मानो मधुसूदन ख्यात वरी है,
तुलसी-जय जागृति रो अन्तर अनिवारां[1] ।।

---

१. देखें प०१, सं०२४२

* लो भाई! सेवाभावी जी रो जीवन-वृत्त वखाणां।
जीवन-वृत्त वखाणां, दायित्व निभायो जाणां हो।।(ध्रुवपद)

४८. परिष्कार करतां आपाढ़ उपस्थिति में मिगसर है,
सघन अहिंसा-शिक्षण रो अन्तर्राष्ट्रीय शिविर है,
लोकार्पण लामा हाथ जी,
जै० वि० भा० विश्व विख्यात जी,
प्राण प्रतिष्ठा हुई विशिष्टा, प्रमुदित नया पुराणां हो[1]।।

४९. केलिफोर्निया अमेरिका में पावस प्रथम कियो है,
समणद्वय प्रेक्षा-प्रवृत्ति रो नव संस्कार सिंयो है[2],
जय-जय जग तेरापन्थ जी,
सेवाभावी - सा सन्त जी,
तुलसी-विवरित वृत्तन्त जी,
है गेय वण्यो ओ ग्रन्थ जी,
कठिन कठिनतर और कठिनतम गुणिजन -गुण ओगाणां हो।।

मुक्त छन्द

५०. आगम का अध्ययन गहन हृदयस्पर्शी हो,
तुलनात्मक त्रैकालिक और तत्त्वदर्शी हो।
वनी योजना पंचाब्दी अभिनव आयामी,
प्रथम त्रयोदश विद्यार्थी विद्या-व्यायामी[3]।।

५१. महाप्रज्ञजी मार्गप्रदर्शक शिक्षण-क्रम में,
महाश्रमण महाश्रमणी साथ विमर्षण श्रम में।
उत्तरदायी विश्वभारती के अधिकारी,
जुटा सकेंगे आवश्यक सामग्री सारी।।

---

* लयः आदीश्वरसुत रै सामनै

१. देखें प.१, सं.२४३
२ देखें प.१, सं.२४४
३. देखें प. १, सं. २४५

५२. 'भिक्षु-चेतना वर्ष' अभ्युदय का निमित्त है,[1]
श्री मघवा स्मृति-समारोह में जुड़ा चित्त है[2]।
बीदासर[3] सरदारशहर[4] इतिहास-क्षेत्र है।
स्वर्गवास तिथि कृष्ण पंचमी मास चैत्र है।।

५३. सेवाभावी-संरचना का सुन्दर अवसर,
शत ऊपर उनतीस श्रमण-श्रमणी[5] समुदित वर।
उनसठ समणी पांच समण छह-साठ मुमुक्षु,
विजयी तेरापन्थ सदा 'तुलसी' दस दिक्षु।।

पाइयपज्जं

५४. जं दिट्ठं जं सुयं सक्खं, लिहियं भाउ-जीवणं।
तत्थ नूणाहियं किंचि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।।

५५. भी-भा-रा-ज-म-मा-डा-का-पसाएण पभाविणा।
जं भवइ जं भविस्सइ, सुहं ति तुलसीच्छियं।।



१. देखें प० १, सं० २४६
२. देखें प० १, सं० २४७
३. आचार्य श्री मघवा की जन्मभूमि
४. आचार्य श्री मघवा का स्वर्गारोहण क्षेत्र
५ श्रमण ४१, श्रमणियां ८८

परिशिष्ट –१ सांकेतिक घटनाएं

परिशिष्ट –२ विशेष शब्दकोश

परिशिष्ट –३ नामानुक्रम

परिशिष्ट १

सांकेतिक घटनाओं का अनुक्रम

१. प्रथम-प्रथम पाई प्रवर
२. तनसुख शोभा झूमर लारै
३. नौ संतानां री मां बाजी
४. छोड़ बंग प्रदेश
५. गीलै आंगणियै छीः छीः पग
६. चुहिया स्यूं डरती
७. प्पानां री चरचा
८. पडिकमणो याद कियो
९. हाथी-होदे कदे न चढणो
१०. म्हारी हुई भाग जागरणां
११. मझ मारग में फणधर
१२. मां वदनां स्यूं बा वचकाणी
१३. अन्तर-मन अनुशासना
१४. जालमचनजी नोहरे
१५. कुण-सी वा गण-कला
१६. श्रीडूंगरगढ रा शय्यातर
१७. स्थविरां री सन्निधि में
१८. क्षेत्र उदीयमान हो
१९. सागर-वरड़ियो
२०. अब मगन साथ गोचरी
२१. केवल सिंधी गीत सुणायो
२२. आपां री आंख्यां आगै
२३. केते विश्रामे कर थामे
२४. मगन मगन -मन रंगभवन में
२५. बक्सीसां हुइ विविध प्रकारे

११६. सन्त-सत्यां री लेण हाजरी
११७. भगिनी लाडकुमार
११८. अलवर प्रेमलता तणो
११६. अधिवेशन अद्भुत हुयो
१२०. जैनेन्द्र को इतिहास
१२१. सात-संत
१२२. भर परिषद् में कियो समर्पित
१२३. इंदव छंद
१२४. मनोहर-छंद
१२५. बोलै जोशीलो जयचंद
१२६. निज विरचित दोहक
१२७. रघुनन्दन वन्दन करै
१२८. पूछी जयाचार्य सन्तां नै
१२६. लक्खां तरगे, तरै तरेला
१३०. भीवाणी मोच्छब आरोपी कोपी
१३१. भीखी चिकणी भू पर चाल
१३२. संगरूर दीक्षा में
१३३. सफर समाणा की
१३४. आंचलियो रु दसाणी
१३५. सुमरत ही दिल्ली रा श्रावक
१३६. पानीपत पथ में बन्नौर
१३७. कूवो स्वयं पिलावै हिरणां नै
१३८. पण्डित नेहरू
१३६. विदेशां देशां में एक नयो उच्छ्वास
१४०. श्रीमन्नाराण कहै
१४१. श्री काका कालेलकर
१४२. आरोपी कोपी रा अब पृष्ठ खुल्या है
१४३. सैं दिन माइक खातिर
१४४. चढ्यो चांचियो
१४५. मुम्बादेवी मोच्छब

२३६. डाल चाड़ेदो, पृथ्वी डागो
२३७. करणीसिंह बीकाण-नृपति
२३८. ऐ युवा सैनिको ! युग ने हमें पुकारा
२३६. युवा श्रमणियां तणियां धणियां
२४०. म्हारै सांस -सांस में बोलै
२४१. म्हारो सपनो साच हुयो इक
२४२ तुलसी-जय जागृति रो अन्तर
२४३. परिष्कार करतां आषाढ उपस्थिति
२४४. केलिफोर्निया अमेरिका में
२४५. आगम का अध्ययन
२४६. भिक्षु चेतना वर्ष अभ्युदय का निमित्त है
२४७. श्री मघवा स्मृति-समारोह में जुड़ा दिल है



१. धर्म-संघ में जब कभी, जहां कहीं, विशेष सेवा की अपेक्षा हुई, मुनि चम्पालालजी सदैव अग्लान भाव से प्रस्तुत रहे। कई प्रसंगों पर तो वे असाध्य एवं कष्टसाध्य बीमारियों के उपचार में सघन रूप से संलग्न रहे। उनकी सेवाओं का मूल्यांकन कर आचार्यवर ने वि॰ सं॰ २०१७ तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के चातुर्मास्य राजनगर में उन्हें सेवाभावी संबोधन से संबोधित किया। तेरापंथ धर्मसंघ में सेवाभावी सम्मान से सम्मानित होने वाले वे प्रथम मुनि थे।

२. राजरूपजी खटेड़ के तीन पुत्र थे। सबसे बड़े शोभाचन्दजी, मझले तनसुखलालजी और सबसे छोटे झूमरमलजी। शोभाचन्दजी और तनसुखलालजी जल्दी दिवंगत हो गए। शोभाचन्दजी के एक पुत्र थे गणेशमलजी और एक पुत्री थी चान्दूबाई। गणेशमलजी के कोई संतान नहीं थी। चान्दू बाई लाडनूं के सांखला परिवार में व्याही गई। उनके तीन पुत्र और दो पुत्रियां थीं— माणकचन्दजी, नथमलजी, धनराजजी तथा सुन्दरबाई और मोहिनी बाई। उनके एक पुत्र और एक पुत्री दीक्षित हुए। जिनके नाम थे— मुनि धनराजजी तथा साध्वी मोहनाजी। माणकचन्दजी की दो पुत्रियां दीक्षित हुई। साध्वी हर्षकुमारी जी तथा साध्वी कनकश्री जी। सुन्दर बाई के परिवार से एक पुत्र, एक पुत्रवधू और एक पुत्री दीक्षित हुई— मुनि चम्पालालजी, साध्वी इन्द्रूजी और साध्वी कमलप्रभाजी।

तनसुखलालजी के चार पुत्र हुए—महालचन्दजी, भंवरलालजी, सोहनलालजी और जयचन्दलालजी। उनके एक पुत्री हुई—टमकूबाई। उसका ससुराल सुजानगढ है। इस परिवार से सोहनलालजी का एक पुत्र दीक्षित हुआ— मुनि गुलाबचन्दजी।

झूमरमलजी के नौ सन्तानें हुई— छह पुत्र और तीन पुत्रियां। पुत्रों में चम्पालालजी और तुलसीरामजी तथा पुत्रियों में लाडांजी ने आचार्यश्री कालूगणी के पास दीक्षा ग्रहण की। संयोग की बात है कि तीनों भाई-बहनों ने धर्मसंघ में गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त किया। मुनि चम्पालालजी 'सेवाभावीजी' के रूप में प्रतिष्ठित हुए। मुनि तुलसीरामजी संघ के सर्वोच्च स्थान पर पहुंच कर आज भी जैनशासन में सूरज की तरह चमक रहे हैं। साध्वी लाडांजी ने साध्वीप्रमुखा के पद पर रहकर २४ वर्षो तक साध्वी समाज की

संभाल की।

झूमरमलजी के ज्येष्ठ पुत्र मोहनलालजी का एक पुत्र दीक्षित हुआ— मुनि हंसराजजी। उनकी पुत्री मोर बाई का एक दौहित्र दीक्षित हुआ— मुनि भूपेन्द्रकुमारजी। उनकी प्रदौहित्री दीक्षित हुई— साध्वी चित्रलेखाजी। सबसे छोटी पुत्री मनोहरबाई का दौहित्र दीक्षित हुआ— मुनि सन्मति कुमारजी। इस प्रकार राजरूपजी के परिवार से धर्मसंघ का सम्बन्ध उत्तरोत्तर पुष्ट होता जा रहा है।

३. ऋजुमना मातुश्री वदनांजी के कुल नौ संतानें हुई, उनके नाम इस प्रकार हैं—

• मोहनलालजी	• खींवराजजी	• मन्नालालजी
• चम्पालालजी	• लाडां बाई	• मोरां बाई
• सागरमलजी	• तुलसीरामजी	• मनोहरी बाई

४. उस समय वि० सं० १६४६ में देशी-विलायती का नया झमेला चल रहा था। झगड़े का मूल कारण था— कुछ लोगों की विदेश-यात्रा। तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार विदेश जाना पंचायत की ओर से प्रतिबंधित था। कुछ व्यक्तियों ने पंचायत की अवहेलना की और विदेश चले गए। उससे समाज में ऊहापोह खड़ा हो गया। विदेश जाने वालों को जाति से बहिष्कृत करने का फैसला लिया गया। इससे समाज में दो खेमे खड़े हो गए। विदेश जाने वालों के साथ सिराजगंज वाले सेठ विजयसिंहजी का भी संबंध था। राजरूपजी उन्हीं के यहां मुनीम थे। उस झमेले से दूर रहने के लिए वे मुनीमी छोड़ देश आ गए। वहां रहते तो उन्हें भी उनका साथ देना पड़ता।

५. अपने अनुज तुलसी के प्रति चम्पालालजी का असीम प्रेम था। भाई को डांटना तो दूर, वे उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते। जब कभी घर का आंगन गीला हो जाता, तुलसी वहां पांव नहीं रखता था। मातुश्री वदनांजी भोजन या नाश्ते के लिए बुलातीं तो वह कहता— 'मां ! कैसे आऊं, मेरे पांव छी :-छी : (गंदे) हो जायेंगे।' उस समय चम्पालालजी बड़े प्यार से भाई को गोद में लेकर मातुश्री के पास पहुंचा देते।

६. लाडांजी बचपन से ही चुहिया से बहुत डरती थीं। मकान के किसी कमरे में चुहिया होती तो वह उसके अन्दर नहीं जातीं। १७ वर्ष की अवस्था में उनके पति काल कवलित हो गए। चुहिया से डरने वाली लाडांजी के भाग्य को कालरूप नाग डस गया।

७. आचार्य भिक्षु के समय में तात्त्विक बोलों की चर्चा मुक्तरूप से चलती रहती थी। एक समय-विशेष की चर्चा को पन्नों में लिपिबद्ध करने के कारण उसे पानां की चर्चा कहा जाने लगा।

८. आचार्यवर के ज्येष्ठ भ्राता चम्पालालजी की कंठस्थ करने की क्षमता, याददाश्त बहुत तीव्र नहीं थी। इस कारण उनको ज्ञान कंठस्थ करने में श्रम अधिक करना पडता था। फिर भी वे मनोयोग से लगे रहे और आवश्यक चीजें कंठस्थ कर ली।

९. हाथी के हौदे से उतरकर वैरागी चम्पालाल ने पूज्य कालूगणी के दर्शन किए। गुरुदेव ने कहा — वैरागी को कभी हाथी पर नहीं चढ़ना चाहिए। सामान्यतया वैरागी घोड़े पर चढ़ता है।

१०. आचार्य के जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काम है— एक योग्य उत्तराधिकारी का चयन। पूज्य कालूगणी विगत कई वर्षों से इस खोज में थे। उन्होंने कई साधुओं पर अपनी दृष्टि केन्द्रित की, पर उन्हें संतोष नहीं हुआ। इस कारण उनके सामने एक गंभीर प्रश्नचिह्न था। अपनी पैनी दृष्टि से वे व्यक्ति के भीतर तक पैठकर उसका परीक्षण करते थे। उसके लिए व्यक्तियों की खोज चालू थी। उनकी इस खोज-यात्रा में बालक तुलसी आया और वे आश्वस्त हो गए। यह बात मंत्री मुनि मगनलालजी कहा करते थे।

११. मुनि चौथमलजी (जावद) ने एकदिन पूज्य कालूगणी से निवेदन किया— आजकल शकुनशास्त्र की बातें यथार्थ कम होती हैं। प्राचीनकाल में शकुन का बहुत महत्त्व था। क्योंकि उसका अनुरूप परिणाम आता था। यह सुनकर पूज्य कालूगणी बोले — यह बात तुम कैसे कह रहे हो कि

आजकल शकुन की बात नहीं मिलती। इस वार जब हम लाडनूं आए, प्रवेश के दिन हमें मार्ग में दायीं ओर नाग मिला। उसका ही सुफल है कि तुलसी की इतनी अच्छी दीक्षा हुई।

१२. एक वार पूज्य कालूगणी लाडनूं पधारे। उस समय मां वदनां और वालक तुलसी के बीच एक छोटा-सा संवाद हुआ। वात ही बात में वालक तुलसी ने पूछा—मां! इतने साधु हैं, पर पूजी महाराज जैसा कोई नहीं है। देखो, इनके चेहरे पर कितनी चमक है?

मातुश्री ने कहा— वेटा ! पूजी महाराज ने इतने पुण्यों को संचय कव और कैसे किया, यह कहना कठिन है। इनकी पुण्यवत्ता हम देख ही पाते हैं, वर्णन नहीं कर सकते।

वालक तुलसी ने अपनी जिज्ञासा के पंख खोलते हुए कहा—मां ! एक और बात पूछना चाहता हूं। पूजी महाराज के पीछे दूसरे पूजी महाराज होते हैं ना ? इनके पीछे पूजी महाराज कौन होंगे, मां ! इत्ती-सी वात मुझे बता दो।

मातुश्री ने वालक तुलसी को डांटते हुए कहा—खवरदार, जो ऐसे शब्द दूसरी बार मुंह से निकाले। अपने ये पूजी महाराज कोड दिवाली राज करे और हमें धर्म का उपदेश देते रहें।

१३. वि० सं० १६८२, मर्यादा-महोत्सव का समय। आचार्यश्री कालूगणी का राजलदेसर प्रवास। नवदीक्षित मुनि तुलसी प्रतिक्रमण कर गुरुदेव को वन्दन करने जा रहे थे। रात का समय था। वे रजोहरण से प्रमार्जन कर चल रहे थे। मुनि मगनलालजी ने उनकी ओर इंगित कर कहा—प्रमार्जन कैसे कर रहा है ? चिड़िया उड़ानी है क्या ? अच्छी तरह से प्रमार्जन किया कर। मुनि तुलसी वोले—मै ठीक ही प्रमार्जन कर रहा हूं। मुनि चम्पालालजी पास ही बैठे थे। उन्होंने यह बात सुनी तो वे मुनि तुलसी को एक ओर ले गए और कहा -- तुम कुछ समझते ही नहीं हो ! मुनि मगनलालजी आचार्यों की दूसरी देह हैं। उनके सामने तुम कैसे वोल गए ? तुम्हें ध्यान होना चाहिए कि बड़ों के सामने कैसे बोला जाता है। बात यहीं पूरी नहीं हुई। वे मुनि तुलसी को पुनः मुनि मगनलालजी के पास ले गए और क्षमा-याचना करवाई।

१४. उस समय मोमासर में पटावरी, संचेती आदि कुछ प्रसिद्ध परिवार थे। पटावरी परिवार बहुत बड़ा था। जालमचन्दजी पटावरी उस परिवार के प्रमुख थे। वे बहुत भाग्यशाली व्यक्ति थे और शासन-भक्त थे। उन पर कालूगणी की असीम कृपा दृष्टि थी। उनके नोहरे में मुनि तुलसी का प्रथम केश-लुंचन हुआ। उस परिवार से मुनि पांचीरामजी, साध्वी मनसुखांजी व मुनि किशनलालजी आदि अनेक सदस्य संघ में दीक्षित हुए हैं।

१५. मुनि कुन्दनमलजी और मुनि चौथमलजी (जावद) दोनों सहोदर भाई थे। उन्होंने पूज्य कालूगणी की बहुत सेवा की। उनकी कला-साधना विशिष्ट थी। कला की दृष्टि से जो-जो काम आज साध्वियां करती हैं-- जैसे वस्त्रों की सिलाई, पात्रों की रंगाई, सूक्ष्म-लिपि, तासक निर्माण, पोथी बांधना आदि अनेक कार्य उस समय मुनिद्वय करते थे। मुनि कुन्दनमलजी को प्राचीन राग-रागिनियों का भी अधिकृत ज्ञान था। कोई भी नयी राग का प्रसंग उपस्थित होता, कालूगणी मुनि कुन्दनमलजी को बुलाते।

१६. श्री डूंगरगढ का पुगलिया परिवार संपन्न और अनेक दृष्टियों से सक्षम है। पूज्य कालूगणी वहां पधारे। उस समय ताराचन्दजी और बींजराजजी—दोनों भाई पूरी तरह से सक्रिय थे। दोनों भाइयों का बहुत बडा परिवार है। उनमें ताराचन्दजी बड़े थे। वे बहुत भद्रपुरुष और धार्मिक वृत्ति के थे। इसी कारण उन्हें यौगलिक मनुष्य की उपमा से उपमित किया गया है। उनके तीन पुत्र हुए—जयचन्दलालजी, विरधीचन्दजी और जीवराजजी। श्री डूंगरगढ़ के शेष काल प्रवास में पूज्य कालूगणी ताराचन्दजी की हवेली में विराजे। उसके बाद चातुर्मासिक प्रवास उनके भाई बींजराजजी की हवेली में हुआ।

१७. मुनि पृथ्वीराजजी के साथ मुनि डायमलजी और मुनि हेमराजजी थे। मुनि डायमलजी अच्छे तत्त्वज्ञ संत थे। उनके सान्निध्य में मुनि हेमराजजी को तत्त्वज्ञान मिला। ये दोनों मुनि चर्चावादी कहलाए। कालूगणी ने मुनि चम्पालालजी एवं मुनि तुलसी को निर्देश दिया—तत्त्वज्ञ संतों के पास आगमों का कल्प कर लो। उस समय मुनिद्वय ने मुनि पृथ्वीराजजी के पास उत्तराध्ययन

और दशवैकालिक—दो सूत्र पढ़े तथा कुछ थोकड़े कंठस्थ किए।

१८. गगाशहर के श्रावक भेरूंदानजी चोपड़ा बहुत भाग्यशाली थे। उनके छोटे भाई ईशरचन्दजी चोपड़ा ने व्यापार में अच्छी तरक्की की। थली प्रदेश में चोपड़ा परिवार प्रसिद्ध हो गया। बीकानेर चोखले में ईशरचन्दजी का वहुत वर्चस्व रहा।

१६. सागरमलजी बरड़िया सरदारशहर के श्रद्धालु श्रावक थे। मुनि चम्पालालजी आदि चार संत गधैयाजी के नोहरे में प्रवास कर रहे थे। एक रात पड़ोस में किसी की मौत हो गई। संत सभी नए थे। अतः डरने लगे। उस समय सागरमलजी ने कहा—महाराज! आप कोई घबराएं नहीं। मैं रात भर ठिकाने में आपकी सेवा करूंगा।

२०. मुनि चम्पालालजी मुनि मगनलालजी के साथ गोचरी जाते। दूसरी, तीसरी बार जाना होता तो वे अकेले जाते। आहार कम या अधिक लाने पर उन्हें उपालंभ भी मिलता था। उनका हाथ खुला था, अतः कई बार अधिक आ जाता। मुनि मगनलालजी उनको बहुत कड़ी डांट लगाते। उपालंभ सुनकर कभी-कभी मुनि चम्पालालजी का स्वाभिमान जागृत हो जाता और वे खिन्न हो जाते। उस समय पूज्य कालूगणी करुणा बरसाते और कहते—'कोई खास बात नहीं। तुम चिन्ता मत करो।' समय-समय पर साध्वीप्रमुखा झमकूजी भी उन्हें प्रोत्साहित करती रहतीं।

२१. पूज्य कालूगणी उन दिनों सरदारशहर प्रवास कर रहे थे। वहां जोधपुर के श्रावक चातुर्मास्य की प्रार्थना करने आए। उनके साथ केवलराजजी सिंधी थे। उन्होंने प्रवचन के समय एक गीत गाया। 'दो फूल साथ फूले' इस राग में रचा गया वह गीत वहुत मार्मिक एवं भावप्रवण था। उसको सिंधीजी ने इतने सुन्दर ढंग से गाया कि पूरी परिषद को बहा लिया। अधिकांश लोगों की भावना बन गई कि वि॰ सं॰ १६६० का चातुर्मास्य जोधपुर होना चाहिए। दूसरे दिन जोधपुर से भण्डारी उम्मेदसिंह जी आदि आए। उन्होंने गीत की प्रशंसा सुनी तो कालूगणी से प्रार्थना कर दूसरी बार उसे परिषद में प्रस्तुत

करवाने की स्वीकृति प्राप्त की।

२२. मुनि मगनलालजी की प्रार्थना पर पूज्य कालूगणी ने कहा-- 'मगनलालजी स्वामी ! आप भूल रहे हैं क्या ? अपनी आंखों के सामने माणकगणी का समय बीता है। वे अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति किए विना ही स्वर्गस्थ हो गए थे। उस समय संघ के सामने कितनी कठिन समस्या आई थी। इस सचाई को हमने सुना ही नहीं, भोगा है। मेरा यह दृढ संकल्प है कि मैं संघ के सामने ऐसी कठिनाई कभी नहीं आने दूंगा। आप निश्चिन्त रहें। हमें जो काम करना है, समय पर करके रहेंगे।'

२३. आचार्यश्री कालूगणी द्वारा लिखित परिपत्र इस प्रकार है--

श्री भिक्षु पाट भारीमाल
भारीमाल पाट रायचन्द
रायचन्द पाट जीतमल
जीतमल पाट मघराज
मघराज पाट माणकलाल
माणकलाल पाट डालचन्द
डालचन्द पाट कालूराम
कालूराम पाट तुलछी (सी) राम
विनयवंत आज्ञा मर्यादा प्रमाणे चालसी सुखी होसी।
वि० सं० १९९३ , भाद्रपद सु० ३, गुरुवार

२४. युवाचार्य के मनोनयन का प्रसंग बहुत बड़े उल्लास का प्रसंग होता है। ऐसे अवसर पर अनायास ही चतुर्विध धर्मसंघ मुखर हो उठता है। पर उस समय इस प्रकार का कोई क्रम नहीं था। इसलिए कोई कुछ नहीं बोला। मुनि मगनलालजी बहुत अनुभवी थे। उन्होने खड़े होकर निम्नलिखित दोहा कहा--

रंग-भवन में रंगरळी, पद-युवराज प्रकाश।
मुनिच्छत्र महिमानिलो, पूरण कर दी प्यास।।

२५. तेरापंथ धर्मसंघ की परंपरा के अनुसार संघ के विशिष्ट अवसरों

पर कभी-कभी सब साधु-साध्वियों को और कभी अमुक-अमुक साधु-साध्वी को पुरस्कृत किया जाता है। आचार्य -पदारोहण का दिन एक विशिष्ट अवसर है। उस दिन आचार्यवर ने पूज्य कालूगणी की सेवा में निरत साधु -साध्वियों को बक्सीसें कीं--

• मुनि मगनलालजी को आहार-पानी की पांती तथा गोचरी की बक्सीस।

• मुनि कुन्दनमलजी को बहिर्विहार में अग्रगण्य पर कर रूप में लागू गाथाएं लिखने की बक्सीस।

• साध्वी झमकूजी को काम और बोझ की बक्सीस तथा साध्वीसंघ की संभाल का दायित्व।

२६. मुनि चम्पालालजी का पूज्य कालूगणी के किसी अंतरंग काम में सीधा संबंध नहीं था। पर उनकी सेवा भावना विलक्षण थी। उन्होने समय-समय पर अनेक साधुओं की उल्लेखनीय सेवाएं कीं। सेवा का काम उनके सामने आ जाता, तब दूसरे सब काम गौण हो जाते। वे खाना-पीना तक भूल जाते। सेवाकार्य में उनका यह उत्साह अन्त तक बना रहा। पूज्य कालूगणी भी उनके द्वारा की गई शारीरिक सेवा से संतुष्ट थे। उनकी सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए आचार्यश्री ने उनको समुच्चय के काम की बक्सीस की।

२७. मुनि चम्पालालजी का लाखोला ग्राम में साझ बना। उस समय आपके साथ आठ सन्तों की व्यवस्था की गई।

उनके नाम इस प्रकार हैं--

१. मुनि चम्पालालजी (लाडनूं)
२. मुनि नथमलजी (टमकोर)
३. मुनि दुलीचन्दजी 'दिनकर'
४. मुनि बुद्धमल्लजी
५. मुनि नगराजजी
६. मुनि जंवरीमलजी
७. मुनि नेमीचन्दजी
८. मुनि झूमरमलजी

२८. आचार्यश्री के आचार्यपद पर आसीन होने के बाद गंगापुर से विहार

हुआ। सन्ध्या के समय स्थान-निर्धारण का प्रसंग उपस्थित हुआ। संघीय परंपरा के अनुसार दीक्षा पर्याय से ज्येष्ठता के आधार पर स्थान धराया जाता है। उस समय मुनि नथमलजी रीछेड़ बोले– 'स्थान सबसे पहले मुनि चम्पालालजी को धराया जाए। गुरु की दृष्टि को महत्त्व देना हमारे शासन की शैली है।' आचार्यश्री ने जिनको महत्त्व दिया है, उन्हें महत्त्व देना हमारा दायित्व है। उनके कथन को सब संतों ने स्वीकार किया। रीछेड के मुनि नथमलजी फक्कड़, आचारनिष्ठ और प्रभावशाली साधु थे।

२९. ब्यावर के श्रावक पूज्य कालूगणी के समय से ब्यावर चातुर्मास्य और मर्यादा-महोत्सव के लिए प्रार्थना कर रहे थे, पर उनकी भावना पूरी नहीं हो सकी। गंगापुर में पूज्य कालूगणी का स्वर्गवास हुआ। उसके बाद ब्यावर के श्रावकों ने आचार्यप्रवर से अनुरोध किया– पूज्य कालूगणी की हमारे क्षेत्र पर पूरी दृष्टि रही। उनके आकस्मिक निधन से हमारी भावना पूरी नहीं हो सकी। उसकी पूर्ति अब आपको करनी होगी। श्रावकों की श्रद्धा भावना और उत्साह को देखकर आचार्यश्री बोले—आप भी नये और हम भी नये हैं। फिर भी कोई बात नहीं, ब्यावर मर्यादा-महोत्सव करने का भाव है। ब्यावर के श्रावकों ने आचार्यवर से अनुरोध किया– हम तीनों सम्प्रदाय के लोग एक जुट होकर काम करेंगे। हमको सब लोगों ने सहयोग करने का आश्वासन दिया है। आचार्यश्री ने कहा– यह बहुत अच्छी बात है। ध्यान रखने की बात यह है कि आपको अपने पैरों पर खडा रहना है। दूसरों के भरोसे काम करने वालों को अनुताप भी हो सकता है। वे बोले–गुरुदेव! हमारे यहां ऐसी स्थिति नहीं है।

आचार्यवर गंगापुर से विहार कर ब्यावर के निकट पहुंच गए। वहां के वातावरण में मोड़ आया। संवेगी और स्थानकवासी सम्प्रदाय के लोगों ने एक बहाना बनाकर तेरापंथ के विरोध में बवंडर खड़ा कर दिया। दोनों सम्प्रदायों के प्रमुख लोगों ने मिलकर प्रस्ताव पारित किया—मर्यादा-महोत्सव पर आने वाले यात्रियों को स्थान नहीं देना, समारोह में किसी प्रकार का सहयोग नहीं करना, साध्वियों के ठहरने के लिए कुन्दन भवन दिया गया है, उसके लिए अस्वीकार करना। उनका यह प्रस्ताव झलक नामक पत्र में प्रकाशित हुआ।

इस प्रकार प्रस्ताव पारित कर लगभग आधी रात के समय आचार्यश्री

के लिए निर्धारित प्रवास-स्थल के सामने खडे होकर नारेबाजी करने लगे। उन्होंने ऐसा भाव प्रदर्शित किया, मानो वे गढ़ जीतकर आए हों।

इस घटना ने एक बार तो तेरापंथी लोगों को हिला दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल ही वे सब आचार्यश्री के दर्शन करने गए। स्थिति की जानकारी प्राप्तकर आचार्यश्री ने कहा—हमने आपको पहले ही सचेष्ट रहने का संकेत किया था। श्रावक बोले—आपका कथन सही है। हमने अति विश्वास किया और धोखा खा लिया। आचार्यश्री ने उन्हे आश्वस्त करते हुए कहा— अब घबराने की क्या बात है ? जो भी स्थिति बनेगी, संभालेंगे।

एक ओर तेरापंथ का भयंकर विरोध। दूसरी ओर उस विरोध के विरोध में सारा ब्यावर खड़ा हो गया। कुछ लोग बोले-- ब्यावर में जैन लोगो ने जो काम किया है, वह अजैन कभी नहीं करेंगे। हमारा पूरा सहयोग तेरापंथ समाज के साथ है। उस समय सरकारी तंत्र भी तेरापंथ के अनुकूल रहा। पांच दिन के लिए वहां के सभी सरकारी स्कूल बन्द कर दिये गए। इधर श्रावक फूलचन्दजी सांखला की पत्नी, डूंगरमलजी सांखला की पत्नी, फूलचन्दजी दूगड़ की पत्नी, कंवरलालजी रांका की पत्नी तथा मूंथीजी-- इन पांचो बहिनों ने साहस के साथ भाइयों से कहा-- आप घबरा क्यों रहे हैं ? यात्रियो की व्यवस्था के लिए स्थान की ही तो जरूरत है। आप हमारे नाम से चार-पांच मकान खरीद लीजिए। अभी यात्रियों को ठहराएंगे और बाद में उन्हें किराए पर देकर आय का साधन बना लेंगे।

एक ओर बहिनों का पौरुष और दूसरी ओर कुन्दन-भवन के मालिक लालचन्दजी का उदार मानवीय दृष्टिकोण। उनके पास उन्हीं के समाज के लोग आकर बोले—सेठ साहब ! सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित हो चुका है। इसलिए साध्वियों से अपना मकान खाली करवा लीजिए। यह सुन लालचन्दजी ने कहा— तेरापंथी समाज ने हमसे जबरदस्ती मकान नहीं लिया। हमने खुशी से उनको मकान दिया है। अब हम साध्वियों से मकान खाली करवाएं, ऐसा काम हम नहीं कर सकते। आपने जो प्रस्ताव पारित किया है, उसके अनुसार तेरापंथ समाज को सहयोग देने वाले के लिए इक्कीस रुपये दण्ड का विधान है। आप इक्कीस के आगे एक बिन्दी और लगा दीजिए, दो बिन्दी लगा दीजिए, हम दण्ड का भुगतान करेंगे, पर मकान खाली नहीं कराएंगे।

दोनों समाजों (स्थानकवासी, मूर्तिपूजक) के तीव्र विरोधों के बावजूद

पूरी भव्यता के साथ मर्यादा-महोत्सव संपन्न हुआ। इससे धर्मसंघ की शक्ति बढ़ गई।

३०. मातुश्री वदनांजी की दीक्षा का प्रसंग चला तो कुछ मनचले नौजवानों ने कहा, हमने सुना है आचार्यश्री अपनी मां को दीक्षा देंगे। यदि यह बात सही है तो हम भी अपनी माताओं और दादियों को दीक्षा के लिए तैयार करेंगे। वृद्धों को दीक्षा देनी है तो पक्षपात कैसा ? कुछ युवा तो खुलकर अनर्गल बोलने लगे। उनके कहने से कुछ होना तो था नहीं, क्योंकि किसी को दीक्षा के लिए तैयार करना सरल काम नहीं है। उसके लिए सबसे पहले संसार से विरक्ति होनी चाहिए। कष्ट-सहिष्णुता होनी चाहिए और क्षयोपशम भी चाहिए। युवकों द्वारा उठाई गई आवाज शून्य में जाकर खो गई। वे किसी को तैयार नहीं कर सके।

३१. उस वर्ष बीकानेर नरेश गंगासिंहजी की स्वर्णजयंती थी। उस अवसर पर महाराज ने शंकराचार्य को बुलाया और जैनाचार्यों में आचार्यश्री तुलसी को बुलाने का निश्चय किया। दरबार ने रेवेन्यू कमिश्नर प्रेमसिंहजी को ईशरचन्दजी चोपड़ा के साथ बीदासर भेजा। बीकानेर दरबार की भावना सुन मंत्रीमुनि और मुनि चम्पालालजी ने कहा— इस अवसर पर आपका बीकानेर पधारना जरूरी है। यद्यपि उस समय मातुश्री छोगांजी को चातुर्मास की पूरी आशा थी। आचार्यवर ने उन्हें समझाकर अपना चातुर्मास बीकानेर घोषित किया।

३२. वि० सं० १९९३ की चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को आचार्यप्रवर ने चम्पक मुनि को कई बक्सीसें कर सम्मानित किया। बक्सीसों को लिपिबद्ध कर आचार्यवर ने चम्पक मुनि का गौरव बढ़ाया। पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार है—

चम्पालालजी स्वामी ने बक्सीस इण भांति—

१. सर्व बोझ बक्सीस

२. रात्रि बारी बक्सीस

३. सर्वकाम बक्सीस

४.गत दिवस वार्ता सुणाणी बक्सीस

५. पहुंचावण नै जावणो बक्सीस

६. नैणसुख गिलास, अदी व कैमरीक को चोलपट्टो पहिरे तो आज्ञा

७. कारण स्यूं उन्हो लेवे तो विगय बक्सीस

८. लाडांजी ने तथा संसार लेखे माता-बहिन आदि ने विना पूछ्यां सेवा करावे तो आज्ञा

६. रात्रि में सोणै तथा दिन में रहणै रो स्थान समुच्चय

वि॰ सं॰ १९६३ चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां। लिपि : कृता-- तुलसी गणपतिना बीदासर मध्ये।

३३. एक दिन माजी वदनांजी गुरुदर्शन के लिए आगे आने लगीं। उस समय एक बहिन ने व्यंग्य में कहा-- माजी बनकर आगे आए हैं ? आचार्यश्री केवल आपके ही नहीं, सबके हैं। पीछे से ही दर्शन हो जाएंगे। यह बात सेवाभावीजी ने सुन ली। उन्होंने सोचा-- मां की ममता है, वह पुत्र को निकट से देखने के लिए आगे आना चाहेगी। बहिनें इस तरह व्यंग्य करती रहेंगी तो काम कैसे चलेगा ? इस चिन्तन के निष्कर्ष -रूप में दीक्षा की बात सामने आई और समस्या का समाधान हो गया।

३४. महाराजा गंगासिंहजी की स्वर्ण जयंती के समय पूरे बीकानेर शहर को सजाया गया था। अनेक आकर्षक दरवाजे बनाए गए। कुछ दरवाजे नोटों से बने, कुछ सिक्कों से बने, कुछ बर्तनों से बने। सेठ ईशरचन्दजी चोपड़ा ने लालकोटड़ी के सामने अशर्फियों से दरवाजा बनाया। इस मामले में सेठजी ने सबको पीछे छोड़ दिया। महाराजा की सवारी निकली। इस दरवाजे ने उनको प्रभावित किया। राजमहल में इस बात को महत्त्व के साथ चर्चित किया गया। महाराजा के पौत्र कर्णसिंह आदि ने यह बात सुनी तो उन्होंने महाराजा से आग्रह किया कि वे उनके साथ चलकर उन्हें दरवाजा दिखाएं। महाराजा बच्चों के आग्रह को टाल नहीं सके। उन्होंने दूसरी बार सवारी निकाली और उस दरवाजे के पास रुककर उन्हें अच्छी तरह से दिखाया। महाराजा गंगासिंहजी एक प्रभावशाली राजा थे। वे तत्कालीन नरेश मण्डल के अध्यक्ष भी थे।

३५. शिवलालजी पटवा बीकानेर के श्रद्धाशील श्रावक थे। वे पति-पत्नी दो ही थे। वे कालूगणी के समय से पंचमी समिति के समय रास्ते की सेवा करते थे। कालूगणी के आगे-आगे सरदार नाहरसिंह चलते, उनके साथ-साथ वे चलते। यह क्रम आचार्यश्री के चातुर्मास्य काल तक चलता रहा। एक दिन वे आचार्यश्री के आगे-आगे चल रहे थे। अचानक ही गिर पड़े। मुनि चम्पालालजी ने उनको देखा। तत्काल उनके पास पहुंचे। उन्हें नमस्कार मंत्र सुनाया। शरण सूत्र सुनाया। शिवलालजी का उसी स्थान पर निधन हो गया। मुनि चम्पालालजी की समय की सूझ थी। वे जानते थे कि किस व्यक्ति को समय पर कैसे संभालना चाहिए।

३६. वि॰ सं॰ १९९४ मे आचार्यश्री का चातुर्मासिक प्रवास बीकानेर में था। उस वर्ष स्थानकवासी सम्प्रदाय के आचार्य जवाहरलालजी के शिष्य युवाचार्य गणेशीलालजी का चातुर्मास भी वहीं था। चातुर्मास संपन्न हो गया। मिगसर कृष्णा एकम के दिन वहां से प्रस्थान करना था। आचार्यश्री ने प्रस्थान से पूर्व कुछ लोगों से गणेशीलालजी के विहार के बारे मे पूछताछ की। उन्होंने जानकारी कर बताया कि अभी उनका विहार नही होगा। आचार्यश्री ने मध्याह्न में लालकोटड़ी से रागडी चौक की ओर विहार किया। आचार्यश्री जुलूस के साथ रागडी चौक पहुचे। उसी समय सामने युवाचार्य गणेशीलाल जी भी पूरे दलबल के साथ पहुंच गए। दो जुलूस आमने-सामने खडे थे। सामने वाले लोगों में से 'हटो-हटो' इस प्रकार के तीव्र स्वर सुनाई दिए। रागड़ी चौक के सामने मूर्तिपूजक सम्प्रदाय का बड़ा उपाश्रय है। उस समय वहां बड़े-बडे यति और प्रतिष्ठित संवेगी लोग खड़े थे। अब क्या होगा ? इस कल्पना से एक बार वे भी घबरा गए। आचार्यश्री ने एक क्षण में सारी स्थिति का जायजा लिया और अपने निकट खड़े मुनि मगनलालजी स्वामी से कहा—अपन रांगड़ी चौक मे चले जायें। कोई कुछ निवेदन करे, उससे पहले ही आचार्यश्री एक ओर मुड़ गए।

आचार्यश्री को एक ओर हटते देख श्रावक ईशरचन्दजी का मन आक्रोश से भर गया। पर तेरापंथ की परपंरा के अनुसार आचार्यश्री के निर्णय में किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया।

प्रत्यक्षदर्शी लोगों ने पूरे शहर में इस घटना की चर्चा कर दी। चर्चा का

मुख्य विन्दु था कि इतनी छोटी उम्र में इतनी वड़ी सूझबूझ। आचार्य तुलसी एक ओर नहीं हटते तो न जाने क्या हो जाता ? यह बात महाराजा गंगासिंहजी तक पहुंची। उन्होंने कहा—आचार्यश्री ने छोटी उम्र में बहुत बड़ा काम किया। समझदारी का काम किया। शहर की शान रख ली।

महाराजा के प्रमुख मिनिस्टर महाराज मान्धातासिंहजी ईशरचन्दजी के घनिष्ठ व्यक्तियों में एक थे। वे सेठसाहव से मिले और महाराज गंगासिंहजी की प्रतिक्रिया उन तक पहुंचाई। पूरी बात सुनकर सेठजी वहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने आचार्यश्री के दर्शन कर निवेदन किया-- गुरुदेव मुझे क्षमा करें। मै उस समय समझ नहीं सका। क्योंकि मेरा मन आक्रोश से भरा था। आपने जिस उदारता और सूझवूझ का परिचय दिया, उससे तेरापंथ का गौरव वढ़ा है।

३७. साध्वी खूमांजी लाडनू के वेगवानी परिवार की वहू थी। उनके मन में वचपन से ही वैराग्यभावना थी पर संकोच के कारण अभिभावकों से कह नहीं पायीं। उनका विवाह हो गया। विवाह के वाद उनकी वैराग्य भावना और अधिक प्रवल हो गई। किन्तु ससुराल पक्ष के लोग दीक्षा के पक्ष में नही थे। खूमांजी ने बहुत समझदारी से काम लिया और अपने पति से लिखित आज्ञा प्राप्त कर ली। आज्ञा-पत्र उन्होंने पूज्य डालगणी को समर्पित कर दिया। डालगणी ने उनको दीक्षा का आदेश दे दिया। दीक्षा के लिए निर्धारित दिन से कुछ समय पहले उनके ससुर तोलारामजी आदि डालगणी के पास आए और बोले —गुरुदेव ! हमें तो कोई आपत्ति नहीं है पर इनके पति की आज्ञा के विना दीक्षा कैसे होगी ? पूज्य डालगणी उनकी नीयत स परिचित थे। उन्होंने अपने कुशल प्रशासक का रूप दिखाते हुए उन लोगों को प्रतिवोध दिया और खूमांजी के पति हणूतमलजी द्वारा लिखित आज्ञापत्र उन सवको दिखा दिया। उसे देखकर सब अवाक् रह गए। डालगणी ने साध्वी खूमांजी को दीक्षित किया।

डालगणी के बाद पूज्य कालूगणी ने साध्वी खूमांजी को मातुश्री छोगांजी की सेवा में नियुक्त कर दिया। उन्होंने पूरी निष्ठा और जागरूकता के साथ मातुश्री की सेवा की। कालूगणी की उन पर विशेष कृपा रही। उसका एक प्रमाण है-- कालूगणी ने उनको सात साध्वियों की वख्सीस की। अंतिम समय

में वे राजलदेसर में स्थिरवासिनी रहीं।

३८. साध्वी संतोकांजी चूरू निवासी जंवरीमलजी बैद की सुपुत्री थीं। लाडनूं निवासी गुलाबचन्दजी भुतोड़िया के साथ उनका विवाह हुआ। दोनों परिवार आर्थिक दृष्टि से संपन्न और धार्मिक दृष्टि से जागरूक थे। विवाह के बाद वे संसार से विरक्त हो गई। पूज्य कालूगणी के द्वारा उनकी दीक्षा हुई। वे एक आचारकुशल और कलाकार साध्वी थीं। उनकी प्रकृति कुछ कठोर थी, पर कामकाज में बड़ी स्फूर्त थीं। प्रारंभ में वे साध्वीप्रमुखा कानकंवरजी के साथ रहीं। उन्होंने उनकी एक आंख का ऑपरेशन भी किया। कालान्तर में कुछ वर्षो तक उन्होंने अग्रगण्य के रूप में विहार भी किया। मातुश्री वदनांजी की दीक्षा के समय वे वहीं पर थीं। दीक्षा के बाद मातुश्री को संभालने का दायित्व उन्हीं को सौंपा गया। वृद्ध व्यक्ति को संभालना बहुत कठिन होता है पर साध्वी संतोकांजी ने मनोयोग से अंतिम समय तक उनकी संभाल की। मातुश्री के स्वर्गवासी होने पर पुनः उन्हें अग्रगण्या बना दिया गया। उनका स्वर्गवास मोमासर में हुआ।

३९. श्रावक अपने घर में सहज निष्पन्न वस्तु को दूसरे दिन साधुओं को देने की भावना से रात को रखता है, वह वासी रखता है। साधु किसी खाद्य पदार्थ को बासी रखे, रखवाए तथा रखने वाले का अनुमोदन करे तो दोष है। इसलिए रात को रखी हुई वस्तु दूसरे दिन साधु के लिए अकल्पनीय हो जाती है। मुनि माधोलालजी का यह तर्क था। उन्हें समझाया गया कि गृहस्थ घर में बनी हुई मिठाई आदि रात को रखते हैं। उसे कई दिनों के बाद भी साधु लेते हैं, उसमें साधु को बासी का कोई भी दोष नहीं लगता। क्योंकि गृहस्थ को रात में खाद्य पदार्थ रखने का त्याग नहीं है। ऐसी स्थिति में गृहस्थ की चीज का साधु को वासी का दोष कैसे लग सकता है। यह वात उनके गले नहीं उतरी। इस छोटे से बोल को लेकर वे संघ से अलग हो गए।

४०. भिक्षूगण में मुनि अज्जा भलीजी,
हो जी ज्यांरे परम गुरू सूं प्रीत।
निजगुण समगुण गुरु आणा लखीजी

हो जी ए तो शिर धारे सुवनीत।।१।।
लघुवय युववय मुनि नै गुरु कदा जी,
हो जी ए तो सूंपै सहू गणभार।
तो पिण किंचित लहर न आणता जी,
हो जी तसु आण वहै इक धार।।२।।
दूर नजीक ग्राम गुरु मोकळै जी
हो जी ए तो आछो अवसर झांक।
तहत विनययुत गुरुवच उर धरै जी
हो जी ए तो नहिं घालै सळ नाक।।३।।
(पूरा गीत देखें 'नन्दन निकुंज' तृतीय संस्करण, पृ० ३६१-३६४)

४१. आचार्यश्री के रतनगढ़ प्रवास में साधुओं की एक गोष्ठी हुई। उसमें तेरापंथ धर्मसंघ की नयी और प्राचीन परंपराओं के सम्वन्ध में अनेक प्रकार के प्रश्नोत्तर चले। उससे सन्तों को परम्परा के विषय में नयी जानकारियां मिलीं। उस गोष्ठी में एक प्रश्न सन्तों के पारस्परिक व्यवहार को लेकर उठा। प्रश्न यह था-- मुनि चम्पालालजी ५८ साधुओं के साथ सरदारशहर पधारे थे तब उनके साथ उनसे दीक्षा पर्याय में कई संत बडे थे। उनकी उपस्थिति में वे पट्ट पर बैठते थे। क्या हमारी परम्परा के अनुसार ऐसा हो सकता है ? इस प्रश्न के उत्तर में अनेक साधुओं ने अपने मत प्रकट किए। उनमें एकरूपता नहीं रही। वहां उपस्थित संतों में सबसे बुजुर्ग सन्त मंत्री मुनि मगनलालजी थे। आचार्यश्री ने उनसे पूछा-- इस सम्वन्ध में आपकी क्या धारणा है ? मंत्री मुनि बोले-- यह कोई वड़ी बात नहीं है। जिस व्यक्ति पर गुरु की दृष्टि हो, गुरु जिसे महत्त्व दें, उसके प्रति रत्नाधिक साधुओं का व्यवहार सम्मानपूर्ण रहे, इसमें आश्चर्य नहीं। जयाचार्य ने तो एक साधारण साधु (सतीदासजी) को पट्ट पर अपने बराबर विठा लिया था।

४२. बणी (महाराष्ट्र) से पिता कन्हैयालालजी और पुत्र कनक वैरागी वनकर आए। उन्होंने वि० सं० १६६५ सरदारशहर में आचार्यश्री तुलसी के

१. पूरा गीत देखें नन्दन निकुंज तृतीय संस्करण पृ० ३६१-३६४

पास दीक्षा स्वीकार की। दीक्षित होने के बाद कन्हैयालालजी साधु-जीवन के परीषहों को सहन नहीं कर पाए। उनका मन दुर्बल हो गया। अपनी दुर्बलता को छिपाने के लिए संघ के साधु-साध्वियों पर दोषारोपण करने शुरू कर दिए। कुछ साधुओं से वे अनर्गल बातें करने लगे। उन्होंने कुछ ढोंग रचे उनके मुंह से देवता बोले, पर उनकी ठग विद्या च " नहीं। उन्होंने बोरावड़ के दो साधु (परस्पर भाई) हरखचन्दजी और जगन्नाथजी को बहकाने का प्रयास किया। मुनि हरखचन्दजी उनकी बातों में नहीं आए पर जगन्नाथजी बहकावे में आ गए। सरदारशहर से आचार्यश्री बीदासर पधारे। वहां कन्हैयालालजी पंचमी समिति के बहाने गांव के बाहर गए और वेश बदलकर चले गए। बीदासर से वे सीधे मारवाड़ गए। वहां जगन्नाथ जी को अपने साथ कर लिया। बाहर जाकर उन्होंने संघ की बहुत निन्दा की। विरोध में पुस्तक प्रकाशित की। उनकी कर्म कहानी को बताना कठिन है। संक्षेप में इतना ही समझना चाहिए कि उन्होंने अपना जीवन बरबाद कर दिया।

४३. बणी (महाराष्ट्र) का दस वर्षीय बालक कनक अपने पिता कन्हैयालालजी के साथ दीक्षित हुआ। पिता का मन विचलित हो गया। उन्होंने अपने पुत्र को भी विचलित करने का प्रयत्न किया। वे पुत्र को साथ लेकर घर जाना चाहते थे पर मुनि कनक उनकी बातों में नहीं आया। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा-- हम साधु बने हैं, घर जाने के लिए नहीं बने हैं। मैं साधुत्व का पालन करूंगा, घर नही जाऊंगा। कन्हैयालालजी ने आचार्यश्री के पास मुनि कनक की उलटी-सीधी शिकायतें कीं। एक दिन मुनि कनक आचार्यश्री के पास जाकर बोला-- गुरुदेव! आप मुझे कहते हैं, मैं मुनि कन्हैयालालजी के पास रहूं, सेवा करूं। वे मुझे घर ले जाना चाहते हैं। मैं उन्हें अपना पिता नहीं मानता। मेरे धर्म के पिता तो आप हैं। एक बाल साधु की साहस भरी बात ने आचार्यवर के मन को प्रभावित किया। मुनि भारमलजी का उदाहरण पुनरावृत्त हो गया।

मुनि कनक का आयुष्य बहुत कम था। वह केवल छह महीनों तक ही साधु-जीवन जी सका। जैसे आचार्य शय्यंभव का पुत्र मनक साधु-जीवन में छह महीने ही रहा, वही बात मुनि कनक के साथ घटित हुई। उसे मियादी बुखार हुआ। उपचार किया गया पर सफलता नहीं मिली। अंतिम समय में

ार-पांच दिनों तक मुनि कनक को बेहोशी रही पर गुरु के प्रति उसके मन ां इतनी श्रद्धा थी कि आचार्यवर जब उसे आराधना सुनाते वह साथ-साथ ाने लग जाता। आयुर्बल क्षीण होने से वह होनहार मुनि असमय में चला ाया। उसकी जीवन-कहानी छोटी भले ही हो पर आकर्षक और प्रेरक है।

४४. मुनि हेमराजजी के सम्बन्ध में रचित गीत के कुछ पद्य—

हेम हरस धर समरियै।

हेम तणां गुण गवस्यूं, हेम महामुनि शीतल हेम क।
हेम हेम सौटंच-सो, हेम हेम अवतरियो जेम क।।१।।
हेम संत गिरवो घणो, गुणग्राही अति गहरो हेम।
हेम हृदय हद निरमलो, हेम रह्यो नित कुशले खेम।।२।।
गण-गणपति स्यूं अति घणी, हेम राखतो अंतर प्रीत।
गुरु आज्ञा ऊपर सदा, राखी तीखी निजर सुनीत।।३।।

(पूरा गीत देखें 'नन्दन निकुञ्ज', पृ० ३६३, ३६४)

४५. मुनि कनक के सम्बन्ध में रचित गीत के कुछ पद्य—

बालक बुधिवंतो।।

धन्य-धन्य मुनि कनक कहायो, लघुवय संयम पायो रे।
जिण परिणामे भार उठायो, त्यूं ही पार लगायो रे।।१।।
वय स्यूं अधिक विवेक वढ़ायो, निरखी इचरज आयो रे।
गुरु-चरणां निज तन-मन ठायो, निज पितु मोह मिटायो रे।।२।।
तात साथ लेवण ललचायो, शासन अवगुण गायो रे।
तो पिण एक हि रूं न चलायो, जस डंको बजवायो रे।।३।।

(पूरा गीत देखें 'नन्दन निकुञ्ज' पृ० ३७६,३७७)

४६. मुनि खेमचन्दजी के सम्बन्ध में रचित गीत के कुछ पद्य—

धन्य मुनि थांनै हो खेमजी ! थे तो कीन्हो सफल जमार।
तप दिन'चौपन धार, नव घंटा संथार, आराध्यो इक धार।।
वासी ग्राम धराड़ रो, कांई दीप ऋषी रो पूत।
खेम खेमकर गण मझै, कांइ कीन्ही हद करतूत।।१।।
उगणीसै इक्यावनै, कांइ माणक गणिवर हाथ।
दीक्षा ली वैराग स्यूं, कांइ पिता पुत्र मिल साथ।।२।।

आराधन आछी करी, कांइ साझ दियो बहु संत।
चंपक मुनि आदी करी, कांइ विविध भांत मतिमंत।।३।।
(पूरा गीत देखें 'नन्दन निकुञ्ज' पृ० ३५३-३५५)

४७. बीदासर की भोजक जाति की बहिन लच्छी पक्की तेरापंथी श्राविका थी। उसने समझपूर्वक तेरापंथ की श्रद्धा स्वीकार की। साधु-साध्वियों की उपासना व तपस्या में वह सदा उत्साहित रहती थी। साधु-साध्वियां भी उसके घर बराबर गोचरी जाते रहते। बहिन की भक्ति भावना विशिष्ट थी। उसने लघु सिंहनिष्क्रीडित तप की चौथी परिपाटी शुरू की। तपस्या में उसे साधु-साध्वियो का अच्छा आध्यात्मिक सहयोग मिला। तपस्या के बीच में ही उसने अनशन स्वीकार कर लिया। उस समय मुनि चम्पालालजी का उसको भरपूर सहयोग मिला।

४८. तपस्या के अनेक प्रकार हैं। उनमें एक है—लघु सिंहनिष्क्रीड़ित तप। इस तपस्या को सिंह की चाल से उपमित किया गया है। सिंह कुछ कदम आगे बढ़ता है और मुड़कर देखता है। फिर कुछ कदम आगे बढ़ता है और फिर मुड़कर देखता है। इस तपस्या में भी पूर्व आचरित तप की पुनः आराधना करता हुआ तपस्वी आगे बढ़ता है। इसमें कम से कम एक उपवास और अधिक से अधिक लगातार नौ दिन का उपवास करने का विधान है। इस तपस्या में कुल १८४ दिन लगते हैं। इस लघु सिंहनिष्क्रीड़ित तप की चार परिपाटियां हैं। चारों परिपाटियों में तपस्या का क्रम समान रहता है। केवल पारणे में अन्तर आता है। प्रथम परिपाटी में पारणे के दिन साधक सब कुछ खा सकता है। दूसरी परिपाटी में पारणे के दिन दूध-दही आदि विगय का परिहार करना होता है। तीसरी परिपाटी में पारणे के दिन नींवी (छाछ रोटी) करने का विधान है। चौथी परिपाटी में पारणे के दिन आयंबिल किया जाता है। यह सबसे कठिन तपस्या है।

४९. दीर्घ तपस्विनी साध्वी अणचांजी श्रीडूंगरगढ़ की थीं। उनकी सेवाभावना बेजोड़ थी। उन्होंने अपने जीवन में अनेक महत्त्वपूर्ण काम किए। कोई भी कठिन काम सामने आता, उसे वे उत्साह के साथ पूरा कर देतीं।

कभी वे अस्वस्थ बाल साध्वी को कंधों पर बिठाकर मीलों दूर पहुंचा देतीं, कभी किसी के दिमाग का संतुलन नहीं रहा तो उसे भी उन्होंने संभाल लिया। मुनि मांगीलालजी (पहुना) की संसार पक्षीया मां साध्वी प्यारांजी के संतुलन नहीं रहा। वे किसी साध्वी के वश में नहीं रहीं, पर साध्वी अणचांजी ने उनको भी संभाला। उन्होंने अपने जीवन में संघीय सेवा के साथ तपस्या भी बहुत की। उन्होंने चौथी परिपाटी की तपस्या पूरी की। इस तप को करने वाले अधिकांश व्यक्ति बीच में ही दिवंगत हो गए। पर साध्वी अणचांजी का संहनन इतना मजबूत था कि उनका संकल्प पूरा हो गया। आचार्यश्री ने उनके विषय में यह पद्य कहा--

अणचां ! तैं आछी करी, करणी शिव सुख काम।
मुदो ने दीसै मांस रो(थारै) चलकै कोरी चाम।।

संस्कारबोध कृति में आचार्यश्री ने उनका उल्लेख करते हुए लिखा है--

अणचां सती उदार, गण में दीर्घ तपस्विनी।
शुभ सेवा संस्कार, कठिन काम करती सदा।।

५०. मुनि गुमानमलजी बीदासर के थे। वे विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे, पर लिखने का काम बहुत करते थे। दिन भर लेखन करते हुए भी वे थकते नहीं थे। जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने अच्छी तपस्या की और संथारा कर अपनी जीवन नैया पार की।

५१. वि० सं० १९९६ का मर्यादा-महोत्सव सरदारशहर था। उस समय लाडनूं के श्रावक सूरजमलजी बैंगानी ने तीव्र भावना के साथ आगामी चातुर्मास लाडनूं में कराने की अर्जी की। उन्होंने निवेदन किया-- मैं चातुर्मास तक जीवित रहकर उपासना का लाभ ले सकूंगा, ऐसा भरोसा नहीं लगता फिर भी मैं चाहता हूं कि कम से कम कानों से तो यह सुख संवाद सुन लूं। उनकी तीव्र भावना का अंकन कर आचार्यश्री ने अग्रिम चातुर्मास लाडनूं करने की घोषणा की। मंत्री मुनि और सेवाभावीजी ने सूरजमलजी की प्रार्थना को बल दिया। उस समय तक मर्यादा-महोत्सव और चातुर्मास्य की घोषणा बहुत समय पहले नहीं होती थी। मर्यादा-महोत्सव पर चातुर्मास की घोषणा ने लोगों को आश्चर्यचकित बना दिया।

५२. श्री गोकुलदासजी गांधी सौराष्ट्र में वेरावल गांव के रहने वाले थे। वे वहां से वम्बई जाकर रहने लगे। वम्बई में मगन भाई के साथ उनका सम्पर्क हुआ। वे उनके साथ कई वार आचार्यश्री के दर्शन करने वम्बई से राजस्थान आए। वेशभूषा और कदकाठी में वे साधारण-से व्यक्ति दिखाई देते थे पर थे वे प्रबुद्ध। जैनधर्म को उन्होने वहुत वारीकी के साथ समझा था। उनको जैन शास्त्रों की भी अच्छी जानकारी थी। वे जब-जब यहां आए, उन्होंने तत्त्वचर्चा में रस लिया। आचार्यश्री से तत्त्वज्ञान की वातें सुनकर वे मुग्ध हो गए। वे अपने मन की प्रतिक्रिया लिखकर 'वम्वई समाचार' में भेजते थे। उस गुजराती पत्र ने उनके विचारों को अच्छा स्थान दिया।

उन्होंने आचार्य भिक्षु के सिद्धान्तों को वहुत सूक्ष्मता से समझा। एक वार उन्होंने लिखा-- आचार्य भिक्षु का साध्य-साधन-शुद्धि और हृदय-परिवर्तन का सिद्धान्त श्रीमद्‌राजचन्द्र के माध्यम से महात्मा गांधी के पास पहुंचा। यह सच भी है कि साधन-शुद्धि पर आचार्य भिक्षु और महात्मा गांधी ने जितना विशुद्ध चिन्तन किया, उतना शायद अन्य किसी सन्त ने नहीं किया।

५३. श्री गोकुलदास भाई आचार्यवर के संपर्क में आए। उनसे कई वर्ष पहले बम्बई के प्रभावशाली व्यक्ति पंडित लालन मगनभाई के दामाद रमणीक भाई के साथ छापर आए। वहां कुछ दिन रहे। वे स्वयं अच्छे तत्त्वज्ञ थे। उन्होंने आचार्यश्री के सान्निध्य मे जैन दर्शन और तेरापंथ दर्शन को गंभीरता के साथ समझा। तेरापंथ के सिद्धान्तों व आचार्यश्री के व्यक्तित्व से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने 'गुरुधारणा' स्वीकार कर ली। यह संवाद बम्बई तक पहुंचा। वहां उनके परिचित जैन लोगों ने कहा--लालन तेरापंथी वणी गयो। ते हंकारी केम नथी कहता के हूं तेरापंथी वणी गयो। पांच दाहडा नो मेहमान हवे तेरापंथी बणवा नी हूंस जागी।

आ पण्डित लालन पीड़ित लालन थई गया के पतित लालन थई गया। पता नहीं उन लोगों ने किस भावना से प्रेरित होकर ऐसी वात कही। ऐसा लगता था कि तेरापंथी वनना उनकी दृष्टि में वडा अपराध था। पंडित लालन को इन सव बातों की जानकारी थी, पर वे विचलित नहीं हुए।

५४. नवरंगी एक सामूहिक तपस्या का प्रयोग है। इस तप को ८१ व्यक्ति

मिलकर पूरा करते हैं। एक से लेकर नौ तक की प्रत्येक तपस्या नौ-नौ व्यक्ति करते हैं-- जैसे नौ उपवास, नौ वेले, नौ तेले यावत् नौ के नौ थोकड़े।

५५. नवरंगी की तरह तेरहरंगी भी तपस्या का एक सामूहिक प्रयोग है। इसमें १६९ व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। उपवास, वेले-वेले यावत् तेरह तक की प्रत्येक तपस्या तेरह-तेरह व्यक्ति सम्पादित करते हैं।

५६. पच्चीस व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला तपस्या का सामूहिक अनुष्ठान, इसमें पांच-पांच व्यक्ति उपवास से लेकर पंचोले तक की तपस्या करते हैं।

५७. मुनि सुखलालजी हमारे धर्मसंघ के प्रसिद्ध तपस्वी सन्त थे। उन्होंने अपने जीवन में विचित्र प्रकार की तपस्याएं कीं। कभी वे अन्न और पानी दोनों का परिहार करते तो कभी अन्न लेते पर पानी नहीं लेते। वि० सं० १९९७ के लाडनूं चातुर्मास्य में वे आचार्यश्री के साथ थे। वहीं उन्होंने ५३ दिनों की तपस्या की। वहां तपस्या के पारणे में खाने में कुछ गड़बड़ी हो गई। उसके कारण उनका दिमाग प्रभावित हुआ। वे ऐरगैर बातें करते। बहुत तेज स्वर में संतों के नाम लेकर पुकारते। सन्निपात जैसी स्थिति बन गई। पहली पट्टी के आवास-स्थल में वे बोलते तो उनकी आवाज आठ पट्टियां पार कर सहरियावास तक सुनाई देती। पता नहीं उनमें इतनी शक्ति कहां से आ गई। कुछ समय उपचार कराने के बाद वे स्वस्थ हो गए।

५८. राजलदेसर में जेसराज जयचन्दलाल बैद परिवार प्रसिद्ध है। चांदमलजी का सम्बन्ध इसी परिवार के साथ है। वे एक तत्त्वज्ञ और दृढनिष्ठा वाले श्रावक थे। वे साधु-साध्वियों के साथ पन्नवणा, जीवाजीवाभिगम, भगवती जैसे गंभीर आगमों का स्वाध्याय करते थे। इतने विश्वस्त श्रावक थे कि उन्हें साध्वियों को स्वाध्याय कराने की आज्ञा प्राप्त थी।

चांदमलजी संकल्प के दृढधनी व्यक्ति थे। एक वार उनकी पीठ में फोड़ा (अदीठ फोड़ा) हुआ। फोड़े की शल्यचिकित्सा का प्रसंग उपस्थित हुआ। डाक्टर ने उन्हें बेहोश करने के लिए सूंघणी सुंघानी चाही। उन्होंने इनकार

करते हुए कहा--जितना काटना हो ऐसे ही काट दो। डाक्टर चकित रह गए। उसने ऐसा व्यक्ति नहीं देखा था। वे नमस्कार महामंत्र का जप करते रहे और डाक्टर ने ऑपरेशन करके गहरा घाव कर दिया, फिर भी वे विचलित नहीं हुए।

उन्हें आगमों के स्वाध्याय में जितना रस था, किसी भौतिक आकर्षण में नहीं था। एक बार उनके अनुज चम्पालालजी वैद उनको आग्रहपूर्वक सिनेमा देखने ले गए। वह फिल्म अच्छी थी, पर वे वहां बैठकर नींद लेने लगे। जब कि भगवती का पाठ सुनते समय कभी उनकी पलक भी नहीं झपकी। यह उनकी स्वाध्यायप्रियता का लक्षण है।

५६. वि० सं० १९९७ का मर्यादा-महोत्सव घोषित नहीं हुआ था। उसके लिए लाडनूं और राजलदेसर—दो उम्मीदवार थे। दोनों क्षेत्रों से सैकड़ों-सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित हुए । आचार्यश्री ने लाडनूं के लिए मर्यादा-महोत्सव की घोषणा कर दी, जिससे राजलदेसर के लोगों को बहुत आघात लगा।

लाडनूं मर्यादा-महोत्सव संपन्न कर आचार्यश्री बीदासर पधार रहे थे। मार्ग में बेनाथा गांव में संवाद मिला कि मातुश्री छोगांजी सख्त बीमार हैं। आचार्यश्री मध्याह्न की धूप में विहार कर बीदासर पहुंचे। उस समय मातुश्री बेहोश हो गई थीं। आचार्यवर ने उनको दर्शन दिए, मंगलपाठ सुनाया। उसके बाद उन्हें होश आ गया। आचार्यश्री के बीदासर पधारने के पांचवें दिन मातुश्री ने संथारा स्वीकार कर लिया और आचार्यवर के प्रवासकाल में ही उनका स्वर्गवास हो गया।

यदि वह महोत्सव लाडनूं न होकर राजलदेसर होता तो आचार्यप्रवर राजलदेसर से आगे सरदारशहर पधार जाते। मातुश्री छोगांजी को अंतिम समय मे आचार्यश्री के सान्निध्य का और मुखारविन्द से अनशन करने का मौका कैसे मिलता ? उस वर्ष राजलदेसर को मर्यादा-महोत्सव के स्थान पर वि० सं० १९९८ का चातुर्मास मिला। इस परिणति को देखकर बाद में लोग कहने लगे-- आचार्यवर ने जो निर्णय लिया, वह बहुत सही था।

६०. पूज्य कालूगणी ने गंगापुर मे आचार्य तुलसी को युवाचार्य घोषित करने के बाद उन्हें कुछ विशेष बातें नोट करवायीं। उनमें एक बात यह थी--

मातुश्री छोगांजी का विशेष ध्यान रखना। उनके मन में समाधि रहे, वैसा काम करना। अंतिम समय में मातुश्री छोगांजी को दर्शन देकर तथा उन्हें संथारा कराकर आचार्यप्रवर ने पूज्य कालूगणी द्वारा प्रदत्त दायित्व को अच्छी तरह से वहन कर लिया।

६१. मातुश्री छोगांजी का स्वर्गवास होने पर आचार्यश्री ने उनके सम्बन्ध में छह गीतिकाओं का एक 'छहढालिया' बनाया। वह 'नन्दन निकुञ्ज' में प्रकाशित है। देखें पृष्ठ ३१३ से ३३१।

६२. बोंथियासर में पूरे संघ के साथ आचार्यश्री पधारे। रात्रिकालीन प्रवास वहीं करना था। वहां पानी उपलब्ध नहीं हुआ। यात्रियों के सामने कठिनाई उत्पन्न हो गई। उस समय मुनि चम्पालालजी ने चौधरी भाइयों को समझाते हुए कहा-- 'चौधरीजी ! गुरुजी का आना कब-कब होता है ? जिसका दिल उदार होता है, उनको किसी बात की कमी नहीं रहती।' यह बात सुन गांव के चौधरी लोगों ने पानी के लिए अपने कुण्ड खोल दिए। यात्रियों की समस्या समाहित हो गई।

६३. मुनि नेमीचन्दजी सुजानगढ के थे। उन्होंने पत्नी-वियोग के बाद दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा से पहले उन्होंने कुछ विशेष अभ्यास किया। महीनों तक पीठ पर बोझ लादकर वे पैदल चले। इससे उन्हें विश्वास हो गया कि पैदल चल सकते हैं। वि० सं० १९९८, सरदारशहर मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर उन्होंने तिविहार उपवास किया। उसके बाद आचार्यवर से उन्होंने आजीवन अनशन कराने का निवेदन किया। उनके स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी थी। इसलिए आचार्यप्रवर ने संथारा नहीं कराया। किन्तु उन्होंने आग्रहपूर्वक संलेखना की आज्ञा प्राप्त की और चौविहार पंचोला किया। पांच दिनों में उनका शरीर काफी दुर्बल हो गया। उनके प्रवर्धमान परिणामों को देख आजीवन चौविहार अनशन करा दिया। बारह दिनों की तपस्या में उनका स्वर्गवास हो गया।

६४. मुनि केसरीमलजी और मुनि दुलीचन्दजी के पिता मुनि छोगमलजी पत्नी-वियोग के पश्चात् अपने दोनों पुत्रों के साथ दीक्षित हुए। वे मुनि

चम्पालालजी मीठिया के सिंघाड़े में रहे। मुनि चम्पालालजी मुनि केशरीमलजी को केसरी और दुलीचन्दजी को दुलिया कहते थे। वि॰ सं॰ १६६८ चैत्र कृष्णा ८ को मुनि छोगमलजी का चूरू में स्वर्गवास हो गया।

६५. परमाराध्य आचार्यप्रवर के चार दिवसीय ददरेवा प्रवास में एक रात को जहां आचार्यप्रवर सोए थे उस मकान के दरवाजे के पास एक काला नाग आ गया। वहीं एक रात मदोन्मत्त दड़ूकता सांड आ गया। प्रवेश द्वार पर मुनि चम्पालालजी प्रहरी बनकर सोये थे, इस कारण सांप और सांड भीतर नहीं घुस सके।

६६. वि॰ सं॰ १६६३ भाद्रपद ६ को अष्टमाचार्य कालूगणी का स्वर्गवास हुआ। आपके उत्तराधिकारी आचार्यश्री तुलसी ने आपका जीवन-चरित लिखने का मानसिक संकल्प किया। वि॰ सं॰१६६६ फाल्गुन शुक्ला तृतीया को कालूयशोविलास की रचना प्रारंभ हुई। वि॰सं॰१६६६ का चातुर्मास चूरू था। चातुर्मास से पूर्व ग्रीष्म-काल में आचार्यश्री का प्रवास तारानगर में था। उस समय भयंकर गर्मी थी, पर आचार्यश्री रचना कार्य में इतने तल्लीन थे कि भोजन के बाद मध्याह्न में तीन-तीन घण्टों तक लगातार रचना करते। भयंकर गर्मी और अतिश्रम ने शरीर को प्रभावित किया। मस्तक पर बहुत अधिक भार और आधे अंग में शून्यता का अनुभव होने लगा। आचार्यवर तारानगर से विहार कर चूरू पधारे। शारीरिक स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया। फलतः वहां लगभग साढे तीन महीने तक प्रातः कालीन प्रवचन बन्द रहा। पंडित रघुनन्दनजी ने उपचार शुरू किया। कैशोरिक गुग्गल का प्रयोग चला। उस समय व्याख्यान व जनसंपर्क का कार्य मंत्री मुनि मगनलालजी करते थे। सेवाभावीजी पूरी जागरूकता के साथ आचार्यवर के शरीर सम्बन्धी सेवाओं में जुटे रहते।

६७. साधु-साध्वियों को मुनिचर्या का प्रशिक्षण देने के लिए आचार्यवर द्वारा रचित एक विशेष गीत के कुछ पद्य—

मतिमंत मुणी ! सुकुलीणी श्रमणी ! गुरु शिक्षा धारिये।
पश्चिम रयणी ऊठ-ऊठ अक्षर-अक्षर संभारिये।।

मुनि पंच महाव्रत आदरिया।
तजि धण -कण कंचन परवरिया।
मनु कंचन-गिरिवर कर धरिया।।१।।
पणवीस भावना पांचां नीं
गिणवाई गुरु गणधर ज्ञानी।
भावो निज-निज कंठे ठानी।।२।।
(पूरा गीत देखें 'सोमरस' (दूसरा संस्करण) पृ० १७६)

६८. बीदासर के प्रतापसिंहजी पहले ठाकुर कहलाते थे। कालान्तर में बीकानेर नरेश ने उन्हें राजा की पदवी दी और वे बीदासर तथा सांडवा के राजा बन गए। मुनि अमोलकचन्दजी के बीदासर प्रवास में संपर्क में आए। उन्होंने उनसे तेरापंथ का तत्त्वज्ञान समझा और मुनि अमोलकचन्दजी से कहा-- यदि आप अपना चातुर्मास यहां करें तो मै पूरी गंभीरता से तत्त्वज्ञान समझकर गुरु-धारणा कर लूंगा। मुनि अमोलकचन्दजी बोले-- हम अपनी इच्छा से कहीं भी चातुर्मास्य नहीं कर सकते। यह बात हमारे हाथ में नहीं, गुरुदेव के हाथ में है।

आचार्यवर का बीदासर पादार्पण हुआ। राजा प्रतापसिंह ने अपने मन की भावना निवेदित्त की। उनको भक्ति, उत्साह और अनुरोध को देखकर आचार्यश्री ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। राजा साहब ने भी उस चातुर्मास्य में जैनधर्म की दीक्षा ग्रहण की।

६६. मुनि अमोलकचन्दजी राजलदेसर के बैद परिवार से संबंधित थे। उन्होंने बीस वर्ष की युवावस्था में सपत्नीक दीक्षा ग्रहण की। धर्मसंघ की श्रीवृद्धि में उनका अच्छा योग रहा। वे एक परिश्रमी और कष्टसहिष्णु सन्त थे। किसी नये व्यक्ति को समझाने का प्रसंग उपस्थित होता तो वे उसके पीछे पड़ जाते और उसे समझाकर ही विश्राम लेते। पंजाब में शुरू-शुरू के वर्षों में उन्होंने बहुत काम किया। उस समय उनके साथ कुछ श्रावकों ने भी उल्लेखनीय श्रम किया। श्रावको के नाम इस प्रकार हैं-- लाला मनोहरलालजी उमरिया (भिवानी), श्री चन्दनमलजी श्यामसुखा (फाजिल्का), लाला सुल्तानसिंहजी (संगरूर), लाला भगतरामजी आदि। मुनि अमोलकचन्दजी ने

वहुत लम्बे-लम्बे विहार किए। वे लगभग ५५ वर्ष तक अग्रगण्य के रूप मे विचरे।

७०. मुनि चम्पालालजी (राजनगर) सातवें आचार्य डालगणी द्वारा दीक्षित थे। डालगणी का स्वर्गवास होने के वाद पूज्य कालूगणी आचार्य बने। उस समय समुच्चय का प्रतिलेखन और पंचमी समिति की पात्री ले जाने का सौभाग्य मुनि चम्पालालजी को मिला। कुछ वर्षो के वाद वे अपने संसारपक्षीय भाई चुन्नीलालजी को प्रतिवोध देने के लिए गुरुदेव से प्रार्थना कर राजनगर गए। तब से समुच्चय का प्रतिलेखन और पंचमी की पात्री ले जाने का अवसर मुनि चौथमलजी (जावद) को मिला। मुनि चम्पालालजी अपने भाई को वैरागी वनाकर लाए। कालूगणी के कर-कमलों से उनकी दीक्षा हुई। वे बहुत गंभीर और सस्कारी साधु थे। कालूगणी की उन पर विशेष कृपा थी। उन्होंने कई वर्षो तक पांच साधुओं के सिंघाड़े से विहार किया। धर्मसंघ के गुणगान करने की उनकी अपनी विशेषता थी। हाजरी वाचन के दिन वे संघ-संघपति का गुणगान करते तो जनता को चित्रित कर देते। आचार्य भिक्षु के दृष्टान्तों को वे बहुत अच्छे ढंग से समझाते थे। एक शब्द में कहें तो वे एक समर्पित संत थे।

७१. मुनि शिवराजजी वडू मारवाड़ के थे। उन्होंने तीस साल की अवस्था में सजोड़े अष्टमाचार्य कालूगणी के पास दीक्षा ग्रहण की। वे आचार-विचार में कुशल, पापभीरु, सेवार्थी और आत्मार्थी सन्त थे। वे पूज्य कालूगणी की शारीरिक सेवा में विशेष रूप से नियुक्त थे। उन्होंने पूरी जागरूकता के साथ अपने दायित्व को निभाया। गुरु-आज्ञा और गुरु इंगित के प्रति वे सजग थे। कोतवाल का काम करने के कारण वे कोतवालजी कहलाते थे। पूज्य कालूगणी का उनके प्रति विश्वास था। आपने अपने अंतिम समय में मुनि शिवराजजी को दस हजार गाथाओं से पुरस्कृत किया और उनके लिए जो शब्द कहे वे कालूयशोविलास में इस प्रकार हैं—

है खरो आदमी दूजो इण सरखो रे,
मिलणो दोहिलो, मुनिजन गुण परखो रे।
मैं इण रै योगे मन अति सुख वेद्यो रे,
वाह ! वाह ! शिव मुनि ! भव वन्धन छेद्यो रे।।

आचार्य कालूगणी ने जब मुनि तुलसी को युवाचार्य घोषित कर दिया तब वे युवाचार्य की सेवा करने के लिए तत्पर हुए। युवाचार्य ने कहा-- आप बड़े संत हैं। मैं आपसे सेवा-कार्य नहीं कराऊंगा। मुनि शिवराजजी को इससे मानसिक कष्ट हुआ। उन्होंने पूज्य कालूगणी को जाकर निवेदन किया। तब कालूगणी ने कहा-- बड़े-छोटे की कोई खास बात नहीं, इनकी सेवा लेनी है। कालूगणी के निर्देश से आचार्यश्री ने मुनि शिवराजजी की सेवाएं स्वीकृत कीं। वि० सं० २००२ में उन्होंने आचार्यवर के सान्निध्य में चौविहार अनशन-पूर्वक जीवन-यात्रा संपन्न की

७२. उस समय राजा-महाराजा का साधु-संतो के दर्शनार्थ आना वहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता था। राजे-महाराजे सामान्यतः हर कहीं नहीं जाते थे। वीकानेर नरेश शार्दूलसिंहजी भीनासर में आचार्यश्री के दर्शन करने आए। उनके साथ राज्य के अनेक अधिकारी व्यक्ति थे। उनके आने से उस चोखले में तेरापंथ का वहुत प्रभाव वढ़ा।

७३. चैनरूपजी नोखा-मण्डी के नौलखा परिवार से संबंधित थे। उनके पिता धर्मसंघ के भक्त थे। वे नेपाल में रहते थे। उन्होने नेपाल में कई ब्राह्मणों को समझाया। परिवार में धर्म के सहज संस्कार पल्लवित थे। इसका प्रभाव चैनरूपजी पर पड़ा और वे संसार से विरक्त हो गए। आचार्यवर के नोखा-प्रवास में उनकी दीक्षा हुई। सात दिनों में ही उनका मन कमजोर हो गया। साधु जीवन के परीषहों की कल्पना ने उनको अधीर वना दिया। उनकी मनःस्थिति ज्ञात होने पर अनेक साधुओं ने उनको समझाया पर वे अपना मनोबल नहीं जुटा सके। मुनि चम्पालालजी ने भी उनको समझाने का प्रयत्न किया पर उनकी दुर्वलता दूर नहीं हुई। आखिर वे संघ छोड़कर चले गए।

७४. नोखा से आचार्यवर को लाडनूं जाना था। उसके लिए सड़क का रास्ता था—नोखा से सांडवा और वीदासर होकर। दूसरा रास्ता नागौर होकर था। आचार्यश्री ने सांडवा-वीदासर वाला रास्ता छोड़ा और नागौर वाला भी छोड़ दिया। तीसरा भी सीधा रास्ता लिया तीतरी और जोघासर का। उस

रास्ते में सड़क नहीं थी। बालू रेत के टीले बहुत थे। उस समय प्रहर आने से पहले गोचरी लाने की विधि नहीं थी। प्रहर दिन चढते ही संत गोचरी के लिए निकलते तब तक रेत के टीले इतने गर्म हो जाते कि उन पर नंगे पांव चलना असंभव-सा हो जाता। टीबों की रेत पर कंबल बिछाकर सन्त गोचरी करते। रास्ते में साथ रहने वाले यात्री कम थे। इसलिए पानी की कमी रहती थी। उस समय उपासना में रहने वालो में सुजानगढ़ की सुन्दर बाई, हुलासी बाई तथा धनराजजी बैद की टीम और भीवराजजी बैद, मूलचन्दजी मरोठी आदि नोखा के कुछ लोग थे।

७५. शक्तमलजी धर्मसंघ के प्रसिद्ध, विद्वान और अच्छे व्याख्यानी संत थे, पर चारित्रिक दृष्टि से कुछ श्लथ थे। वि० सं० २००१ में उनका चातुर्मास्य राजगढ था। वहां उनके द्वारा कुछ गलतियां हुई। आचार्यश्री को उन गलतियो की जानकारी मिली। चातुर्मास्य पूरा होने पर आचार्यश्री ने गलतियों के बारे में पूछताछ की। उन्होने अपनी गलती स्वीकार नहीं की। आचार्यप्रवर ने कहा— मुझे आज की रात ही इसका निर्णय करना है। बात चलती रही पर निष्कर्ष नहीं निकला। सन्तों ने निवेदन किया—रात्रि बहुत बीत चुकी है। आज इस काम को यहीं स्थगित कराने की कृपा करें।

आचार्यप्रवर ने अनुशासनात्मक कार्यवाही करते हुए कहा—मै बात को अधर में छोड़ना नहीं चाहता। इस पार या उस पार, आज का निर्णय आज ही हो। यह सुन मुनि शक्तमलजी ने मुनि चम्पालालजी से प्रार्थना की—"आप मेरे लिए आचार्यश्री से सिफारिश करें"।

मुनि चम्पालालजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा— सरलता से गलती स्वीकार करोगे तो तुम्हारा काम बन सकता है। अन्यथा जो होना है, होकर रहेगा। इस पर भी उन्होंने अपनी गलती स्वीकार नहीं की। आचार्यश्री ने आधी रात के समय उनका संघ से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

७६. वि० सं० २००५ में रात्रिकालीन प्रार्थना का क्रम प्रारंभ हुआ। सबसे पहले गाए गये गीत के कुछ पद्य—

ॐ जय जय त्रिभुवन अभिनंदन
त्रिशलानंदन तीर्थपते !
अयि त्रिशलानंदन तीर्थपते !

अयि कलुष -निकंदन विश्वपते !
तिमिराच्छादित भुवन में रे, दिव्य दिवाकर-सो उदयो ।
चरण-चरण निज किरण पसारे, सारे जग जागरण हुयो ।
निद्रा-घूर्णित जन बोध लह्यो ।।१।।
भारिमल्ल रायेन्दुजी रे, जयजश मघ माणकलाले ।
डालिम कलिमल-कंदन कालू, वनपालू इक-इक आले ।
'तुलसी गणि ' गुरु अनुपद चाले ।
मिल संघ सकल सायंकाले ।
गावो वीर-स्तुति समकाले ।।२।।
(पूरा गीत, देखें 'नन्दन निकुञ्ज', पृ० २१)

७७. मुनि हीरालालजी के संसारपक्षीय पिता मानमलजी बैंगानी बीदासर के मोजीज श्रावकों में एक थे । वे पुरानी पोल के दीखते श्रावक थे। संघ व संघपति के प्रति पूरे आस्थावान थे। वे प्रण के पक्के और इकरंगे व्यक्ति थे।आचार्यो के बीदासर प्रवास में सायंकाल उपासना करने का उनका निश्चित क्रम था। ग्रीष्म ऋतु मे वे चार-साढे चार बजे भोजन कर गुरुदेव की उपासना में पहुंच जाते। अपने पुत्र की दीक्षा की प्रार्थना करने के लिए वे अकेले आचार्यश्री के पास जाकर बोले-- गुरुदेव ! हीरालाल की साधु बनने की इच्छा है।आपको विश्वास हो, उसकी योग्यता पर भरोसा हो तो कृपा करायें।

७८. मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी सं० १९४३ मिगसर शुक्ला १४ श्री पंचमाचार्य मघवागणिराज हस्ते दीक्षित। वय वर्ष ७६ का नै वि० सं० २००१ माघ शुक्ला सप्तमी के दिन माघ-महोत्सव के अवसर पर सुजानगढ में इण भांत खास रुक्को बक्शीस कियो। मंत्री मुनि श्री मगनलालजी स्वामी आपने ५८ वर्ष में म्हारा पूर्वज आचार्यां द्वारा तथा म्हारे द्वारा इण मुजब बक्शीसां हुई--

१. सर्वकाम बकशीस।
२. बारी बकशीस
३. बोझ बकशीस।
४. पहुंचावणो बकशीस।
५. गत दिवस वार्ता बकशीस

६. नेश्राय नो बोझ बकशीस।

७. औषधि उन्हा नी (गर्म आहार) की बकशीस।

८. असण पाणी नी पांती बकशीस।

६. गोचरी बकशीस।

१०. हाजरी में खड़ा होकर लिखत बोलणो बकशीस।

११. मंत्री की उपाधि।

१२. वखाण में बाजोट की बकशीस।

१३. पुनश्च एक बकशीस आज करूं हूं जदि आप कोई जोग सूं न्यारा में रैवो तो नौ साधुआं की बकशीस।

मैं आज तांई की हुई आपकी शासन की सेवा स्यूं अति प्रसन्न हूं। संयम आचार नैं दृढता स्यूं निकलंक रूप आराधै, तिण रे घणो लाभ हुवै अनै कुरब कायदो वधै। पांचूं ही पाटां री सेवा आप घणी स्यामखोरी स्यूं कीन्ही, दूसरां रै वास्ते आपकी सेवा सदा कै वास्ते प्रशंसनीय किं वा अनुकरणीय रहसी। आप स्यूं शासन के काम में घणी मदद मिली। आप स्यूं, आपके काम स्यूं घणो राजी होयने ओ खास रुक्को बकशीस किया।

वि० सं० २००१, हस्ताक्षर
माघ शुक्ला ७, सुजानगढ तुलसी गणपति, नवमाचार्य

७६. श्री डूंगरगढ़ के डा० जेठमलजी भंसाली प्रबुद्ध व्यक्ति थे। प्रारंभ में वे साधु-साध्वियों के सम्पर्क में कम रहे। वि०सं०२००२ में आचार्यश्री का चातुर्मास श्रीडूंगरगढ़ था। उस समय वे मुनि नथमलजी (महाप्रज्ञजी) के निकट सम्पर्क में रहे। तत्त्वज्ञान समझने के लिए उन्होंने पच्चीस बोल के माध्यम से मुक्त चर्चा की, उसी के फलस्वरूप जीव-अजीव पुस्तक तैयार हो गई। डा० भंसालीजी साध्वी संघमित्राजी के संसारपक्षीय पिता थे।

८०. मेवाड़ में बरार गांव के कुन्दन मुनि अपने गृहस्थ जीवन में गणित के अध्यापक थे। इसके अतिरिक्त वे मानचित्र बनाते और बच्चों को बहुत अच्छे ढंग से समझाते। सत्सम्पर्क से उनमें वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हुए और वे दीक्षित हो गए। धर्मसंघ में उनकी गणना अच्छे परिश्रमी, मिलनसार

और विनीत संतों में होती थी। साधु-समाज में उनकी अच्छी शोभा थी।

८१. वि० सं० २००२, आचार्य श्री सरदारशहर में प्रवासित थे। वहां से चूरू पधारना था। मातुश्री वदनांजी उस समय अस्वस्थ थीं। उन्हें अस्वस्थ अवस्था में छोड़कर आप फूलासर पधारे। वहां अधिक अस्वस्थता के समाचार मिले। इस कारण आप वहां दो दिन रुके। वहां से सेवाभावीजी को सरदारशहर भेजने का चिन्तन किया पर उन्हें अचानक ज्वर हो गया। उस स्थिति में आचार्यश्री स्वयं बिना किसी पूर्व सूचना के मातुश्री को दर्शन देने के लिए अचानक सरदारशहर पधारे। इसमें मातुश्री को और सरदारशहर के श्रावक समाज को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। इस समूचे प्रसंग को आचार्यश्री ने मातुश्री के सामने अपने कर-कमलों से लिपिबद्ध किया। वह इस प्रकार है—

वि० सं० २००२ रो माघ-महोत्सव सरदारशहर करके फागण वदि ६ के प्रभात विहार की बगत मालम पड़ी के वदनां जी के रात ने ताव तथा बेचैनी घणी रही। जणां बीं वक्त वदनां जी ने लाडांजी आदि सत्यां ठाणा ६२ स्यूं बठे राखकर मैं (तुलसी गणपति), मंत्रीमुनि तथा ज्येष्ठ सहोदर आदि ठाणा ३५ स्यूं विहार कियो। गाम ऊडसर होय कर सातम नै फूलासर आया। बीं दिन सरदारशहर का भायां द्वारा इसी सुणी के वदनां जी के रात तकलीफ ज्यादा रही। नींद आई नहीं। जणां मंत्रीमुनि तथा ज्येष्ठ सहोदर कह्यो कि आप एक-दोय दिन अठै ही विराजो। क्यूंकि अठै सूं तो चार कोस ही है। आगै पधारणै सूं दूर पड़ ज्यावै, वक्त पर दर्शन ही देणा पड़ै। क्यूं कि आगै ही मघवागणी जोधपुर में गुलाबांजी के कारण हो जद महिने वारै विराज्या महामंदिर में तथा मूंहताजी रै मंदिर में। रोजाना दर्शन दिरांवता, पाछा पधारता। कालूगणी छोगां जी के वास्ते भी घणी दफे बीदासर पधार्‌या। जणां मैं बठै दिन तीन रह्यो। सन्त-सत्यां तथा श्रावक-श्राविकां री जाणो-आणो बराबर रह्यो। दूजै दिन अष्टमी ने ज्येष्ठ सहोदर चम्पालालजी स्वामी ने सरदारशहर भेजणै रो विचार हो, परन्तु अचानक जुखाम होकर ज्वर हो गई। तिणस्यूं एक कागज लिखकर तीन सन्तां ने भेज्या। बाद में चम्पालालजी स्वामी ने भी ताव उतर गयो। वदनां जी के भी चित्त में कागज सुणकर अपार हर्ष हुयो। पछै चम्पालालजी स्वामी कह्यो— मन्नै सवारे भेज दिरावो। म्हारे अबे ठीक है। अथवा आप ही पधारो तो वदनां जी रै घणी चित्त समाधि होसी।

जणा म्हारो मन तो दर्शन देणो को हो ही, परन्तु अचानक ही आणै को हो, जकै स्यूं चित्त समाधि विशेष हुवै। तिण स्यूं मैं पहिली कह्यो नहीं। पछै फागण वदि १०मीं प्रभात पडिलेहण वक्त मैं कह दियो-"संतां त्यार होय जावो। सरदारशहर दर्शण देवण जाणै रा भाव है" पछै झमकूजी ने पहिली विहार करायो। मगनलाल जी स्वामी नै ठाणा ८ स्यूं फूलासर राख्या। बोझ भार बठे ही राख्यो।

मैं ज्येष्ठ सहोदर आदि सन्तां सहित १०मीं को पौणी दस वज्या आसरे सरदारशहर पहुंच्या। अचानक आणै स्यूं सरदारशहर का श्रावकां ने अकथनीय आनंद हुओ। सारे शहर में एक नयी स्फूर्ति जागृत हुई। बाद में गधइया की हवेली से जायकर माजी वदनांजी ने पहली पोत दर्शन दिया। सुखसाता पूछी। जणां वदनां जी हर्ष स्यूं गद्‌गद हो गया। तमाम कारण ने भूलग्या। चेहरे पर अद्‌भुत खुशाली छा गई। बीं वगत को दृश्य दर्शनीय हो, अवर्णनीय हो। बीं बगत मन्नै मम रचित छोगां जी के छवढालिये की एक गाथा बार-बार स्मरण हुई। वा गाथा—

गुरु- जननी मुख, जननी गुरु -मुख गौर स्यूं रे
चिंहु तीरथ तिम विहुं नो वदन निभाले रे.....

पछै बखाण देयकर फेर सेवा कराई। पछै आहार पाणी करणै रै बाद घणी देर तक ज्येष्ठ सहोदर सहित मैं सेवा कराई। सारी बात पूछी। घणी चित्त समाधि हुई। पछै म्है कह्यो वदनां जी म्है अठे साढ़ा च्यार कोस आया। थांनै दर्शण दिया। ईं में कोई अधिकाई नहीं करी। ओ तो म्हारो फर्ज ही जको मैं निभायो।

पछै वदनां जी के कहणै सूं दूसरे दिन म्हैं फेर बठै रह्या। पहलै पोर में सेवा कराई। मै पूछ्यो थारै अबै ठीक ही है, कमजोरी ज्यादा है सो तर-तर ठीक होसी। थांरी मनसा हूवै तो म्है सवारै पाछा विहार कर फूलासर जावां? जणां कह्यो के म्हारे मन में तो आप री सेवा री हर वक्त लालसा रैवै है परन्तु अबार आपने विहार करावतां ने रोकूं कोनी। पण चम्पालालजी स्वामी ने म्हारै कनै रखा देवो जके स्यूं चित्त समाधि रहसी।

जणां मैं चम्पालालजी स्वामी नै बठै राखण की व्यवस्था करके म्हारै विहार की मिति फागण बदि बारस की कह दिन्ही। बीं बगत चम्पालालजी स्वामी कह्यो के वदनां जी के वास्ते रहणै में किसी वड़ी बात है। इयां तो

म्हारो भी मन लागै नहीं, पण आरै वास्ते आप फरमास्यो जिता दिन रह जास्यूं। जणां बाद में कह्यो कि अबार सरदारशहर आणो अचानक हुयो है ईं वास्ते ईं वृत्तान्त नै मैं म्हारै हाथ स्यूं लिखसूं। पछै वीं वगत ही स्याही, कलम मंगाकर मैं सारी बात लिख दिन्ही।

सं॰ २००२ फागण वदि ११ बुधवार। चार बजकर पांच मिनट ऊपर आई। सन्त ठाणा ४६ सत्यां ठाणा ६६। मोहनलालजी, सागरमलजी खटेड़ नेमीचन्दजी कोठारी आदि भी वीं वगत सेवा में हा।

ओ सकल वृत्त वदनां जी के पास में लिख्यो।
तुलसी गणपति नवमाचार्य

८२. साध्वी झमकूजी सप्तमाचार्य डालगणी के पास दीक्षित थीं। वे रतननगर के हीरावत परिवार की पुत्री तथा चूरू के पारख परिवार की वहू थीं। दोनों ओर के परिवार आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न तथा धार्मिक दृष्टि से जागरूक थे। पति के वियोग होने पर वे विरक्त होकर दीक्षित हो गईं। उन्हें साध्वीप्रमुखा कानकंवरजी के पास रहने का अवसर मिला। पूज्य कालूगणी की उन पर विशेष कृपा थी। साध्वीप्रमुखा कानकंवरजी की अस्वस्थता के कारण साध्वियों की सार-संभाल का काम वे देखने लगीं। उनका स्वर्गवास होने के बाद आचार्यश्री तुलसी ने साध्वी झमकूजी को साध्वीप्रमुखा के गरिमामय पद पर स्थापित किया। साध्वीप्रमुखा झमकूजी व्यवहारकुशल और कला-कुशल थीं। उनके द्वारा बांधा हुआ रजोहरण बहुत कलात्मक होता था। उनमें कार्य करने की सहज स्फूर्ति थी। श्रावक समाज की उन्हें विशेष पहचान रहती थी। उनका जीकारा लोग आज भी याद करते हैं। आचार्यो की आराधना करने में उन्होंने अच्छा सुयश अर्जित किया। वे प्रायः मध्याह्न में विहार किया करती थीं। गर्मी में विहार करने के कारण उनको लू का प्रकोप हो गया।

८३. साध्वीप्रमुखा झमकूजी का स्वर्गवास होने के बाद आचार्यश्री द्वारा समुच्चारित गीत के कुछ पद्य—

सैंतीस वर्ष लग साधूपण पाल्यो झमकूजी सती।
निज संयम-जीवन आछो उजवाल्यो झमकूजी सती।।
चम्मालीसै रतननगर में हिरावतां घर जामी।

ससुरालय चूरू रा पारख, उभय पक्ष है नामी जी ।।१।।
गात्र-कंप ज्वर अरु बेचैनी, पाई खबर जिवारे ।
मैं, मंत्री, बंधव-मुनि संगे, दर्शन दिया तिवारे जी ।।२।।
वदनांजीं, लाडांजी आदी, सकल सत्यां है साम्है ।
खड्या-खड्या सब आंख्यां झांकै, पिण कुण तिणनै थामै जी ।।३।।
(पूरा गीत देखें 'नन्दन निकुंज', पृ० ३०७,३०८)

८४. साध्वीप्रमुखा लाडांजी की दीक्षा अनेक अवरोधों को पार कर हुई। सेवाभावी मुनि चम्पालालजी से पहले वे संसार से विरक्त हो गई। पर दीक्षा नहीं हो सकी। सेवाभावीजी की दीक्षा के साथ भी प्रयत्न किया तब भी वे पीछे रह गई। आखिर आचार्यश्री तुलसी की दीक्षा के प्रसंग में उनका भाग्योदय हुआ। साध्वीप्रमुखा लाडांजी आचार-कुशल और पापभीरु साध्वी थीं। बहिर्विहार मे वे साध्वी दाखांजी के साथ रहीं। वे अपने सिघाड़े में बड़े आदर और इज्जत के साथ रहीं। अपने सहदीक्षित भाई मुनि तुलसी के आचार्य बनने के बाद उन्हें पुनः गुरुकुल-वास में रहने का अवसर मिला। उसके बाद मातुश्री वदनांजी की दीक्षा हुई, उनके लिए भी आप बहुत बड़ा आश्वासन थी। साध्वीप्रमुखा झमकूजी का स्वर्गवास होने पर आचार्य तुलसी ने उनको साध्वीप्रमुखा बना दिया। आप आचार्यश्री की कई यात्राओ में साथ रहीं, यद्यपि आप शारीरिक दृष्टि से बहुत अस्वस्थ रहीं पर उनका मनोबल और सहनशीलता उल्लेखनीय थी। उसका मूल्यांकन करते हुए आचार्य तुलसी ने आपको सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति सम्बोधन से सम्बोधित किया। जीवन के अंतिम पड़ाव में आप मातुश्री के साथ बीदासर में रहीं। वहां शल्य चिकित्सा का प्रसंग उपस्थिति होने पर आपने दृढता के साथ प्रतिकार कर दिया। इससे श्रावक समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा।

तेरापंथी द्विशताब्दी समारोह के सन्दर्भ में आचार्यवर द्वारा उद्घोषित 'नया मोड' कार्यक्रम के तहत आपने सामाजिक कुरूढियों को समाप्त करने में तीव्र प्रयत्न किया। साध्वीप्रमुखा स्वयं अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थीं। पर साध्वियों को शिक्षा के क्षेत्र मे आगे बढाने के लिए आपने जो प्रेरणा, प्रोत्साहन और सुविधाएं दीं, वे कभी विस्मृत नहीं की जा सकतीं।

८५. आयुर्वेदाचार्य पंडित रघुनन्दनजी शर्मा अलीगढ़ जिले के सुनामई गांव के रहने वाले थे। साहित्य और व्याकरण के वे प्रकाण्ड पंडित थे। सरस्वती उनकी जिह्वा पर विराजमान थीं। वे संस्कृत के विलक्षण आशुकवि थे। आचार्यश्री के शब्दों में— मैंने अपने जीवन में लाखों व्यक्तियों को देखा है। संस्कृत का ऐसा धुरन्धर आशुकवि कहीं नहीं देखा। उन्हें कोई भी विषय दो, अविलम्ब सौ-पचास श्लोक बनाकर सुना देते। उनकी भाषा शुद्ध और प्रांजल थी। तेरापंथ धर्मसंघ का सौभाग्य है कि ऐसे विद्वान कविरत्न की सेवाएं सुलभ हुई। अनेक लोगों द्वारा विरोध करने के बावजूद वे तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़े रहे। व्यवसाय की दृष्टि से वैद्य-वृत्ति करते। शेष समय में वे साधु-साध्वियों को पढाते। वैद्य भी वे ऐसे थे कि सैकड़ों वैद्यों को उनके सामने खड़ा कर दिया जाए तो उनकी बराबरी नहीं कर सकते थे।

८६ चूरू का सुराणा परिवार तेरापंथ धर्मसंघ का ख्यातनामा परिवार रहा है। तोलारामजी, रायचन्दजी आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति इस परिवार से जुडे हुए हैं। मेघराजजी सुराणा का संबंध भी इसी परिवार से है। अपने भाइयों में वे सबसे बड़े थे। उन्हें धार्मिक संस्कार अपनी मां से मिले थे। उनकी मां बड़ी भक्त श्राविका थीं। मेघराजजी भी मेघ-भक्त कहलाते थे। उनका समर्पणभाव इतना पुष्ट था कि उन्हे गुरु-दृष्टि के सिवाय कुछ दीखता नहीं था। आचार्यों के चूरू प्रवास में वे दिन-रात सन्तो की सेवा में उपस्थित रहते थे।

८७. कांग्रेस अध्यक्ष जे॰ बी॰ कृपलानी अपने विशेष काम से फतेहपुर आए थे। वहां के श्रावक आचार्यश्री के दर्शन कराने उनको रतनगढ लेकर आए। तेरापंथ के विरोधी लोगों ने उनको बहकाने का प्रयत्न किया। वे बहकावे में आ गए। फलतः वे अनमने से आए और दूर जाकर बैठ गए। वे दूसरे दिन फिर आए। उनका रूखापन देखकर मुनि चम्पालालजी कृपलानीजी के अभिमुख होकर बोले-- गांधी जी के शिष्य होकर आप ऐसा व्यवहार करते हैं। व्यावहारिकता भी तो कोई चीज होती है।

कृपलानीजी ने यह बात सुनी तो वे देखते ही रह गए।

८८. मुनि नवलरामजी साधक हस्तीमलजी के संसार पक्षीय बाबा थे।

वे वोराट परगने में चारभुजा क्षेत्र के थे। दोनों ने पूरे वैराग्यभाव के साथ दीक्षा ली। मुनि नवलरामजी पुराने विचारों के थे। हस्तीमलजी आधुनिक युग के थे। उन्होने अच्छी पढ़ाई की, इससे आधुनिकता में निखार आया पर विनम्रता का ह्रास होता गया। फलस्वरूप दोनों के विचारों में मेल नहीं रहा। नवलरामजी कुछ भी कहते, उसे हस्तीमलजी अन्यथा ले लेते।

कुछ समय बाद मुनि नवलरामजी के मन में तपस्या की प्रेरणा जागी। उन्होंने नौ दिन की तपस्या में संथारा स्वीकार किया। हस्तीमलजी ने उनके संथारे को भी सही रूप में नहीं लिया। आचार्यवर के पास पहुंचकर उन्होंने निवेदन किया—मुनि नवलरामजी ने संथारा सही उद्देश्य से नहीं किया है। उन्होंने आवेश में संथारा किया है।

उनकी बात सुन आचार्यवर ने मुनि नवलरामजी को उपालम्भ के शब्दों में कहा—अनशन की सफलता समता में है। समता के अभाव में संथारे की गरिमा कम हो जाती है।

मुनि नवलरामजी इतने विनम्र,भद्र और भीरु थे कि आचार्यश्री के सामने कुछ नहीं कह सके। पर उनका मन उद्विग्न हो गया। उन्होंने समझ लिया कि उनके बारे में हस्तीमल ने ही आचार्यश्री से शिकायत की है। उनकी उद्विग्नता का कारण उनका यह चिन्तन था— गुरु की दृष्टि के बिना जीना और मरना दोनो ही सार्थक नहीं हैं। यह बात सेवाभावी मुनि चम्पालालजी को ज्ञात हुई। उन्होंने आचार्यवर को निवेदन किया— मुनि नवलरामजी के बारे में जो बात आपके ध्यान मे आई है, वह सही नहीं है। हस्तीमल उनके प्रति अच्छे भाव नहीं रखता। इसी कारण वह इधर-उधर की बातें करता है। सही स्थिति ज्ञात होते ही आचार्यवर ने मुनि नवलरामजी को वात्सल्य के साथ सान्त्वना दी, आश्वस्त किया और उनके मन को स्वस्थ बना दिया।

८६. बालचन्दजी सेठिया सरदारशहर के प्रभावशाली तेरापंथी श्रावकों में एक थे। एक ओर श्रीचन्दजी गधैया और दूसरी ओर बालचन्दजी सेठिया, दोनों एक तुला में आने वाले भक्त थे। श्रीचन्दजी के नोहरे में साधु-साध्वियों का प्रायः प्रवास होता था। बालचन्दजी का भी एक मकान था, जिसे आरामशाला कहते हैं। बालचन्दजी चाहते थे कि उनकी आरामशाला में भी साधु-साध्वियां ठहरें। जब कभी वहां साधु-साध्वियों का प्रवास होता, उन्हें

अतिरिक्त प्रसन्नता होती। उन्हें तत्त्वज्ञान का भी अच्छा अभ्यास था। आचार्यश्री तुलसी जब छोटे साधु थे तब कालूगणी के निर्देश से बालचन्दजी को आप थोकड़े सुनाते। बालचन्दजी के पुत्र महालचन्दजी भी तत्त्व के अच्छे ज्ञाता थे। वे आगमसूत्रों का रहस्य समझाते थे। उन्होंने सूत्रों के अनेक बोलों का उपयोगी संकलन किया तथा शासन के इतिहास की भी संकलना की। वे समाज में दीखते श्रावक थे, अन्तरंग श्रावक थे और सेवाभावी मुनि चम्पालालजी के परम भक्त थे।

६०. साध्वी हीरांजी तारानगर की थीं। वे बहुत वर्षों तक साध्वीप्रमुखा जेठांजी की सेवा में रहीं। उनकी संघनिष्ठा और विनम्रता की साध्वियों में छाप थी। उनकी कला-साधना प्रसिद्ध थी। उन्होंने अग्रगण्या के रूप में अनेक वर्षों तक बहिर्विहार किया। उस समय की अग्रगण्या साध्वियों में उनका नाम उल्लेखनीय था। जब वे गुरुदेव के दर्शन करने आतीं तो बहुत अच्छी भेंट लेकर आतीं। साधुओं में भी उनकी भेंट देखने की उत्सुकता रहती।

६१. मुनिश्री चम्पालालजी ने राजलदेसर से जयपुर के लिए प्रस्थान किया। उस समय उनको पहुंचाने के लिए कुछ सन्त पायली गांव तक गए। दूसरे दिन प्रातः जब वे सन्तों को पुनः राजलदेसर जाने के लिए विदा करने लगे, उन्हें रामचरित की बात याद आ गई। राम ने वनवास स्वीकार किया। उस समय की स्थिति बड़ी विचित्र थी। राम वन में चले गए। भरत ने राज्य का दायित्व स्वीकार नहीं किया। दशरथ और भरत ने चिन्तनपूर्वक सामन्तों और मंत्रियो को राम के पास भेजा और निर्देश दिया कि राम को वन से लौटा लाओ। वे राम के पास पहुंचे। उनसे प्रार्थना की, पर राम उनके अनुरोध को कब स्वीकार करने वाले थे। राम आगे-आगे चले और सामन्त-मंत्री पीछे-पीछे चले। सामने बहुत बड़ी नदी आ गई। राम नदी के तट पर खडे हुए और बोले—

सामंत मंत्री घरे जाओ, कष्ट छै आगै घणो।
कुशल कहिज्यो मां बापजी नै आज तांई हम तणो।।

इसीप्रकार सेवाभावीजी ने गुरुकुलवासी साधुओं को विदा करते हुए कहा-- आप सब घर जाओ, हम तो वनवासी हो रहे हैं। आचार्यप्रवर को

हमारी ओर से सुखसाता पूछना।

६२. मुनिश्री चम्पालालजी की जयपुर यात्रा में जो सहयोगी साधु थे, उनमें से कुछ नाम इस प्रकार हैं—

१. मुनि मालचन्दजी	२. मुनि सागरमलजी
३. मुनि हंसराजजी	४. मुनि धनराजजी

६३. जयपुर में उस समय कई तत्त्वज्ञ व्यक्ति थे। कुछ नाम उल्लेखनीय हैं—

श्री सुजानमलजी खारड़	श्री चन्दनमलजी दूगड़
श्री गुलाबचन्दजी लूणिया	श्री नानगरामजी अग्रवाल
श्री मोतीलालजी बाठिया	श्री चन्दनमलजी दूगड़ की बहिन
श्री मनजी काला (सरावगी)	मालीबाई पुगलिया

६४. ज्येष्ठ सहोदर चम्पालालजी स्वामी स्यूं वंदना, सुखसाता बंचे। घणी-घणी वार, घणैघणै मान स्यूं। कागज एक जीवनमलजी स्वामी सागे दियो है सो पूग्या स्यूं आप रै निजर मे आय ज्यासी और ओ कागज खानदेश जाणै वाली शिष्यणी सुन्दरजी, मोहनांजी साथे आज भेजा हां सो निगह रैसी। अठै सकल संघ में देव, गुरु के प्रताप स्यूं आनन्द मंगल बरत रह्या है। आप भी घणै आनन्द मंगल हर्ष स्यूं विचरीज्यो। चित्त में शान्ति घणी राखीज्यो। भिक्षु शासन की उन्नति, ख्याति करीज्यो। बहुश्रुत की ढाल बणाणे वास्ते आप कह्यो हो परन्तु कामकाज में व्यस्त रहणै स्यूं हाल कर सक्या नहीं। अब मोको आणै स्यूं विचार है। सुखसाता राखीज्यो। अठी कानलो कोई तरह को विचार कीज्यो मती। शेष सन्तां स्यूं यथायोग बंचै। सब आछी तरह अठै री दृष्टि माफिक रहीज्यो।

सं० २००५, फाल्गुन वदी ५, बीदासर। सैकड़ां ठाणा रो विहार सुखसाता पूर्वक हो गयो है।

आचार्य तुलसी गणपति

६५. ज्येष्ठ सहोदर चम्पालालजी स्वामी स्यूं वंदना, सुखसाता घणी-घणी

बंचै। अपरंच आप घणी-घणी चित समाधि राखीज्यो। आछी तरह स्यूं क्षेत्रां में विचरज्यो। चित्त में कोई बात को ओचाट राखीज्यो मती।

मैं जाणूं हूं आपरो मन न्यारां में कमती लागे है क्योंकि आपके दूर रहणै को काम कमती पड्यो है। विचरणै रूप तो ओ पेहलो ही मौको है। इण वास्ते आप दिल में खूब प्रसन्नता राखीज्यो। हरेक काम प्रसन्न दिलस्यूं कर्‌यां ठीक रेवे। आपको दिल प्रसन्न रहणै स्यूं सागला सन्ता को भी दिल खुश रहवै।

एक बार तो आपने विशेष रूप स्यूं अटपटी आई हुवैला। रात ने नींद भी पूरी नहीं आई हुसी पर अवै शान्ति स्यूं रहीज्यो। बीच के क्षेत्रां में उपकार किया सो म्हारै निगह में है और आगे भी आप उपकार समझो जिण क्षेत्र में जथाजोग विचरज्यो।

जीवणमलजी स्वामी ने बठी नै भेज्या हां सो आपस्यूं मिलता दीसै है। वै अठै रा समाचार साथ ही सुणावैला। लाडांजी, वदनांजी आदि सत्यां परम सुखसाता में छै। वां की तरफ स्यूं भी वन्दना बंचै।

अच्छी तरह स्यूं सुख शान्ति पूर्वक विचरीज्यो।

सं० २००५, माघ शुक्ला ८ तुलसी गणपति नवमाचार्य
बीदासर

९६. मुनि चम्पालालजी जयपुर यात्रा के बाद सुजानगढ़ पधारे तब आचार्यवर सामने पधारे पर नए तरीके से। सामान्यतः आचार्य किसी के सामने जाते हैं तो अधिकांश साधु साथ जाते हैं। उस दिन आचार्यश्री ने सोचा— भाई का सम्बन्ध वैयक्तिक है। इसलिए इनका सम्मान भी व्यक्तिगत होना चाहिए। इस चिन्तन के साथ आप चार-पांच सन्तों को साथ लेकर पधारे, शेष सारे सन्त आवास स्थल पर रहे। प्रवास स्थल पर पहुंचने के बाद पूरे संघ के साथ अभिवादन किया। यह उनका संघीय सम्मान था।

९७. जिस समय सेवाभावीजी ने आचार्यवर के दर्शन किए आचार्यवर ने निम्नोक्त पद्य कहे—

आए सोदर चतुरगढ़, कर जयपुर चौमास।
सुखद प्रथम यात्रा सफल, तुलसी मन सोल्लास।।

पोष मास में आगमन, मिगसर में प्रस्थान।
मास त्रयोदश से हुआ, राघव भरत मिलान।।

९८. सेवाभावीजी की दिल्ली यात्रा में रहे सहयोगी (अनुगामी) सन्तों के नाम इस प्रकार हैं—

मुनि छोगालालजी बोराणा
मुनि मानमलजी, श्रीडूंगरगढ़
मुनि सागरमलजी, लाडनूं
मुनि कन्हैयालालजी, श्रीडूंगरगढ
मुनि ताराचन्दजी, रासीसर
मुनि वसन्तीलालजी, पेटलावद

९९. श्री मिहिर बाबू चट्टोपाध्याय सुगनचन्दजी आंचलिया के अभिन्न मित्र थे। वे बहुत बड़े विद्वान तथा लोकसभा के सदस्य थे। आंचलियाजी के कारण वे तेरापंथ के संपर्क में आए। धर्मसंघ के प्रति और आचार्य तुलसी के प्रति वे बहुत निष्ठाशील थे। वे पक्के अणुव्रती तो थे ही, जैनधर्म के सिद्धान्तों व त्याग-तपस्या से प्रभावित होकर जैन बन गए। वे कहा करते थे कि मैं पक्का तेरापंथी हूं। उन्होंने सेवाभावीजी के दिल्ली चातुर्मास में जैनधर्म का महापर्व पर्युषण मनाया।

१००. वि० सं० २००५ का समय तेरापंथ धर्मसंघ में नई चेतना के जागरण का समय रहा है। तब तक जो लकीरें खींची हुई थीं, उनको बड़ी करने का प्रसंग उपस्थित हुआ। जो तेरापंथ एक सीमित दायरे में काम कर रहा था, उस दायरे को विस्तार देने की अपेक्षा सामने आई। युगीन विचारों का संप्रेषण हुआ। समाज में अस्पृश्यता निवारण, पर्दाप्रथा का बहिष्कार, महिला जागरण आदि नई प्रवृत्तियों, गतिविधियों पर चर्चा होने लगी। उस समय तक धर्मसघ की अवधारणा यह थी कि साधु-साध्वियां अपना काम करें। अध्यात्म की प्रेरणा दें, उन्हें सामाजिक झंझट में नहीं जाना चाहिए। जबकि सामाजिक चेतना का जागरण भी किसी दृष्टि से धार्मिकता का ही अंग है।

राजलदेसर मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर प्राचीन परम्पराओं और नई प्रवृत्तियों को लेकर कुछ साधुओं तथा कुछ श्रावकों में दो दल बन गए। कुछ लोग प्राचीन परंपरा के आग्रह में बंध गए तथा कुछ नई प्रवृत्तियों के समर्थक बन गए। इस स्थिति को देखकर कुछ वयोवृद्ध मुनियों के मन प्रकम्पित हुए, पर आचार्यश्री का मन अडोल रहा। आपने सोचा-- यह समय तेरापंथ धर्मसंघ के अभ्युदय का है। ऐसे समय में इस प्रकार की घटनाएं होती रहती हैं।

१०१. इससे पहले साधु-साध्वियों के अध्ययन हेतु व्यवस्थित पाठ्यक्रम नहीं था। आचार्यवर ने किसी पत्र में एक पाठ्यक्रम देखा। आपके मन मे तत्काल एक प्रतिक्रिया हुई कि साधु-साध्वियों के अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम बनाया जाए। इस चिन्तन की क्रियान्विति हुई और योग्य, योग्यतर तथा योग्यतम के क्रम से सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम निर्धारित हो गया।

१०२. दीक्षार्थिनी भाई-बहिनों की संख्या में वृद्धि होने लगी, पर दीक्षा से पूर्व उनकी साधना और शिक्षा के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। एक दिन आचार्यवर ने कहा--शिक्षा के विना दीक्षा संभव नहीं है। इससे समाज में हलचल मच गई। आज तक किसी आचार्य ने ऐसा नहीं कहा, आप यह कैसे कह रहे हैं ? हमारे घरों की लड़कियां अध्यापकों से कैसे पढ़ सकती हैं ? आचार्यश्री ने कहा-- इस सम्बन्ध में आप स्वयं सोचें। उस समय गंगाशहर निवासी छोगमलजी चोपड़ा ने आचार्यवर के निर्देश को स्वीकार करते हुए कहा-- आचार्यश्री ठीक कहते हैं। हमें दीक्षार्थी बहिनों को शिक्षित करना है और उसके लिए संस्था बनानी होगी। संस्था को कौन चलाएगा ? क्या होगा ? इस प्रकार ऊहापोह हुआ पर छोगमलजी की युग को पहचानने वाली दृष्टि ने उनमें साहस भरा और वे संस्था की स्थापना के लिए कटिबद्ध हो गए। समाज ने जिस संस्था की व्यवस्था का दायित्व संभाला उसका नाम है पारमार्थिक शिक्षण संस्था। यह एक आदर्श संस्था के रूप में आज भी दीक्षार्थी भाई-बहिनों का निर्माण कर रही है।

१०३. गंगाशहर के श्रावक समाज-भूषण छोगमलजी चोपड़ा विद्वान और सूझबूझ वाले व्यक्ति थे। वे युग की नई गतिविधियों से परिचित थे और

उनकी अपेक्षा का भी अनुभव करते थे। उन्होंने अनेक वर्षों तक तेरापंथ धर्मसंघ की एकमात्र संस्था तेरापंथी महासभा के मंत्री तथा अध्यक्ष के रूप में समाज को अपनी सेवाएं दीं। दीक्षार्थिनी बहिनों की शिक्षा के प्रसंग में पारमार्थिक शिक्षण संस्था की कल्पना करने वाले वे पहले व्यक्ति थे। उनके बारे में विस्तृत जानकारी करने के लिए पढ़ें—'पुरुषार्थ की गाथा' पुस्तक।

१०४. जबरमलजी भण्डारी जोधपुर के ख्यातनामा वकीलों में एक हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में चादरमलजी भण्डारी की उल्लेखनीय सेवाएं रही हैं। जबरमलजी भण्डारी इन्हीं के वंशज हैं। जैन सिद्धान्तों के अच्छे जानकार हैं। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के ये वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं। इन्होंने पूरे साहस और सूझबूझ के साथ संस्था की सार संभाल की। ये जितने प्रशासन में कुशल हैं, उतने ही अध्यापन में कुशल हैं। ये अपने जीवन के सांध्यकाल में पूरी जागरूकता के साथ साधना के विशेष प्रयोग कर रहे हैं।

१०५. कल्याणमलजी बरड़िया जयपुर के सीधे-सादे श्रावक थे। पत्नी का वियोग होने के बाद उन्होंने अपने जीवन की दिशा बदल दी। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अपना जीवन समर्पित कर दिया। मुमुक्षु बहिनों को उन्होंने बेटियों की तरह रखा। वे अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे पर गुरु के प्रति आस्थाशील और समर्पित थे। संस्था के लिए तो वे मां-बाप के रूप में थे। उन्होंने अपनी जीवनयात्रा संस्था के प्रांगण में संपन्न की। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए गौरव होते हैं। उनके बाद संस्था की देखरेख राणमलजी जीरावला कर रहे हैं।

१०६. सन् १९४७ में भारत आजाद हुआ। भारतीय जनता स्वतंत्रता की खुशियों में झूम उठी। उस समय आचार्यश्री ने देश में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए एक अभियान चलाया। अणुव्रत आन्दोलन के रूप में वह आगे बढ़ा। अणुव्रत की एक सपूर्ण आचार संहिता है। जाति, वर्ण, रंग, लिंग, प्रान्त, भाषा आदि भेद-भावों से दूर रहकर मनुष्य मात्र को आत्मसंयम की ओर प्रेरित करना अणुव्रत का उद्देश्य है। इसका घोष है— संयमः खलु जीवनम्। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत के मिशन को

देशव्यापी बनाने के लिए अनवरत पुरुषार्थ कर रहे हैं।

१०७. श्री सुगनचन्दजी आंचलिया मूलतः गंगाशहर निवासी थे पर व्यवसाय की दृष्टि से सैंथिया में रहते थे। राजस्थानी होते हुए भी वे बंगाली जैसे लगते थे। वि० सं० २००४ में आचार्यश्री के रतनगढ चातुर्मास्य में वे संपर्क में आए। पहली बार के सम्पर्क में ही वे आचार्यश्री के व्यक्तित्व से प्रभावित हो गए। वे जितने पढे-लिखे थे, उतने ही नीतिनिष्ठ थे। नैतिक मूल्यों में उनकी प्रगाढ आस्था थी। सरदारशहर में अणुव्रत योजना सामने आई। लगभग पांच हजार लोगों की उपस्थिति में अणुव्रत के नियमों को पढ़कर सुनाया गया। क्या होगा ? कैसे होगा ? इन नियमों को कौन स्वीकार करेगा ? इनका पालन संभव है क्या ? इस प्रकार के ऊहापोह के बीच आचार्यश्री ने पच्चीस व्यक्तियों की मांग की। आचार्यश्री के आह्वान पर पूरी सभा में सन्नाटा छा गया। सबसे पहले सुगनचन्दजी अपनी धर्मपत्नी मनोहरीदेवी आंचलिया के साथ खड़े हो गए। आचार्यवर के हाथ में कलम व नोटबुक थी। उसमें प्रथम पंक्ति में सुगनचन्दजी का नाम अंकित हुआ। फिर तो लोगों में नाम देने की होड़-सी लग गई। एक के बाद एक कर पूरे पचहत्तर नाम आ गए।

१०८. एक समय था जब तेरापंथ धर्मसंघ की एक भी साहित्यिक पुस्तक नहीं थी। प्रबुद्ध लोग संपर्क में आते। तेरापंथ के बारे में सुनते। उसके सिद्धान्तों को समझते और अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए पुस्तक की मांग करते। पुस्तक कहां से आए ? आचार्यश्री ने कुछ साधुओं को निर्देश देकर छोटी-छोटी पुस्तकें लिखवाई। उन पुस्तकों को जनता तक पहुंचाने के लिए समाज के लोगों ने एक संस्थान बनाया। उसका नाम दिया-- आदर्श साहित्य संघ। उसके संस्थापक थे-- श्री हणूतमलजी सुराणा (चूरू), सुगनचन्दजी आंचलिया (गंगाशहर) तथा जयचन्दलालजी दफ्तरी (सरदारशहर)।

आदर्श साहित्य संघ ने विगत ४५ वर्षों में हजार से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। संघ द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की अपनी अच्छी प्रतिष्ठा है।

आदर्श साहित्य संघ की स्थापना में मूलभूत प्रेरक रहे हैं देवेन्द्रकुमार

कर्णावट। देवेन्द्र भाई तूफानी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। वे प्रवक्ता, लेखक और अपने काम के धुनी हैं। इनकी मां बहुत श्रद्धाशील श्राविका थीं। वह कहतीं -- मेरा देवजी एक बार गुरुदेव के दर्शन कर ले तो मेरी भावना सफल हो जाए। माताजी ने कई बार प्रयास किए पर देवेन्द्रजी नहीं आए। वि० सं०२००० में वे पहली बार गंगाशहर आए। वे आए और अनमने से पीछे बैठ गए। साधु -साध्वियों की व्यवस्था, संघीय अनुशासन और आचार्यवर के कुशल प्रशासन ने उन्हें प्रभावित किया। छोगमलजी चोपड़ा के सम्पर्क से वे और अधिक निकट आए। छोगमलजी चोपडा के प्रति देवेन्द्रभाई के मन में बहुत अधिक आदर भाव था। उन्होंने उनको सदा पिता तुल्य माना। एक बार में ही वे धर्मसंघ से जुड़ गए और पूरी तरह से जुड गए।

देवेन्द्रकुमारजी योजना बनाने में सिद्धहस्त हैं। उन्होंने आदर्श साहित्य संघ की भी पूरी योजना बनाकर प्रस्तुत की। हणूतमलजी सुराणा ने उस योजना को स्वीकार कर लिया। इसे आकार देने में सुगनचन्दजी आंचलिया और जयचन्दलालजी दफ्तरी सक्रिय हो गए। उनके सहयोगी बने श्री शुभकरण दसाणी, मोहनलालजी कठोतिया, मूलचन्दजी सेठिया(सरदारशहर) आदि अनेक चिन्तशील व्यक्ति ।

प्रारंभ में आदर्श साहित्य संघ का भी काफी विरोध हुआ। लोगों ने कहा-- नई-नई संस्थाएं खडी करना ठीक नहीं है पर दायित्वशील व्यक्ति चट्टान की तरह मजबूत बने रहे। आदर्श साहित्य संघ के जिम्मे निम्नलिखित काम रहे -- यात्रा में साथ रहना, नए लोगों से संपर्क करना, पत्र-व्यवहार करना तथा साहित्य-प्रकाशन और प्रचार -प्रसार आदि।

१०९. तेरापंथ धर्मसंघ का सबसे पहला साप्ताहिक पत्र था-- जनपथ। उस समय तक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, पत्रों में संवाद संप्रेषण आदि कामों को मर्यादा से प्रतिकूल माना जाता था। इसलिए इस पत्र का प्रकाशन होते ही विरोध शुरू हो गया। विकास के साथ विरोध का नियम है। इस चिन्तन के साथ इस विरोध को अनदेखा कर कार्यकर्ता अपना काम करते रहे। जनपथ के संपादन का सर्वप्रथम दायित्व देवेन्द्रभाई कर्णावट ने संभाला।

११०. तेरापंथ धर्मसंघ सदा से ही अनुशासित, संगठित और मर्यादित

धर्मसंघ रहा है।

एक समय था जब इसकी कट्टरवादिता और परम्परावादिता के कारण कुछ क्रान्तिकारी कहलाने वाले जैन समाज के युवक इसका विरोध करते थे। केवल रूढ परंपराओं का विरोध होता तो बात समझ में आती। पर उनकी ओर से तेरापंथ धर्मसंघ ही विरोध का केन्द्र-विन्दु बन गया। कभी तीव्र और कभी मंद स्वरों में विरोधी वातावरण मुखर था। इस बीच वि० सं० २००६ में आचार्यवर का चातुर्मास्य जयपुर हुआ। उस चातुर्मास्य की विशेष उपलब्धियों ने विरोधी लोगों की विरोधी मनोवृत्ति को उत्तेजन दिया। वे अवसर की प्रतीक्षा में थे। दीक्षा का प्रसंग उपस्थित हुआ। एक-एक कर आठ दीक्षाओं की घोषणा हुई। विरोधी स्वर को बुलन्दी देने के लिए वह एक मौका था। दीक्षा का विरोध करना संभव नहीं था। इसलिए उन्होंने बालदीक्षा के विरोध में नारा उछाला। जबकि वहां दीक्षित होने वाले भाई-बहिनों में सतरह-अठारह वर्ष से कम उम्र का कोई नहीं था।

जयपुर के विरोध में मूल प्रेरक जैन समाज के ही युवा थे। उनमें भंवरमलजी सिंघी, विजयसिंहजी नाहर, सिद्धराजजी ढड्ढा आदि अग्रणी थे। उन्होंने कुछ तेरापंथी युवकों को भी अपने साथ ले लिया। वे लोग प्रबुद्ध थे और प्रभावशाली थे। विरोध के आधुनिक तौर-तरीकों से परिचित भी थे। इसलिए अपने पक्ष में देश भर के अनेक दीखते लोगो को जोड़ लिया। यहां तक कि राजस्थान की सरकार भी उनके साथ हो गई। उस समय हीरालालजी शास्त्री की सरकार थी। मंत्रिमण्डल के अनेक सदस्य, स्वयं शास्त्रीजी भी उनके साथ हो गए। अनेक राजनीतिक दल के लोग उनके साथ जुड़े। जैनदर्शन के मर्मज्ञ विद्वानों में पंडित सुखलालजी सिंघवी, पंडित बेचरदासजी, पंडित दलसुखभाई मालवणिया और मुनि जिनविजय आदि बाल दीक्षा के नाम पर विरोध में खड़े हो गए।

इधर तेरापंथ समाज भी डटकर मुकाबले में खड़ा हो गया। समाज के लोगों का चिन्तन था कि यह बवंडर तेरापंथ समाज को दबाने के लिए है, जब बालदीक्षा का प्रसंग ही नहीं तो उसके नाम पर विरोध क्यों? बालक हो या वृद्ध, यदि उसमें दीक्षा की योग्यता नहीं है तो उसकी दीक्षा नहीं होनी चाहिए। यह एक अलग प्रश्न है। जैसे-जैसे देश भर में फैले तेरापंथी लोगों को पता चला, जयपुर में उनका जमघट होने लगा। पंजाब, हरियाणा से तो

हजारों-हजारों लोग एक साथ जयपुर पहुंच गए। जयपुर के आई॰ जी॰ पी॰ के पास टेलीफोन आते, अमुक स्थान से चार सौ, पांच सौ व्यक्ति आ रहे हैं, अमुक स्थान से सात सौ आ रहे हैं। वे घबराए-से आचार्यश्री के पास आए और बोले-- मामला क्या है ? आचार्यश्री ने कहा-- आप घबराएं नहीं। ये लोग विरोध का मुकाबला करेंगे। पर शहर की शान्ति भंग नहीं करेंगे। समाज के चिन्तनशील लोगों में छोगमलजी चोपड़ा (गंगाशहर), श्री चन्दजी रामपुरिया (सुजानगढ), टीकमचन्दजी डागा (सुजानगढ), मोतीलालजी रांका (बगड़ी) तथा आदर्श सहित्य संघ का पूरा परिवार रणनीति तैयार करने के लिए जागरूक था। और भी बहुत लोग थे किन-किन का नाम गिनाऊं। एक वाक्य में कहूं तो पूरा समाज अपने दायित्व के प्रति जागरूक था। विरोध का मुकाबला और वह भी अहिंसात्मक ढंग से। इसलिए नारा दिया गया-- जो हमारा हो विरोध, हम उसे समझें विनोद।

इस जागृति ने पहली बार तेरापंथ महिला समाज को प्रभावित किया। जयपुर में एकत्रित महिला समाज ने साहस के साथ पर्दा छोड़ा, आभूषण छोड़े और एक व्यवस्थित जुलूस निकाला। योग्य दीक्षा होकर रहेगी, इस घोष से जयपुर के मुख्य मार्गो को गुंजित कर दिया। लोग आश्चर्यचकित होकर देखने लगे। उन महिलाओं ने पब्लिक मीटिंग बुलाई और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया-- योग्य दीक्षा होकर रहेगी। कुल मिलाकर जयपुर में ऐसा वातावरण बना कि विरोध की रीढ टूट गई। स्थिति को संभालने के लिए सरकार ने धारा १४४ लगा दी। इधर दिल्ली में केन्द्र के पास सूचना पहुंची। केन्द्रीय गृहमंत्रालय के सचिव ने फोन किया और पूछा--क्या बवण्डर है ? सरकारी स्तर पर उत्तर दिया गया--दीक्षा को लेकर बवंडर उठा है, सब ठीक हो जाएगा, हमने १४४ धारा लगा दी है। गृहमंत्रालय के सचिव ने कहा-- धारा इसलिए लगाई जाए कि दीक्षा में किसी प्रकार की बाधा न आए। इससे स्थिति में नया मोड़ आ गया। आचार्यश्री ने दीक्षा का स्थान, समय निर्धारित कर दिया। पुलिस की पूरी व्यवस्था के साथ दीक्षार्थी भाई-बहिनों का बड़े जोश-खरोश के साथ जुलूस निकाला गया। निर्विघ्न रूप से दीक्षा संस्कार संपन्न हो गया। दीक्षा का विरोध करने वालों के हाथ केवल पश्चात्ताप ही बचा।

१११. वि० सं० २००६ आचार्यश्री का चातुर्मासिक प्रवास जयपुर था। दीक्षा के प्रसंग में विरोधी वातावरण बना। विरोधी लोगों ने अनेक प्रबुद्ध और प्रभावशाली लोगों को याद किया। उनमें एक थे--जयप्रकाश नारायण। वे बम्बई से वायुयान द्वारा जयपुर पहुंचे। उसी दिन रात्रि में विरोधी पक्ष की ओर से जनरल मीटिंग बुलाई गई थी। जे० पी० को उस मीटिंग में बोलने के लिए कहा गया। जे० पी० ने कहा— मैंने आपकी बातें सुनी हैं। अब मैं आचार्य तुलसी से मिलना चाहूंगा। दोनों पक्षों की बातें समझे बिना मैं इस विषय में कुछ नहीं बोलूंगा। जे० पी० ने आचार्यश्री से मिलने की इच्छा व्यक्त की। पर उस दिन आचार्यवर उनको समय नहीं दे सके। रात को विरोधी लोगों द्वारा आमंत्रित सभा हुई। जे० पी० ने स्पष्ट रूप से कह दिया-- आज मेरा आचार्य तुलसी से मिलना नहीं हो सका। अतः दीक्षा के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहूंगा।

दूसरे दिन वे आचार्यश्री से मिले। दो घण्टे तक खुलकर बातचीत हुई। तेरापंथ का दर्शन उन्होंने अच्छी तरह से समझ लिया। दीक्षा के बारे में भी पूरी स्पष्टता से बातें हो गई। वार्तालाप के बाद वे नीचे आए। वहां आयोजित गोष्ठी में उन्होंने कहा-- हम लोग तो केवल समाजवाद की चर्चा करते हैं। तेरापंथ में तो सवा सोलह आना समाजवाद है। उसके बाद जयप्रकाशजी का आचार्यवर के साथ बहुत आत्मीय सम्बन्ध जुड़ गया। समय-समय पर वे तेरापंथ के कार्यक्रमों में भाग लेते रहे।

११२. राजेन्द्र बाबू पहली बार जयपुर में आचार्यश्री से मिले। उस समय वे दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष थे। उनके साथ पहली बार का मिलना आपसी संबंधों को स्थायित्व देने वाला था। उसके बाद वे दिल्ली में मिले और नेहरूजी से संपर्क कराने में माध्यम बने। अणुव्रत के कार्य में अनेक विशिष्ट व्यक्तियो का सहयोग मिला पर उनमें सर्वाधिक प्रेरक और सहयोगी राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद रहे। जयपुर चातुर्मास में कुछ और विशष्ट लोग भी आचार्यश्री के सपर्क में आए। उनमें पी० सी० सेन, स्वामी लिच्छीरामजी के शिष्य श्री नन्दकिशोरजी, महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

११३. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक गुरु गोलवलकर

दीक्षा-विरोध के सिलसिले मे ही जयपुर आए थे। वे आचार्यश्री से मिले। घण्टो तक मुक्त चर्चा हुई। विचारों का ऐसा तादात्म्य जुड़ा कि जीवन भर बना रहा। उसके वाद वे आचार्यश्री से कई वार मिले।

आचार्यश्री अपनी दक्षिण यात्रा के मध्य एक वार नागपुर गए। आचार्यश्री के प्रवास स्थल पर कार्यक्रम चल रहा था। सामने गुरुजी आकर खड़े हो गए। आचार्यश्री ने उनको देखा तो विश्वास ही नहीं हुआ। ऐसा लगा मानो आंखों को धोखा हो रहा है पर गुरुजी सामने खड़े थे। आचार्यश्री ने कहा-- गुरुजी ! आप कैसे आए ? वे बोले-- आप यहां आए और मैं न आऊं, यह कैसे हो सकता है।

११४. आचार्यश्री द्वारा समुच्चारित नव निर्मित गीत के कुछ पद्य--

शान्ति निकेतन सत्य धर्म की जय हो जय।
करुणा-केतन जैन धर्म......................।।
मैत्री की इस भव्य भित्ति पर
सत्य अहिंसा के खंभों पर।
टिका हुआ है महल मनोहर
सदा सचेतन सत्य धर्म की।।१।।
शाश्वत अखिल विश्व को जाना
नहीं किसी को कर्ता माना।
'तुलसी' जैन तत्त्व पहिचाना
जीवन-दर्शन सत्य धर्म की।।२।।

(पूरा गीत देखे, 'नन्दन निकुञ्ज' पृ० २८७)

११५. वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान मे ख्यातिप्राप्त विद्या-संस्थान है। आचार्यश्री वहां पधारे। प्रिंसिपल प्रवीणचन्द जैन ने हार्दिक स्वागत किया। दूसरे दिन प्रातः विहार से पूर्व गृहमंत्री श्री प्रेमप्रकाश माथुर और मुख्यमंत्री श्री हीरालाल शास्त्री आए। आधा घण्टा सेवा की। शास्त्रीजी विहार के समय आधा मील पहुंचाने आए। लौटते समय भाईजी महाराज ने जयपुर चातुर्मास्य में दीक्षा-विरोध के प्रसंग को उठाते हुए कहा--शास्त्रीजी ! इस वार आपके यहां आचार्यश्री पधारे और आपने उनके साथ क्या किया ? शास्त्रीजी अपनी जोवनेरी बोली में बोले-- महाराज ! हमने तो जोवनेर की रोही में ऊंट

चराए हैं। भाईजी महाराज ने तत्काल कहा— यह तो ठीक है, पर हाथी को चिटकारी मार कर ऊंट की तरह नहीं हांका करते। हम सब देखते ही रह गए। शास्त्रीजी ठहाका मार कर हंसे और बोले— महाराज ! हुआ सो हुआ माफ करना। भाईजी महाराज की फक्कड़ प्रकृति पर सब आश्चर्यचकित थे। शास्त्रीजी बोले— आप जैसे साफ कहने वाले भी विरले ही होंगे। आप यदि वहां रहते तो कितना अच्छा रहता। भाईजी महाराज— नहीं था, यह अच्छा हुआ। शास्त्रीजी ! मैं वहां होता तो आपसे जरूर झगड़ता।

११६ मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर सब साधु-साध्वियां दीक्षा पर्याय के अनुसार पंक्तिवद्ध खड़े होकर मर्यादाओं को दोहराते हैं, संकल्पों का उच्चारण करते हैं, उसे वड़ी हाजरी कहते हैं। श्वेत संघ की वह लम्बी पंक्ति मनोहारी लगती है। सामान्यतः हाजरी वाचन के दिन साधु खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण करते हैं, वह हाजरी कहलाती है। जिस दिन साध्वियां भी पंक्तिवद्ध खडी होती हैं, वह वड़ी हाजरी होती है। कभी-कभी मर्यादा-महोत्सव के विना भी वड़ी हाजरी का आयोजन किया जाता है।

११७. जयपुर से दिल्ली के रास्ते में आचार्यवर अचरोल पधारे। वहां ऐसी शीत-लहर आई, जैसी संभवतः कभी नहीं आई। वैसी शीत-लहर को राजस्थानी में लक्कड़-दाह कहते हैं। उसका तात्पर्य वैसी सर्दी से है, जिससे लक्कड़ जल जाए। उसके कारण एक महीने तक गहरी सर्दी रही। साध्वीप्रमुखा लाडांजी उस शीत-लहर की चपेट में आ गईं। विहार की स्थिति नहीं रही। छोटा स्थान, थोड़े घर, स्थान और आहार-पानी की कठिनाई थी। फिर भी वहां चार दिन प्रवास करना पड़ा।

११८. जयपुर की श्राविका गुलाबवाई चौरड़िया की पुत्री प्रेमलता अलवर व्याही हुई थी। उसके ससुराल वाले पारम्परिक दृष्टि से स्थानकवासी थे। उनमें गहरी धार्मिक कट्टरता थी। आचार्यवर अलवर पधारे। प्रेमलता ने गुरु-दर्शन की अनुमति मांगी, उसे इजाजत नहीं मिली। उसने संकल्प किया कि जव तक साधु-साध्वियों के दर्शन नहीं होंगे, तव तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगी। उस संकल्प से उसके तीन दिन की तपस्या हो गई। फिर

भी घर वालों का मन नहीं पिघला। सेवाभावीजी को इस घटना की जानकारी मिली। वे स्वयं दर्शन देने गए और वहिन को कृतार्थ किया। वहिन का संकल्प फलीभूत हो गया।

११६. अणुव्रत आन्दोलन का प्रथम अधिवेशन दिल्ली के चांदनी चौक में करना निश्चित हुआ। पूर्व सन्ध्या तक समाज के लोगों में तीव्र ऊहापोह चल रहा था। क्या होगा ? कैसे होगा ? कौन आएगा ? इस प्रकार के निराशा भरे स्वर मुखरित हो रहे थे। कुछ लोग हिम्मत कर आचार्यवर के पास पहुंचे और चांदनी चौक के वदले आवास-स्थल पर ही अधिवेशन करने का आग्रह करने लगे। आचार्यश्री ने कहा—जो बात निर्णीत हो चुकी है, उसमें परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

ठीक समय पर चांदनी चौक में अधिवेशन प्रारंभ हुआ। उसके वारे में काफी प्रचार हो चुका था, इसलिए वहुत लोग अधिवेशन को देखने आए। कई देशों के राजदूत भी आए। लोगों में जिज्ञासा और कुतूहल का मिश्रण था। आचार्यश्री ने अणुव्रत की व्याख्या की और आचार-संहिता पढ़कर सुनाई। लगभग पांच सौ व्यापारियों ने खड़े होकर संकल्प स्वीकार किए—

- हम खाद्य पदार्थों में मिलावट नहीं करेंगे।
- काला बाजारी नहीं करेंगे।
- तोल-माप में कमी-वेशी नहीं करेंगे।
- असली दिखाकर उसके बदले नकली माल नहीं वेचेंगे।

इन संकल्पों से आकाश गूंज उठा। दर्शकों और श्रोताओं पर बहुत प्रभाव पड़ा। दूसरे दिन देश-विदेश के अनेक समाचार-पत्रों में अणुव्रत सुर्खियों में रहा। टाइम और लाइफ जैसे पत्रों में अणुव्रत के संवाद छपे—पांच सौ व्यापारियों ने नैतिक रहने का संकल्प किया। क्या सतयुग आ रहा है ? कुछ पत्रकारों ने व्यंग्यात्मक शैली में भी लिखा। कुल मिलाकर परिणाम आशा से अधिक अच्छा आया। पूर्व रात्रि में लोगों के जो विचार थे, दूसरे दिन का कार्यक्रम होने के बाद वे इतने बदल गए मानो उनमें रात-दिन का अन्तर आ गया।

१२०. सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार अपने युग के विशिष्ट

व्यक्ति रहे हैं। कई वर्ष पूर्व वे आचार्यवर के प्रवासकाल में सरदारशहर आए। कुछ लोगों ने उनको भ्रान्त बना दिया। वे आए, खड़े रहे। न तो उन्होंने अभिवादन किया और न बातचीत की। जो व्यक्ति उनको लेकर आए थे, उन्होंने आचार्यवर से उनका परिचय अवश्य कराया। पर जैनेन्द्रजी ने सोचा— यह स्थान हमारे योग्य नहीं है।

उसके बाद आचार्यश्री दिल्ली पधारे। अणुव्रत अधिवेशन का प्रसंग था। आचार्यवर के सान्निध्य में अणुव्रती लोगों की अन्तरंग गोष्ठी हो रही थी। गर्मी का समय, पंखे का उपयोग नहीं। फिर भी सब लोग स्थिरता और शान्ति से बैठे थे। एक-एक व्यक्ति खड़ा होकर अपने घर की, परिवार की, व्यापार की समस्या प्रस्तुत कर रहा था। आचार्यवर सबकी बातें ध्यान से सुन रहे थे और यथोचित समाधान दे रहे थे। उस संगोष्ठी में जैनेन्द्रजी भी पहुंच गए। गोष्ठी का माहौल देखकर उनकी सारी भ्रान्तियां मिट गई। सरदारशहर में जो एक कांटा-सा लगा था, वह निकल गया। गोष्ठी संपन्न होने के बाद वे आचार्यश्री के निकट आए और अपनी पूरी राम-कहानी सुना दी। उस दिन से वे आचार्यवर व अणुव्रत के साथ ऐसे जुड़े कि जीवन भर जुड़े रहे। वे अ० भा० अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बने, अणुव्रत-प्रवक्ता बने। ई० सन् १९८२ का अणुव्रत पुरस्कार भी उन्हें मिला। आचार्यश्री के प्रति उनकी इतनी आस्था हो गई कि उनके नाम से वे कुछ भी काम करने को तैयार रहते थे।

एक बार अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पद के लिए जैनेन्द्रजी का नाम सामने आया। देवेन्द्र भाई कर्णावट अणुव्रत का फार्म लेकर उनके पास पहुंचे और बाले— हम आपको समिति का अध्यक्ष बनाना चाहते हैं। इससे पहले अणुव्रत का फार्म आपको भरना होगा। जैनेन्द्रकुमारजी ने निरपेक्ष भाव से कहा— हम राष्ट्रपति का फार्म भी नहीं भरते हैं। देवेन्द्र भाई ने कहा— आचार्यश्री ने कहा है कि आप अणुव्रती बनें। आचार्यश्री का नाम सुनते ही वे फार्म भरने के लिए तैयार हो गए। एक प्रबुद्ध व्यक्ति धर्माचार्य के प्रति इतना समर्पित हो सकता है, यह आश्चर्यकारक बात है।

१२१. सरदारशहर यात्रा में मुनि चम्पालालजी के साथ सात साधु थे। उनके नाम इस प्रकार हैं—

१. मुनि उदयचन्दजी (सरदारशहर)

२. मुनि हनुमानमलजी (सरदारशहर)
३. मुनि सागरमलजी (लाडनूं)
४. मुनि कन्हैयालालजी (श्रीडूंगरगढ)
५. मुनि ताराचन्दजी (रासीसर)
६. मुनि हंसराजजी (लाडनूं)
७. मुनि बसंतीलालजी (पेटलावद)

१२२. मंत्री मुनि के लिए प्रदत्त आचार्यवर का सन्देश—

नमो गुरवे महात्मने

स्वस्ति श्री सरदारशहरे मंत्री मुनिश्री मगनलालजी स्वामी से बारंवार वन्दना तथा सुखपृच्छा विदित हो। अपरंच इण वर्ष में विशेष करके चौमासा में आपरो शरीर घणो अस्वस्थ रह्यो। सुण-सुणकर चित्त में एक प्रकार की विशेष चिंता बणी रहती। इण वास्ते चौमासो उतरतां ही आप कनै संतां नै अठां सूं भेजणै की मनसा ही। पछै चंपालालजी स्वामी नै भेजणै की जच गई। तिण सूं आज दिन अठै सूं केई संतां सहित ज्येष्ठ सहोदर आपका दर्शन करणै आ रह्या है। सो अठी कानीला सारा ही समाचार आपनै सुणासी। तिणसूं आपरै चित्त में घणी समाधि हुसी। इतनो शारीरिक कष्ट हुणै पर भी अडिग मनोबल, अपार सहनशीलता देखकर लोकां कै दिल में बड़ो आश्चर्य होवै है। आपकी गुरु-भक्ति और शासन-प्रेम तो सदा के लिए एक उदाहरण बण्यो रहसी। मनै अच्छी तरह सूं याद है कि गंगापुर में कालुगणी कै स्वर्गवास कै बाद एकाएक समूचै शासन रो भार म्हारै छोटा-छोटा खंधां पर आयो हो जणां आप अलौकिक गुरु-भक्ति को दृश्य संघ मे प्रदर्शित करता हा और गुरु कै प्रति शिष्यां की प्रवृत्ति किण तरह होणी चाहीजै, क्रियात्मक शिक्षा चतुर्विध संघ के समक्ष रखता हा। यथा—आंरी २२ वर्ष की नहीं, ८२ वर्ष की उमर मानणी। च्यारूं वखत ऊंचै स्वर सै गुणग्राम स्तवना करणी। कोई काम सम्बन्धी दोनूं हाथ जोडकर पूछणो। कोई बात कही जावै तो बद्धांजली नम्रतापूर्वक स्वीकार करणी। परिषद में विशेष रूप स्यूं गुणग्राम करणा। पगां हेठै अपणै हाथ सूं कंवल विछावणो। घुटनां में दर्द रेवणै पर भी बतलानै पर जल्दी उठकर आणो और इस तरह की प्रार्थना बार-बार करणी आप मनै कोई बहानै सबकै बीच में कड़ो ओलंभो दिया करो, जिण सूं औरां में आछो असर हुवै। सत्तर

वर्ष की उमर हुणै पर भी १७ वर्ष का बण कर रहणो।

इसी-इसी अनेक वातां हैं, जो संघ का अनेक साधु-सत्यां कै वास्ते सदा अनुकरणीय है और रहसी। अस्तु। मंत्रिवर ! आपने थली में राखकर विहार करणै के बाद लगभग दो वर्ष में जिनमार्ग को अधिक उद्दीपन होयो है। भिक्षु-शासन तेरापंथ की छाप लोकां के दिल में अच्छी तरह जम रही है। विधानसभा के उपाध्यक्ष आयंगर साहब के शब्दों में– 'मैं सोचता था कि तेरापंथ क्या है, किन्तु आज जान पड़ा है कि तेरापथ तो मेरा पंथ है'। और भी अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने, साहित्यकारों ने, नेताओं ने, पत्रकारों ने यहां तक कहा है कि आज ऐसे धर्म की संसार को आवश्यकता है। उन्होंने मुझे उलाहना तक दिया कि आप इतने दिन कहां रह गए। खैर, जयपुर के बाद अलवर, भरतपुर, डींग, आगरा, मथुरा, वृन्दावन, काशी आदि शहरों मे घूमने से और छोटे -छोटे ग्रामों में रहने से बडे-बड़े अनुभव प्राप्त किए तथा देहली का दो मास का प्रवास तो मेरे जीवन की खास घटना है। सो आपके जानकारी में है ही। रास्ते में और राजधानी में गोचरी आदि में साधु-सतियो को काफी परीषह सहने पड़े--जैसे दो-दो मील से पानी लाना, जैसा-तैसा पानी पीना, पन्द्रह-पन्द्रह, अठारह-अठारह मील तक विहार करना, बड़े-बड़े विरोधों को सहन करना आदि। किन्तु साधु-सतियो ने बड़ी सहनशीलता का परिचय दिया। आखिर चार तीर्थ के सहयोग से ही मैंने कुछ कार्य किया है। इस वर्ष बाहर विचरने वाले साधु-सतियों ने भी जगह-जगह बहुत भारी प्रयास किया है। भविष्य में भी ऐसी ही आशा है। मंत्रिमुने ! मुझे शासन का भविष्य बड़ा उज्ज्वल दीखता है। मुझे ऐसा जान पडता है कि दुनिया में एक बड़ी जागृति होने वाली है। किन्तु इसमें साधुओं की तरह श्रावकों का भी निरवद्य सहयोग पूरा अपेक्षित है। मैं समझता हूं कि सभी अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे।

पुनश्च संघ की कतिपय नवीन प्रवृत्तियों से कुछ लोग कभी-कभी विचार में पड़ जाते हैं। पर उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि गण-समुदाय की जो प्रवृत्तियां हैं या होंगी वे पूरे सोच-विचारपूर्वक ही हैं और वैसीही होंगी। मूल सिद्धान्तों में ठेस पहुंचाने वाली प्रवृत्ति न हुई है और न होगी। मेरा दृढ़ निश्चय है कि मौलिक सिद्धान्तों को छोड़कर कोई बढ़ना चाहता है तो वह उल्टा गिर जाएगा। परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि परिवर्तन होना ही सिद्धान्तों से परे होना है। यह पहले नहीं होती थी और आज होती है, ऐसा तर्क कोई खास

महत्त्व नहीं रखता। हमारे समाज में ऐसे अनेक कार्य आज होते हैं, जो पहले नहीं होते थे, ऐसे भी अनेक कार्य है जो आज नहीं होते, किन्तु पहले होते थे। नवीनता और पुराणता मात्र में उलझ जाना कोई बुद्धिमानी नहीं है। मूल सिद्धान्तों को कायम रखते हुए आगे बढ़ते चले जाना ही विकास का मार्ग है।

मंत्रिमुने! न जाने कौन-सी अज्ञात शक्ति मुझे प्रेरणा दे रही है कि आगे बढ़ो, मैदान साफ है। समय बड़ा अनुकूल है। युग की मांग है। ऐसे अनेक शब्द मेरे कानों से प्रतिक्षण टकराते रहते है। इधर मेरा आत्मबल प्रतिदिन बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। मेरी मनोभावना इतनी तीव्र हो रही है कि युग प्रवर्तक आचार्य भिक्षु द्वारा दिखाई गई राह पर चलते हुए हम इतने आगे बढ़ें कि जिसकी आज कल्पना तक नही हो सकती। आखिर यह सब संघ के यथेष्ट सहयोग से ही संभव होगा। साधु समाज जैसे यहां की दृष्टि के अनुरूप कार्य-क्षेत्र में उतरने का परिचय दे रहा है। उसी तरह श्रावक समाज का कुछ असंगठन, कुछ सदाचार की कमी, कार्यक्रम की शिथिलता आदि कारणों से जितनी चाहते हैं, उतनी प्रगति नहीं हो रही है। फिर भी मुझे विश्वास है कि वृद्ध श्रावकों की मेरे प्रति प्रगाढ श्रद्धा, युवकों की यथेष्ट भक्ति व कार्य-शक्ति—ये सब समय-समय पर उपयोगी बनकर रहेंगी। आपसे भी मेरा यह अनुरोध है कि आप अपने पुष्ट अनुभवों के आधार पर वृद्धो व युवको में एक नयी शक्ति भरते रहें। मेरा स्वास्थ्य ठीक चल रहा है। हांसी चातुर्मास अच्छे आनन्द से हुआ। लोगों मे बहुत श्रद्धा बढ़ी है। यहां प्रत्येक ग्राम में प्रत्येक जाति व प्रत्येक धर्म के अनुयायियों में प्रतिदिन श्रद्धा बढ़ती जा रही है। श्रद्धा के अतिरेक से कहीं-कहीं लोग कुछ भी कर बैठते हैं किन्तु फौरन समझाने से समझ जाते हैं। अभी सिसाय से कुछ खेडों से होकर हिसार होते हुए भिवानी तक का कार्यक्रम निश्चित है। महोत्सव के बाद का कार्यक्रम अभी तय नही है। और यहां सब साधु, वदनांजी, लाडांजी आदि सतियां कुशल-क्षेम में है। समूचे साधुसंघ में एकत्व की भावना एवं गुरु आज्ञा के प्रति प्राणपण की प्रतिज्ञा प्रतिदिन जोर पकड़ रही है। स्वामीजी का अक्षुण्ण प्रभाव शासन में आलोकित हो रहा है। शेष सर्व कुशलम्।

सुखलालजी स्वामी आदि शेष संतों से यथाविधि वंदना और सुखपृच्छा। आप सभी साधुओं ने मंत्री मुनि की अच्छी सेवा की है और भी करते रहना।

मेरा चित्त इस बात से बहुत प्रसन्न है।

सं० २००७ मृ० वि० १०   तुलसी गणपति नवामाचार्य
सिसाय

शेष समाचार ज्येष्ठ बंधु आपसे कहेंगे। चंपालालजी स्वामी (मीठिया) आदि संत-सतियों से यथायोग्य बंचे। प्रतिदिन अभ्यास के कारण राजस्थानी भाषा में शुरू करने पर भी पत्र की भाषा आगे चलकर हिन्दी बन गई है, ज्ञात रहे।

१२३. मुनि सोहनलालजी ने मुनि चंपालालजी के स्वागत में इन्दव छन्द व मनोहर छन्द में अपनी भावना व्यक्त की। यहां इंदव छन्द प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

दीक्षित होते ही पास रखाकर, बारह साल पढाए लिखाए,
सीख सुधारस पाय निरन्तर, ज्ञान रु ध्यान से योग्य बनाए।
भाग्य-सरोज खिला जब सोहन, श्री गुरु के बड़बन्धु कहाए,
चम्पक बाहि कृतज्ञता पालन, मंत्री मुनि पद भेटण आए।।
एक ही ओर तो मंत्री महोदय , है शरणागत संकट मोड़ी,
एकन ठोर विराज रही, मुनि चम्पक की असवारी सजोरी।
तीरथ च्यार खुशी अनपार निहार रहे छवि लम्बी रु चौड़ी,
आज पुरातन चित्त चढ़ी वह , 'सोहन' हेम स्वरूप की जोड़ी।।

मनोहर -छन्द

१२४. जयचन्दलाल जी दफ्तरी ने उस समय अपनी भावना मनोहर छन्द में आबद्ध कर प्रस्तुत की—

एक अरदास खास मंत्री मुनि पास म्हारी,
चम्पक मुनि नै एक मास तो रखाइज्यो।
दो-दो सत्पुरुषां की सेवा को सवायो मोको,
सरदारशहरवासी लोकां ने दिखाइज्यो।
दूजी अरदास म्हारी भाईजी म्हाराज आगै,
भणै जयचन्द आप भूल मती जाइज्यो।
अब कै चौमास अठै तुलसी पधारै जणां,
बावै की बजाण सेवा आप सागै आइज्यो।।

श्री दफ्तरी जी ने इंदव छन्द में भी अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

१२५. आदर्श साहित्य संघ की स्थापना के प्रारम्भ काल में उसके संचालकों में एक नाम था--जयचन्दलालजी दफ्तरी। वे बड़े निर्भीक वक्ता थे। परिषद में कविता बोलने के शौकीन थे। उन्होंने सेवाभावीजी के स्वागत में जोशीले स्वरों में कविता-पाठ किया।

१२६. मंत्री मुनि श्री मगनलालजी ने सेवाभावी जी के सम्मान में हृदयोद्गार प्रकट करते हुए तथा आचार्यवर की असीम कृपा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए चार पद्य कहे। वे इस प्रकार हैं—

१. महिमंडन महिमानिलो, निधि पट तुलसी भान।
भ्रात भणी भेजावियो, सह मुनि अष्ट सुजान।।
२. चाकर जाणी चरण रो, सरसूं मेरु सरीस।
गोपद नै जलनिधि कियो, वाह! वाह! तुम बक्सीस।।
३. वेग-वेग मारग वही, विभु तुलसी को वीर।
मुझ मिलवा मन मोद स्यूं, धरि आयो दिल धीर।।
४. एक जीभ तुलसी कृपा, किम करि सकूं बखाण।
राम नाम सम नित रटूं, तुलसी जीवन प्राण।।

१२७. मुनि श्री चम्पालाल जी के सरदारशहर आगमन पर आयुर्वेदाचार्य पण्डित रघुनन्दन जी शर्मा ने एक हिन्दी कविता पढ़ी। पण्डित जी प्रायः संस्कृत भाषा में ही रचना करते थे। यह उनकी पहली हिन्दी कविता थी। उसके सात पद्य हैं। उनमें से दो यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

रामायण

१. मंत्री मगन मुनी से मिलने चम्पक मुनिवर आए हैं,
रत्नाकर सम तुलसी गुरु का सन्देशामृत लाए हैं।
गुरु -उपहृत पीयूष प्राप्त कर मंत्रि मगन हर्षाए हैं,
वयोवृद्ध आमय-पीड़ित भी युवा तुल्य बन धाएं हैं।।
२. मान सरोवर तुलसी गुरु ने मुक्ताफल भिजवाए हैं,
चम्पक रूपी राजहंस सन्देश रूप ले आए हैं।

मगन हुए अब मगन हंस, ये पिछली व्यथा भुलाए हैं।
अपने गुरु का पा प्रसाद ये फूले नहीं समाए हैं।।

१२८. जयाचार्य ने एक दिन सन्तों से पूछा— विनीत कौन होता है ? सन्तों ने सोचा कि विनीत की सामान्य परिभाषा बताने की दृष्टि से यह प्रश्न नहीं हो सकता। अवश्य ही कोई गहरी बात है। उन्होंने विनम्रता के साथ निवेदन किया—गुरुदेव ! कृपाकर आप ही बताइये। जयाचार्य ने उनके निवेदन पर कहा— विनीत वह होता है, जो गुरु के अनुकूल चलने वाले के भी अनुकूल चलता है।

१२९. पंजाब के लोग श्रद्धा के मामले में अनूठे हैं। गुरु के प्रति वे बहुत श्रद्धाशील और समर्पित होते हैं। उनकी आस्था है कि गुरु का नाम जपने से व्यक्ति का कल्याण हो जाता है। जब वे गुरु के दर्शन करते हैं तो एक गीत गाते हैं। उसका एक पद्य इस प्रकार है—

लक्खां तरगे लक्खां नूं तर जाना।
जिणां ने थोड़ा नाम जपिया।।

१३० आचार्यश्री का प्रवास भिवानी में था। वहां मर्यादा-महोत्सव घोषित था। मर्यादा-महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए गांव-गांव से साधु-साध्वियों के दल आने लगे। मारवाड़ से आने वाले साधुओं के एक दल के साथ एक कॉपी प्राप्त हुई। उसमें धर्मसंघ की वर्तमान गतिविधियों पर कई प्रकार के जिज्ञासा भरे आरोप थे। वह मुनि नथमल जी बागोर द्वारा प्रेषित थी। आचार्यवर ने उस कॉपी को पढ़ा और रख दिया। उस पर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

१३१. पंजाब की मिट्टी चिकनी है। वहां थोड़ी-सी वर्षा होते ही मिट्टी इतनी फिसलन भरी हो जाती है कि उस पर चलना मुश्किल हो जाता है। आचार्यश्री भीखी पधारे। उस दिन वर्षा के कारण मिट्टी चिकनी हो गयी थी। आचार्यश्री चल रहे थे। उस मार्ग में आगे-आगे एक ऊंट चल रहा था। वह रास्ता उसके लिए बहुत कष्टदायक था। लोगों ने बताया कि मिट्टी की

फिसलन के कारण यदि ऊंट गिर पड़े तो उसकी टांगें तक टूट सकती हैं। आचार्यवर को भी उस रास्ते को पार करने में बड़ी कठिनाई का अनुभव हुआ। आपने उस अवसर पर एक दोहा कहा—

"बुडलाढा भीखी विचे, गुरणी दोडेलाल।
हम अति मुश्किल से चले, चिकनी भू की चाल।।

१३२. पंजाब-यात्रा के मध्य आचार्यश्री संगरूर पधारे। वहां दीक्षा-महोत्सव में चार दीक्षा की घोषणा हुई। कुछ लोग दीक्षा के विरोध में खड़े हो गए। उन्होंने एक विचित्र-सा वातावरण बना दिया। लोगों में भ्रान्ति फैला दी। दीक्षा क्या हो रही थी मानो कोई लूट हो रही थी। विरोधियों ने माइक से पूरे शहर में घोषणा करवा दी कि लड़कियों को बहकाकर दीक्षा दी जा रही है। आचार्यवर पहली बार पंजाब पधारे थे। स्थिति पर कन्ट्रोल करना आवश्यक था। छोगमलजी चोपड़ा आदि कई व्यक्तियों ने बैठकर निर्णय लिया। पुनः माइक पर पूरे शहर में सूचना कराई कि किसी को बहकाकर या बर्गलाकर दीक्षा नहीं दी जा रही है बहुत सही ढंग से दीक्षा का आयोजन होगा। दीक्षा से पूर्व उन्होंने एक पब्लिक कार्यक्रम रखा और उसमे दीक्षार्थिनी बहिनों के वक्तव्य कराये। वक्तव्य इतने प्रभावशाली थे कि लोगो के कानों की खिड़कियां खुल गई। भ्रान्ति का निरसन हो गया और वे सब ठंडे पड़ गए।

१३३. समाणा पहुंचने पर आचार्यश्री ने निम्नलिखित पद्य कहा—

शहर समाणा दी सफर, करडी हुई कमाल।
थक गइ मोटर-लारियां, की सन्तों दा हाल।।

१३४. आचार्यश्री उन दिनों पंजाब में प्रवास कर रहे थे। वि० सं० २००८ का चातुर्मास सामने था। तब तक चातुर्मास की घोषणा नहीं हुई थी। पंजाब और सरदारशहर —इन दो क्षेत्रों की प्रबल उम्मीदवारी थी। मंत्री मुनि चाहते थे, वह चातुर्मास सरदारशहर हो। इधर पंजाब के लोगों की भावना थी कि यह चातुर्मास पंजाब में हो जाए तो काम को अधिक विस्तार मिल सकता है। उस समय सुगनचंदजी आंचलिया और शुभकरणजी दसाणी सरदारशहर

गए। मंत्रीमुनि से गंभीर मंत्रणा की। उनका मानस बदला और दिल्ली चातुर्मास की संभावना पैदा की। दिल्ली शहर होने के कारण वहां अनेक प्रकार की दुविधाएं सामने दिखाई दे रही थीं। श्रद्धा के घर बहुत कम थे। फिर भी अणुव्रत के कार्य को विस्तार देने के लिए वह स्थान सर्वाधिक उपयुक्त था।

१३५. दिल्ली के श्रावकों को यह स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी कि तेरापंथ के आचार्यों का चातुर्मास दिल्ली में हो सकता है। उनकी ओर से कोई प्रार्थना भी नहीं थी। पर वहां आचार्यवर के चातुर्मास्य की संभावना से उन लोगों को परिचित कराया गया तो उनका मन बांसों उछलने लगा। वे अविलम्ब दिल्ली से चलकर पंजाब पहुंचे। उन्होंने और दिल्ली चातुर्मास के लिए आग्रह भरी प्रार्थना की। उन श्रावकों में लाला गिरधारी, लाला मंगतराय, मोहनलालजी कठोतिया आदि प्रमुख थे।

१३६. पंजाब के वन्नौर गांव में आचार्यश्री का पदार्पण हुआ। कुछ श्रावक यात्रा में साथ थे। भिक्षा का समय हुआ। साधु-साध्वियों ने गांव की गोचरी की और सहयात्री श्रावकों की भी गोचरी की। दोनों ओर से आया आहार मिश्रित हो गया। बाद में पता चला, गांव के किसी घर में साधुओं के लिए आहार बनाया गया था। वह आहार आधाकर्मी होता है, जो साधु के लिए बनाया जाता है। साधु उसे किसी भी परिस्थिति में काम में नहीं ले सकता। उस आहार का दूसरे घरों से लाए आहार में मिश्रण होने के कारण उस दिन पूरा का पूरा आहार परिष्ठापित किया गया।

१३७. सूफी संत फरीद को प्यास लगी। उसने बाल्टी-रस्सा लिया और कुएं पर पहुंचा। रस्सी बांधकर बाल्टी को कुएं में डाला, पर पानी नहीं आया। फरीद शांत होकर वहीं बैठ गया। थोड़ी देर बाद वहां हिरण आए। वे सीधे कुएं पर गये और उसके अन्दर झांका। पानी ऊपर आ गया। हिरणों के झुण्ड ने मस्ती से पानी पिया और चला गया। फरीद यह सब देखकर बोला—खुदा! यह क्या पक्षपात ? मैं, तुम्हारा भक्त, प्यासा बैठा हूं और ये हिरण पानी पीकर तृप्त होकर चले गये। उस समय आकाशवाणी हुई— हिरणों को मुझ पर विश्वास था इसलिए ये अपने साथ साधन लेकर नहीं आए। तुम

चिन्ता स्वय कर रहे हो, अपने साथ बाल्टी और रस्सा लेकर आए हो, फिर मै पानी क्यों पिलाऊं ?

१३८. डा० राजेन्द्रप्रसादजी आचार्यश्री के जयपुर चातुर्मास में सम्पर्क मे आये। प्रथम परिचय में ही वे इतने आत्मीय बन गए कि अणुव्रत के कार्यक्रम को व्यापक और सफल बनाने की दृष्टि से चिन्तन करने लगे। आचार्यश्री के दिल्ली प्रवास में उन्होंने कहा— आपको पण्डित नेहरू से अवश्य मिलना चाहिए। उससे अणुव्रत को बल मिलेगा। आचार्यश्री बोले —हमने सुना है कि पंडितजी की धर्म और धार्मिकों में रुचि नहीं है। साधु-संन्यासी के नाम से ही उन्हें एलर्जी है। राजेन्द्र बाबू ने कहा— जैसा आप सोच रहे है, वैसी बात नहीं है। उनसे मिलना उपयोगी रहेगा।

आचार्यवर ने यह दायित्व राजेन्द्रबाबू को देते हुए कहा— फिर तो माध्यम आपको ही बनना होगा। राजेन्द्रबाबू ने आचार्यवर के निर्देश को स्वीकार कर पण्डित नेहरू को एक पत्र लिखा। पण्डितजी ने आचार्यश्री से मिलने की इच्छा व्यक्त की। मिलन का यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री के निवास-स्थान पर ही हुआ। पहला परिचय इतना घनिष्ठ हुआ कि पण्डित जी के बारे मे आचार्यश्री की धारणा ही बदल गयी। आपको अनुभव हुआ कि पण्डितजी के विचारों में धार्मिकता की पुट है। उन्होंने अणुव्रत के कार्यक्रम मे रस लिया और आचार्यश्री के साथ सम्पर्क बनाए रखने के लिए गुलजारी लाल नन्दा को नियुक्त कर दिया। समय-समय पर वे स्वयं भी मिलते रहे। संयोग की बात है कि पंडित नेहरू के स्वर्गवास के समय आचार्यश्री दिल्ली में प्रवास कर रहे थे। स्वर्गवास का संवाद मिलते ही आप उनके निवास-स्थान पर पधारे और इन्दिरा गांधी को मंगल पाठ सुनाया।

१३९. दिल्ली में अणुव्रत का प्रथम अधिवेशन हुआ। अमेरिका के मुख्य पत्रों—लाइफ और टाइम—में अणुव्रत के बारे में विस्तृत समाचार प्रकाशित हुए। उससे पत्रकार जगत में हलचल मच गई। आचार्यश्री जिस रूप में एक नैतिक अभियान चला रहे थे, संभवतःदूसरा ऐसा कोई अभियान नहीं था। इसी कारण उन पत्रों में अणुव्रत को इतना स्थान मिला। गांधीजी का एक पत्र था— 'हरिजन सेवक' उसका काम मशुवाला देखते थे। उन्होंने

अणुव्रत के बारे में लम्बी चौड़ी टिप्पणी लिखकर सबका ध्यान आकृष्ट कर लिया।

१४०. श्रीमन्नारायण अग्रवाल पण्डित नेहरू के निकटस्थ व्यक्तियों में से थे। वे उस समय मंत्री भी थे। आचार्यश्री के दिल्ली प्रवास का संवाद सुनकर वे मिलने आये और बोले— आचार्यश्री ! मेरे मन पर आपका प्रभाव पड़ा। उसका एक कारण है, अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम। बड़ी बातें करने वाले बहुत लोग हैं। आपने व्रत के साथ अणु शब्द जोड़कर काम करना शुरू किया। यह बडी बात है। 'श्रीमन्नारायण स्वयं अणुव्रती बने और अणुव्रत के कार्य में सहयोगी बने रहे।

श्रीमन्नारायण की धर्मपत्नी श्रीमती मदालसा बहन भी आचार्यश्री के प्रति बहुत श्रद्धाशील थी। अणुव्रत के नियम और सिद्धान्तों को समझकर उसने कहा— आपने अणुव्रत क्या चलाया है, महिला समाज के विकास हेतु रास्ता खोल दिया है।

जिस समय आचार्यश्री अणुव्रत मिशन को लेकर पदयात्रा कर रहे थे, उस समय विनोबाजी भूदान यात्रा कर रहे थे। दोनो महापुरुषों का राजघाट में मिलन हुआ। दोनो संत वहीं आमने-सामने बैठ गए और लगभग एक घंटा तक चिन्तन किया। सैकड़ों व्यक्ति दोनों महापुरुषों के मध्य हुई वार्ता की निष्पत्ति जानने को उत्सुक थे। विनोबाजी बोले— जैन लोगों ने अहिंसा पर बल अधिक दिया और सत्य पर कम। आपने अणुव्रत के माध्यम से सत्य को अहिंसा के बराबर दर्जा देकर अच्छा किया है। उन्होंने आगे कहा— आप पदयात्रा करते हैं। हमने भी जैनों की पदयात्रा शुरू कर दी है।

आचार्यश्री बोले— आपने ऐसा करके हमारे लिए सुविधा कर दी है। कई लोग कहते हैं कि पदयात्रा का कोई औचित्य नहीं है। उन्हें अब कहा जा सकता है कि हम क्या विनोबाजी भी पदयात्रा करते हैं।

वार्तालाप में उभयपक्षी कार्यक्रमों के बारे मे चिन्तन चला, तो विनोबाजी ने कहा— हमारे पास कार्यकर्ता बहुत हैं, पर संन्यासी नहीं हैं। आपके पास संन्यासी बहुत हैं, कार्यकर्ताओं की कमी है। यदि दोनों आन्दोलन मिलकर काम करें तो अच्छा परिणाम आ सकता है।

दक्षिण यात्रा के मध्य आचार्यश्री सेवाग्राम, गोपुरी, वर्धा और पवनार

पधारे। सेवाग्राम में आचार्यश्री जिस दिन पधारे विनोबाजी लगभग दो किलोमीटर सामने आए और हाथ पकड़कर आचार्यश्री के साथ-साथ चले। आचार्यवर वहां दो दिन रहे। दो दिनों में कई बार लम्बी चर्चा चली। एक प्रसंग में विनोबा जी ने कहा—' जीने की कला सब सिखाते हैं, पर मरने की कला जैनधर्म में है। मेरी इच्छा है कि मैं इस विधि से मृत्यु का वरण करूं।' उन्होंने जैसा कहा, अंतिम समय में अनशनपूर्वक समाधि मरण का वरण किया।

१४१. काकाकालेलकर आचार्यश्री से पहली बार दिल्ली में मिले। उन्होंने आते ही कहा— आचार्यश्री ; मैं आपके पास क्यों आया हूं— आप को पता है क्या ? आपके बारे में मेरे पास ढेर सारा साहित्य पहुंचा। वह पूरा साहित्य विरोध में लिखा हुआ था। उस साहित्य को देखकर मैंने सोचा— जिस व्यक्ति का इतना विरोध होता है, वहां कुछ न कुछ ज्योति अवश्य है। यही सोचकर मैं आपके पास आया हूं।

बौद्ध भिक्षु भदंत आनंद कौशल्यायन पूरी सद्भावना के साथ आचार्यश्री से मिलने आए। जैन और बौद्ध भिक्षुओं की चर्या के विषय में मुक्त चर्चा चली। उस प्रसंग मे भदंतजी बोले—जैन साधुओं की भिक्षाचरी अच्छी है। उनके लिए कोई तैयारी नहीं होती। पर गृहस्थ अपने लिए भोजन बनाता है, उसमें हिंसा तो होती ही है। हिंसा से निष्पन्न भोजन को करने वाला उसका भागीदार कैसे नहीं होगा ?

आचार्यवर ने कहा— जैन तीर्थंकरों ने हिंसाजन्य प्रवृत्ति करने, करवाने और अनुमोदन करने मे हिंसा की भागीदारी को स्वीकृत किया है। पर हिंसाजन्य भोजन का उपयोग करने मात्र से हिंसा की भागीदारी नहीं मानी।

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि के रूप में ख्यातनामा हैं। उन्होंने भारतभारती में भारत की दयनीय स्थिति की जिस कौशल के साथ चर्चा की है, पाठक को प्रभावित किए बिना नहीं रहती। वे आचार्यवर से मिले। देश की वर्तमान परिस्थितियों पर चर्चा चली। आचार्यवर ने उनको अणुव्रत के बारे में विस्तार से बताया। गुप्तजी ने कहा— अणुव्रत आज के युग की उपलब्धि है।

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। उनका

हिन्दी और संस्कृत भाषा का प्रेम अद्भुत था। उनकी प्रामाणिकता और सैद्धान्तिक दृढता प्रसिद्ध थी। वे इलाहाबाद में आचार्यश्री से मिले। उनका हार्दिक भक्तिभाव उल्लेखनीय रहा।

आचार्यश्री के दिल्ली प्रवास में रामधारी सिंह दिनकर, गोविन्द बल्लभपंत, सुमित्रानंदन पंत भी संपर्क में आए। इनके साथ भी आचार्यवर की अच्छी चर्चा हुई।

अनंतशयनम् आयंगर दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने कांस्टीट्यूशनल क्लब में आचार्यश्री के सान्निध्य में एक संगोष्ठी बुलाई। उसमें अच्छी संख्या में विधायकों की उपस्थिति थी। डा० नथमलजी टांटिया के गुरु जैनदर्शन के प्रकांड विद्वान पंडित सतकौड़ी मुखर्जी ने आचार्यश्री का परिचय दिया। आचार्यश्री ने अपने वक्तव्य में तेरापंथ की व्याख्या की। उसे सुनकर श्री आयंगर खड़े हुए और बोले 'दाई पाथ' नहीं, माई पाथ" यह तेरा पंथ नहीं, मेरा पंथ है।

यशपाल जैन सस्ता साहित्य मंडल के संचालकों में एक हैं। वे सुलझे हुए साहित्यकार हैं। वे सम्पर्क में आए, अणुव्रत से जुड़े और अणुव्रत प्रवक्ता बन गए। आचार्यश्री के प्रति उनके मन में सहज श्रद्धा है। दिल्ली में उनके साथ सम्बन्ध-सूत्र जुड़ा, वह रेशम की गांठ बन कर घुलता रहा। आज भी वे प्रतिवर्ष आचार्यवर के दर्शन करने आते रहते हैं।

यशपाल कामरेड आचार्यश्री की यू० पी० यात्रा के समय लखनऊ में मिले। कुछ अणुव्रत कार्यकर्त्ता उन्हें आचार्यश्री के आगमन की सूचना देने गए तो उन्होंने कहा— मुझे यशपाल जैन समझ कर तो आप यहां नहीं आए हैं ? कार्यकर्त्ता बोले— हम कामरेड यशपाल के पास आए हैं। प्रथम परिचय में ही वे आचार्यश्री से इतने प्रभावित हुए कि अपना एक उपन्यास 'झूठा सच' आचार्यश्री को भेंट करने धवल समारोह के अवसर पर बीदासर आए।

दिल्ली की चर्चा के बीच कामरेड यशपाल का उल्लेख नाम साम्य के आधार पर किया गया है।

दिल्ली के उस प्रथम चातुर्मास्य में और भी अनेक विशिष्ट व्यक्ति मिले। उनमें सुचेता कृपलानी, विजयलक्ष्मी पंडित, सावित्री निगम, सुशीला नैय्यर, डा० गोपालन आदि व्यक्तियों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१४२. वि० सं २००७ का मर्यादामहोत्सव भी वानी था। उस समय मारवाड़, थली प्रदेश से आने वाले सन्तों के साथ मुनि नथमलजी बागोर द्वारा लिखित एक कापी प्राप्त हुई। उसमे अनेक प्रकार के संघीय प्रश्न आरोपित थे। उस समय आचार्यवर ने उस कॉपी को देखा, पढ़ा और रख दिया। वि० सं० २००८ का मर्यादाभहोत्सव सरदारशहर था। उस समय मुनि नथमलजी मिले। आचार्यश्री ने उस कापी में लिखे प्रश्नों के बारे में उनसे बात की। एक के बाद एक पृष्ठ खुलते चले गये। आचार्यश्री ने अनुभव किया जो प्रश्न कुछ साधुओं के मन में भीतर ही भीतर घुल रहे हैं। उनका स्पष्टीकरण नहीं हुआ तो वातावरण स्वस्थ नहीं रह पाएगा। क्योंकि सारी बातें छन-छन कर छोटे-बड़े सभी साधुओं के पास पहुंचेंगी और वे संदिग्ध बन जायेंगे। प्रश्न सर्वालय है अतः चर्चा भी सर्वालय होनी चाहिए। जिन संतों की ओर से प्रश्न आए थे— वे चर्चा के लिए उतावले हो रहे थे। आचार्यश्री ने कहा—अभी महोत्सव का समय है। व्यस्तता अधिक है। इसीलिए बाद में देखा जाएगा। संतों ने सोचा—आचार्यश्री टालने की बात कर रहे है। आचार्यश्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा— आप लोग संदिग्ध न रहें। महोत्सव का कार्य सम्पन्न कर मै खुली चर्चा बुलाने के लिए तैयार हूं। जब तक चर्चा पूरी नहीं होगी, संतों को विहार नहीं कराया जाएगा।

मंत्री मुनि को खुली चर्चा की बात पसंद नहीं आई। उन्होंने आचार्यवर से निवेदन किया—आचार्यो के सामने इतना खुलापन ठीक नहीं रहेगा। आचार्यवर ने मंत्रीमुनि के चिंतन को वहुमान देते हुए कहा— आपकी सोच सही है, पर मैं इन प्रश्नो को स्पष्ट करवाना अधिक उचित समझता हूं।

मर्यादा-महोत्सव सम्पन्न हुआ। पश्चिम रात्रि में आचार्यश्री ने सब संतों को आमंत्रित कर खुली चर्चा करने की अनुमति दे दी। लगभग एक सप्ताह तक मुक्त चर्चा चली। भारतीय संसद की-सी स्थिति बनी। एक-एक प्रश्न का सटीक उत्तर दिया गया। प्रतिप्रश्नों को अवकाश नहीं रहा। फिर भी मानसिकता नहीं बदली। आचार्यश्री का लक्ष्य किसी को निरुत्तर करना नहीं, मन को समाहित करना था। पर नियति को यह मान्य नहीं था। उस समय बात वहीं समाप्त हो गई। किंतु आचार्यवर समझते थे कि परिस्थिति कभी भी अवांछनीय मोड़ ले सकती है।

१४३. वि० सं० २०१० का मर्यादा-महोत्सव राणावास था। मर्यादा-महोत्सव के दिन प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्रकुमार आदि आगंतुक नए व्यक्तियों के लिए माइक की व्यवस्था की गई। इस पर केशरीचंद जी सुराना अड़ गए। उन्होंने माइक के विरोध में आवाज उठाई। उनके मन में कुछ था या नहीं, कहा नहीं जा सकता। पर उनको परदे के पीछे से प्रेरित किया गया—"तुम तो धर्मसंघ के वफादार श्रावक हो, तुम्हारे सामने माइक का उपयोग हो रहा है और तुम कुछ नहीं बोलते ? तुम्हें ज्ञात होगा, राजनगर के श्रावकों ने क्या किया था ?"

केशरीचंद जी का अपना कोई चिंतन था नहीं। वे बहक गए। लोगों ने उनको समझाना चाहा, पर वे किसी की बात सुनने को तैयार नहीं थे। स्थिति यहां तक बनी कि वे बीच में सो गए। आखिर उस दिन आगंतुक लोगों में से कोई भी माइक पर नहीं बोल सका। जब उनका आवेश शांत हुआ, उन्हें अपनी भूल का अनुभव हुआ। तब उन्होंने बहुत पश्चात्ताप किया।

१४४. मुनि चम्पालालजी बीदासर के दूगड़ परिवार से संबंधित थे। वे दूगड चांचिया कहलाते हैं। इस कारण उनके पीछे भी चांचिया शब्द जुड़ गया। राणावास मर्यादामहोत्सव के अवसर पर वे अपने सहयोगी साधुओं के साथ उपस्थित हुए। इनका सम्बन्ध संघ के उन साधुओं से था जो विरोधी खेमे में थे। पर वे सामने नहीं आए थे। उस वर्ष चातुर्मास्य में उनसे गलती हो गई। आवेश में उन्होंने ऐसे शब्दों का प्रयोग कर दिया जो एक साधु के लिए उचित नहीं था। श्रावक समाज में इस बात की काफी चर्चा रही। मर्यादा-महोत्सव पर साधु-साध्वियों की अन्तरंग संभाल के क्रम में आचार्यश्री ने उनके प्रमाद की जानकारी की तो लगा कि बात में कुछ तथ्य है। आचार्यश्री ने उनसे कहा—आप अग्रगण्य साधु हैं। आपको यह होश भी नहीं रहा कि साधु को क्या बोलना चाहिए, क्या नहीं बोलना चाहिए ? आपने अग्रगण्य पद की गरिमा को कम कर दिया। उनकी इस प्रवृत्ति पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करते हुए उनका सिंघाडा समाप्त कर दिया। यह उन्हें सुखकर नहीं लगा। वे सेवाभावी मुनि चम्पालाल जी के पास अपनी सिफारिश कराने गए। जब उन्हें यह अहसास हुआ कि उनको पुनः अग्रगण्य का दायित्व नहीं सौंपा जाएगा तब वे धर्मसंघ से अलग हो गए।

१४५. किसी समय बम्बई में मुम्बादेवी का तालाब था। उसी के नाम से बम्बई का नामकरण हुआ। वह तालाब अब सूख गया है। वि० सं० २०११ का मर्यादा-महोत्सव उसी स्थान पर होने वाला था। मर्यादा-महोत्सव के लिए पण्डाल बनकर तैयार हो गया। पता नहीं क्या हुआ, दो दिन पहले रात्रि के समय पण्डाल जल गया। अब इतना बडा आयोजन किस स्थान पर हो ? इस प्रश्न पर लोगों के कई मत हो गए। कुछ निर्णय नहीं हो पा रहा था। उस समय सेवाभावी जी ने कहा—मर्यादा-महोत्सव का आयोजन पूर्व निर्धारित स्थान पर ही होना चाहिए। उनके इस निर्णायक परामर्श से श्रावक समाज में उत्साह का संचार हो गया। उन्होंने दो दिनों के भीतर ही वहां पुनः नया पण्डाल खड़ा कर दिया। पूरी भव्यता के साथ मर्यादा-महोत्सव का आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ।

१४६. आचार्यश्री ने व्यापक दृष्टि से लोकहित में जो काम किए हैं, उनमे 'अणुव्रत' एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसने राष्ट्रीय स्तर के अनेक व्यक्तित्वों को प्रभावित किया है। वि० सं० २०११ में आपका चातुर्मास्य बम्बई (सिक्कानगर) था। उस समय कई नए व्यक्ति सम्पर्क में आए। उनमें नेशनल चर्च के पादरी फादर विलियम का नाम उल्लेखनीय है। उस समय बम्बई मे अणुव्रती कार्यकर्ताओं का विशेष कार्यक्रम था। देश भर से कार्यकर्ता वहां आए थे। उनमें श्री गजानन जी सरावगी (कलकत्ता), भैरूंदान जी कुचेरिया (दोंडायचा), स्वरूपचन्द जी चोरड़िया (भुसावल), उत्तमचन्द जी सेठिया (जालना), रमणीक भाई, सुन्दर भाई (बम्बई) आदि कार्यकर्ता वहां के प्रमुख धर्मस्थानों में जाने के उद्देश्य से एकत्रित हुए। मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारा होते हुए फादर विलियम के चर्च में पहुंचे। अचानक इतने मारवाड़ी लोगों को एक साथ चर्च में देख फादर कुछ गम्भीर हो गए। फादर ने पूछा—आप लोग कहां से आए है ?

अणुव्रती कार्यकर्ता—बम्बई से।

फादर—क्यों ?

अणुव्रती—आपसे बाइबिल की शिक्षाएं सुनने के लिए।

फादर—किसकी प्रेरणा से आए हैं ?

अणुव्रती—हमारे गुरु है अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी। उन्होने

हमको प्रेरणा दी है।

फादर—ऐसे धर्मगुरु मैंने कहीं नहीं देखे, जो अपने अनुयायियों को दूसरे धर्मगुरुओं के पास भेजते हों। वे कहां रहते हैं ? क्या करते हैं ?

अणुव्रती कार्यकर्त्ताओं ने फादर के सब प्रश्नों के उत्तर दिए। फादर प्रभावित हुए। उन्होंने उन लोगों को आदर के साथ बिठाकर कुछ उपदेश दिया। अन्त में वे बोले—'आचार्य तुलसी जी से मैं मिल सकता हूं क्या ? वे लोग बोले—'उनके दरवाजे सबके लिए खुले हैं।' फादर ने पूछा—मैं कब चलूं ? वे लोग बोले—आप अभी हमारे साथ चलें। हम यहां से सीधे वहीं जा रहे हैं।

फादर विलियम को साथ लेकर अणुव्रती कार्यकर्त्ता आचार्यश्री के पास पहुंचे। आचार्यश्री के सामने पहुंचकर फादर कुछ क्षणों तक अनिमिष नयनों से देखते रहे। प्रथम दर्शन में ही आत्मीय सम्बन्ध जुड़ गया। फादर ने अणुव्रत के बारे में पूछा। आचार्यश्री ने विस्तार से बताया। फादर हिन्दी समझते थे। अणुव्रत की जानकारी पाकर खुश हुए। आचार्यश्री ने पूछा—'फादर ! आप अणुव्रत के नियमों को स्वीकार कर सकते हैं क्या ?' फादर बोले—आचार्य जी ! अणुव्रत असाम्प्रदायिक है, इसलिए सबके लिए ग्राह्य है। मैं इसके नियमों को स्वीकार कर सकता हूं। पर हमारे यहां शराब पीना और मांस खाना वर्जित नहीं है। आचार्यश्री ने कहा—हम आपके धार्मिक सिद्धान्तों पर ठेस पहुंचाना नहीं चाहते। क्या आपके मत मे शराब-मांस छोड़ने को दोष माना गया है ? फादर ने गम्भीरता से चिन्तन किया और शराब-मांस का त्याग कर पक्के अणुव्रती बन गए। उसके बाद वे आचार्यश्री को अपना मार्गदर्शक मानने लगे और अणुव्रत को आदर्श। आचार्यश्री का एक चित्र सदा अपने पास रखते। जहां कहीं जाते, अणुव्रत के बारे में प्रभावशाली वक्तव्य देते।

एक बार वे रूस गए। ठण्डे प्रदेश में उनके परिचितों और मित्रों ने शराब से उनकी मनुहार की। उन्होंने आचार्यश्री का चित्र उन्हें दिखाकर कहा—देखो, ये गुरुजी हैं। मैंने इनके पास शराब-मांस छोड़ने का व्रत लिया है। मैं अणुव्रत-मूवमेंट में सम्मिलित हो गया हूं। यह एक असाम्प्रदायिक इन्सानियत का आन्दोलन है। यहां कितनी ही ठण्ड क्यों न हो, मैं ड्रिंक नहीं करूंगा।

१४७. एम० कृष्णमूर्त्ति अपने समय के ख्यातनामा साहित्यकार थे।

युवाचार्यश्री की पुस्तक विजय यात्रा का अंग्रेजी अनुवाद—'मार्च टू विक्ट्री' उन्हीं का किया हुआ है। वे आचार्यश्री के सम्पर्क में आए। अणुव्रत से परिचित हुए। अणुव्रत की पुस्तिका और आचार्यश्री के कई वक्तव्यों का उन्होंने अंग्रेजी में अनुवाद किया। वे स्वयं भी अंग्रेजी के प्रखर वक्ता थे। अणुव्रत की दृष्टि से जयचन्दलालजी दफ्तरी और सुगनचन्द जी आंचलिया के साथ उनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। उन्होंने उनके साथ अणुव्रत के सम्बन्ध में अच्छी चर्चा की। उनकी पुत्री यामिनी देश की प्रसिद्ध नर्तकी है। वह भी अपने पिता के साथ आचार्यश्री के दर्शन करने आई थी।

एक बार श्री कृष्णमूर्ति और जामनगर आयुर्वेद के प्रोफेसर धन्वन्तरि आचार्यश्री के दर्शन करने सरदारशहर आए। आचार्यश्री सरदारशहर से प्रस्थान कर उदासर पधारे। वहां वे आचार्यश्री की उपासना में बैठे थे। उन्होंने कहा—'आचार्यश्री ! हमारी एक प्रार्थना है, हम आपके दर्शन करना चाहते हैं।' दर्शन तो उन्होंने कर ही लिए थे। अपनी इच्छा को स्पष्ट करते हुए उन्होंने फिर निवेदन किया—'हम आपका अनावृत चेहरा देखना चाहते हैं। मुखवस्त्रिका से चेहरा ढका रहता है। आपके पूरे व्यक्तित्व का साक्षात्कार कर हमें प्रसन्नता होगी।' आचार्यश्री ने मुखवस्त्रिका हटा ली। सम्पूर्ण अनावृत चेहरे को देख उन्हें अनिर्वचनीय सन्तोष हुआ।

एक बार वैद्यप्रवर लच्छीराम जी के शिष्य पंडित नन्दकिशोर जी ने आचार्यश्री के चेहरे, विशेष रूप से आंखो और कानों की बनावट की ओर इंगित करते हुए कहा—'आपकी आकृति देखकर ऐसा लगता है मानो मैं भगवान् बुद्ध की प्रतिमा देख रहा हूं।'

बम्बई में आयोजित अणुव्रत अधिवेशन में महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री मोरारजी भाई उपस्थित थे। उस समय फादर विलियम और कृष्णमूर्ति ने क्रमशः हिन्दी और अंग्रेजी में जो वक्तव्य दिए, बहुत प्रभावकारी रहे। वहां बम्बई कार्पोरेशन के मेयर श्री डाह्याभाई पटेल (वल्लभ भाई के पुत्र) भी थे। वे उनके वक्तव्यों को सुन अणुव्रत से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अणुव्रती कार्यकर्त्ताओं को अपनी ओर से पार्टी दी।

१४८. महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष बाला साहब भारदे मुनि राकेशकुमार जी के बम्बई चातुर्मास्य में उनके सम्पर्क में आए। उन्होने अणुव्रत

को गंभीरता से समझा। आचार्यश्री के बम्बई-प्रवास में वे समय-समय पर अणुव्रत के कार्यक्रमों में बराबर आते रहे। अभी वे अखिल भारतीय खादी एवं ग्रामोद्योग मंडल के अध्यक्ष हैं।

महाराष्ट्र राज्यसभा के अध्यक्ष श्री वी० एस० पागे की अणुव्रत के प्रति गहरी निष्ठा थी। उनका जीवन अणुव्रत के आदर्शों के अनुरूप था। उन्होंने आचार्यवर के बम्बई-प्रवास में जैन आगमों का विमोचन किया था। वे आज इस संसार में होते तो अणुव्रत के बढ़ते हुए प्रभाव से उन्हें बहुत सन्तोष होता।

बम्बई में और भी अनेक विशिष्ट व्यक्ति आचार्यश्री के सम्पर्क में आए। धर्मयुग के सम्पादक धर्मवीर भारती आदि अनेक पत्रकार परिचित हुए। साहित्यकार, राजनेता, समाजनता और शिक्षाशास्त्री मिले। किन-किनका नामोल्लेख किया जाए। आचार्यश्री के सम्पर्क में जितने लोग आते, उनमें से अधिकांश व्यक्ति सेवाभावीजी से भी मिलते। उनकी सरलता और कोमलता का आगन्तुक लोगों पर गहरा प्रभाव होता।

१४६. आचार्यश्री के सम्पर्क से प्रभावित होने वाले व्यक्तियों में मोरारजी भाई देसाई भी एक हैं। वे उस समय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे। वे निर्भीक विचारों के व्यक्ति हैं। जिस विचार या बात को वे सही मानकर पकड़ लेते हैं, उसे झटपट छोड़ते नहीं हैं। जब तक उनको कोई बात ठीक नहीं लगती, वे उसका समर्थन नहीं करते। आचार्यश्री के साथ उनके जीवन से जुड़े हुए कई प्रसंग हैं। कुछ प्रसंगों का उल्लेख यहां किया जा रहा है—

एक बार महाराष्ट्र विधानसभा में नाबालिग दीक्षा के विरोध में प्रस्ताव आया। तेरापन्थ समाज के अग्रणी व्यक्ति उस प्रस्ताव का विरोध कर रहे थे। मोरारजी भाई ने उस विषय में रुचि ली। उन्होंने उस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा—'यह धर्म का मामला है। इसमें कानून को बीच में नहीं लाना चाहिए।' मोरारजी भाई निमित्त बने या और कोई, वह प्रस्ताव पारित नहीं हो सका।

आचार्यश्री का दिल्ली में प्रवास था। वहां मोरारजी भाई मिले। उन्होने निवेदन किया—'आचार्यजी ! पंडित नेहरू से आपका सम्पर्क है। आप उन्हे आध्यात्मिकता की ओर मोड़ सकें तो बहुत अच्छा होगा।' आचार्यश्री ने

कहा—मोरारजी भाई ! आप इस दिशा में प्रयत्न क्यों नहीं करते ? मोरारजी भाई बोले—'हम स्वयं सरकार में हैं। हम ऐसा नहीं कर सकते। आपको करना चाहिए।' इससे पहले डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने भी आचार्यश्री को ऐसा सुझाव दिया था। आचार्यश्री अपने मिलन-प्रसंगों में अणुव्रत, धर्म और अध्यात्म की चर्चा करते ही थे।

कुछ समय बाद मोरारजी भाई पुनः मिले। उन्होंने कहा—पंडित नेहरू पहले कभी अध्यात्म का नाम ही नहीं लेते थे। आजकल उनके भाषणों में अध्यात्म का प्रभाव परिलक्षित होता है। लगता है, आपका प्रयत्न सफल हो गया है।

मोरारजी भाई प्रधानमंत्री थे। आचार्यश्री उनके निवासस्थान पर पधारे। उनके अनुरोध पर आपने रात्रिकालीन प्रवास वहीं पर किया। रात्रि में लम्बे समय तक कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर मुक्त चर्चा चली। दूसरे दिन प्रातःकाल उनके निवेदन पर आचार्यश्री ने उनके हाथ से भिक्षा ग्रहण की।

मोरारजी भाई अणुव्रत दर्शन से बहुत प्रभावित हैं। उनकी अनेक दृष्टियां अणुव्रत या आचार्यश्री के अनुकूल हैं। उनको सन् १९८६ में जैन विश्व भारती, लाडनूं में अहिंसा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

१५०. सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण आचार्यश्री के बहुपरिचित लोगों में से एक थे। समाजभूषण श्रावक प्रभुदयालजी डाबड़ीवाला उनके घनिष्ठ मित्र थे। उनके माध्यम से वे यहां तक पहुंचे। अणुव्रत के साथ वे बहुत निकटता से जुड़े। बम्बई चातुर्मास्य में अणुव्रत को लेकर आयोजित त्रिदिवसीय संगोष्ठियों में उनकी बराबर संभागिता रही। प्रारंभ में अणुव्रत के नियमों की संख्या बहुत थी। उस समय नियमावली में परिष्कार किया जा रहा था। नियमों के आधार पर अणुव्रती की तीन श्रेणियां निर्धारित की गईं— प्रवेशक अणुव्रती, अणुव्रती और विशिष्ट अणुव्रती।

जयप्रकाश बाबू ने अणुव्रत के सन्दर्भ में अपरिग्रह के बारे में चर्चा शुरू की। आचार्यश्री ने उनसे पूछा—एक विशिष्ट अणुव्रती के लिए परिग्रह की सीमा क्या हो सकती है ? लम्बी चर्चा के बाद उन्होंने कहा—'एक छोटे परिवार को ध्यान में रखकर परिग्रह की सीमा एक लाख तक रखी जा सकती है।' यह बहुत पुरानी बात है। उसके बाद महंगाई बढ़ती जा रही है और रुपये का

अवमूल्यन होता जा रहा है। इसलिए सीमा-निर्धारण में भी कठिनाई हो रही है। फिर भी इतना कहा जा सकता है कि अणुव्रत तथा अन्य विषयों पर भी जे॰ पी॰'के साथ आचार्यश्री का चिन्तन वराबर चलता रहता था।

१५१. वि॰ सं॰ २०११ की फाल्गुनी चातुर्मासी आचार्यवर ने नारायण गांव में की। वहां से प्रस्थान कर आप मंचर पधारे। मंचर एक छोटा-सा गांव है। वहां एक जैन परिवार था। परिवार के मुखिया के अनुरोध पर आचार्यवर ने उन्हीं के घर प्रवास किया। सायंकाल का समय था। आचार्यश्री आहार के बाद पत्र-पत्रिकाओं का अवलोकन कर रहे थे। आपके हाथ में बौद्धों का एक पत्र था—धर्मदूत। उसमें बौद्ध पिटकों के सम्पादन व प्रकाशन की चर्चा थी। उसे पढ़ते ही आपके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा—बौद्ध साहित्य पर इतना काम हो चुका है फिर भी पिटकों के सम्पादन की इतनी बड़ी योजना है। जैन आगमों पर अब तक भी वैज्ञानिक दृष्टि से कोई काम क्यों नहीं हुआ ? विचार ने दूसरा मोड़ लिया—इस सन्दर्भ में हम औरों से अपेक्षा करते हैं। हमने भी काम करने की वात कव सोची ? चिन्तन आगे वढ़ा। आपने तत्काल मुनि नथमल जी को अपने पास बुलाया और धर्मदूत का हवाला देते हुए कहा—क्या जैन साहित्य पर काम नहीं होना चाहिए ?

मुनि नथमल जी—जैन आगमों का संपादन बहुत आवश्यक है।

आचार्यश्री—क्या इस कार्य को हम हाथ में ले सकते हैं ?

मुनि नथमलजी—क्यों नहीं ?

आचार्यश्री—केवल वात करने से काम नहीं होगा ?

मुनि नथमलजी—आपकी इच्छा होगी तो काम अवश्य होगा।

आचार्यश्री— इस प्रश्न पर भी अच्छी तरह से विचार कर लो— यह काम वेतनभोगी पण्डितों से करवाने के पक्ष में मैं नहीं हूं।

मुनि नथमलजी की मनोवृत्ति है कि आचार्यश्री उन्हें किसी भी काम के लिए निर्देश दें, वे कभी मना नहीं करते। आगम साहित्य पर तव तक उन्होंने कोई काम नहीं किया था। अतः वैसा कोई अनुभव उनको नहीं था। फिर भी वे आगम सम्पादन के काम के लिए तैयार हो गए। सायंकालीन वन्दना के समय सब संत उपस्थित हुए। आचार्यवर ने उनके सामने आगम-सम्पादन की दृष्टि से अपने सुनिश्चित अभिमत को अभिव्यक्त कर दिया। सब सन्तों

ने उसके प्रति उत्साह दिखाया। वहां से विहार करके आचार्यश्री औरंगाबाद पधारे और महावीर जयन्ती के दिन आगम-सम्पादन के कार्य की विधिवत घोषणा कर दी।

१५२. आचार्यश्री अपनी खानदेश की यात्रा में अजन्ता-एलोरा आदि ऐतिहासिक गुफाओं वाले स्थानों पर पधारे। अजन्ता की गुफा में रात्रिकालीन प्रवास था। लोगों की भीड कम थी। चन्द्रमा का अच्छा प्रकाश था। आपने रात्रि के समय केशलोच कराने की इच्छा प्रकट की। सेवाभावी जी तत्काल सहमत हो गए और रात्रि में आचार्यश्री का केशलोच कर एक ऐतिहासिक दस्तावेज बना लिया।

१५३. खानदेश यात्रा के मध्य आचार्यवर जालना पधारे। वहां खानदेश के अनेक क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे ही। दक्षिण (तमिलनाडु, कर्नाटक) से लगभग ५०० व्यक्ति आ गए। खानदेश के श्रावक चाहते थे आचार्यश्री का अगला चातुर्मास्य वहीं हो और दक्षिणवासी लोगों का आग्रह था कि वहां से दक्षिण यात्रा होनी चाहिए। दक्षिण के लोगों ने सेवाभावीजी को प्रभावित कर लिया। उनका आग्रह रहा कि हम दक्षिण के किनारे तक आ गए हैं, अब दक्षिण छोड़ कर नहीं जाना चाहिए। एक बार तो पूरा वातावरण दक्षिण के पक्ष में हो गया। इससे खानदेश के भैरूदान जी कुचेरिया (दोंडाइचा), स्वरूपचन्द जी चौरड़िया, उत्तमचन्द जी सेठिया (जालना) आदि-आदि मजबूत श्रावक भी हताश हो गए। उधर दक्षिण के लोग नई उमंग से भर गए। आचार्यश्री ने सेवाभावीजी का मन बदलने का प्रयास किया, पर उनकी मानसिकता नहीं बदली। आचार्यश्री के सामने एक समस्या खड़ी हो गई। दक्षिण पधारें, खानदेश में रहें या अन्य किसी दिशा में प्रस्थान करें ? आखिर आपने एक सुचिंतित निर्णय घोषित किया। दक्षिण के श्रावकों को आश्वस्त किया कि अभी नहीं, किन्तु समय आने पर दक्षिण की यात्रा संभव है। खानदेश में चातुर्मास्य तो नहीं हुआ, पर वहां पर्याप्त समय लगाकर अणुव्रत का बहुत अच्छा काम किया। उल्लेखनीय उपकार हुआ।

१५४. उस समय दक्षिण यात्रा के स्थगन का एक बड़ा कारण था।

शुभकरण जी दसाणी और सुगनचंद जी आंचलिया थली, मेवाड़ आदि क्षेत्रों की स्थिति का अध्ययन कर आए थे। उन्होंने आचार्यश्री से निवेदन किया—वहां साधुओं में धर्मसंघ की नई प्रवृत्तियों को लेकर भीतर ही भीतर शीत-युद्ध छिड़ रहा है। आचार्यों की दीर्घकालिक अनुपस्थिति में ऐसा हो भी सकता है। आचार्यश्री ने इस बात पर गंभीरता से चिन्तन किया। बात समझ मे आई और आपने दक्षिण व खानदेश —दोनो प्रदेशों को छोड़ विन्ध्याचल पार कर वि० सं० २०१२ का चातुर्मास्य उज्जैन में किया। चातुर्मास्य पूरा होते ही वहां से प्रस्थान कर सीधे मेवाड़ पधार गए।

१५५. वि० सं० २०१२ का मर्यादा-महोत्सव भीलवाड़ा घोपित था। उससे पूर्व आचार्यश्री गंगापुर पधारे। वहां काफी साधु-साध्वियां एकत्रित हो गए। साधुओं में चल रहे शीत युद्ध का पूरा आभास मिल गया। आचार्यश्री ने सोचा— अब निर्णायक विन्दु पर पहुंचना चाहिए। अस्थिरता और अनिश्चितता से स्थिति में सुधार नहीं होगा। आपने रातभर जागरण किया और अपने चिन्तन को क्रियान्वित करने के लिए पूरी प्रक्रिया निर्धारित की। पूरा चित्र आचार्यश्री के दिमाग में स्पष्ट था। ऊपर-ऊपर के उपचार से वांछित परिणाम आने वाला नहीं था। अच्छी तरह शल्यचिकित्सा करने की बात सोचकर आचार्यश्री ने एक साहसिक निर्णय ले लिया। उस चिंतन और निर्णय में मुनि नथमल जी आपके साथ रहे।

१५६. आचार्यश्री ने साधुओं की अन्तरंग स्थिति को स्पष्ट करने के लिए एक समयबद्ध प्रक्रिया घोषित कर दी। उसके द्वारा यह स्पष्ट हो गया कि कितने संत संघीय अनुशासन में हैं और कितने साधु नहीं हैं। जिन साधुओं ने समय की निश्चित सीमा में हस्ताक्षर नहीं किए, उनका सम्बन्ध स्वतः ही संघ से विच्छिन्न हो गया। एक-एक कर १२ साधु अलग हो गए। उस समय पूरे संघ में हलचल हुई, तीव्र ऊहापोह हुआ। उस प्रसंग में बीकानेर के श्रावक ताराचंदजी केशरीचन्द जी बोथरा कार लेकर बीकानेर से चले और गंगापुर पहुंच गए। आते ही अपने बीकानेरी लहजे में बोले—खमाघणी अन्नदाता! उनकी श्रद्धासिक्त वाणी सुनकर आचार्यश्री ने पूछा—कौन ? केसरीचन्द जी ताराचन्दजी ! कैसे आ गए ? वे बोले—गुरुदेव ! हम आपको बधाई देने आए

हैं। आपने बड़ा काम किया है। आपका यह साहसिक निर्णय पूरी तरह से संघ के हित में है। समय की बात है। उस समय बंधुद्वय ने अपनी संघनिष्ठा और गुरु भक्ति का उल्लेखनीय परिचय दिया।

१५७. मेवाड में मर्यादा-महोत्सव सम्पन्न कर आचार्यश्री थली पधारे। संघ से अलग हुए साधु भी उधर आ गए। उस समय थली का वातावरण काफी गर्मागर्म रहा। आचार्यश्री सरदारशहर पहुंचे। वहां समन्वय का श्रेय मंत्री मुनि मगनलाल जी को मिला। इसमें सबसे बड़े निमित्त थे प्रामाणिक प्रवर सुमेरमलजी दूगड़ और उनके ज्येष्ठपुत्र भंवरलाल जी दूगड। वे एक दिन आचार्यश्री के पास आए और प्रार्थना के स्वर में बोले—संघ से अलग हुए साधुओं के साथ समन्वय बिठाया जा सकता है क्या ? आचार्यश्री ने कहा—समन्वय के सारे रास्ते खुले हैं। उन्होंने पूछा—हम वहां जा सकते हैं क्या ? आचार्यश्री ने निषेध नहीं किया। वे गए। बातचीत की और उनकी अनुकूलता देखकर सारी स्थिति आचार्यश्री को निवेदित कर दी। आचार्यश्री की सहमति पाकर वे उन्हें वहां लेकर आए। समन्वय का मान्य तरीका रहा विनय और वात्सल्य का प्रयोग। संघ से पृथक् हुए संतों ने विनम्रता के साथ अपने सब आग्रहों को गुरुदेव के चरणों में समर्पित कर दिया। आचार्यश्री ने उनके प्रति संपूर्ण वात्सल्य भाव उंडेलते हुए उन लोगों की उन बातों को स्वीकार कर लिया, जिन्हें स्वीकार करने में कोई सैद्धांतिक कठिनाई नहीं थी। इस प्रकार उस अध्याय का सुखांत समापन हो गया।

१५८. पूज्य कालूगणि की अस्वस्थता की स्थिति में संघ की भावी व्यवस्था के लिए मंत्री मुनि ने प्रार्थना की। मंत्रीमुनि कालूगणि के अभिन्न साथी की तरह रहे थे। कालूगणि ने उनके सामने मुनि तुलसी के नाम का उल्लेख करते हुए कहा—और सब कुछ ठीक है पर उसकी अवस्था छोटी है। उस समय मंत्री मुनि ने गहरे आत्मविश्वास के साथ कहा—इस दृष्टि से आप निश्चिंत रहें। सारी जिम्मेवारी मेरी रहेगी। कालूगणि को निश्चिंत करने वाले मंत्री मुनि आचार्यश्री तुलसी की संभावित लंबी यात्रा में गुरु-विरह के चिंतन से सचिंत हो उठे। उन्होने उस समय कहा—मुझे निश्चिंत कौन करेगा ?

१५६. वि० सं० २००६ सरदारशहर मर्यादा-महोत्सव में नई प्रवृत्तियों को लेकर संघ में एक तूफान-सा उठा था। उसे एक बार शांत कर दिया गया था। वि० सं० २०१३ में वह फिर पूरी तीव्रता के साथ उभरा। थली में उस समय बहुत सारे लोग सोचने लगे—संघ में बिखराव न हो जाए। संघ की एकता के आगे प्रश्नचिह्न-सा खड़ा हो गया। पर आचार्यश्री के उदार दृष्टिकोण, मंत्री मुनि तथा कुछ श्रावकों के प्रयत्न से २०१३ मे वह पूरी तरह शांत हो गया। विनय और वात्सल्य का वह दृश्य अद्भुत था।

१६०. जो व्यक्ति अनधिकार चेष्टा करता है, वह मार खाता है। इस संदर्भ में एक राजस्थानी कहावत है— 'मोरा में मूसल बाजै'। एक कहानी के माध्यम से इसे समझा जा सकता है।

कुम्हार के पास एक पालतू कुत्ता था और एक गधा था। कुत्ता बहुत स्वामीभक्त था। समय पर भौंककर वह कुम्हार को सजग कर देता था। एक दिन कुम्हार ने कुत्ते को खाने के लिए रोटी नहीं दी। कुत्ता रुष्ट हो गया। संयोग की बात, उसी रात को कुम्हार के घर चोर घुसे। कुत्ता नाराज था, इसीलिए भौंका नहीं। गधा पास ही खड़ा था। उसने कहा—देखता क्या है ? मालिक को जगा। कुत्ता बोला—मैं भूखा हूं, भौंक नहीं सकता। गधे ने सोचा—चोर माल लेकर चले जाएंगे। मालिक को मै जगा दूं। उसने ऊंची आवाज में रेंकना प्रारंभ किया। कुम्हार की नींद में बाधा पड़ी। उसे गुस्सा आ गया। वह उठा और हाथ में मूसल लेकर गधे को पीटने लगा। गधा बेचारा दर्द से कराहने लगा। उसकी स्थिति देखकर एक कवि के बोल फूटे—

कामा जिणां का धामा, करै जिणा नै छाजै।
पड़े पराई बात में तो मोरां में मूसळ बाजै।।

१६१. उत्तरप्रदेश की यात्रा के मध्य आचार्यश्री आगरा पधारे। वहां सार्वजनिक स्वागत समारोह का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उसके बाद आचार्यवर आवासस्थल की ओर पधार रहे थे। रास्ते में उपाध्याय अमर मुनि के श्रावक एम० पी० सेठ अचलसिंह जी आदि पंक्ति-बद्ध खडे थे। उन्होंने आचार्यश्री से स्थानक में पधारने का अनुरोध किया। आचार्यश्री ने कारण पूछा तो बोले—अमरमुनि आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उस समय स्थानक

में जाने की अनुकूलता नहीं थी। फिर भी श्रावकों का आग्रह इतना प्रबल था कि आचार्यश्री संतों के साथ स्थानक की ओर बढ़े। भीतर गए, वहां कोई नहीं था। सेठ अचलसिंह जी आचार्यश्री को चौक में ले गए। आचार्यश्री को देखते ही अमर मुनि पास आए और बोले—आचार्य जी ! आज आपने हम सबको पीछे छोड़ दिया। आचार्यश्री ने जानना चाहा—क्या हुआ ? अमर मुनि बोले—आप यहां तक पधार गए और हम भीतर ही बैठे रहे।

आचार्यप्रवर और उपाध्याय अमर मुनि के मिलन का यह प्रथम अवसर था। औपचारिक मिलन के बाद आचार्यप्रवर लौटने लगे तो अमर मुनि बोले—आपको दिनभर यहीं रहना होगा। उनके आग्रह को टालना संभव नहीं था। आचार्यश्री वहीं विराजे। जैनशासन की प्रभावना की दृष्टि से लम्बी बातचीत हुई। वार्तालाप के मध्य अमर मुनि ने कहा—आचार्यजी ! आपके संघ में इतने बड़े-बड़े साधु अलग हुए, आपने उनके साथ समन्वय करके बडा कमाल किया। इस सन्दर्भ में मै अपने आपको चाणक्य मानता रहा हूं। मैंने भी अपने संघ में एकीकरण का प्रयत्न किया, पर सफल नहीं हो सका। तब आचार्यवर ने उनको पूरी घटना विस्तार से बताई।

दूसरी ओर मुनि नथमल जी अमर मुनि की एक पुस्तक देखने लगे। उस पुस्तक में जो उन्हें देखना था, वह मिल नहीं रहा था। उनके पास पृष्ठ संख्या लिखित थी, पर उन पृष्ठों पर वह सामग्री नहीं थी। अमर मुनि ने मुनि नथमलजी को देखा और कहा—आप क्या खोज रहे हैं ? मुनि नथमल जी बोले—आपने तेरापंथ की मान्यताओं के संदर्भ में जो लिखा है, वह आपको बताना है। अमर मुनि ने कहा—निकालिए। मुनि नथमल जी बोले—पृष्ठ संख्या तो हमारे पास ही लिखी हुई है। पर वह सामग्री नहीं मिल रही है। अमर मुनि ने कहा—आप ठीक कह रहे हैं। अब आपको वह कुछ भी नहीं मिलेगा। यह पुस्तक का दूसरा संस्करण है। तेरापंथ का काफी साहित्य पढ़ने के बाद हमने उस प्रकरण को निकाल दिया है। यह बात सुन आचार्यप्रवर बोले—हमारी ओर से कुछ न कहने पर भी आलोच्य प्रसंग को अपने आप हटा देना बहुत बड़ी बात है। आचार्यश्री के साथ उपाध्याय जी का यह मिलन एक स्थायी आत्मीय संबंध का निमित्त बना।

१६२. साध्वी हर्षकुमारी जी ला

थीं। साध्वी कनकश्री जी की वे संसार-पक्षीया बहिन थीं। वे एक कर्मठ और स्फुरणशील साध्वी थीं। साध्वीप्रमुखा लाडांजी की सेवा में बहुत जागरूक थीं। साध्वीप्रमुखाश्री जी की उन पर विशेष कृपा रही। उत्तरप्रदेश की यात्रा में वे लू की लपेट में आ गई। उन्हें बचाया नहीं जा सका।

१६३. मुनि जसकरणजी सुजानगढ और मुनि भिलापचन्दजी बोरावड उत्तर प्रदेश की गर्मी से इतने प्रभावित हुए कि एक बार तो अन्तिम स्थिति तक पहुंच गए। वे दोनों अलग-अलग कमरों में सो रहे थे। आचार्यश्री उन दोनों को दर्शन देने के लिए पधारे। मुनि जसकरण जी ने कहा—गुरुदेव ! मैं जा रहा हूं, आप मिलापचन्द जी का ध्यान रखना।

मुनि मिलापचन्द जी बोले—गुरुदेव ! लगता है मेरा आखिरी समय निकट आ गया है। आप मुनि जसकरण जी का ध्यान रखने की कृपा करें। आचार्यश्री ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा—तुम औरों की चिन्ता छोड़ो, अपनी-अपनी चिन्ता करो।

उनकी स्थिति बिगड़ती जा रही थी। आचार्यवर ने साधुओं से धागे मंगवाए। मंत्र जाप से उन्हे अभिमंत्रित कर दोनों साधुओं के हाथ पर बांधने का निर्देश दिया। संतों ने निर्देश का पालन किया। दोनों साधु रात-रात में ठीक हो गए। एक चमत्कार-सा घटित हो गया।

१६४. आचार्यश्री वि० सं० २०१५ के प्रारम्भ में कानपुर पधारे। तब तक उस वर्ष का चातुर्मास्य घोषित नहीं हुआ था। आचार्यवर के आगमन के उपलक्ष में स्वागत-कार्यक्रम हुआ। शहर के संभ्रान्त नागरिक उसमें उपस्थित हुए। कानपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति पद्मपतजी सिंघानिया भी वहां थे। आचार्यवर ने अणुव्रत के बारे में विस्तार से प्रवचन किया। प्रवचन के अन्त में आपने कहा—"आज आपके शहर में एक भिक्षु आया है। आप उसे खाली हाथ लौटने नहीं देंगे। मैं भिक्षा लेना चाहता हूं, पर मुझे भिक्षा में न नोट चाहिए, न वोट चाहिए, न प्लॉट चाहिए। आप चाहें तो अपने जीवन की खोट मुझे भिक्षा में दे सकते हैं" इस बात ने लोगों को बहुत प्रभावित किया। पद्मपतजी तो अभिभूत हो गए। वे आचार्यश्री के निकट आकर बोले—"ऐसी विचित्र मांग तो मैंने जीवन में पहली बार सुनी है। वे आग्रहपूर्वक अनुरोध

करके आचार्यश्री को अपने घर ले गए। अपना म्युजियम दिखाया और एक ऐसा वृक्ष दिखाया जो पृथ्वीकाय के रूप में परिणत हो चुका था। उन्होंने आचार्यवर से चातुर्मास्य कानपुर में करने की प्रार्थना की। अन्य लोग भी उनकी प्रार्थना में सहभागी थे। आचार्यवर ने कहा—चातुर्मास्य के लिए उपयुक्त स्थान कहां है ? सिंघानियाजी तत्काल बोले—अभी-अभी विहारना रोड पर हमारा जे॰ के॰ हॉस्पिटल बनकर तैयार हुआ है। आप उसका उपयोग कराएं तो हम अपना सौभाग्य समझेंगे। उनकी प्रार्थना पर आचार्यवर ने वहां चातुर्मास्य करना स्वीकृत कर लिया। वहां से प्रस्थान कर आचार्यश्री लखनऊ पधारे। कुछ क्षेत्रों का स्पर्श कर चातुर्मास्य के लिए पुनः कानपुर पधार गए।

१६५. वि॰ सं॰ २०१६ में आचार्यवर का चातुर्मास्य कलकत्ता में था। वहां आपका बहुत भव्य स्वागत हुआ। कलकत्ता के महाजाति सदन में वहां के अनेक विशिष्ट लोग, जैसे— विधानसभा के अध्यक्ष पी॰सी॰ सेन, नगरपालिका के अध्यक्ष कालिदास खेतान आदि उपस्थित थे। उन्होंने हार्दिक भाव से आचार्यश्री का स्वागत किया और कहा—आप एक मसीहा के रूप में यहां आए हैं। वहां अच्छा क्रम चल रहा था। नए-नए लोग सम्पर्क में आ रहे थे, समाचारपत्रों में आचार्यश्री और अणुव्रत प्रमुख चर्चा के विषय बन रहे थे। उस समय अचानक आचार्यश्री के विरोध में एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई। उसमें पी॰ सी॰ सेन, विजयसिंह नाहर, सुनीतिकुमार चटर्जी और नगरपालिकाध्यक्ष के हस्ताक्षर थे। आचार्यश्री के विरोध में प्रकाशित उस विज्ञप्ति में लिखा था—"कलकत्ता में आचार्य तुलसीजी आए हैं। उनके शिष्य-शिष्याएं सड़को पर मलमूत्र डालकर गन्दगी फैला रहे हैं।" इस बात को कलकत्ता के प्रायः सभी समाचारपत्रों ने प्रकाशित किया। प्रातःकाल आचार्यवर बाहर पधारे। जन-जन के हाथ में समाचार पत्र थे। लोगों में ऊहापोह था। बात ध्यान में आई। वहां के प्रमुख श्रावक पन्नालालजी सरावगी ने दर्शन किए। उस समय आचार्यश्री ने पूछा—पन्नालालजी ! समाचारपत्र देखा या नहीं ? उन्होंने कहा—नहीं। आचार्यवर ने उनको एक पत्र दिखाया। वे चौंके और बोले—यह क्या हुआ ? कैसे हुआ ? पी॰ सी॰ सेन उनके अभिन्न मित्र थे। उन्होंने फोन पर उनसे पूछा—आपके नाम से ऐसी विज्ञप्ति कैसे प्रकाशित हुई ? सेन ने कहा—तुम समझते नहीं। ये लोग सड़कों पर गन्दगी

फैला रहे हैं। पन्नालालजी बोले—मैं कैसे नहीं समझता ? आचार्य तुलसी मेरे गुरु हैं। आपके पास यह सूचना आई कहां से ? मेरी दृष्टि में यह सही नहीं है। सेन ने कहा—सूचना कांग्रेस-कार्यालय से आई है, गलत कैसे हो सकती है ? पन्नालालजी भी बोले—बात सही हो तो यह लो पांच लाख का चैक। आप जांच करो।

पी॰ सी॰ सेन ने फोन उठाकर विजयसिंह नाहर से बात की। उनसे पूछा—आचार्यश्री तुलसी के बारे में कल जो न्यूज भेजी गई थी, वह कहां से आई ? इसका प्रत्यक्ष द्रष्टा कौन है ? विजयसिंह जी बोले—"देखा तो किसी ने नहीं, यह बात सुनी है"। इतना सुनते ही पी॰सी॰ सेन स्तब्ध रह गए। सुनी-सुनाई बात उनके नाम से प्रकाशित हो, यह उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न था। उन्होंने पन्नालालजी के सामने स्वीकार किया कि जो कुछ हुआ, वह ठीक नहीं हुआ। उन्होंने उसी समय दूसरी विज्ञप्ति लिखकर तैयार की जिसमें पूर्व विज्ञप्ति में लिखित बातों का प्रतिवाद किया गया और उन्हीं हस्ताक्षरों से उस विज्ञप्ति को पुनः प्रसारित कराया गया। इस प्रसंग में पन्नालालजी सरावगी का कर्तृत्व स्पष्ट रूप से उजागर हुआ। इसी के आधार पर आचार्यश्री ने शासन-संगीत में पन्नालालजी का नाम उल्लेख करते हुए लिखा है—"पन्नै री मर्दानगी"

सर्वोच्च स्वागत और सर्वोच्च विरोध आचार्यश्री के व्यक्तित्व को बराबर संतुलन देता रहा है, अहं और हीनता के भाव से बचाता रहा है, ऐसा आपका अभिमत है।

१६६. वि॰ सं॰ १८१७ में आचार्य भिक्षु ने धर्मक्रान्ति के बाद नई दीक्षा स्वीकार की। वह दिन तेरापंथ की स्थापना का दिन था। वि॰ सं॰ २०१७ में तेरापंथ स्थापना के दो सौ वर्ष पूरे होने जा रहे थे, उस उपलक्ष में 'द्विशताब्दी समारोह' आयोजित करने का चिन्तन सामने आया। उस अवसर पर आचार्य भिक्षु के साहित्य का लोकार्पण हो और उस कार्यक्रम का आयोजन उसी स्थान (केलवा) में हो जहां तेरापंथ की स्थापना हुई। चिन्तन निर्णय में बदला और द्विशताब्दी आयोजन की तैयारियां होने लगीं। तेरापंथ धर्मसंघ में सार्वजनिक रूप में इतने बड़े पैमाने पर मनाया जाने वाला वह प्रथम आयोजन था।

१६७. वि॰ सं॰ २०१६ मे आचार्यवर का चातुर्मास्य कलकत्ता था। वि॰ सं॰ २०१७ में केलवा में द्विशताब्दी समारोह मनाना था। लगभग दो हजार कि॰मी॰ की दूरी। कलकत्ता से विहार के समय आचार्यवर के घुटनों में दर्द हो गया। आपके मन में थोड़ा-सा विचार हुआ। इतना लम्बा रास्ता कैसे तय होगा ? सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी ने कहा—आपके प्रताप से सब कुछ ठीक होगा। उस समय मदनचंद जी गोठी ने प्रार्थना की, "गुरुदेव आप प्रतिदिन जयाचार्य के गीत 'विघ्नहरण' का स्वाध्याय करे"। आचार्यश्री ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। तत्काल विघ्नहरण का गीत लिपिबद्ध करवाया और प्रातःकाल सूर्योदय के समय नियमित रूप से स्वाध्याय शुरू कर दिया। संभवतः उसका ही प्रभाव था वह दो हजार कि॰ मी॰ की लम्बी यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हुई। उस गीत के कुछ पद्य—

भिक्षु भारीमाल ऋषिरायजी, खेतसीजी सुखकारी हो।
हेम हजारी आदि दे, सकल संत सुविचारी हो
प्रणमूं हर्ष अपारी हो, ज॰भी॰ रा॰ शि॰ को॰ उदारी हो।
धर्ममूर्त्ति धुनधारी हो, विघ्नहरण वृद्धिकारी हो।
सुखसंपति दातारी हो, भजो मुनि गुणां रा भंडारी हो।
दीपगणी दीपक जिसा, जय-जशकरण उदारी हो।
धर्मप्रभावक महाधुनी, ज्ञान गुणां रा भंडारी हो।
नित प्रणमै नर नारी हो।

१६८. आचार्यश्री ने कलकत्ता यात्रा के लिए प्रस्थान किया था, उस समय मंत्री मुनि मगनलालजी ने कहा था कि आप तो लम्बी यात्रा में पधार रहे हैं। मेरे दर्शन कब होंगे ? उनके मन का यह सन्देह आगे जाकर सच में बदल गया। आचार्यश्री मंत्री मुनि से मिलने की इच्छा लेकर कलकत्ता से चले। रास्ते में उनके स्वर्गवास की सूचना मिली। उस दिन आचार्यश्री ने मंत्री मुनि के बारे में कुछ पद्य कहे। उनमें से दो पद्य निम्नलिखित हैं—

१. वयोवृद्ध शासन सुखद, मंत्री मगन महान।
मा॰ बिद छठ मंगल दिवस, कर्‌यो स्वर्ग प्रस्थान।।
२. नानव कोठी नहर में, सांझ प्रार्थना सीन।
सुण सचित्र सारा रह्या उदासीन आसीन।।

१६६. घोर तपस्वी मुनि सुखलालजी मंत्रीमुनि के अनन्य भक्त थे। उन्होंने तपस्या के साथ-साथ मंत्री मुनि की बहुत सेवा की। मंत्री मुनि का स्वर्गवास हो जाने के बाद उन्होंने अनशन स्वीकार कर लिया। आचार्यश्री द्रुतगति से राजस्थान पधार रहे थे। आप सरदारशहर पहुंचे तब उनको विशेष होश नहीं था। फिर भी आचार्यवर ने वहां पहुंचकर उनके पास बैठकर उनके लिए लिखा हुआ गीत 'घोर तपसी' उन्हें सुनाया। वह गीत इस प्रकार है—

घोर तपसी हो मुनि! घोर तपसी,
थांरो नाम उठ-उठ जन भोर जपसी, हो मुनि!
घोर तपसी हो सुख घोर तपसी!
थांरो जाप जप्यां करमां री कोड़ खपसी, हो मुनि!
दो सौ बरसां री भारी ख्यात है वणी,
थांरो नाम मोटा तपस्यां रै साथ फबसी, हो मुनि!
ओ अनशन आ सहज समता,
लाखां लोगां रे दिलां में थांरी छाप छपसी, हो मुनि! ।।१।।
काया पर कुल्हाड़ी व्हाणी काम करड़ो,
सोरी पाटां ऊपर बैठ करणी गपशप-सी, हो मुनि!
तपस्या आतापना स्वाध्याय करणी,
थांरी सेवा भावना रै लारै सारा दबसी, हो मुनि।।२।।
स्वामीजी रो शासन तप-संजम री सुरसरी,
इण में न्हावसी जकां रो सारो पाप धुपसी, हो मुनि!
आपणै शासन री संता! चढ़ती कला,
इण में घणां ही तप्या है और घणां तपसी, हो मुनि ।।३।।
शिखर चढ्या है चढ़ता ही रहसी,
गण रो शीष आभै, पैर जा पाताल रुपसी, हो मुनि!
इण स्यूं विमुख अवनीत जो होसी,
बां रै भाग रो भानूडो जा छिती में छुपसी, हो मुनि!।।४।।
संजम-जीवन जीवो पंडित-मरण मरो,
थांरै दोन्यूं हाथां लाडू खावो खुशी रै खुशी, हो मुनि!
लंघी लम्बी यात्रा मंगल फागण बदी,
'सुख'-साधना सुखदाई गाई गणि तुलसी, हो मुनि! ।।५।।

१७०. कलकत्ता से राजस्थान की यात्रा के बीच मर्यादा-महोत्सव का

आयोजन हांसी में हुआ। वह नाम मात्र का आयोजन था। मर्यादा-महोत्सव का अन्तरंग काम बीदासर में करना था। वहां मातुश्री वदनांजी स्थिरवासी थीं। सैकड़ों साधु-साध्वियां वहां पहुंचीं। बड़े संघ में कहीं-कहीं कुछ अस्पृहणीय घटनाएं घट जाती हैं। आचार्य को उनका प्रतिकार करने के लिए अनुशासनात्मक कार्यवाही करनी होती है। उधर आचार्यप्रवर का सुदूर कलकत्ता में प्रवास, इधर कुछ साधुओं ने साध्वाचार में शिथिलता का परिचय दिया। उसकी जानकारी आचार्यश्री तक पहुंची। बीदासर में वे सन्त भी आ गए। आचार्यश्री ने उनसे बात की और उनके द्वारा बरती गई शिथिलता के बारे में उनसे खुलकर चर्चा की। उन्होंने जिन-जिन भूलों को स्वीकार किया, लिपिबद्ध कर लिया गया। आचार्यों की सुदूर यात्राओं के समय वैसा शैथिल्य संघ की नींव को खोखला कर सकता है। इसलिए अनुशासन का ऐसा प्रयोग हो, जिससे पूरे संघ को सीख मिले। इस चिन्तन के साथ चतुर्दशी के बिना ही हाजरी का आयोजन किया गया। हजारो लोगों की उपस्थिति में सम्बन्धित साधुओं को एक-एक कर खड़ा किया गया और पूछा गया कि उनके द्वारा गलती हुई या नहीं ? चूंकि उनके द्वारा स्वीकृत गल्तियां लिखी जा चुकी थीं इसलिए उन्हें अस्वीकार नहीं किया जा सकता था।

आचार्यश्री ने एक प्रशासक का सम्पूर्ण रूप धारण करते हुए कहा—"तेरापंथ संघ में शिथिलता को वर्दास्त नहीं किया जा सकता। आचार्य से दूर रहकर गलती करने वाले इस बात को क्यों भूल जाते हैं। आज मैं अमुक दो साधुओं का संघ से सम्बन्ध -विच्छेद करता हूं। अमुक दो साधुओं का सिंघाड़ा बर्खास्त करता हूं।" आचार्यश्री की उस समय की मुद्रा देखकर बाद में साध्वीप्रमुखा लाडांजी ने निवेदन किया—आज आपने जो कार्यवाही की, उसे सुनकर सब कांप उठे। हम तो सोचने लगे कि पता नहीं आज क्या होगा। आचार्यवर के जीवन का वह एक अविस्मरणीय प्रसंग था।

१७१. द्विशताब्दी समारोह मनाने का निर्णय लिया जा चुका था। उसी उद्देश्य से आचार्यश्री केलवा की तरफ पधार रहे थे। उस समय तक अभिनिष्क्रमण समारोह मनाने की बात किसी के दिमाग में नहीं थी। बीदासर-प्रवास में मोतीलालजी रांका ने दर्शन किए। उन्होंने निवेदन किया—आप द्विशताब्दी का आयोजन करने जा रहे हैं, पर उसका मुख्य स्थान वहां नहीं

है। आचार्यश्री भिक्षु ने अभिनिष्क्रमण बगड़ी में किया था। अभिनिष्क्रमण नहीं होता तो तेरापंथ कहां से आता ? इसलिए बगड़ी में भी कुछ न कुछ होना चाहिए। रांकाजी का चिन्तन सही था। आचार्यवर ने उसे समय की सूझ के रूप में स्वीकार कर बगड़ी में एक समारोह करने की घोषणा कर दी। चैत्र शुक्ला नवमी को यह कार्यक्रम होना था। लगभग एक महीने का समय शेष था। उस थोडे से समय में भी रांकाजी ने अच्छी व्यवस्था कर ली। पूरी भव्यता के साथ वहां आयोजन हुआ। राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया उस कार्यक्रम मे सम्मिलित हुए।

१७२. भिक्षु अभिनिष्क्रमण समारोह के अवसर पर आचार्यवर ने एक विशेष गीत की संरचना की। आज वह जन-जन के मुंह पर है। आचार्यवर ने वहां पर उस गीत का संगान किया। उसकी पहचान "प्रयाण गीत" के रूप में होती है। उसके कुछ पद्य इस प्रकार हैं—

प्रभो ! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा।
बढ़े चलें हम रुकें न क्षण भी, हो यह दृढ संकल्प हमारा।।
प्राणों की परवाह नहीं है, प्रण को अटल निभायेंगे,
नहीं अपेक्षा है औरों की, स्वयं लक्ष्य को पायेंगे।
एक तुम्हारे ही वचनों का भगवन! प्रतिपल सबल सहारा।।१।।
शुद्धाचार-विचार-भित्ति पर, हम अभिनव निर्माण करें,
सिद्धांतों को अटल निभाते. निज-पर का कल्याण करें।
इसी भावना से भिक्षू का, तुलसी' चमका भाग्य-सितारा।।२।।

(पूरा गीत देखें, नन्दन निकुञ्ज, पृ० ५)

१७३. वि० सं० २०१७ आषाढ शुक्ला पूर्णिमा का दिन। केलवा के राजमहल का प्रांगण। द्विशताब्दी समारोह का आयोजन। तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे तेरह भाई-बहिनों की दीक्षा का प्रसंग। उस कार्यक्रम में शुभकरण दसाणी दिल्ली से सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश वी० पी० सिन्हा को लेकर आए। लगभग ४० हजार की उपस्थिति। धर्मसंघ का सबसे बड़ा सार्वजनिक उत्सव। उस अवसर पर श्री सिन्हा ने आचार्यश्री भिक्षु की स्मृति में प्रकाशित 'भिक्षु स्मृति ग्रन्थ' आचार्यश्री को भेंट किया। संभवतः जैन समाज में स्मृति-ग्रन्थों की परम्परा में वह पहला ग्रन्थ है।

१७४. तेरापंथ द्विशताब्दी का दिन एक साथ अनेक उपक्रमों को अपने आप में समेटे हुए था। उस दिन सब साधु-साध्वियों के उपवास था। दीक्षा का आयोजन उसी दिन था। दीक्षा के बाद केलवा से विहार कर राजनगर पहुंचना था। चातुर्मासिक प्रवास की दृष्टि से वहां जमना था और चातुर्मासिक पक्खी का प्रतिक्रमण करना था। करणीय सभी काम सानन्द सम्पन्न हुए।

१७५. तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा का बहुत मूल्य है। संघ के अनेक साधु-साध्वियों ने सेवा के क्षेत्र में सुयश अर्जित किया है। सेवाभावी मुनि श्री चम्पालालजी प्रारम्भ से ही सेवा की दृष्टि से बहुत जागरूक रहे। छोटे-बड़े किसी भी साधु की सेवा करनी हो, उन्होंने अग्लान भाव से सेवा की। उनके हाथ में यश भी था। जिस सेवा-कार्य को हाथ में लेते, उसमें प्रायः सफलता मिलती। उनकी इस सेवा-भावना का मूल्यांकन करते हुए वि॰ सं॰ २०१७ भाद्रव शुक्ला नवमी के दिन, पट्टोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री तुलसी ने मुनि चम्पालालजी को 'सेवाभावी' इस सार्थक सम्बोधन से सम्बोधित किया।

१७६. वि॰ सं॰ २०१८ आचार्यवर के आचार्यकाल के सफल पच्चीस वर्ष की सम्पन्नता के अवसर पर धवल समारोह (रजत जयन्ती) का आयोजन। उसका प्रथम चरण बीदासर में मनाया गया। उस अवसर पर जयसुखलाल हाथी, बीकानेर नरेश करणीसिंहजी, गोपीनाथजी अमन आदि कई विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। कामरेड यशपाल अपना उपन्यास 'झूठा सच' आचार्यवर को समर्पित करने लखनऊ से वहां आए।

धवल समारोह का दूसरा चरण उसी वर्ष मर्यादामहोत्सव के अवसर पर बीकानेर (गंगाशहर) में आयोजित हुआ। चोपड़ा स्कूल का विशाल प्रांगण, सैकड़ों साधु-साध्वियां, हजारों श्रद्धालु जन। कांग्रेस अध्यक्ष यू॰ एन॰ ढेबर की उपस्थिति। उस मनोहारी भव्य समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति डा॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने आचार्यश्री को 'अभिनन्दन ग्रन्थ' भेंट किया।

१७७. ऋजुमना ! साध्वीवरा वदनांजी ! आपसे मुझे मातृवात्सल्य के साथ-साथ जो पवित्र संस्कार मिले, वे मेरे जीवन-विकास के हेतु बने। मैंने जो प्रयत्न किया, उसमें आपकी तपःपूत भावनाएं सदा मेरे साथ रही हैं। इस धवल समारोह के अवसर पर मैं अत्यंत विनम्रभाव से आपके प्रति आभार

प्रदर्शित करता हूं।

वि० सं० २०१८
फागण वदी १०
गंगाशहर आचार्य तुलसी

१७८. सेवाभावी मुनि श्री चम्पालालजी !

आपसे मुझे बहुत संप्रेरणाएं मिलीं। इस 'धवल समारोह' के अवसर पर मैं अत्यंत कृतज्ञ भाव से आपके प्रति आभार प्रकट करता हूं।

वि० सं० २०१८
फागण वदी १०
गंगाशहर आचार्य तुलसी

१७९. आचार्यश्री तुलसी के संसारपक्षीय ज्येष्ठ भ्राता मोहनलालजी के मलद्वार में कैंसर हो गई। शुरू-शुरू में बीमारी का पता नहीं चला। बाद मे जानकारी मिलते ही उन्हें बीकानेर ले जाया गया। वहां उनकी शल्यचिकित्सा हुई। एक बार की शल्यचिकित्सा कार्यकर नहीं हुई तो दूसरी बार की गई। उससे भी कोई काम नहीं हुआ। डॉक्टर ने कहा—अब हमारे पास इनका कोई इलाज नहीं है। उस समय उन्होंने साहस के साथ अनशन स्वीकार करने की भावना व्यक्त की। उनके अनुज सागरमलजी खटेड़ ने उनको अनशन करा दिया। सफलतापूर्वक अनशन सम्पन्न हुआ।

१८०. आचार्य अपने धर्मसंघ के एक मात्र नेता होते हैं। चतुर्विध धर्मसंघ उनकी आज्ञा में रहता है। साधु-साध्वियों की प्रत्येक गतिविधि पर उनकी नजर रहती है। वे कोई भी काम करें, उससे पहले आचार्य की आज्ञा प्राप्त करने अथवा उन्हें वस्तुस्थिति की अवगति देने का विधान है। किन्तु किसी समय आचार्य को सुदूर प्रदेश की यात्रा करनी हो तो शास्त्रो का निर्देश है कि वे संघ को पूछे बिना यात्रा न करें। 'ठाणं' सूत्र के पांचवें स्थान में कहा है—आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवति नो अणापुच्छियचारी (५/४८) आचार्य तथा उपाध्याय गण को पूछकर क्षेत्रान्तर संक्रम करें, बिना पूछे न करें।

आचार्यश्री ने सुदूर दक्षिण प्रदेश की यात्रा करने से पूर्व संघ को अवगति दी। संघ की सोल्लास स्वीकृति के बाद ही आपने यात्रा की घोषणा की। लगभग चार वर्षों की वह यात्रा अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रही।

१८१. दक्षिण यात्रा के लिए प्रस्थान करने से पूर्व आचार्यश्री ने मातुश्री वदनांजी से पूछा—हमारी यात्रा का प्रारंभ करने के लिए कौन-सा दिन ठीक रहेगा ? मातुश्री ने तीज और तेरस के दिन को शुभ बताया। आचार्यवर ने उस प्रसंग को एक पद्य में आबद्ध कर दिया—

मुख भाख्यो यात्रा दिवस, मां वदना मन रीझ।
अणपूछ्यो मोहरत भलो, का तेरस का तीज।।

१८२. दक्षिण यात्रा के प्रारम्भ में आचार्यवर का पहला पड़ाव जोधपुर में हुआ। उस वर्ष पानी की बहुत कमी थी। जोधपुर से लेकर गुजरात तक पानी उपलब्ध करना बहुत कठिन था। यात्रा में सैकडों यात्री साथ रहने वाले थे। पानी की व्यवस्था कैसे होगी ? संघपति और व्यवस्थापक इस बात से चिंतित थे। जोधपुर-प्रवास में एक दिन अचानक गहरी वर्षा हुई। राजस्थान से गुजरात तक पानी ही पानी हो गया। यात्रियों की समस्या सुलझ गई।

१८३. आचार्यश्री की जन्मपत्री में कोई ऐसा योग है कि आप जहां-जहां गए विरोध ने आपका अनुगमन किया। वि०सं० २०२४ का चातुर्मास अहमदाबाद में था। वहां आचार्यश्री के व्यक्तित्व और कर्त्तृत्व का अकल्पित प्रभाव रहा किन्तु वहीं प्रवासित मूर्तिपूजक साधु चन्द्रशेखरविजयजी ने पूरे चातुर्मास्य काल में तेरापंथ के सिद्धांतों का भयंकर विरोध किया। समाचार पत्रों, पेम्फलेटों और पोस्टरों के माध्यम से उन्होंने लोगों को भ्रान्त बनाने का सघन प्रयास किया। आचार्यश्री ने उनके प्रतिवाद में अपने समय और शक्ति का अपव्यय नहीं किया। यदि विरोध के प्रतिवाद में शक्ति लगाई जाती तो दूसरे रचनात्मक कामों के लिए समय ही नहीं रहता। अहमदाबाद के उस विरोध को पूरी शान्ति से सहन किया गया। धीरे-धीरे विरोधी वातावरण अनुकूलता में बदलता चला गया। अब तो वे मुनिजी भी कहते हैं जिसने आचार्य तुलसी का विरोध किया था, वह चन्द्रशेखर मर गया।

१८४. ७ जुलाई १६६८ मद्रास युनिवर्सिटी का सेन्टेनरी हॉल। आचार्यश्री के मद्रास आगमन पर नागरिक अभिनन्दन का कार्यक्रम। हजारों-हजारों लोगों की उपस्थिति। रामनाथ गोयनका की अध्यक्षता। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री श्री अन्नादुरै आचार्यश्री का स्वागत करने विशेष रूप से उपस्थित हुए। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा—तमिलनाडु आपका घर है। आपके अपने ही घर में आपका स्वागत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। आप यहां आए, इसका हमें आश्चर्य नहीं है। हमें आश्चर्य इस बात का है कि आप इतने वर्षों तक नहीं आए। श्री अन्नादुरै के बारे में यह कहा जाता है कि वे दस बजे का समय देते है तो बारह से पहले नहीं पहुंचते पर उस दिन के कार्यक्रम में वे उसी समय पहुंच गये जो समय उन्हें दिया गया था। इस बात का वहां के लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ।

१८५. १५ नवम्बर १६६८ को आचार्यश्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के निवास-स्थान पर पधारे। भारत के मूर्धन्य चिन्तक, राजनीति के चाणक्य राजाजी अपनी ही पुत्रियों के साथ आचार्यश्री के स्वागत में खड़े थे। अपने घर के दरवाजे पर आचार्यश्री का स्वागत कर वे आपको भीतरी कक्ष में ले गये और आपके स्वागत में अपनी पुत्रियों से फूल-फल मंगाए। आचार्यश्री बोले—राजाजी ! हमारा स्वागत भावना के सुमनों से होता है। राजाजी ने कहा—आचार्यजी ! मैं आपकी परम्परा से परिचित हूं। ये फूल-फल स्वतः ही भूमि पर गिरे हुए थे, आपके लिए विशेष हिंसा नहीं की गई है। आपकी आत्मीय भावना के सामने इनका क्या मूल्य है। जैन मुनि इनका स्पर्श नहीं कर सकते। राजाजी और आचार्यश्री दोनों ही एक-दूसरे से मिलकर प्रसन्न थे। बहुत समय तक भाषा-साहित्य और संस्कृति के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा चली। चर्चा के बीच में आचार्यश्री ने पूछा—दक्षिण में जैनों का प्रभाव कैसा रहा ? इस पर राजाजी बोले—आप प्रभाव की बात कर रहे हैं ! मैं प्रत्यक्ष उदाहरण खड़ा हूं आपके सामने। मैं ब्राह्मण हूं और निरामिष भोजी हूं। यह जैन धर्म का ही प्रभाव है। उत्तर भारत में उड़ीसा, बिहार, बंगाल के ब्राह्मण शाकाहार छोड़कर मांसाहारी हो गये हैं। दक्षिण के ब्राह्मण आज भी शाकाहारी हैं, यह जैन धर्म का ही प्रभाव है।

१८६. आचार्यश्री बम्बई से तमिलनाडु के लिए विहार करने से पूर्व कांग्रेसी नेता गाडगिल और मोरारजी देसाई से मिले। अनेक विषयों पर चर्चा चली। उन्होंने आचार्यश्री से निवेदन किया—तमिलनाडु में आपको अंग्रेजी में बोलना पडेगा। आचार्यश्री ने कहा— मैं अंग्रेजी नहीं जानता। तो फिर आप संस्कृत में बोल सकेंगे। आचार्यश्री ने कहा— संस्कृत में सहज प्रवाह नहीं बनता और लोग भी नहीं समझते। इस पर वे बोले—आप हिन्दी में बोलें तो आवास-स्थल से बाहर मत बोलना। वहां भाषा को लेकर छात्रों का आन्दोलन चल रहा है। कई लोग शहीद हो गये हैं। हितैषी भाव से कही गई उनकी बात आचार्यश्री ने सुन ली।

वि० सं० २०२५ का मर्यादा-महोत्सव तमिलनाडु के विदम्वर शहर में था। दक्षिण आरकाट के शैक्षणिक क्षेत्र विद्यालय के कुलपति आचार्यश्री से मिले। उन्होंने युनिवर्सिटी में प्रवचन करने के लिए आचार्यवर को आमंत्रित किया। उन्होंने कहा— आप वहां पधारें पर अंग्रेजी में भाषण करें। आचार्यश्री बोले—मैं अंग्रेजी बोल नहीं सकता और संस्कृत में प्रवाह नहीं बनता। मैं अंग्रेजी बोलने वाले अपने शिष्यों को वहां भेज देता हूं। कुलपति बोले—हमारे विद्यार्थी आपको ही सुनना चाहते हैं। आचार्यश्री ने विश्वविद्यालय में जाना स्वीकृत कर लिया। विश्वविद्यालय के हाल में प्रवचन का आयोजन था। आचार्यश्री ने सोचा— प्रवचन का प्रारम्भ संस्कृत में कर दूं और बाद में हिन्दी मे बोलूं। उसी समय प्रोफेसर श्री रामलिंग ने निवेदन किया—आपके कल के प्रवचन से भाषा सम्बन्धी भ्रांति दूर हो गई है। आचार्यश्री लगभग एक घंटा बोले। छात्रों ने बार-बार हर्ष ध्वनि के साथ आपको सुना। यद्यपि वे हिन्दी नहीं समझते थे पर श्री जी० सुब्रह्मण्यम ने दुभाषिए का काम किया। वे आचार्यश्री के प्रवचन का तमिल में इतना अच्छा अनुवाद कर रहे थे कि श्रोता अभिभूत हो गये। यह भी एक संयोग की बात है कि गांधी और विनोबा के साथ में दुभाषिए के रूप में श्री जी० सुब्रह्मण्यम ही रहे थे। विश्व विद्यालय के प्रोफेसर और विद्यार्थियों ने अनुरोध किया कि आपका एक भाषण यहां और हो और वह भी हिन्दी में हो। आचार्यश्री ने विनोद में कह दिया—आप तो हिन्दी का विरोध करते हैं। वे बोले—आपकी हिन्दी राजनीति प्रेरित हिन्दी नहीं, हृदय की भाषा है। हम उसे सुनना पसन्द करेंगे।

१८७. आचार्यश्री की दक्षिण भारत की यात्रा पिछली सब यात्राओं से बड़ी और महत्त्वपूर्ण यात्रा रही। विगत हजारों वर्षों के इतिहास में संभवतः वह अपनी कोटि की प्रथम यात्रा थी। कन्याकुमारी उस यात्रा का अन्तिम क्षेत्र था। यात्रा की स्मृतियों को स्थायित्व देने के लिए वहां समुद्रतट पर एक कीर्तिस्तंभ या विजयस्तूप बनाने का चिन्तन सामने आया। कन्याकुमारी जिला के जिलाधीश ने उक्त चिन्तन का स्वागत करते हुए कहा—सरकारी कामों में बाधाएं बहुत है फिर भी मैं इस कार्य के सम्पादन में अपना पूरा सहयोग दूंगा। विजयस्तूप के लिए समुद्र के किनारे 'गांधी स्मारक' के पास ही एक स्थान का चयन किया गया। वहां से लौटने के बाद जिस रूप में कीर्तिस्तंभ की ओर ध्यान केन्द्रित होना आवश्यक था, नहीं हो सका इसलिए एक ऐतिहासिक स्मृति चिह्न बनता-बनता रह गया।

कन्याकुमारी से प्रस्थान करने से पूर्व आचार्यश्री गांधी स्मारक के पास वाली एक बड़ी चट्टान पर कुछ समय ठहरे। सागर का तट, सूर्योदय का समय और आचार्यश्री का सान्निध्य। यात्रियों को अतिरिक्त प्रसन्नता का अनुभव हुआ। आचार्यवर ने वहां धर्मसंघ को विशेष सन्देश दिया।

बंगाल की खाड़ी में बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं। उनको विवेकानन्द चट्टान कहा जाता है। वहां स्वामी विवेकानन्द की स्मृति में एक स्मारक बन रहा था। (अब वह पूरा बन चुका है)

दक्षिण में कन्याकुमारी भारत की धरती का अन्तिम छोर है। वहां कन्याकुमारी का प्रसिद्ध मन्दिर है। प्राकृतिक दृष्टि से उस स्थान का बहुत महत्त्व है। आचार्यश्री की पंजाब से कन्याकुमारी तक की यात्रा एक धर्माचार्य के जीवन का स्मरणीय इतिहास है।

१८८. कन्याकुमारी के बाद दो रास्ते थे। पुनः मद्रास की ओर लौटना या आगे केरल की ओर बढ़ना। कुछ लोगों ने कहा—केरल में कोई जैन नहीं है। वहां ईसाई लोग रहते हैं। वहां की सरकार भी कम्युनिस्ट है। आचार्यश्री वहां जाकर क्या करेंगे ? वहां के लोग धर्म की बात सुनना ही नहीं चाहते। आचार्यश्री का चिन्तन था कि जिस प्रदेश के लोग जैन धर्म के सिद्धांतों और साधुओं की चर्या से अपरिचित हों, वहां जाना चाहिए।

केरल की यात्रा में और कोई कठिनाई नहीं थी। कठिनाई एक ही

थी—महिलाओं का घूंघट और उनके आभूषण। केरल में प्रवेश करने से पूर्व संध्या के समय आचार्यवर के सान्निध्य में यात्रियों की एक गोष्ठी आयोजित की गई। अन्य बातों के साथ आचार्यवर ने महिलाओं से एक बात कही—यात्रा में साथ रहना हो तो घूंघट और आभूषणों का मोह छोड़ना होगा। अन्यथा मंगलपाठ सुनें। संभावना यह थी कि अधिकांश महिलाएं मंगलपाठ सुनकर चली जाएंगी, किन्तु दूसरे दिन प्रातःकाल एक क्रांति घटित हो गई। बहनों के घूंघट और गहनें—दोनों गायब हो गए।

यात्रा संघ के संघपति खेमचन्दजी सेठिया केरल के मुख्यमंत्री नम्बूदरीपाद से मिले। उन्हें आचार्यश्री की यात्रा के बारे में जानकारी दी। वे प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—आपको सरकार से क्या अपेक्षा है? संघपति बोले—"हमारा कोई धर्मस्थान नहीं है। आचार्यश्री के साथ रहने वाले यात्रियों की सुरक्षा के लिए पुलिस की व्यवस्था अपेक्षित है। और राशन की जरूरत है। मुख्यमंत्री ने सरकारी गेस्ट हाऊस, स्कूल-कॉलेज तथा पुलिस की व्यवस्था तत्काल कर दी। राशन के लिए उन्होंने असमर्थता व्यक्त की। कुछ चिन्तन कर वे बोले—सामान्यतः हमारे प्रदेश में बाहर से राशन लाने पर प्रतिबन्ध है। हम इतना कर सकते हैं कि आप बाहर से लाएंगे तो आप पर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहेगा। उक्त तीनो अपेक्षाओं की पूर्ति जिस तत्परता से की गई, उल्लेखनीय है।

१८९. कन्याकुमारी से कोयम्बतूर होते हुए आचार्यश्री ऊटकमंड (ऊटी) पधारे। रास्ते में कॉफी के बगीचे और नीलगिरि के वृक्षों ने यात्रियों का मन मोह लिया। भारत का प्रसिद्ध हिल स्टेशन होने के कारण वहां विदेशी भी प्रायः आते रहते हैं। ऊटकमंड में मूलचन्दजी पारख आदि तेरापंथी भाइयों का अच्छा प्रभाव है। आचार्यश्री के पधारने से उनका प्रभाव और बढ़ा। वहां वैसाख महीने में भी देह को ठिठुराने वाली सर्द हवाएं चल रही थीं। आकस्मिक वर्षा के कारण ठंड और अधिक बढ गई। वहां अनेक स्थानों के काफी लोग एकत्रित हो गए। संघीय दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण गोष्ठियां हुई। वहां अक्षय तृतीया का संक्षिप्त कार्यक्रम सम्पन्न कर मैसूर की ओर प्रस्थान किया।

१९०. वि० सं० २०२६ का चातुर्मास्य बैंगलोर था। आचार्यश्री तमिलनाडु

और केरल की यात्रा सम्पन्न कर बैंगलोर पहुंचे। वहां श्रद्धालु लोगों में बहुत उत्साह देखने को मिला। अनेक लोगों के अनेक वर्षों से संजोए हुए सपने पूरे हुए। वहां सब कुछ ठीक था पर चातुर्मास्य के लिए उपयुक्त स्थान की कठिनाई थी। उस समस्या के समाधान में सीताशरण शर्मा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उनके सहयोग से वहां वल्लभस्वामी के नाम पर बनाया गया 'वल्लभ निकेतन' आश्रम उपलब्ध हो गया। इस आश्रम के निर्माण में आचार्य विनोबा भावे की बहुत प्रेरणा रही थी। उनके निर्देश से वल्लभस्वामी और महादेव भाई वहां कुटिया बनाकर रहे थे। वल्लभस्वामी के स्वर्गवास के बाद आश्रम की व्यवस्था का दायित्व सीताशरणजी शर्मा वहन कर रहे हैं। वल्लभनिकेतन,जो आचार्यप्रवर के प्रवास काल में सर्वोदय समवसरण के रूप में प्रसिद्ध हुआ, वह बहुत उपयुक्त और अनुकूल स्थान था। यद्यपि उस स्थान की उपलब्धि में कई लोगों ने शर्माजी का विरोध भी किया पर वे मजबूत रहे इसलिए काम में बाधा नहीं आई।

१६१. वि॰ सं॰ २०२७ का चातुर्मास्य रायपुर घोषित था। चातुर्मास्य से पहले आचार्यश्री उड़ीसा की यात्रा कर ५ जुलाई १६७० को खरियार रोड पहुंचे। वहां वर्षा होने के कारण दो दिन रुकना पड़ा। तीसरे दिन विहार नहीं होता तो रायपुर पहुंच ही नहीं पाते। पर ६ जुलाई को थोड़ी-सी देर वर्षा रुकी। आचार्यवर ने संघ के साथ विहार कर दिया। उड़ीसा और मध्यप्रदेश की प्राकृतिक सीमा 'जोंकनदी' को रेलवे पुल से पार करते ही मूसलाधार पानी बरसने लगा। आगे-पीछे सघन कोहरा छा गया। रेल की पटरी का संकरा रास्ता, चिकनी और गीली मिट्टी बहुत संभल-संभल कर चलना पड़ रहा था। लगभग २२ कि॰ मी॰ का रास्ता। चार घंटों तक तूफानी बरसात के साथ जूझते हुए 'बागवहरा' के निकट पहुंचे। रेलवे लाइन को छोड़कर सड़क का रास्ता लिया। वहां घुटनों तक पानी बह रहा था कुछ ही दूर चले कि सूचना मिली कि गांव के दोनों तालाब टूट गए। आचार्यश्री जिस सड़क से जा रहे थे, पानी बढ़ता जा रहा था। साध्वी सोनाजी, कमलूजी आदि साध्वियां आगे चल रही थीं। आचार्यवर को पधारते देख वे एक ओर रुक गईं। आचार्यवर से निवेदन किया— आप आगे पधारें। उस समय सेवाभावीजी बोले—"पानी का वेग बढ़ रहा है, साध्वियों को पीछे छोड़ना ठीक नहीं है"आचार्यश्री ने

साध्वियों को आगे चलने का निर्देश दिया। उस भयंकर बरसात में भी साधु-साध्वियों का काफिला सकुशल अपने गंतव्य तक पहुंच गया। उस दिन का पड़ाव मध्यप्रदेश विधानसभा के विधायक श्री नेमीचन्दजी श्रीश्रीमाल की राइस मिल में हुआ। लम्बे समय तक पानी में रहने के कारण शरीर में कंपकंपी-सी पैदा हो रही थी। किसी भाई ने लौंग की भावना भाई। आचार्यश्री ने लौंग मंगवाकर सब साधु-साध्वियों को अपने हाथ से पांच-पांच, सात-सात लौंग दिए। उस सामान्य औषधि ने जादू का-सा काम किया, सब स्वस्थ हो गए।

१६२. आचार्यश्री ईस्वी सन् १९७० (वि॰ सं॰ २०२७) का चातुर्मास्य रायपुर में बिता रहे थे। रायपुर में सभी वर्गों के लोग अणुव्रत से प्रभावित थे। प्रवचन सभा में सहज ही हजारों लोगों की उपस्थिति रहती थी। वहां के कुछ लोगों ने आचार्यश्री को रामायण पर प्रवचन करने की प्रार्थना की। २, ९ और १६ अगस्त को रविवासरीय विशेष प्रवचनों में रामायण पर प्रवचन हुए। १६ अगस्त के प्रवचन को लेकर कुछ व्यक्तियों ने भ्रान्तियों का बाजार गर्म करना शुरू कर दिया। प्रवचन के तीसरे दिन रायपुर के बाजार में खुली चर्चा होने लगी कि आचार्यश्री हिन्दू धर्म पर आक्षेप कर रहे हैं। २३ अगस्त को फिर रामायण पर प्रवचन हुआ, उसमें आचार्यश्री ने शहर में फैली भ्रान्ति और अफवाहों का स्पष्टीकरण दिया। फिर भी लोगों के मन स्वस्थ नहीं हुए। तब अणुव्रत के स्थान पर अग्नि-परीक्षा खड़ी हो गई। 'अग्नि-परीक्षा' पुस्तक को लेकर एक व्यापक आन्दोलन चलाया जाने लगा। कुछ हिन्दू धर्म के नेता बाहर से आकर भी इसके साथ जुड़ गए। पारस्परिक और समाचार पत्रों की चर्चा से आगे उस आन्दोलन ने हिंसात्मक मोड़ लेना शुरू किया। आचार्यश्री के पुतले जलाना, आपत्तिजनक नारेबाजी करना, पथराव, आगजनी आदि न होने की बात हुई। विरोधी लोगों के इरादे कितने गलत थे, उनके द्वारा फैलाई गई अफवाहों से स्पष्ट होता था। उस समय सेवाभावीजी ने पूरी जागरूकता बरती। उनकी जागरूकता के कारण ही विरोधी लोगों के गलत मंसूबे पूरे नहीं हो सके।

१६३. रायपुर का चातुर्मास्य जितना ऐतिहासिक था विहार भी उतना ही

ऐतिहासिक था। चातुर्मास्य की सम्पन्नता से पांच दिन पहले ही आचार्यश्री को विहार का निर्णय लेना पड़ा। कार्तिक शुक्ला एकादशी का दिन, सूर्योदय का समय अणुव्रत नगर के पास सैकड़ों- सैकड़ों लोगों का जमघट था। अपने शिष्य-शिष्याओं से घिरे हुए आचार्यवर प्रस्थान कर रहे थे। लगभग सात-आठ सौ भाई-बहिनें जिनमें अधिकांश रायपुर के बाहर से आए हुए थे, आचार्यश्री के आगे-पीछे दाएं-बायें दो-दो चार-चार की पंक्ति बनाकर सुव्यवस्थित रूप में चले। उनके पास पुलिस तथा होमगार्ड्स भी पंक्तिबद्ध चल रहे थे। सहायक जिलाधीश श्री भटनागर तथा एस० डी० एम० भी पैदल चल रहे थे। अन्य कई सरकारी अधिकारी अपनी मोटर साइकिलों के साथ थे। आगे चलकर जिलाधीश श्री त्रिपाठी और एस० पी० श्री वाजपेयी भी पहुंच गए।

विहार के उस सुनियोजित पर अप्रत्याशित दृश्य को रायपुर की जनता ने अपने-अपने घरों की छतों पर चढ़ विस्मित होकर देखा।

१६४. आचार्यश्री दक्षिण भारत की यात्रा सम्पन्न कर वि० सं० २०२७ का मर्यादा-महोत्सव करने के लिए बीदासर पधारे। आचार्यश्री ने अपने शासन-काल मे तेरापंथ धर्मसंघ को नये उन्मेष दिये। जैन समाज को समन्वय सूत्र से आत्मीय बनाया। मानवीय मूल्यों को नयी प्रतिष्ठा दी। संक्षेप में कहा जाये तो समग्र युग-चेतना को नयी स्फुरणा दी। युग के फलक पर उभरते हुए आचार्यश्री के कर्तृत्व का अभिनन्दन करने के लिए चतुर्विध धर्मसंघ ने आपको 'युगप्रधान' की उपाधि से सम्मानित करने का निर्णय लिया। प्रतीक्षा और उत्सुकता के क्षणों में उस निर्णय की जनता को अवगति दी गई। २ फरवरी १९७१ का दिन मर्यादा-महोत्सव का आयोजन, सेठिया स्कूल का विशाल प्रांगण, लगभग पच्चीस हजार लोगों की उपस्थिति में आचार्यश्री को गरिमामय 'युगप्रधान आचार्य' की उपाधि से सम्मानित किया। मंगलगीतों व जयघोषों से आकाश गूंज उठा। उस अवसर पर सेवाभावीजी ने आचार्यश्री का वर्धापन करते हुए धवल चद्दर ओढाई। साधुओं और साध्वियों की ओर से अलग-अलग अभिनन्दन पत्र समर्पित किये गये। भारत के राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि को इस बात की जानकारी मिली तो उन्होंने उस प्रसंग पर अपनी शुभकामनाएं संप्रेषित कीं—

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री

तुलसी के अभिनन्दन का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर प्राचीन जैन परम्परा के अनुसार आचार्यश्री को 'युग प्रधान आचार्य' पद से भी गौरवान्वित किया जायेगा। राष्ट्र के नैतिक जागरण में जो श्रेष्ठ प्रयास आचार्यश्री करते आये हैं, वे बड़े ही सराहनीय और महत्त्वपूर्ण हैं। देश में आज सांस्कृतिक एवं भावात्मक समन्वय की बड़ी आवश्यकता है और मैं आशा करता हूं कि आचार्यश्री देश में नैतिक पुनरुत्थान लाने में अपने प्रयासों में निरन्तर सफल होंगे। इस शुभ अवसर पर मैं आपको अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

१६५. दक्षिण यात्रा के मध्य अहमदावाद चातुर्मास्य सम्पन्न कर आचार्यश्री बम्बई पहुंचे। वहां पहुंचते-पहुंचते सेवाभावीजी के घुटनों में दर्द हो गया। दर्द भी इतना कि चलने की स्थिति नहीं रही। सेवाभावी जी 'भाइन्दर' में रुके और आचार्यश्री बम्बई महानगर में पधार गये। एक दिन विश्राम कर धीरे-धीरे चलते हुए सेवाभावीजी वहां पधारे और बोले—अब आगे चलना मुश्किल लगता है। आचार्यश्री ने कहा—दक्षिण यात्रा के लिए आपके मन में कितना उत्साह था, अब आपको पीछे कैसे छोड़ सकते हैं। यात्रा तो साथ-साथ ही करनी है।

बम्बई के अस्थि विशेषज्ञ डा० ढोलकिया ने सेवाभावीजी के घुटनों को देखा और कहा—घुटनों के दर्द को लेकर आपने चलना बन्द कर दिया तो घुटने बेकार हो जायेंगे। आप चलते चलें, यही सबसे अच्छी दवा है। डा० ढोलकिया ने ऐसा मन्त्र फूंका कि सेवाभावी जी यात्रा के लिए पुनः उत्साहित हो गये।

१६६. बम्बई से चलकर चातुर्मासिक प्रवास के लिए मद्रास पहुंचे। आगे की मंजिल थी कन्याकुमारी। कुम्भकोणम तक सेवाभावीजी अच्छी तरह से चले। आगे चलने में कठिनाई होने लगी। वहां बगड़ी निवासी कुन्दनमल जी सेठिया का परिवार रहता था। कुन्दनमलजी धर्म के मर्मज्ञ और तत्त्वज्ञ श्रावक थे। संघ और संघपति के प्रति उनमें गहरी निष्ठा थी। वे दोनों समय विधिवत प्रतिक्रमण करते। और अपने पूरे परिवार को संस्कारी बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते। वे मारवाड़ी पगड़ी बांधते वह अपने ही ढंग की होती।

उनकी प्रबल भावना थी कि सेवाभावीजी कुछ दिन वहां रहें। घुटनों में दर्द होने के कारण उन्हें सहज ही सेवाभावीजी का सान्निध्य उपलब्ध हो गया। आचार्यश्री कन्याकुमारी और केरल की यात्रा करके लौटे तब तक सेवाभावी जी वहीं रहे। पूरे परिवार ने अच्छा लाभ उठाया। सेठिया परिवार कुंभकोणम, तिरुवन्नामलै, विल्लीपुरम, के॰ जी॰ एफ॰ और चिदम्बरम, उन पांच शहरों में प्रभावी हैं।

१६७. वि॰ सं॰ २०२६ (ई॰ सन् १९७०) का मर्यादा-महोत्सव हैदराबाद था। वहां स्थान भी ऐसा मिला जहां सैकड़ों मकान सहज रूप से निर्मित थे। देशभर से हजारों लोग वहां आए। समाज की क्रीम वहीं थी उसमें एक नाम है श्री श्रीचन्द रामपुरिया। वे एक दिन मुंह-अन्धेरे शौच के लिए बाहर जंगल में गये। वहां एक गड्ढे में गिर पड़े। सूर्योदय से पहले का समय, सुनसान स्थान, वृद्ध अवस्था और गिरने से क्रेक हुई पांव की हड्डी। एक बार तो रामपुरियाजी नर्वस हो गये पर उन्होंने साहस जुटाया और ऊंचे स्वर में बोले—मैं श्रीचन्द रामपुरिया हूं, गहरे गड्ढे में गिर गया हूं, कोई यहां हो तो ध्यान दे। उन्होंने दो-तीन बार अपनी बात दोहराई। एक व्यक्ति ने उनकी आवाज सुनी। वह वहां पहुंचा, देखा और बोला—आप इसमें कैसे गिरे ? रामपुरियाजी ने कहा—कैसे गिरा यह तो बाद में पूछना, अब यह सोचें कि मैं कैसे निकल सकता हूं।

वह व्यक्ति शहर में गया। कार्यकर्त्ताओं को सूचना दी और हैदराबाद से ऐसे व्यक्तियों को साथ में लेकर पुनः उसी स्थान में पहुंचा जो गिरे हुए व्यक्ति को निकालने में दक्ष थे। वे लोग गड्ढे में उतरे। रामपुरियाजी को अपने कन्धे पर बिठाया और कहा आप स्थिर होकर बैठ जाइये, हिलें नहीं। रामपुरियाजी ने वैसा ही किया, उन्हें बहुत कठिनाई से निकाला जा सका। बाहर क्या निकले, रामपुरिया जी को नया जीवन मिल गया। उस समय उन्होंने संकल्प किया कि वे स्वस्थ होकर आचार्यभिक्षु के जीवन पर एक ग्रन्थ लिखेंगे। स्वस्थ होकर उन्होंने अपना संकल्प पूरा कर लिया।

१६८. रायपुर चातुर्मास्य में अग्निपरीक्षा को निमित्त बनाकर जो तूफान उठा, उसने पूरे समाज को हिलाकर रख दिया। उसकी हलचल पूरे राष्ट्र में

थी। केवल प्रादेशिक पत्रों ने ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर के पत्रों ने भी उन संवादों को अनेक रूपों में छापा। बी. बी. सी. लन्दन से भी अग्नि-परीक्षा काण्ड संवाद प्रसारित हुए। ऐसा लग रहा था कि अग्निपरीक्षा सीता की नहीं हुई, आचार्य तुलसी की हो रही है। उस समय समाज के लोगों ने जिस जागरूकता, धृति और संघनिष्ठा का परिचय दिया वह इतिहास का एक अविस्मरणीय पृष्ठ है। उस समय गांव-गांव से श्रद्धाशील युवक सामूहिक रूप से रायपुर पहुंचे। समाज के प्रमुख संगठनों के प्रतिनिधि, परिवार और व्यापार की चिन्ता छोड़ वहां जम गए। वे हर कीमत पर उस तथाकथित विरोध के मुकाबले में तैयार हो गए। पुरुष वर्ग के वहां जमकर काम करने की प्रेरणा देने में महिलाओं ने बहुत सूझबूझ का परिचय दिया।

'अग्नि-परीक्षा' पुस्तक को मध्य प्रदेश सरकार ने जब्त कर लिया। तेरापंथी महासभा ने जबलपुर हाईकोर्ट में सरकार से संघर्ष किया। तब महासभा के अध्यक्ष मोहनलालजी बांठिया ने अपने सहयोगियों के साथ एकनिष्ठ होकर काम किया। कोर्ट ने उनके अनुकूल फैसला दिया और पुस्तक निर्दोष प्रमाणित हुई।

रायपुर एक ऐसा क्षेत्र है जो राजस्थान, पंजाब, हरियाणा आदि क्षेत्रों से काफी दूरी पर है। यातायात की कठिनाइयां भी बहुत हैं। फिर भी हजारों लोग वहां एकत्रित हुए। उन्होंने संगठित होकर समर्पित भाव से अपने आपको कठिन से कठिन काम के लिए प्रस्तुत कर दिया। उस समय अन्य समाज के लोगों को तेरापंथ समाज का अनुशासन, संगठन, एकत्व और शांति देखने को मिली।

कहा तो यह जाता है कि मुसलमान हिन्दुओं के विरोधी हैं। पर कभी-कभी देखने को यह मिलता है कि हिन्दू भी हिन्दुओं का विरोध करने में पीछे नहीं रहते। बहुत आश्चर्य की बात है कि एक हाथ दूसरे हाथ को काटने के लिए तैयार हो जाता है। वैसे समय में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक गुरु गोलवलकरजी, अटल विहारी वाजपेयी आदि कुछ व्यक्तियों ने बहुत ही साहस के साथ तटस्थ रहकर अनुकूलता का परिचय दिया। अग्निपरीक्षा आन्दोलन के प्रसंग में सेवाभावी मुनि चम्पालालजी का सीन देखने जैसा था। लोगों के गलत इरादों को नाकाम करने के लिए उन्होंने आचार्यवर के बारे में जो सावधानी बरती, उनकी सूझबूझ की सूचक रही। समाज के लोगों का

मनोबल बढ़ाने में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

१९९. रायपुर में हुए अग्निपरीक्षा विरोधी आन्दोलन के समय अनेक व्यक्तियों और वर्गों का चरित्र खुलकर सामने आया। कुछ लोगों का सकारात्मक रूप तो कुछ लोगों का अवसरवादिता का रूप देखने को मिला। स्थानकवासी सम्प्रदाय के उपाध्याय अमरमुनि और बौद्ध भिक्षु भदन्त आनन्द कौशल्यायन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध चले आ रहे थे। उन्होंने उस विषम परिस्थिति में भी अपनी मित्रता पर आंच नहीं आने दी। दोनों विद्वान् सन्तों ने अग्निपरीक्षा विरोध के विरोध में पुस्तकें लिखीं। सामान्य परिस्थिति में कोई कुछ भी कह सकता है, कर सकता है। वैसे अस्थिरता के समय में उनका जो सहयोग मिला, विस्मृत नहीं किया जा सकता।

उस समय केन्द्र में श्रीमती इन्दिरागांधी प्रधानमंत्री थीं। आचार्यवर के साथ उनका बहुत पुराना सम्पर्क था। उन्होंने भी उस समय विशेष जागरूकता दिखाई और रायपुर के जिलाधीश को बार-बार फोन कर निर्देश देती रहीं कि आचार्य जी वहां है, प्रशासन पूरी सावधानी रखे। उन्हें किसी प्रकार आंच न आने पाए। सम्भवतः इन्दिराजी के निर्देशों के कारण ही मध्य प्रदेश सरकार अपने दायित्व के प्रति सजग रह सकी। अग्निपरीक्षा विवाद समाप्त होने के बाद आचार्यवर से उन्होंने निवेदन किया— आचार्यजी ! आप थे इसलिए वहां पर टिक सके। दूसरे व्यक्ति तो अब तक तीन बार लुढक जाते। हमने आपके संगठन और सत्य के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा है। विरोधी पक्ष द्वारा उठाए गए कुतर्कों का उन्होंने सीधा जवाब दे दिया।

२००. रायपुर में उठा अग्नि-परीक्षा का विवाद एक बार शान्त हो गया। पर विरोधी लोगों का मन शान्त नहीं हुआ। वे ऐसे अवसर की खोज में थे, जो तेरापंथी समाज को मात दे सके। उसके बाद का चातुर्मास्य लाडनूं था। वहां उनका वश नहीं चला। उसके बाद वि० सं० २०२९ का चातुर्मास्य चूरू में घोषित हुआ। चूरू से पूर्व आचार्यश्री रतनगढ़ पधारे। वहीं से विरोध की दूसरी चिनगारी सुलगी। कुछ लोगों ने कहा— चातुर्मास्य का स्थान बदल देना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा— स्थान बदलने से समस्या का समाधान नहीं होगा। कुछ लोगों ने कहा— विरोध का प्रतिवाद होना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा यौक्तिक

विरोध का प्रतिवाद हो सकता है, हिंसा का क्या प्रतिवाद होगा? आचार्यश्री रतनगढ़ से विहार कर चूरू पहुंचे। गांव में प्रवेश करना कठिन हो गया। गांव के बाहर स्कूल मे तीन दिन तक रुकना पड़ा। पोलिटिक्स में विरोध करने के जो उपक्रम होते हैं, जैसे—काले झंडे दिखाना, पथराव, आगजनी आदि सभी काम में लिये गए। बड़ी मुश्किल से गांव में प्रवेश हो पाया।

विरोधी लोगों का रवैया दिन प्रतिदिन हिंसक होता जा रहा था। आचार्यश्री के श्रद्धालु भक्तों के घरों में तोड़फोड़ की गई। यात्रियों के आने-जाने में कठिनाई हुई। इन सब स्थितियों पर विचार कर आचार्यवर ने सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण को याद किया। आचार्यश्री ने जे. पी. से कहा— एक पुस्तक को लेकर कुछ लोगों के मन में हिंसा की भावना बढ़ती जा रही है, कोई रास्ता निकालकर उसे शान्त किया जाए। जे. पी. ने कहा— आपकी पुस्तक बिल्कुल निर्दोष है, हाई कोर्ट से उत्तीर्ण हो चुकी है। फिर भी आपकी उदारता है कि आप इस सम्बन्ध में नई बात सोच रहे हैं। सघन विचार-विमर्श के बाद यह तय किया गया कि जनता को हिंसा से बचाने के लिए निर्दोष पुस्तक भी वापिस ले लेनी चाहिए। इस निर्णय की क्रियान्विति के लिए एक पब्लिक मिटिंग बुलाई गई। उसमें विरोधी पक्ष के लोग भी उपस्थित थे। उनका आक्रोश उनकी आंखों में उतर रहा था। पर आचार्यश्री के प्रवचन ने उफनते हुए दूध में छीटों का काम किया। आचार्यवर ने अपनी इच्छा से जन-भावना का आदर करते हुए अग्निपरीक्षा पुस्तक वापिस ले ली। उस रात जे. पी. ने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कहा— अहिंसा के प्रयोग गांधीजी किया करते थे। आज वैसा ही एक प्रयोग आचार्यश्री तुलसी ने किया है।

इस पुस्तक की वापसी से अनेक लोगों को पीड़ा हुई। एक साहित्यकार ने तो आचार्यश्री से यहां तक कहा— आचार्यजी! साहित्य की अपनी प्रतिष्ठा होती है। ऐसी पुस्तक को वापिस लेने से साहित्यकारों की अवमानना होती है। आचार्यश्री ने कहा— मैं साहित्य के महत्त्व से परिचित हूं। पर मैं साहित्यकार बाद में हूं, सन्त पहले हूं। इस बात ने साहित्यकार को अभिभूत कर दिया। वह समय सेवाभावी मुनि चम्पालालजी के लिए सबसे अधिक बेचैनी का था।

२०१. भगवान महावीर का पचीससौवां निर्वाण-महोत्सव देश की राजधानी दिल्ली में मनाया गया। समस्त जैन समाज ने उस आयोजन को संगठित होकर मनाया। उस अवसर पर जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के आचार्यों और साधु-साध्वियों ने एक मंच से भगवान महावीर के सन्देश को जनता तक पहुंचाया। वे दिन और वे क्षण बहुत ही मनोहारी व स्मरणीय बने हुए हैं। उस प्रसंग में जैन समाज का एक ध्वज, एक प्रतीक और एक ग्रन्थ 'समण सुत्तं' सर्वसम्मति से मान्य हो गए। महावीर मेमोरियल और महावीर वनस्थली का निर्माण करने के लिए जैन समाज संकल्पित हुआ। वे दोनों स्थल अब बनकर तैयार हो गए हैं। दो और करणीय कार्य—जैन साधुओं की न्यूनतम आचार संहिता का निर्धारण और जैनमंच की स्थापना, उस समय अवशेष रहे। ये दोनों काम अब तक भी नहीं हो पाये हैं।

काश ! ये दोनों काम हो पाते और जैन शासन की प्रभावना में कुछ कड़ियां और जुड़तीं। निर्वाण-महोत्सव के कार्यक्रम में सेवाभावीजी निरन्तर सार्थक प्रयास करते रहे।

२०२. निर्वाण शताब्दी के अवसर पर एक सामूहिक कार्यक्रम हो रहा था। प्रायः सभी सम्प्रदायों के आचार्य और साधु-साध्वियां उपस्थित थीं। सेवाभावीजी ने एक दिगम्बर आचार्य को सहज भाव से विनोदी लहजे में कहा— मुनिवर्य ! आप पिच्छी, कमण्डलू, चश्मा, पुस्तकें आदि उपकरण रखते ही हैं। ऐसे बड़े आयोजनों में चार अंगुल वस्त्र का उपयोग कर लें तो व्यावहारिक कठिनाई से बचाव हो सकता है। कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

आचार्यश्री अपने आवास-स्थल पर पहुंचे, तब तक उस बात ने तूल पकड़ लिया। तेरापंथी साधु हमारी आस्था के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं—इस प्रकार के स्वर सुनाई देने लगे। साहू शान्तिप्रसादजी का फोन आया—साधुओं ने क्या कह दिया। यहां उसे लेकर आन्दोलन छिड़ गया है। आचार्यश्री को तब तक कुछ पता नहीं था। आचार्यश्री ने साहूजी की बात का हवाला देकर पूछताछ की। सेवाभावी जी ने निवेदन किया— बात तो मैंने की थी, पर मैंने तो विनोद में कहा था। आचार्यश्री ने कहा —

सीख जिणां को दीजिए, जाके हिये सुहाय।
सीख बन्दर को देवतां, घर बय्या का जाय।।

आचार्यवर ने साहूजी को सारी अवगति दी। साहूजी भी समझ गए कि यह विनोद की बात थी। उन्होंने उस वातावरण को शांत करने में अच्छी भूमिका निभाई।

२०३. दो दशकों से आचार्यश्री को श्वास का प्रकोप कभी कम और कभी अधिक मात्रा में चल रहा था। श्रावक लोगों ने आग्रहपूर्वक अनुरोध किया कि एक बार जयपुर पधार कर पूरा चैक-अप करा लेना चाहिए।

आचार्यश्री की मानसिकता कुछ कम थी। सेवाभावी जी बोले— मेरा स्वास्थ्य भी आजकल ठीक नहीं रहता है। आप जयुपर पधारने की कृपा करें तो मेरी भी जांच हो जाए। श्रावकों और सेवाभावी जी के अनुरोध पर केवल स्वास्थ्य परीक्षण के उद्देश्य से आचार्यवर जयपुर पधारे।

२०४. सेवाभावीजी की शल्यचिकित्सा के समय उनकी सेवा में मुख्य रूप से नियुक्त साधु थे—

मुनि सागरमलजी, मुनि मणिलाल जी
मुनि विनयकुमार जी, मुनि शान्ति कुमार जी

२०५. डॉक्टर से ऑपरेशन कराना शास्त्रीय विधि से सम्मत नहीं है। यह अपवाद की स्थिति है। छेदसूत्र निशीथ में डॉक्टर के पास शल्यचिकित्सा कराने पर प्रायश्चित्त का विधान है। जहां कहीं भी साधु डॉक्टर से ऑपरेशन कराते हैं, उसे अपवाद रूप में समझना चाहिए।

२०६. तेरापंथ के अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी के हाथ में एक व्रण हुआ। उसने भंयकर रूप धारण कर लिया। ऑपरेशन की स्थिति उपस्थित हुई। डॉक्टर अपनी सेवाएं देने को तैयार थे। पर कालूगणी ने उनकी सेवा अस्वीकृत कर दी। आपने डॉक्टर से ऑपरेशन तो कराया ही नहीं, डॉक्टर द्वारा लाया गया औजार भी काम में नहीं लिया। हमारे लिए आदर्श तो आज भी यही है। जहां कहीं अपवाद का सेवन होता है, वह धृति का दौर्बल्य है।

२०७. साध्वीप्रमुखा लाडांजी के आखिरी वर्षो में जलोदर का रोग हो

गया। पेट से पानी निकाला जाता, फिर भर जाता। कुछ व्यक्तियों ने आपको परामर्श दिया कि पेट का ऑपरेशन करा लेना चाहिए। लेडी डॉक्टर मुकुल रानी ऑपरेशन करने के लिए आ भी गई। लेकिन आपने ऑपरेशन कराने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। बेंगलोर चातुर्मास्य में आचार्यवर ने साध्वीप्रमुखा लाडांजी को 'सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति' सम्बोधन दिया। अपवाद का सेवन न कर आपने उस संबोधन को सार्थक कर दिया।

२०८. सब साधु-साध्वियों का धृतिबल समान नहीं होता। धृति की दुर्बलता के कारण जहां संयमी जीवन में असमाधि का प्रसंग उत्पन्न हो अथवा साधना में बाधा उपस्थित हो, वहां कुछ व्यक्ति प्रायश्चित्त स्वीकार करने का निर्णय कर अपवाद का सेवन करते हैं। अपवाद-सेवन की स्थिति में जहां साधु-चर्या का समुचित पालन संभव न हो, वहां संघ की समाचारी से मुक्त होकर भिन्न समाचारी में रहा जाए। यह निर्णय आचार्यश्री ने वि० सं० २०२७ बीदासर मर्यादा- महोत्सव पर सामूहिक चिन्तन के बाद लिया।

२०९. आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना के बाद अनेक मर्यादाओं का निर्माण किया। एक बार में निर्धारित की गई मर्यादाओं की पहचान एक-एक लिखत के रूप में है। वि० सं० १८५६ में आपने सामूहिक रूप में जो मर्यादाओं का लिखत लिखा, उसकी बारहवीं धारा इस प्रकार है—

हिवै किण ही नै छोड़णो मेलणो पड़े, किण ही चर्चा बोल रो काम पड़े तो बुधवान साध विचार नै करणो। वले श्रद्धा रो बोल पिण बुधवंत हुवै [illegible] विचार ने संचै बैठावणो। कोई बोल न बैसे तो ताण करणी नहीं, [illegible] ने भलावणो। पिण खांच अंश मात्र करणी नहीं।

२१०. प्राचीन काल में अस्वस्थ साधु-साध्वियों [illegible] लिए 'झंझाझोली' का उपयोग किया जाता था। [illegible] में डालकर कई साधु-साध्वियां उठाकर [illegible] यात्रा के समय दण्डकारण्य में मुनिश्री [illegible] पांवों में चलने की शक्ति नहीं [illegible] उनका कम से कम ढाई-तीन [illegible]

उठाना संभव था और न उनका चलना संभव था। उस स्थिति में आचार्यवर ने तत्काल साधुओं की एक गोष्ठी बुलाई। सामने खड़ी समस्या को समाहित करने का चिन्तन किया। चिन्तन की निष्पत्ति के रूप में हाथ से चलाए जाने वाले साधन का उपयोग मान्य हो गया। उसके बाद ज्यों-ज्यों परिस्थितियां आई, उनके सन्दर्भ में कहा जा सकता है उस समय जो निर्णय हुआ, उचित हुआ।

२११. नियंठा का अर्थ है निर्ग्रंथ। वे छह प्रकार के होते हैं— पुलाक, बकुश, प्रतिसेवनाकुशील, कषायकुशील, निर्ग्रंथ और स्नातक। शेष दो नियंठे परिपूर्ण रूप से शुद्ध होते हैं। प्रथम चार प्रकार के नियंठों में अतिचार दोष के धब्बे लग जाते हैं। वे अपवाद रूप में दोष का सेवन कर लेते हैं। इससे संयम मलिन होता है, पर छूटता नहीं है।

जिस प्रकार एक मकान में टूट-फूट होने पर बार-बार मरम्मत की अपेक्षा रहती है। मरम्मत के बाद वह मकान नया-सा हो जाता है। ठीक इसी प्रकार साधु-चर्या में दोषों का सेवन होने से साधुत्व मलिन होता है, प्रायश्चित्त वहन करने के बाद वह निर्मल हो जाता है। बकुश, प्रतिसेवना आदि नियंठो के साधु बीमारी की विशेष स्थिति में भिन्न-समाचारी में रहकर अपवादों का सेवन करते हैं। फिर आचार्य के पास आलोचना कर, प्रायश्चित्त स्वीकार कर शुद्ध हो जाते हैं। जो लोग आगमों के इन तथ्यों से परिचित होते हैं, वे यथार्थ का आकलन करते हैं। जो इन्हें नहीं जानते, वे संदिग्ध हो जाते हैं। इनको समझने के लिए जयाचार्य द्वारा लिखित 'झीणी चरचा' में नियंठों की ढाल का पारायण करना चाहिए।

२१२. सेवाभावीजी के ध्यान, स्वाध्याय, जप आदि का प्रतिदिन नियमित क्रम चलता था। वे कुछ सूत्रों के पद्य, कुछ स्तोत्र, कुछ स्वामी जी के गीत और कुछ मंत्रों का जप—इस प्रकार एक हजार से अधिक पद्यों का नियमित स्वाध्याय करते थे। यह उनकी दिनचर्या का अनिवार्य अंग था।

२१३. जयपुर में आयोजित श्रावक सम्मेलन के अवसर पर आचार्यश्री द्वारा समुच्चारित गीत के कुछ पद्य—

शासन कल्पतरू, उतर्यो मोहरां रो चरू।
राखो - राखो रखवाली।
बाबै भिक्खू रो उपगार, मानां जीवन भर आभार।
ज्यांरी सांवरी सूरत तेरापंथ रो आधार।।

१. अलबेलो शासण आपां रो, सारां रै मनभावणो,
मनहारो प्राणां स्यूं प्यारो, लागै घणो सुहावणो।
इण री ऊजली आभा स्यूं लेवां जीवन उजार।।

२. मात-पिता -सो आसरो, ओ नन्दनवन-सो वास है,
आश्वासन है दूबलां रो, सबलां रो विश्वास है।
अनुपम शीतघर -सो है बण्यो, सब ऋतुवां में सुखकार।।
(पूरा गीत देखें, नन्दन निकुञ्ज, पृ॰२६३)

२१४. वि॰ सं॰२०३२ में आचार्यवर जयपुर थे। चातुर्मास्य से पूर्व आपने सुराणा फार्म में स्वास्थ्य की दृष्टि से एकान्त वास किया। उस समय संघ से बहिष्कृत कुछ साधुओं ने समाज में उथल-पुथल मचाने का प्रयास किया। अनेक लोगों को भ्रान्त किया। भ्रान्तियों का निरसन और समाज को अपने दायित्व के प्रति जागरूक करने के लिए वहां एक श्रावक सम्मेलन बुलाया गया। उस सम्मेलन में आचार्यश्री एवं सेवाभावीजी की सामयिक प्रेरणा से समाज में अच्छी जागृति आई।

२१५. सरदारशहरनिवासी चन्दनमलजी वैद धर्मसंघ व संघपति के प्रति समर्पित आस्थाशील श्रावक हैं। जब वे राजस्थान सरकार में वित्त मंत्री थे, एक बार सरकारी काम से कलकत्ता गए। जिस भवन में उनका कार्यक्रम था, वहां पर संघ से बहिष्कृत मुनि महेन्द्रजी ठहरे हुए थे। प्रोग्राम पूरा होने पर वे जाने लगे। महेन्द्रजी के कुछ पक्षधर उनका रास्ता रोककर खडे हो गए और बोले—भीतर सन्त विराज रहे हैं। आप दर्शन करके पधारें। चन्दनमलजी ने कहा—यहां कौन साधु है? वे बोले—"मुनि महेन्द्रकुमार जी"। चन्दनमलजी ने कहा —"मुनि महेन्द्रकुमार जी हमारे धर्मसंघ से अलग हैं। जो साधु संघ की मर्यादा को भंग कर दे, उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता।" चन्दनमलजी दरवाजे से बाहर आ गए और सब लोग देखते रह गए।

सेवाभावीजी अनेक बार कहते थे— हमारे श्रावकों को टालोकरों से

वचना चाहिए। कैसे वचा जाए ? इस सन्दर्भ में चन्दनमलजी उदाहरण हैं।

चन्दनमलजी ने उस समय जिस निष्ठा और सूझबूझ का परिचय दिया, उल्लेखनीय है। विरोधी लोगों को दो टूक जवाब देकर उनका मुंह वन्द कर देना वहुत वड़ी वात है। उन्होंने उस दिन कलकत्ता में संघीयभावना से भरा हुआ जो वक्तव्य दिया, वह वहुत प्रभावी रहा। उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण वात कही—"धर्मसंघ से अलग होने वाले लोग इस संघ की मर्यादा को नहीं जानते। मेरा एक अनुभव है कि तेरापंथ धर्मसंघ से और कांग्रेस से जो व्यक्ति अलग हो जाता है, वह कभी फलता-फूलता नहीं है।" राजनीति में रचे-पचे किसी व्यक्ति का धर्मसंघ के प्रति इतना निष्ठावान होना और संघीय मर्यादाओं के वारे में इतना सुन्दर वोलना, आश्चर्य की वात है। इनके इसी वैशिष्ट्य को ध्यान में रखकर आचार्यश्री ने इनको 'संघप्रवक्ता' सम्वोधन से सम्वोधित किया।

२१६. सेवाभावी जी फतेहपुर से आगे विहार करने वाले थे। इस दृष्टि से सव साधु उनसे मिल रहे थे। उस क्रम में मुनि नथमलजी उनके पास गए और वचपन में स्वयं पर किए गए उपकार के लिए आभार ज्ञापित करने लगे। उन्होंने कहा—मै और वुधमलजी दोनो आपके पास सोते थे। बीच में आप सोते। एक ओर मैं, दूसरी ओर वुधमलजी। शीतकाल की लंबी रातों में बाल स्वभाव के कारण हम वहुत लातें चलाते। आपने हमको कितना सहन किया। आपका हमारे पर सदा वत्सल भाव रहा। उन बातों को याद करते हैं तो हम गद्‌गद हो जाते हैं।

२१७. सेवाभावीजी ने अपने मन में तीन सपने संजोये थे—

१. जीवन में कभी परवश न वनूं — सब काम स्ववशता से करता रहूं।
२. जीवन भर चलता रहूं— कभी स्थिरवासी न बनूं।
३. विश्व भारती पहुंचूं — मेरी अन्तिम समाधि जैन विश्व-भारती में हो।

२१८. फतेहपुर में चूरू से डा० मांगीलाल श्यामसुखा ने दर्शन किए।

सेवाभावी जी के स्वास्थ्य की जांच करके उन्होंने कहा—आपका हार्ट बहुत कमजोर हो गया है। पैदल चलना खतरे से खाली नहीं है। उन्होंने कुछ संतों के सामने भी इस बात की चर्चा की। पर सबने यही कहा—भाईजी महाराज का मानस लाडनूं पहुंचने का है। डाक्टर ने कहा—'अगर मानस है तो अपने वश की बात नहीं है। कमी यह रही कि यह बात आचार्यवर के ध्यान में नहीं आई। यदि डाक्टर इस संबंध में आचार्यवर से निवेदन कर देता तो संभवतः आचार्यश्री उनको किसी नयी व्यवस्था से लाडनूं पहुंचा देते।

२१६. सालासर में सेवाभावी जी ने दाढी और मूंछ का लोच कराया। केवल अपना ही नहीं, साथ में रहने वाले सब सन्तों को निर्देश दे दिया। एक-दो सन्तों ने दूसरे दिन लोच कराने की इच्छा व्यक्त की तो सेवाभावी जी ने कहा— "कल समय नहीं मिलेगा। सब सन्त आज ही लोच करवा लो।" दूसरे दिन वास्तव में किसी को लोच कराने का अवकाश नहीं मिलता।

२२०. सेवाभावीजी सालासर से विहार कर पार्वतीसर से पहले एक प्याऊ में रुके। आचार्यश्री उस दिन सालासर पधारे। आपने सेवाभावीजी को सूचित किया— आज सायं आप पार्वतीसर रुक जाएं, हम भी वहा आ रहे हैं, मिलना हो जाएगा। सेवाभावीजी ने निवेदन कराया—"आज रुकने से मैं पीछे रह जाऊंगा। मेरी इच्छा आपके साथ-साथ जैन विश्व भारती पहुंचने की है।" इस कारण वे पार्वतीसर न रुककर वहां से वे तीन कि. मी. दूर 'धां' गांव में पधार गए।

२२१. सालासर में सेवाभावीजी अस्वस्थ हो गए, फिर भी उन्होंने वहां से विहार किया। सालासर से प्याऊ तक पांच-छह मील पहुंचने में पांच घंटे लगे। वहां से आगे धां गांव एक कोस था। मध्याह्न में उन्होंने प्याऊ से विहार किया। वह एक कोस का रास्ता सौ कोस जितना कठिन हो गया। फिर भी उनका मानसिक संकल्प इतना पुष्ट था कि वे अपने गंतव्य तक पहुंच ही गए।

२२२. सम्राट जनक विदेह कहलाते थे। उनके राज्य में प्रजा सन्तुष्ट थी। ऋषि-मुनियों का पूरा सम्मान था। प्रशासन का रूप सुन्दर था। एक रात सम्राट सो रहे थे। उन्होंने स्वप्न देखा—राज्य में बगावत हो गई। मंत्रिमण्डल में उथल-पुथल मच गई। मुझे राजगद्दी से च्युत कर दिया गया। कुछ लोगों ने मुझे जंगल में छोड़ दिया। वहां मैं अकेला और असहाय हो गया। इधर-उधर घूमने पर भी कोई दिखाई नहीं दिया। घूमते-घूमते मुझे गहरी भूख लगी। पर मेरे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। भोजन की तलाश में मैं एक गांव में पहुंचा। मैंने देखा—वहां सदाव्रत बंट रहा है। अनेक लोग पंक्तिबद्ध खड़े हैं। उन्हें खाने के लिए दलिया मिल रहा है। मैं भी जाकर पंक्ति में खड़ा हो गया। क्रम आने पर मुझे दलिया मिला। मेरे पास कोई पात्र नहीं था। टूटे हुए मिट्टी के बर्तन में मैंने दलिया लिया। उसी समय दो गायें लड़ती हुई आयीं और दलिया से भरे मिट्टी के पात्र पर गिर पड़ीं। वह टूटा हुआ बर्तन चूर-चूर हो गया। दलिया मिट्टी में मिल गया। मैं हताश होकर इधर-उधर देखने लगा। उसी समय मेरी आंख खुल गई।

नींद खुलते ही मै उठ बैठा। मुझे जय-विजय के घोष सुनाई दिए। मागध मेरे निकट आये और मंगलपाठ करने लगे। मंत्री आये। उन्होने मंगल भावना प्रकट की। राज्य सभा के अनेक सदस्य आये। सम्राट जनक ने उन सबसे एक ही प्रश्न पूछा— यह सच है या वह सच था ? किसी के पास उसका उत्तर नहीं था। सम्राट ने बार-बार इस प्रश्न को दोहराया। कुछ लोगो ने सोचा आज सम्राट को क्या हो गया। इनका दिमाग तो खराब नहीं हो गया। इसी बीच ऋषि अष्टावक्र राजसभा में पहुंचे। ऋषि ज्ञानी थे। सम्राट ने अपना प्रश्न दोहराया—यह सच है या वह सच था ? ऋषि बोले—यह भी सच है वह भी सच था।

सम्राट को नया बोध-पाठ मिला। संसार की विचित्रता को प्रमाणित करने वाला नया अनुभव मिला।

२२३. सौगत—बुद्ध का अभिमत था संसार में जितने अस्तित्ववान पदार्थ हैं, वे सब क्षणिक हैं। उदाहरण के रूप में मेघ को प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रश्न उठता है कि क्या यह बात सही है ? ऐसे प्रश्न का उत्तर सिद्धान्तों से बेहतर घटित घटनाओं से दिया जा सकता है। उस संदर्भ में

एक सहायक उदाहरण है— सेवाभावी मुनि चंपालालजी की स्थिति, जो हमें सच्चाई तक जाने का रास्ता देती है। सपने का क्षण छोटा होता है और जिन्दगी के क्षण वड़े होते हैं। परिवर्तन दोनों स्थानों पर है। गहराई में जाकर सोचा जाए तो स्पष्ट हो जाता है—पर्याय क्षणिक है, द्रव्य शाश्वत है। मृत्यु के बाद भी जीव का अस्तित्व बना रहता है। पर क्षण-क्षण में परिवर्तन होता रहता है।

२२४. सेवाभावीजी की स्मृति सभा में आचार्यश्री तुलसी द्वारा समुच्चारित गीत—

श्री भैक्षव गण-गगनांगण में गहरो गौरव पायो।
आयो चम्पक मुनिवर चांद ज्यूं, हो चांद ज्यूं, हो चांद ज्यूं।।
१. शिशु सो सहज, जोश युवकां सो, दानां सो दाठीक,
सेवाभावी, सरल स्वभावी निर्मायी, निर्भीक।
सारी जनता रै मन भायो, वदनांजी रो जायो।।
२. च्यार तिरथ रो खरो आसरो, आलम्बन आधार,
रोगी, ग्लानी, गरढ़ा -बूढां स्यूं करतो अति प्यार।
असहायां रो सदा सहारो, कदे न होतो कायो।।
३. सदा जम्यो रहतो जमघट-सो, भाईजी रै पास,
बालक बूढ़ा और जवानां रो अटूट विश्वास।
बूढी-ठेरी डोकरियां रो, ज्यूं-त्यूं व्रत निपजायो।।
४. हंसतो खिलतो ही नित रहतो हंसमुख-सो हर बार।
कष्टां स्यूं नहिं कायल श्रम स्यूं कदे न मानी हार।
जीतो सपनां री दुनिया में, सपनो-सो दिखलायो।।
५. म्हारो उपकारी अधिकारी संरक्षक, सहचार,
ज्येष्ठ सहोदर, श्रेष्ठ सहायक कोमल विमल विचार।
निर्दूषण शासण रो भूषण, भारी नाम कमायो।।
६. शहर लाडनूं को तो वो थो सारां सिरे सपूत,
जन्म भूमि रो गौरव गातो, दे-दे बडी सबूत।
इण नै इण खातिर मत छेड़ो श्री कालू फरमायो।।
७. लम्बी-लम्बी यात्रावां में रह्यो प्रेरणा-स्रोत,
लम्बी-लम्बी मजलां में फिर रहतो ओत-प्रोत।
अंगारो बण जीणो सीख्यो, बुझणो नहीं सुहायो।।

८. वरसां स्यूं प्रति- दिवस हजारां पद्यां की स्वाध्याय,
करतो नहीं विसरतो वरतो आ आध्यात्मिक आय।
मै जद उठतो, बावल मिलतो बैठो दांयो-वांयो।।

६. अद्‌भुत वृत्त्यां में व्यवहारां में परिवर्तन देख,
'सैवायं सैवायं' करणो कठिन पड़े उल्लेख।
प्रगतिशीलता लख बन्धव री हृदय कमल विकसायो।।

१०. पाई साधारण-सी शिक्षा पढ्या न गहरा ग्रन्थ,
पर लाखां लोगां री श्रद्धा विस्मयकर विरतंत।
बो खटेड कुल केतू सेतू गण पिलंग रो पायो।

११. जीवन रो प्रारम्भ पराश्रित, मध्य पराश्रित पूर,
स्वाश्रित देखी अन्तिम परिणति, कोहिनूर-सो नूर।
ओ व्यक्तित्व विलक्षण लक्षण शासण में सोभायो।।

१२. जयपुर रो जयकारी पावस बीच फतेहपुर वास।
सालासर स्यूं आगै आतां 'धां' में छोड्यो सांस।
शव-यात्रा री छटा अटारी चन्देरी चमकायो।।

१३. चौसठ जन्म इक्यासी दीक्षा, बत्तीसै सुरवास,
एक पद्य में पूरो होग्यो, सारो राघव रास।
विश्व भारती रै प्रांगण में प्रहरी बणग्यो ठायो।।

१४. सहज गोचरी री वेळा में सबनै आसी याद,
और व्यवस्था री बेळा में रहसी याद अवाध,
कडी जोड़तो नहीं तोड़तो, बो नयवाद निभायो।।

१५. सत्ताणूं वरसां री बूढ़ी मांजी जीवै आज,
देखो लाडांजी रै रस्तै, भाईजी महाराज।
खैर, खुशी, भगिनी बन्धव रो-'तुलसी' ऋणो चुकायो।।

१६. मिगसर सुद तेरस स्यूं आई आज पोष बिद तीज,
चौसठ सन्त, तीन सौ सतियां सुमरै खोई चीज,
विजयी शासण पल- पल क्षण-क्षण विजयध्वज फहरायो।।

२२५. सेवाभावीजी का अन्तिम संस्कार जैन विश्वभारती परिसर में किया गया। संस्कार-स्थल पर स्मारक बनाया गया। सेवाभावीजी के प्रति आस्था रखने वाले कुछ लोगों ने कहा— समाधि-स्थल पर स्टेच्यू स्थापित करेंगे। यह बात आचार्यश्री के ध्यान में आई। आपने दिशाबोध देते हुए कहा—"यह अपनी परम्परा नहीं है। तात्कालिक भावावेश में किसी नई परम्परा को डालना

उचित नहीं होता। अब तक जो बात नहीं हुई, वह आज क्यों ?"लोगों को समय पर मिले मार्गदर्शन से अपनी परम्परा का बोध हो गया।

२२६. एक समय की बात है—आचार्यश्री यात्रा कर रहे थे। प्रतिदिन दस-बारह मील का विहार होता था। उस दिन ग्यारह मील का विहार करना था। सेवाभावीजी ने श्रमणसागर को साथ लेकर विहार कर दिया। लगभग सौ कदम ही चले होंगे कि एक अपरिचित व्यक्ति आया, चरणों में झुका और बोला—महाराज ! मैं इसी गांव में रहता हूं।' वैष्णव मतावलम्वी हूं। कल पहली वार आचार्य तुलसी को देखा, उनका प्रवचन सुना और उनसे प्रभावित हो गया। मेरी पत्नी बहुत वीमार है। आप मेरे घर पधारें और उसे कोई मंगल मन्त्र सुना दें। सेवाभावीजी ने पूछा—तुम्हारा घर यहां से कितनी दूर है ? उसने कहा— सम्भवतः एक मील तो होगा ही। सेवाभावीजी के लिए ग्यारह मील चलना भी कठिन था। दो मील का रास्ता वढ़ रहा था। फिर भी उस भाई की वलवती भावना पूरी करने के लिए मुड़े। उसके घर गये और मृत्यु-शय्या पर प्रतीक्षा कर रही वहन को दर्शन देकर मंगल-पाठ सुनाया। वहन धन्य हो गई। उसके अन्तिम शब्द थे-"संत दर्शन हो गए, अब मैं कृतकृत्य हूं।" वह वैष्णव परिवार सेवाभावीजी के उस उपकार से कैसे उऋण हो सकता है।

२२७. आचार्यश्री वीदासर से प्रस्थान कर रहे थे। महनोत भवन के पास ही चम्पालालजी गिड़िया का मकान है। उनकी मां मरणासन्न अवस्था में थी। चम्पालालजी ने सोचा—आचार्यवर को निवेदन कर मां को दर्शन दिला दूं। पर वे आचार्यवर के निकट नहीं पहुंचे। सेवाभावीजी क दर्शन कर के बोले— आप मेरे घर पधारें। सेवाभावीजी ने दर्शन दिये, तो उस वृद्ध श्राविका ने संथारा स्वीकार करने की भावना व्यक्त की। सेवाभावीजी बोले—मैं आचार्यश्री से आज्ञा लेकर नहीं आया, संथारा कैसे पचखाऊं ? आचार्यश्री प्रस्थान कर चुके थे। आपके पास पहुंचकर आज्ञा ली जाए, ऐसा अवसर नहीं था। सेवाभावी जी ने सारी बात अपने ऊपर लेकर चम्पालालजी की मां को संथारा करा दिया। संयोग की बात उनका संथारा जल्दी सम्पन्न हो गया।

८. वरसां स्यूं प्रति- दिवस हजारां पद्यां की स्वाध्याय,
करतो नहीं विसरतो वरतो आ आध्यात्मिक आय।
मै जद उठतो, बाबल मिलतो बैठो दांयो-बांयो।।
६. अद्‌भुत वृत्त्यां में व्यवहारां में परिवर्तन देख,
'सैवायं सैवायं' करणो कठिन पड़ै उल्लेख।
प्रगतिशीलता लख बन्धव री हृदय कमल विकसायो।।
१०. पाई साधारण-सी शिक्षा पढ्या न गहरा ग्रन्थ,
पर लाखां लोगां री श्रद्धा विस्मयकर विरतंत।
बो खटेड कुल केतू सेतू गण पिलंग रो पायो।
११. जीवन रो प्रारम्भ पराश्रित, मध्य पराश्रित पूर,
स्वाश्रित देखी अन्तिम परिणति, कोहिनूर-सो नूर।
ओ व्यक्तित्व विलक्षण लक्षण शासण में सोभायो।।
१२. जयपुर रो जयकारी पावस बीच फतेहपुर वास।
सालासर स्यूं आगै आतां 'धां' में छोड्यो सांस।
शव-यात्रा री छटा अटारी चन्देरी चमकायो।।
१३. चौसठ जन्म इक्यासी दीक्षा, वत्तीसै सुरवास,
एक पद्य में पूरो होग्यो, सारो राघव रास।
विश्व भारती रै प्रांगण में प्रहरी बणग्यो ठायो।।
१४. सहज गोचरी री वेळा में सबनै आसी याद,
और व्यवस्था री वेळा में रहसी याद अवाध,
कड़ी जोड़तो नहीं तोडतो, वो नयवाद निभायो।।
१५. सत्ताणूं वरसां री बूढ़ी मांजी जीवै आज,
देखो लाडांजी रै रस्तै, भाईजी महाराज।
खैर, खुशी, भगिनी बन्धव रो-'तुलसी' ऋणो चुकायो।।
१६. मिगसर सुद तेरस स्यूं आई आज पोष विद तीज,
चौसठ सन्त, तीन सौ सतियां सुमरै खोई चीज,
विजयी शासण पल- पल क्षण-क्षण विजयध्वज फहरायो।।

२२५. सेवाभावीजी का अन्तिम संस्कार जैन विश्वभारती परिसर में किया गया। संस्कार-स्थल पर स्मारक बनाया गया। सेवाभावीजी के प्रति आस्था रखने वाले कुछ लोगों ने कहा— समाधि-स्थल पर स्टेच्यू स्थापित करेंगे। यह बात आचार्यश्री के ध्यान में आई। आपने दिशाबोध देते हुए कहा—"यह अपनी परम्परा नहीं है। तात्कालिक भावावेश में किसी नई परम्परा को डालना

उचित नहीं होता। अब तक जो बात नहीं हुई, वह आज क्यों ?"लोगों को समय पर मिले मार्गदर्शन से अपनी परम्परा का बोध हो गया।

२२६. एक समय की बात है—आचार्यश्री यात्रा कर रहे थे। प्रतिदिन दस-बारह मील का विहार होता था। उस दिन ग्यारह मील का विहार करना था। सेवाभावीजी ने श्रमणसागर को साथ लेकर विहार कर दिया। लगभग सौ कदम ही चले होंगे कि एक अपरिचित व्यक्ति आया, चरणों में झुका और बोला—महाराज ! मैं इसी गांव में रहता हूं।' वैष्णव मतावलम्बी हूं। कल पहली बार आचार्य तुलसी को देखा, उनका प्रवचन सुना और उनसे प्रभावित हो गया। मेरी पत्नी बहुत बीमार है। आप मेरे घर पधारें और उसे कोई मंगल मन्त्र सुना दें। सेवाभावीजी ने पूछा—तुम्हारा घर यहां से कितनी दूर है ? उसने कहा— सम्भवतः एक मील तो होगा ही। सेवाभावीजी के लिए ग्यारह मील चलना भी कठिन था। दो मील का रास्ता बढ़ रहा था। फिर भी उस भाई की बलवती भावना पूरी करने के लिए मुडे। उसके घर गये और मृत्यु-शय्या पर प्रतीक्षा कर रही बहन को दर्शन देकर मंगल-पाठ सुनाया। बहन धन्य हो गई। उसके अन्तिम शब्द थे-"संत दर्शन हो गए, अब मैं कृतकृत्य हूं।" वह वैष्णव परिवार सेवाभावीजी के उस उपकार से कैसे उऋण हो सकता है।

२२७. आचार्यश्री बीदासर से प्रस्थान कर रहे थे। महनोत भवन के पास ही चम्पालालजी गिड़िया का मकान है। उनकी मां मरणासन्न अवस्था में थी। चम्पालालजी ने सोचा—आचार्यवर को निवेदन कर मां को दर्शन दिला दूं। पर वे आचार्यवर के निकट नहीं पहुंचे। सेवाभावीजी के दर्शन कर के बोले— आप मेरे घर पधारें। सेवाभावीजी ने दर्शन दिये, तो उस वृद्ध श्राविका ने संथारा स्वीकार करने की भावना व्यक्त की। सेवाभावीजी बोले—मैं आचार्यश्री से आज्ञा लेकर नहीं आया, संथारा कैसे पचखाऊं ? आचार्यश्री प्रस्थान कर चुके थे। आपके पास पहुंचकर आज्ञा ली जाए, ऐसा अवसर नहीं था। सेवाभावी जी ने सारी बात अपने ऊपर लेकर चम्पालालजी की मां को संथारा करा दिया। संयोग की बात उनका संथारा जल्दी सम्पन्न हो गया।

काम सिद्ध हो गया। चम्पालालजी का परिवार उस घटना को आज भी याद करता है।

२२८. आचार्यश्री यात्रा में थे। प्रतिदिन विहार होता था। एक दिन बाल मुनि सम्पतमलजी(डूंगरगढ़) थोड़ी दूर चले और श्वासाक्रान्त होकर रास्ते में बैठ गये। सेवाभावीजी पीछे से वहां पहुंचे। उन्होंने सारी स्थिति को समझा। उनके साथ दो सन्त और थे। तीनों सन्तों ने छोटे सन्त को क्रमशः अपने कन्धों पर बिठाकर चार मील की दूरी तय कर मंजिल तक पहुंचा दिया।

२२६. वि० सं० १६६६ की घटना है। उन दिनों आचार्यश्री चूरू प्रवास कर रहे थे। मुनि हाथीमलजी (बड़) की हथेली में सतपुड़ा फोड़ा उठा। फोडे में रस्सी के कारण भयंकर वेदना हो रही थी। उसे देखने के लिए एक जर्राह आया। उसने फोड़े को देखकर कहा — इसको चीरा लगाना होगा। मन्त्री मुनि ने चाकू से फोडे को चीरा, उसमें से रक्त निकला। ने बोले—फोड़ा अभी कच्चा है। जर्राह ने कहा—महाराज ! फोड़े के अन्दर रस्सी हो गई है। आप चाकू को गहरे तक ले जाएं। मंत्री मुनि का हाथ आगे नहीं चला। सेवाभावीजी ने भी मन्त्री मुनि को निवेदन कर चाकू अपने हाथ में लिया और साहस के साथ गहरे तक घुसा दिया। अन्दर से पीव की पिचकारी-सी छूट पड़ी। मन्त्री मुनि ने कहा—मेरी तो हिम्मत नहीं थी, तुमने हिम्मत कर ली। पीव निकलने से हाथीमलजी जल्दी स्वस्थ हो गये।

२३०. मंत्री मुनि सरदारशहर में स्थिरवासी थे। उनको मूत्रावरोध हो गया। डाक्टर के परामर्श से नली के प्रयोग से पेशाब उतारा जाता। एक बार रात को पेशाब बन्द हुआ। मुनि सोहनलालजी ने नली लगाने की कोशिश की, नली नहीं लगी। डाक्टर ने चेष्टा की, पर आगे नहीं गई। मन्त्री मुनि को प्राणान्तक कष्ट हो रहा था, पर कोई उपाय काम नहीं कर रहा था। उस समय सेवाभावीजी ने नली अपने हाथ में ली। पता नहीं क्या हुआ, नली ठीक से लग गई और लगभग दो किलो पेशाब हुआ। मंत्री मुनि की वेदना शान्त हुई। डाक्टर विस्मित रह गया।

२३१. बीदासर निवासी खूबचन्दजी बांठिया अवस्था प्राप्तकर दीक्षित हुए। उनकी वैराग्य वृत्ति बहुत अच्छी थी पर वे प्रकृति से अड़ियल थे। उन्हें दीक्षित होने के बाद मूत्रावरोध की बीमारी हो गई। एक बार पेशाव बन्द हुआ, नली नहीं लग पाई। स्थिति इतनी भयंकर हुई कि उनका मन अस्थिर हो गया। एक ओर बीमारी की छटपटाहट, दूसरी ओर चरित्र की सुरक्षा का प्रश्न। उस समय सेवाभावीजी ने नली लगाकर उनकी शारीरिक बेचैनी दूर की और डगमग करती चरित्र की नौका को किनारे लगाया।

२३२. लाडनूं निवासी खींवराजजी कुचेरिया की पुत्री गणेशी का विवाह लाडनूं के ही तोलाराम जी भूतोड़िया के साथ हुआ। विवाह के बाद बहन विरक्त हो गई। उसने पूरी वैराग्य भावना से अपने श्वसुर पक्ष व पति की आज्ञा से दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के बाद तोलाराम जी समय-समय पर उनकी उपासना करते। तोलारामजी का दृष्टिकोण सही नहीं था। उनकी प्रेरणा से साध्वी गणेशां जी के मोह का प्रबल उदय हो गया। उनके मन में भी आकर्षण जग गया। सरदारशहर प्रवास की बात है, साध्वी गणेशां जी परिष्ठापन के लिए बाहर गई। वहां तोलारामजी आए। उन्हें अपने साथ ले गये। बात अवांछनीय थी, पर मोहवश कुछ भी समझ नहीं सकीं। घर जाने के बाद उन्हें होश आया और अपनी गलती का अनुभव हुआ। अनुताप भी हुआ। उन्होंने पुनः संघ में प्रवेश पाने के लिए निवेदन किया। बहुत प्रयत्न करने के बाद भी आचार्यश्री ने इसके लिए स्वीकृति नहीं दी। गणेशां जी ने अनुनय-विनय कर सेवाभावी जी को अपने पक्ष में किया, पर आचार्यवर ने उनके अनुरोध को टाल भी दिया।

सेवाभावी जी ने सोचा, किसी व्यक्ति को संघ में लेना, न लेना आचार्यो का काम है। आचार्यो का चिन्तन संघ के हित में होता है। यह पुनः साध्वी बन सके या नहीं, लेकिन ऐसे कामुक व्यक्ति के चंगुल में नहीं फंसने दूंगा। सेवाभावी जी ने गणेशांजी को स्पष्ट शब्दों में कहा—यह निश्चित है आचार्यश्री तुम्हें संघ में नहीं लेंगे। यदि तुम्हारा मन मजबूत है तो तुम्हें ही कोई चमत्कार दिखाना होगा। इस बात से बहन को बल मिला। वह अपनी ससुराल में पति के पास नहीं गई। पीहर रही और तपस्या शुरू कर दी। उधर तोलारामजी ने काफी चेष्टा की, पर वह दृढ रही। उसने तपस्या के द्वारा ... [illegible] पूर्वक ...

यात्रा पूरी कर लो।

मोह कर्म के उदय से पतन होना वड़ी वात नहीं है पर गिरने के बाद सम्भलना जीवन की वडी उपलब्धि है। इस काम में सेवाभावी जी का पूरा सहयोग मिला।

२३३. लाडनूं निवासी महालचन्दजी खटेड़ की इकलौती पुत्री कंचन वचपन में ही विरक्त हो गई। वढ़ते हुए वैराग्य भाव के साथ उसने दीक्षा स्वीकार की। किशोरी कंचन साध्वी कंचन वन गई। गुरु की कृपा, स्वयं के पुरुषार्थ और अग्रगण्य साध्वी के प्रोत्साहन से पढ़-लिखकर अच्छी काम करने वाली साध्वी वन गई। पर कर्मो की गति विचित्र होती है। आचार्यश्री की दक्षिण यात्रा के दौरान जोधपुर में मानसिक विचलन के कारण धर्मसंघ को छोड़कर चली गई। संवाद लाडनूं पहुंचा। उनके संसार पक्षीय माता-पिता अविलम्व जोधपुर पहुच गये। उन्होंने संघनिष्ठा का परिचय देते हुए साहस से काम लिया। उनको वड़ी कडाई के साथ प्रतिवोध दिया। मोह का आवेश उतरने के बाद उन्हें भी अपनी भूल का अनुभव हो गया। वह वापिस मुड़ी तो ऐसी मुड़ी कि कड़ी से कड़ी कसौटी पर परीक्षण के लिए तैयार हो गई। वह न तो घर गई, न और कहीं गई। यात्रा मे साथ रही, तपस्या करती रही और उस प्रतिकूल परिस्थिति में समता से सव कुछ सहन करती रही। लगभग एक महीने की कसौटी के बाद आचार्यश्री के मन में विश्वास पैदा हुआ। उन्हें संघ में पुनः प्रवेश मिल गया। कसौटी के उस समय में उनकी संसार-पक्षीया मां श्राविका गणेशी वाई और सेवाभावीजी का उन्हें पूरा सहयोग मिला।

२३४. सेवाभावीजी दिल्ली की ओर विहार कर रहे थे। साथ में वयोवृद्ध मुनि छोगालालजी थे। भीवानी से विहार हुआ। सेवाभावीजी आगे चल रहे थे। वृद्ध संत पीछे रह गये। उनके साथ एक मुनि थे। छोगालालजी अचानक मार्ग में गिर पड़े। साथ वाले मुनि घवरा गये। वे उन्हे वहीं छोड़ आगे सेवाभावी जी के पास पहुंचे। सेवाभावीजी ने उनको आगे जाने का निर्देश देकर स्वयं लौटकर मुनि छोगालालजी के पास आये। उन्हें सहारा देकर उठाया। उनके नेश्राय का वोझ अपने कन्धों पर रखा। उनका एक हाथ अपने गले पर

रखवाया और एक हाथ का सहारा देकर जैसे-तैसे दो मील चले। तब तक आगे वाले दो सन्त लौटकर आए थे। उन्होंने देखा—सेवाभावी जी के दोनों कन्धों पर भार लदा है। मुनि छोगालालजी के शरीर का भार भी उन पर ही था। फिर भी सेवाभावी जी का उत्साह और जोश देखने जैसा था। ऐसी विचित्र थी उनकी सेवा-भावना।

२३५. सेवाभावीजी विनोदी प्रकृति के व्यक्ति थे। एक ओर तो आचार्य के ज्येष्ठ भ्राता का गरिमापूर्ण स्थान, दूसरी ओर छोटे-छोटे साधुओं से विनोद के प्रसंग। साधुओं के नामकरण में भी आपकी विनोदी प्रकृति यत्र-तत्र मुखर होती रही, जैसे—

मुनि बालचन्द जी (गंगाशहर) हर काम में उतावले रहते हैं। उनकी इस आदत के कारण उन्हें 'हलफल' कहते। मुनि बालचन्दजी सही अर्थ में निर्जरार्थी साधु हैं। वे छोटे-बड़े किसी भी साधु का काम करने में तत्पर रहते हैं। काम करने वाला सबको मीठा लगता है। बालूसाही नाम की मिठाई बहुत मीठी होती है। सेवाभावी जी कभी-कभी उन्हें 'बालूसाही' कहकर पुकारते थे।

मुनि हीरालाल जी के लिए हीरजी शब्द का उपयोग करते थे। मुनि दुलहराजजी गृहस्थ जीवन में शिक्षक थे। उनको अंग्रेजी भाषा का भी अच्छा ज्ञान है। उन्हें वे 'स्कोलरजी' कहते थे। उनके प्रति सेवाभावीजी की इतनी कृपा थी कि आचार्यवर को निवेदन करके उनको विगय-वर्जन किए बिना चाय पीने की आज्ञा दि गई।

मुनि मधुकरजी, जिनका मूल नाम मांगीलालजी था, छोटी उम्र में दीक्षित हुए। उस समय उनका कद छोटा था और वे गौर वर्ण के थे इसलिए सेवाभावी जी उन्हें 'गोटिया' कहते थे। उनकी जात है—लोढा। लोढा घोटने के काम आता है इसलिए उन्हें 'घोटिया' भी कहते।

जिन साधुओं के दाढ़ी के [illegible] ज्यादा आते, उन्हें वे दाढ़ीधर या सरदार शब्द से संबोधित करते। इस प्रकार के और भी अनेक प्रसंग हैं। यहां केवल सूचना मात्र दी गई है।

२३६. सेवाभावी जी की उपासना करने वाले बहुत लोग थे। अनेक गांवों के अनेक व्यक्ति उनकी विशेष रूप से उपासना करते। ऐसे व्यक्तियों की

सूची बहुत लंबी है। यहां अपने-अपने क्षेत्रों में कुछ दृष्टियों से विशिष्ट कतिपय श्रावकों के नाम उल्लिखित किए जा रहे हैं—

डालजी धाडेवा (सरदारशहर), पृथ्वीराजजी डागा (श्रीडूंगरगढ), कुन्दनमलजी, मालचन्दजी खटेड़—(लाडनूं), गोरधनजी (गोधूजी) ब्राह्मण—(गंगाशहर), मिश्रीमलजी जैन (बीकानेर), तोलारामजी लूणावत (मुनीमजी) गंगाशहर आदि।

२३७. सेवाभावीजी के एक कोटि के भक्तों का उल्लेख २२वीं गाथा में हो चुका है। प्रस्तुत गाथा में इससे भिन्न कोटि के भक्तों या भक्त-परिवारों का उल्लेख है—

बीकानेर दरबार महाराजा करणीसिंह जी, डा॰ अविनाश गंगाशहर, डा॰ बुन्देला श्रीडूंगरगढ, मेघराजजी सुराणा चूरू, दिल्ली के लाला—गिरधारीलाल, नानगराम, मंगतराय आदि तथा भीवानी के लाला पेशीराम आदि।

लाडनूं का पूरा बैंगाणी परिवार। उसमें सागरमलजी, हनुमानमलजी और रणजीतमलजी बैंगानी की माताओं, चन्दनमलजी बैंगानी की धर्मपत्नी आदि श्राविकाओं के नाम उल्लेखनीय है। कुछ लोग तो सेवाभावी जी को बैंगानियों के महाराज कहकर ही पुकारते थे।

हिसार के प्रसिद्ध श्रावक घासीराम की पुत्री कमला, श्रीमती भंवरी देवी सुराना (जयपुर), धन्ना सेठानी, (बीदासर), जवाहरजी डोसी, (उदयपुर), मोतीलालजी बोथरा (तारानगर) हीरालालजी सिंघी (नोहर), महालचन्दजी भादाणी (श्रीडूंगरगढ), सरदारमलजी कोठारी, लालचन्दजी सुराना, (जयपुर) नेमीचन्दजी पींचा (लल्लूजी) आदि अनेक श्रावक और श्राविकाओं की गणना सेवाभावीजी के अन्तरंग भक्तों में होती थी।

कुछ ऐसे व्यक्ति भी सेवाभावीजी के अन्तरंग भक्त थे, जिनके कर्तृत्व से सेवाभावीजी प्रसन्न रहते थे—

कमलेश चतुर्वेदी मूलतः उत्तरप्रदेश के अमेठी गांव के हैं। आचार्यश्री की बंगाल यात्रा के समय प्रभुदयालजी डाबडीवाला के माध्यम से ये सम्पर्क मे आए और कुछ समय बाद ही आदर्श साहित्य संघ, शिविर कार्यालय के प्रबन्धक या संचालक की हैसियत से काम करने लगे। कमलेशजी स्पष्टवादी अवश्य हैं, पर हैं अपने ढंग के विचित्र व्यक्ति। कार्यालय के संचालन का

इनका तरीका कई लोगों के लिए सीखने जैसा है। इनके काम पर झटपट कोई व्यक्ति अंगुली नहीं उठा सकता। आचार्यश्री के प्रति सहज समर्पण और अपने कार्य के प्रति निष्ठा इनके जीवन की स्वाभाविक शैली है। सेवाभावीजी के निकटस्थ भक्तों में इनका आकलन हो सकता है। उनके प्रति इनका समर्पण भी कम नहीं था।

लाडनूं के तत्त्वज्ञ श्रावक जयचन्दलालजी कोठारी अपनी कोटि के एक ही व्यक्ति थे। उनकी स्कूली शिक्षा साधारण थी, पर तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में अन्तर्दृष्टि जाग गई, ऐसा प्रतीत होता था। जिन गंभीर तात्त्विक बोलों में बडे-बड़े तत्त्वज्ञ साधु उलझन का अनुभव करते, उनके बारे में कोठारीजी की दृष्टि स्पष्ट थी। उदाहरण के रूप में कुछ बोल यहां दिए जा रहे हैं—

० सूक्ष्मसम्पराय चारित्र में अनाकार उपयोग क्यो नहीं होता ?
० प्राचीन थोकड़ों में योग को उपशम भाव क्यों नहीं माना ?
० अकाल मृत्यु हो सकती है या नहीं ?

कोठारीजी धर्मशासन के भक्त थे, समर्पित श्रावक थे और सूझबूझ के धनी थे। सेवाभावीजी के प्रति उनके मन में सहज आस्था थी।

इसी प्रकार ब्यावर के श्रावक धनराजजी सांखला पहले कांग्रेसी राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। राजनीति से मुक्त होकर वे धर्मसंघ की सेवा में समर्पित हो गए। उस समय के अनेक विशिष्ट लोग उनके मित्र थे। उनके मित्रों में हिन्दुओं की तरह मुसलमान भी रहे हैं। भगवान महावीर का दर्शन—जातिवाद की तात्त्विकता, उनके जीवन-व्यवहार में प्रतिबिम्बित थी। सेवाभावीजी के निकटस्थ भक्तों में उनका नाम उल्लेखनीय है। वे जब तक रहे, धर्मसंघ की अच्छी सेवा करते रहे।

इसी कोटि में धनराजजी सेठिया (बैंगलोर) धनजी धारीवाल (बैंगलोर) आदि अनेक व्यक्तियों के नाम उल्लेखनीय हैं।

२३८. वि० सं० २०३१ का मर्यादा-महोत्सव श्रीडूंगरगढ था। उस समय धर्मसंघ के युवा साधुओं द्वारा गाए गए गीत के दो पद्य यहां प्रस्तुत हैं—

ओ युवा सैनिको ! युग ने हमें पुकारा।
चिन्तन हो एक हमारा, मंथन हो एक हमारा।
मुख-मुख पर हो यह नारा—संघ हमारा प्राण है।
आर्यभिक्षु ने इसको अपने खून पसीने से सींचा,

सौ-सौ संकट सह-सहकर भी जन-जन के मन को खींचा,
उनकी संतान हैं हम, गण पर कुर्बान हैं हम।
तुलसी के फौलादी हाथों में अब डोर हमारी है,
जो संकेत मिलेंगे उन पर चलने की तैयारी है,
सब कुछ हम भेंट चढाएं, शासन की शान बढाएं।
(पूरा गीत देखें 'स्वर गूंजे निर्माण के' लेखक मुनि मधुकर जी)

२३९. वि॰ सं॰ २०३१ श्रीडूंगरगढ मर्यादा-महोत्सव के प्रसंग में साध्वी संघमित्राजी आदि साध्वियों द्वारा गाए गए गीत का आदि बोल निम्नलिखित है—

उतर्‌या ज्योति-चरण, च्यारूं कूंटां में किरण,
आगै-आगै फैल्यो उजास।
करै श्रद्धा रो उपहार, सारो श्रमणी परिवार।
थांरी दीपती पुन्याई आगै सूरज मानै हार।।
बालवय में ही दिखलायो प्रौढ-सो आदर्श हो,
गुरुवर कालू करकमलां में जीवन रो उत्कर्ष हो,
बण्या छोटा-सा योगीश, बिन्दू सिन्धू रा आकार।।१।।
द्रौपदी रै चीर ज्यूं आ बढज्यो संघ संपदा,
सौ-सौ कामना है टलज्यो ईड़ा पीड़ा आपदा,
चमको धरती पर युगनायक! ज्यूं आभै में ध्रुवतार।।२।।

२४०. संघ के विशिष्ट प्रसंगों पर सेवाभावीजी जो गीत गाते, वे लोकगीत की तरह लोकप्रिय हो जाते। आचार्य भिक्षु के प्रति गाए गए एक गीत के कुछ पद्य—

म्हारै सांस सांस मे बोलै रे सांवरिया स्वामीजी।
तो परवत है राई रै ओलै रे! गुणदरिया स्वामीजी।
निजर पसार निहारूं सामां ऊभा दीसै स्वामीजी।
पल-पल विष में अमृत घोलै रे।।
कान लगार सुणूं तो हर स्वर-स्वर में गूंजै स्वामीजी
म्हांरा अन्तर-श्रुति-पट खोलै रे।
आंख मूंद कर ध्यान धरूं तो घट में बैठ्या स्वामीजी
म्हारै भीतरलो टंटोलै रे।
(पूरा गीत देखें 'आर-पार' लेखक सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी)

२४१. सेवाभावीजी ने फतेहपुर से विहार किया। सालासर से पहले 'धानणी' गांव में रात्रिकालीन प्रवास था। वहां लाडनूं के कुछ श्रावक आए। लाडनूं में आचार्यवर के पदार्पण, प्रवास, दीक्षा-कल्याणक समारोह आदि अवसरों पर होने वाली व्यवस्था संबंधी बातें चल पड़ीं। उस प्रसंग में सेवाभावी जी ने कुछ कह दिया। श्रावक चले गये। मुनि मोहनलाल जी 'आमेट' सेवाभावी जी के पास आकर बोले—भाईजी महाराज! आप भी कैसी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देते हैं? गृहस्थों को जो करना है, अपने आप करेंगे। सेवाभावी जी बोले—तुम कुछ भी कहो, हमारे तो ऐसे ही चलेगा। बात तन गई और किसी भी बात की पकड़ होने के बाद सेवाभावीजी के दिमाग से निकल नहीं पाती थी। मुनि मोहनलालजी मन में तनाव लेकर चले गए।

उसी रात सेवाभावीजी ने दो स्वप्न देखे। सुबह उठने के बाद, पता नहीं मोहनलाल जी के मन में क्या आया, वे सेवाभावीजी के पास गये और अपने पूर्व रात्रि में हुए अविनय के लिए खमतखामणा कर हलके हो गए। धानणी से सालासर के लिए विहार हुआ। मुनि सागरमलजी 'श्रमण' साथ-साथ चले। दो क्षण रुककर सेवाभावीजी बोले—सागर! आज रात्रि में मैंने दो सपने देखे। पहला सपना तो यह था कि मोहनजी खमतखामणा कर रहे हैं। पश्चिम रात्रि में उन्होंने बिना किसी पृष्ठभूमि के आकर खमतखामणा कर लिया, मेरा एक सपना सत्य हो गया। मुनि सागरमलजी ने पूछा—दूसरा क्या था? इस पर वे बोले— वह तुम्हें नहीं, आचार्यश्री को ही बताऊंगा। उसके बाद आचार्यश्री से सेवाभावीजी का मिलन नहीं हो सका। दूसरा स्वप्न वे अपने साथ लेकर चले गए।

२४२. तेरापंथ धर्मसंघ के तीन आचार्यों ने साहित्य के क्षेत्र में बहुत काम किया है। आचार्य भिक्षु ने छत्तीस हजार पद्य-परिमाण साहित्य लिखा। जयाचार्य ने साढे तीन लाख पद्य-परिमाण साहित्य का सृजन किया। आचार्य तुलसी ने संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी में पचासों पुस्तकें लिखी हैं। प्रायः दिनभर जनसंपर्क, प्रवचन आदि कार्यों की विशेष व्यस्तता के बावजूद आचार्यश्री ने साहित्य का जो भण्डार भरा है, उल्लेखनीय है। आचार्यश्री किसी भी कृति की संरचना में लगने के बाद उसे शीघ्र ही पूरा कर देते हैं पर 'सेवाभावी' (चम्पक चरित्र) के निर्माण में सोलह वर्ष का समय लग गया। इस विलम्ब के पीछे अनेक कारण रहे हैं। फिर भी आपकी कितनी विनम्रता है कि आपने

इसे तुलसी युग और जय युग की जागृति के अन्तर रूप में स्वीकार किया है।

२४३. 'सेवाभावी' की रचना का काम वि॰ सं॰ २०४६ आषाढ महीने में पूरा हो गया। उस समय लाडनूं का तापमान भी ४६ डिग्री रिकोर्ड किया गया। आचार्यवर ने अपनी ओर से रचना पूरी कर उसका संपादन करने के लिए हमे सौंप दिया। सम्पादन का काम शुरू हुआ। कुछ समय बाद यह सोचा गया कि एक बार थोडे साधु साध्वियों के बीच इसका पारायण कर लिया जाए। वाचन शुरू हुआ, साधु-साध्वियों के कुछ सुझाव आए। उनको ध्यान में रखकर आचार्यश्री ने अपनी कृति मे परिमार्जन, परिवर्तन और परिवर्द्धन कर उसे अन्तिम रूप दिया। इसमें लगभग पांच महीने का समय लग गया।

मकान का ढांचा खड़ा करना एक बात है। फिनिशिंग और साजसज्जा में जो समय और श्रम लगता है, वह किसी से अज्ञात नहीं है। आषाढ से मृगशर तक पहुंचते-पहुंचते अनेक ऐतिहासिक काम संपन्न हो गए। इतिहास को सुरक्षित रखने की दृष्टि से इस कृति में उनका भी उल्लेख कर दिया गया है। कुछ कार्य निम्नलिखित हैं—

(१) जैन विश्व भारती, मान्य विश्वविद्यालय का बौद्ध धर्म गुरु दलाईलामा द्वारा लोकार्पण।

एक स्वायत्त विश्वविद्यालय के रूप में इसकी प्रतिष्ठा होने से नए पुराने सभी लोगों को प्रसन्नता हुई।

(२) अहिंसा के सघन प्रशिक्षण का साप्ताहिक शिविर, जिसमें अनेक देशों के विद्वान संभागी बने।

(३) राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद N.C.E.R.T. केन्द्रीय सरकार की विशेष संस्था के प्रमुख लोगों द्वारा मूल्यपरक शिक्षा के संदर्भ में व्यापक परिचर्चा।

२४४. इस वर्ष (ईस्वी सन् १९९२) अमेरिका के केलिफोर्निया राज्य के सेनफ्रांसिस्को नगर में स्थितप्रज्ञ और श्रुतप्रज्ञ—दो समणों ने चातुर्मासिक प्रवास संपन्न किया। समण श्रेणी की स्थापना की शवर्षीय [illegible]
स्थान पर चार महीना प्रवास कर काम क[illegible]
भाई हरीलाल शाह के प्रयत्न से यह

ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि की दृष्टि से अच्छा कार्य किया।

२४५. जैन विश्व भारती, मान्य विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 'आगमस्टडी' नाम से एक विशेष संकाय स्थापित करने की योजना बनी है। इस संकाय में जैन आगमों का गम्भीर अध्ययन कराया जाएगा। मूल आगमों, उनके व्याख्या ग्रन्थों तथा तुलनात्मक अध्ययन के लिए उपयोगी ग्रन्थों का तलस्पर्शी ज्ञान इस संकाय की स्थापना का उद्देश्य है। तुलनात्मक अध्ययन के लिए सम्प्रति तीन विधाएं निर्धारित की गई है—

. भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में
. पाश्चात्य दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में
. विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में

इस प्रथम पंचवर्षीय योजना में पहली बार महाश्रमण मुनि मुदित कुमार जी आदि तेरह विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों में चार साधु, पांच साध्वियां और चार समणियां है।

२४६. जिस वर्ष सेवाभावीजी का जीवन चरित्र पूरा हुआ है, उस वर्ष को आचार्यश्री द्वारा 'भिक्षुचेतना वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा हुई। वि॰ सं॰ २०४६ भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी को विधिवत् उस वर्ष का प्रारम्भ हो गया। इस वर्ष को मनाने का उद्देश्य है—आचार्य भिक्षु द्वारा जगाई गई चेतना को तेरापंथ धर्म संघ में और समाज में व्यापक रूप से जगाने का प्रयत्न करना। इसके लिए पूरी योजना तैयार कर ली गई है। उसकी क्रियान्विति की जा रही है।

२४७. तेरापंथ के पांचवें आचार्यश्री मघवा का स्वर्गवास हुए सौ वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। उस उपलक्ष्य में मघवा शताब्दी समारोह की आयोजना की गई है। मघवा से सम्बन्धित दो क्षेत्र हैं—बीदासर और सरदारशहर। बीदासर उनकी जन्मस्थली है और सरदारशहर स्वर्गवास-स्थली है। इस वर्ष आचार्यश्री ने इन दोनों क्षेत्रों की यात्रा स्वीकृत की है। सेवाभावी व्याख्यान की संरचना के साथ उक्त ऐतिहासिक प्रसंग जुड़ गए। इसलिए प्रस्तुत कृति के उपसंहार में इनका सहज ही आकलन हो गया।

□□

परिशिष्ट-२

विशेष शब्दकोश

अखी	अक्षय
अगंज	अपराभवनीय --जिसे कोई पराजित न कर सके
अड़क वैद्य	अड़ियल,अपनी धुन से काम करने वाला
अचक्का	निर्विघ्न
अजमावां	अजमाइस करते
अडीकूं	इन्तजार करता हूं
अणबूझी	उलझी हुई
अणमाप्यो	अमाप्य-- जिसका माप न हो
अणसण	आहारपरित्याग , सथारा
अणी	अवसर
अनघ	निष्पाप
अपवाद मार्ग	विशेष स्थिति
अपुनर्भय	अद्वितीय
अपोढ़ी	जागरण
अबार	अभी
अमामा	मूल्यवान
अमूझणी	बेचैनी
अयाणां	अनजान
अरू-वरू	आमने-सामने
अलखावणो	अप्रिय
अलवेश्वर	प्रभु
अहलाण	अभिज्ञान, चिह्न
आंसूड़ा ढलकावै	आसू बहाते हैं
आखता	दुःखी, बेचैन
आखती	थकी हुई
आगूंच	पहले ही

आगेवाण	अग्रगामी, वर्ग का प्रमुख
आघ	आदर
आण-दुहाई	आज्ञा की उद्घोषणा
आतो	हैरान
आधाकर्मी	साधु के निमित्त बना भोजन- पानी आदि
आफाणी	अपने आप
आब	आभा
आमण-दूमणा-(दूमण-आमणा)	अन्यमनस्क
आ'र	भोजन
आराधक	मोक्ष-साधक, साधना को सफल करने वाला
आरो	जैन कालगणना के अनुसार कालचक्र का एक विभाग
आलोयण	एक प्रकार का प्रायश्चित्त
आहुड्या	भिड़ गए
इकसरो	एक धारा से
इजै-विजै	जय-विजय
इतवार	विश्वास
इनायत	कृपा, अनुग्रह
ईर्यासमिति	जैन साधुचर्या का एक विशिष्ट अंग—सावधानी से चलना
उछरंग	उत्साह
उजागरो	जागरण
उणिहारो	आकृति, चेहरा
उत्क्रम	प्रवर्धमान
उत्सर्ग मार्ग	सामान्य स्थिति
उपराड़ी	तरफदारी, सुख-सुविधा के प्रति जागरूकता
उमगायो	हिलोरें लेने लगा
उम्हावो	उमग
ऊंडो	गहरा
ऊठसवार	प्रतिदिन
ऊनोदरी	खान-पान आदि में कमी करना
ऊपरलो पानो	आर्थिक स्थिति मे सुधार, जीवन का श्रेष्ठ समय

एषणीय	साधु के लिए ग्राह्य
एहड़ी	ऐसी
ओखाणो	कहावत
ओगाज	ऊंचे स्वर में बोलना
ओगाणां	अवगाहन करना
ओघो	रजोहरण
ओछो -बत्तो	कम-अधिक
ओटी	अपने पर लेता हूं
ओप्या	सुशोभित हुए
ओळमो	उपालंभ
ओला	ओट
ओलांदोला	इर्द-गिर्द
कर मे कर झाल्यां	हाथ में हाथ लेकर
करसाही	हाथ पकडकर
करस्हावै	हाथ के सहारे
करारो	कड़ा
कलमथ	झगडा
काढ	निकालकर
कायो	अधीर
कुन्द	खिन्न
कुरब	सम्मान
केड	साथ
कोठै	हृदय
कोड	मनोभाव, अन्तर की आशा
क्षयोपशम	बंधे हुए कर्म-पुद्गल स्कन्धों का हल्कापन
खतवाणी	लिखानी
खताणी	लिखी गई
खतीजी	खाते में लिखी गई
खमतखामणा	क्षमा का अदान-प्रदान
खमाघणी	आचार्य आदि को किया जाने वाला अभिवादन या सम्बोधन
खर-खोज	नाम-निशान
खरसाण	कसौटी

खातरी	आदर-सत्कार
खाता-पोता	सीमा
खात्री	तसल्ली, धैर्य
खूंचणो	नुक्स, दोष
ख्वावै	प्रकार
गरढा	वृद्ध
गाथा	तेरापंथ धर्मसघ की एक प्रकार की मुद्रा
गिन्यां	स्वर्णमुद्राएं
गुचळक्यां	पानी में गोता खाना
गुणठाण	आत्मविकास की क्रमिक भूमिका
गे'णो	जेवर
गोचरी	साधुओं की भिक्षाचरी
गोडा	घुटना
घणेरा	बहुत
घर-धणियाणी	गृहस्वामिनी
घाम	गर्मी
घोक	रट्टा
घाकी	अंकन किया
चांपता	दवाते समय
चाढ्यो काम सिराडां	काम सफल हो गया
चावना	इच्छा
चावी	प्रसिद्ध
चितारो	स्मरण करो
चिमठायो	आंख दिखाई, एकान्त मे कडा उलाहना दिया
चीख	अफसोस
चूंप	जागरूक
चोक्कस	अच्छी तरह से , सावधान, निश्चित
चोखला	आसपास के गांवो का समूह
चोफाल	चारो पांवों से दौडती हुई
चै'ल	चहल-पहल
चौकसी	देखरेख

चौव्यार	अशन, पान, खादिम और स्वादिम चार प्रकार के आहार का प्रत्याख्यान
चौरस	चतुष्कोण
छक	ठाट , भीड़भाड़
छक्क	ठाटबाट
छज्यो	हुआ
छद्मस्थ	अकेवली, जिसे केवलज्ञान प्राप्त न हुआ हो
छवढालियो	छह गीतों का समवाय
छाजै	सुशोभित हुआ
छानै	प्रच्छन्न
छुट्टक -बुट्टक	धर्मसंघ से छूटा हुआ
छेह	पार , विश्वासघात, किनारा
छेहडै	अन्त
छोल	लहर
जंत	मशीन की तरह भारी
जंझाझोली	बांस के सहारे बनी हुई कम्बल की पालखी
जाम	जब
जाया	जनमे
जिकर	चर्चा
जितकाशी	युद्ध मे विजयी
जिनशरण	मरणासन्न अवस्था
जीवन जामा	जीवन और जन्म, सब कुछ
जीसोरे	मानसिक प्रसन्नता
जोडी	युग्म
जोम	अभिमान
जोरां-तोरां	जोर-तोर से
जोलै	देख ले
झाकै	देखना
टाणो	अवसर
टालोकर	गण से बहिष्कृत या बहिर्भूत साधु
ठाणी	निश्चय किया
ठामे	स्थान पर
ठायो	व्यवस्थित

ठिकाणो	पता
ठेलकर	दूर कर
ठेल्यो	दूर किया
डबलिया	रेल के डिब्बे
डरूं -फरूं	भयभीत
डाक	छलांग
डील	शरीर
डेरा	यात्रियों के पडाव
डोसा	वृद्ध
ढ़ालां	गीत
तकादै	कर्जदारो से पुनः जल्दी रुपया लेने का तकाजा करने के लिए
तड़ाकै	तुरन्त, जल्दी
तण्यां -धण्यां	प्रत्यक्ष, आमने-सामने
तहति	स्वीकृति सूचक शब्द
ताबड़तोड़	शीघ्रता से
तावड़ो	धूप
तुष्ठी	तुष्टि
तूठ्या	प्रसन्न हुए
तेड़कर	बुलाकर
तेड़ायो, तेडूया	बुलाया
थथोपो	झूठा आश्वासन
थली	राजस्थान का एक प्रदेश बीकानेर , चूरू और गंगानगर जिला
थाग	गहराई का तल
थाणो	स्थान
थिरता	स्थिरता
थुथकारां	थुथका डालते हैं
थुथकारो	नजर उतारने की क्रिया, थुथका डालना
थोकड़ा	तात्त्विक बोलों का संक्षिप्त संकलन
थ्यावस	धीरज
दगग-दगग	पानी के बहाव की तरह
दगचाल	धाराप्रवाह

दड़बड़ूयां	तीव्रता से दौड़ने की क्रिया
दड़ूकै	दहाड़ते है
दत्तक	गोद लिया हुआ
दरब	द्रव्य, पदार्थ
दर्शक दावै	दर्शक के रूप में
दाग	मृतक का दाह-संस्कार
दाझ	जलन
दाझो	जलाते हो
दाठीक	साहसी
दाना -बूढ़ा	वृद्ध
दावो	वंश , अधिकार , गर्वोक्ति
दिन-दहाड़ै	दिन में
दुलेच्यां	दीवानखाना, ड्राइंग रूम
देणदारी	कर्ज
देशावर	राजस्थान से अन्य प्रदेश
दोफारां	मध्याह्न
दोलो	अधिक
दोहरी	कष्टप्रद
धणी	मालिक
धमचक्क	ऊधम , शरारत
धर्म ठिकाणो	धर्मस्थान
धवल -समारो	रजत -जयंती
धाक	प्रभाव
धापै	तृप्त हुई
धाया	प्रस्थान किया
धारणा-प्रणाली	साधुओं द्वारा लिखित प्रतियों को गृहस्थों द्वारा अधिग्रहण करने की एक संघीय विधि
धारफार	साहसी, निर्भीक
धुर	प्रथम
धोरा	बालू के टीले
नगदावण	नगद
नागोरण वात	नागौर की ओर से चलने वाली वर्षा-अवरोधक वायु

नानाणै	ननिहाल
निगर	ठोस
निजर	दृष्टिविष का प्रयोग
निजारो	दृश्य
निदाघ	ग्रीष्म ऋतु
निनेह	स्नेहरहित
निबलाई	दुर्बलता
नियंठा	निर्ग्रन्थ (जैन मुनि) , आगमो में निर्ग्रन्थ के छह प्रकार बतलाए गए है
निरवाली	एकान्त
निवड्यो	प्रमाणित होना
नीठ	मुश्किल से
नीठी	बीती
नूर	आभा, इज्जत
नेठ	आखिर
नेड़ो	नजदीक
नो'रो	बडे भोज आदि करने का स्थान, पचायत का स्थान
न्यारां	बहर्विहार
पंगत	पक्ति, श्रेणी
पक्खी पडिकमणो	पाक्षिक प्रतिक्रमण
पगपाला	पैदल
पगफेरो	प्रथम पदार्पण
पछेवड़ी	चद्दर
पजूषण	जैन धर्म का एक पर्व, पर्युषण महापर्व
पठाया	भेजा
पठावो	भेजो
पडिसेवी	प्रतिसेवी (दोष सेवन करने वाला साधु)
पतियारो	विश्वास
परखदा	परिषद्
परणाया	विवाह किया
परवरी	श्रेष्ठ

पलेवण	वस्त्र, पात्र आदि उपकरणो को देखने की विधि
पांत	पक्ति
पाट महोत्सव	आचार्य के पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला उत्सव
पाणी पूगते	पानी पहुंचते ही
पानै पड़सी	गम्य होगा, समझ मे आएगा
पानो	पत्र
पाला	पैदल
पितवाणा	प्रतीति करते है, परख करते है
पितवाणी	अनुभव किया
पीहर	रक्षक
पुण्य-पोरसा	पुण्यपुज, पुण्य के स्वर्णपुरुष
पुरुषपनोता	पवित्र पुरुष
पुलकाणा	पुलक गए
पूंचो	कलाई
पूछा करो	आचार-व्यवहार सम्बन्धी पूछताछ करे।
पैंसो	लम्बा-चौडा
पोख	पोषण
पोलो	खुला
पोशाला	पाठशाला
प्रधरावी	ओढाई
प्रासुक, फासु	अचित (जीवरहित)
फंफेड्या	छेडछाड़
फक्कड़दावै	मस्ती में
बगत	समय
बणगट	बनावट
बणठण	सजधज
बनणा	वन्दना
बरतारो	शासनकाल
बरनोळा	दीक्षार्थी या विवाहार्थी की शोभायात्रा तथा उस उपलक्ष्य में दिया जाने वाला भोज
बरसालो	चातुर्मास

मासकल्प	जैन साधुओं के नवकल्पी विहार मे एक महीने का प्रवास
मिसलत	विचार-विमर्श
मींट	दृष्टि
मुलकाणो	मुस्कराहटयुक्त
मूसल बाजै	मूसल चलते हैं
मोजीज	संभ्रान्त
मोभी सुत	प्रथम पुत्र
मोरा	पीठ
मौसो जड़्यो	व्यंग्य किया
म्हातम	माहात्म्य, सम्मान
म्हालता	खुशी मनाते हुए
रक्खो	परहेज
रखड़-झखड़	तर्कवितर्कों से जूझकर
रत्नत्रयी	सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र
रवाव	बचपन का अहम्
रांघड़ी	रजपूती
राज	गुरुकुलवास
राजतो	सुशोभित
रामत	खेल-तमाशा
रावलाचाकर	आपके/धर्मशासक के सेवक
रिझवारी	किसी विशेष प्रसंग में दिया जाने वाला उपहार
रुत	मौसम
रैस	रहस्य
लंगाटेर	लम्बी लाइन
लक्कड़ढालो	भयंकर हिमपात, जिसमें लक्कड़ भी जल जाते हैं।
लख	जानकर
लादो	लाभ
लूगरी	पुल्टिस, जो फोड़े आदि को पकाने के लिए उस पर बांधी जाती है।
सेठे	सन्दर्भ में

साद	शब्द
साधन	वाहन
साम्हेलो	अगवानी
सायण	वाद्य-विशेष
सारू	अनुसार
सिंघाडा	बहिर्विहारी साधु-साध्वियों का वर्ग
सिंझ्या	सध्या
सिवरो	स्मरण करो
सिटायो	दुर्बल हो गए
सिधावणा	प्रस्थान करना
सिरावण	प्रातराश, कलेवा
सी	सर्दी
सीखडी	शिक्षा
सीझ्यो	सफल हुआ, सिद्ध हुआ
सीयाला	सर्दी का मौसम
सूरी	आचार्य
सैं दिन	उसी (महोत्सव के) दिन
सोतो	स्रोत
सोली	कान्ति
स्थंडिल	शौच भूमि
स्थविर	वृद्ध
स्याही गाल	स्याही को पानी में भिगोकर कपड़े से निचोड़कर निकालो
स्वाज	गुरुकुलवास में रहने वाले साधु-साध्वियों का वर्ग
हगामां	ठाठ के साथ
हड़को-धड़को	भय
हाजरी वड़ी (बड़ी हाजरी)	जिस कार्यक्रम में जनता के बीच साधु-साध्वियों की उपस्थिति में मर्यादाओं का वाचन हो, उसका नाम है हाजरी। जिसमें सब साधु-साध्वियां पंक्तिबद्ध खड़े होकर मर्यादाओं के संकल्प दोहराएं, वह बड़ी हाजरी कहलाती है।

परिशिष्ट-३

नामानुक्रम

व्यक्ति नाम

